कॉन्फरन्स प्रकाश का चतुर्थ वर्ष का अपूर्व उपहार

श्रीमदनुयोगद्वार सूत्रम्.

(पूर्वार्द्धम्)

श्रीमदुपाध्याय विद्वद्रत्न जैनमुनि आत्मारामजी (पंजाबी)
कृत ज्ञानप्रबोधिनी भाषा टीका समेतम्

प्रकाशक–रवेरचन्द जादवजी कामदार सम्पादक 'जैन कान्फरन्स प्रकाश'

श्रीमान सेठ महावीरसिंहजी साहब रईस पार्टीदार
हांसी की तर्फ से भेंट–

बाबू दुर्गाप्रसाद के प्रबन्ध से सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग प्रेस,
अजमेर में मुद्रित हुआ

वीर सं० २४४३] [खिष्टाब्द १९१७

प्रस्तावना ।

प्रिय महाशय ! यह संसार चक्र बड़े वेग से चल रहा है उस में प्रतिक्षण और प्रतिपल में अनेक परिवर्तन होते हैं तथा वर्तमान भूत से परिवर्तित होता है इसलिये विचारशील पुरुष अपने भविष्य जीवन को सदुपयोग वा परोपकार तथा आत्मचिंतन आदि में ही लगाते हैं अतः इस संसार चक्र में परिभ्रमण करते हुए प्राणियों को मनुष्य जन्म प्राप्त होना अति दुर्लभ है यदि किसी आत्मा को पूर्वोदय से मनुष्य जन्म प्राप्त भी होगया तो फिर उसको पंचेन्द्रिय पूर्ण आयु, नीरोगी शरीर आदि सामग्रियें प्राप्त होनी बहुत कठिन हैं। यदि उक्त सामग्रियें भी मिल गईं तो फिर विद्या अध्ययन, करना तो परम कठिन है संसार में अनेक विद्वान् हुए वा हैं अथवा होंगे परन्तु इस विषय में वक्तव्य इतना ही है कि जिस शास्त्र से आत्मबोध की प्राप्ति हो ऐसे शास्त्रों के पठन वा पाठन कराने वाले विद्वान् बहुतही अल्प होते हैं सांसारिक कलाओं के उपदेष्टा अनेक विद्वान् वा उन कलाओं के उत्पादक अनेक तत्त्ववेत्ता विद्यमान हैं और भूतकाल में विद्यमान थे किन्तु अंत समय यह कलायें आत्मा की सहायक नहीं होतीं इसलिये सब से बढ़कर सब से उत्तम एक धर्म है सो धर्म की जिज्ञासा करने वालों के लिये धर्म शास्त्र ही अति उपयोगी हैं जिन में श्रीअर्हन देव के कथन किये हुए वाक्य परम पवित्र हैं और उन वाक्यों के संग्रह का नाम ही सूत्र वा सिद्धान्त शास्त्र है सो जिन वाणी के पठन करने का अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये जिस से आत्मबोध की प्राप्ति हो । श्री जिनेन्द्र भगवान् की वाणी ने पदार्थों का सत्य २ स्वरूप प्रतिपादन किया है जिसके श्रवण वा मनन करने से आत्मा को अतीव शान्ति की प्राप्ति होती है । अंत में आत्मा कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष में विराजमान होजाता है इस लिये माना गया कि स्वाध्याय के समान कोई भी दूसरा तप नहीं है । क्योंकि (स्वाध्यायस्तप) किन्तु श्रुतज्ञान के प्रति पादक अनेक महान २ ग्रंथ हैं । उन में जिज्ञासुओं को पहले उन शास्त्रों का स्वाध्याय करना योग्य है कि जिन में अनेक विषयों का समावेश हो और वे शास्त्र नियमबद्ध हों ।

किन्तु जैन सूत्र, मूल प्राकृत वा वृत्ति संस्कृत में ही प्राय प्रतिपादित हैं जिन में प्रवेश करना प्रत्येक व्यक्ति को सुगम नहीं है तथा जो गुजराती भाषा में "टब्बादि" लिखे हुए हैं यद्यपि वे परम उपयोगी हैं किन्तु वे एक प्रान्त के लिये ही उपयुक्त हैं सर्व प्रान्तों के लिये नहीं।

इसलिये सर्व हितैषी आज दिन हिंदी भाषा को ही प्राय सर्व विद्वानों ने स्वीकार किया है इसलिये मेरा विचार भी यही हुआ कि जैन शास्त्रों का हिंदी अनुवाद करना चाहिये जिस से प्रत्येक व्यक्ति आत्मिक लाभ ले सके किन्तु इस काम में अपनी असमर्थता को देख कर इस शुभ कार्य में आज तक विलम्ब होता रहा अपितु १९७१ वे वर्ष का चातुर्मास श्रीश्रीश्री गणावच्छेदक वा स्थविरपद विभूषित श्री स्वामी गणपतिरायजी महाराज ने कसूर नगर में किया तथा मैं भी आपके चरणों में ही निवास करता था तब मुझे बाबू परमानन्दजी ने व प० मुनि ज्ञानचन्द्रजी ने प्रेरित किया कि आप श्री अनुयोगद्वारजी सूत्र का हिन्दी अनुवाद करो जिससे बहुत से प्राणियों को जैन शासन के अमूल्य ज्ञान की प्राप्ति हो क्योंकि इस सूत्र में प्राय सर्व विषयों का समावेश है और प्रत्येक विषय को बडी योग्यता के साथ वर्णन किया गया है और जैन सिद्धान्त ... व्याख्या की गई है प्रत्येक विषय की व्याख्या उ... गम ३ नय ४ द्वारा की गई है। इसी वास्ते इस का नाम अनुयोगद्वार है।

यथा—स्वाभिधायक सूत्रेण सहार्थस्य अनुगीयते अनुकूलो वा योगोऽस्येद अभिधेय मित्येव मयोऽन्यशिष्येभ्य प्रतिपादनमनुयोगः सूत्रार्थकथनमित्यर्थ अथवा एकस्यापि सूत्रस्यानन्तोर्थ इत्यर्थो महान् सूत्र त्वणु ततश्चाणु ना सूत्रेण सहार्थस्ययोगो अनुयोग तथा अनुयोगस्य विधिर्वक्तव्यो यथा प्रथम सूत्रार्थ एव शिष्यस्य कथनीय द्वितीयवारे सोपिनिर्युक्त्यर्थ कथन मिश्रस्तृतीयवारया तु प्रसङ्गानु प्रसङ्गानुगत सर्वोप्यर्थावाच्यस्तदुक्त सुत्तत्थोखलुपढमोबीओनिज्जुत्तिमीसओ भणियो तइयो निरविसेसो एसविही अणुओगो ॥

इत्यादि प्रकार से अनुयोग की विधि वर्णन की गई है तथा अन्य प्रकार

और भी विधि जाननी चाहिये जैसे कि– ज्ञात, अज्ञात, परिषद् तो अनुयोग योग्य है किन्तु दुर्विदग्ध परिषद् अनुयोग के अयोग्य है।

फिर संहिता, पदच्छेद, पदार्थ, पदविग्रह, शंका, (तर्क) और प्रत्ययवस्थान द्वाराही अनुयोग करना चाहिये इत्यादि अनेक प्रकार से अनुयोग की व्याख्या की गई है।

और इस सूत्र में प्रत्येक पद सूक्ष्म बुद्धि से विचारने योग्य है तथा नाम द्वार में दश प्रकार के नामों का बडी सुन्दर शैली से निरूपण किया गया है फिर प्रमाण विषय तो बहुत ही गहन है इस लिये इस सूत्र के हिन्दी अनुवाद की अत्यन्त आवश्यकता थी तब मैंने बाबू परमानन्दजी की प्रेरणा से व प० मुनि ज्ञानचन्द्रजी की प्रेरणा से इस काम करने में साहस किया यद्यपि यह बात स्वतः सिद्ध है कि यावन्मात्र अनुवाद होते हैं वे पाठकों की रुचि मूल से हटाकर भाषाकी ओर ही खींचते हैं क्योंकि मनुष्य स्वभावतः सुगम मार्ग की ओर ही चलते हैं इसलिये मूल पठन करने का प्रायः अभ्यास स्वल्प होरहा है किन्तु मेरी इच्छा सर्व साधारण की रुचि को मूल की ओर ले जाने की है इसी भाव से प्रेरित होकर मैंने मूल पदार्थ की ही व्याख्या लिखी है।

तथा सूत्र व्याख्यान की समाप्ति में पूर्ण सूत्र का भावार्थ भी दिया है जिससे साधारण पुरुष भी सूत्रके आशय को यथार्थ रीति से जान सके।

के उत्पादक अनेक तत्ववेत्ता[illegible]ग, के न मिलने पर इस अपूर्व ज्ञान से जब तक समय यह भव्यार्थ आत्मा [illegible] ही अवश्य लाभ होगा।

[illegible] के कारण व मुनि ज्ञानचन्द्रजी के रुग्णावस्था के कारण इस काम में विलम्ब होने लगा किन्तु अनुवाद फिर भी कुछ होता ही रहा फिर बरनालामंडी में मुनि ज्ञानचन्द्रजी का स्वर्गवास होगया।

यद्यपि यह ग्रंथ पूर्ण तो हो चुका था किन्तु इसकी द्वितीयावृत्ति करने में बहुत ही विलम्ब हुआ मुनि ज्ञानचन्द्रजी की प्रेरणा से इस भाषा टीका के लिखने का प्रारम्भ हुआ था इसी वास्ते इस भाषा टीका का नाम "ज्ञान बोधिनी" भाषा टीका * रक्खा गया है इसमें जहां तक होसका है इसको सुगम करने का उद्योग किया गया है जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ ले सके और भाषा के स्पष्ट करने में भी यथाशक्ति उद्योग किया गया है प्रत्येक पद का अर्थ भिन्न २ लिखा है।

तथा जो प्रश्न रूप पद है उनको एकत्र लिख कर ही उनके अर्थ में (प्रश्न) इसे लिख दिया है जैसे कि "सेकिंत" शब्द है इसके अर्थ में (प्रश्न)

लिख दिया है क्योंकि संकेत शब्द का संस्कृत 'अर्थान्तत्' प्रयोग बनता, उसको बार बार न लिखकर केवल "प्रश्न" शब्द को ही लिखा है और 'बहुल' 'आर्षम्' व्यत्ययश्च इन तीन सूत्रों की प्राकृत भाषा में विशेष प्राप्ति है किन्तु जहां जिस सूत्र की प्राप्ति है वहां पर हेमचन्द्राचार्य कृत प्राकृत व्याकरण के सूत्र वा संस्कृत शाकटायन व्याकरण के सूत्र दिये गये हैं और संस्कृत के प्रकरणों में केवल संस्कृत व्याकरण के ही सूत्र लगाए गए हैं और इस सूत्र के संशोधन में मैं तीन पुस्तकों का ऋणी हूं जिन में एक तो बहुत ही प्राचीन प्रति है, द्वितीय नूतन है, तृतीय रायबहादुर सेठ धनपतिसिंह की मुद्रित की हुई है। किंतु तृतीय प्रति में दृष्टि दोष के कारण से शुद्ध अशुद्धियें रह गई हैं यद्यपि बड़ी सावधानी से पत्र में काम किया जाता है फिर भी दृष्टि दोष के कारण से मनुष्य का भूलना स्वाभाविक है।

किन्तु मुझ से जहां तक होसका है इस के शुद्ध करने में मैंने बहुत ही उद्योग किया है और हर्ष का विषय है कि मैं बहुत से अंश में इस कार्य में उत्तीर्ण हुआ हूं। इस शास्त्र को योग्यता पूर्वक पठन करने का प्राणी मात्र को अधिकार है। और प्रत्येक व्यक्ति जो इस शास्त्र का पठन करना चाहे उसको उचित है कि अन याम काल को छोड़ कर इस शास्त्र का अध्ययन करे।

क्योंकि विधिपूर्वक शास्त्र अध्ययन किया हुआ ही फलीभूत होता है इसलिये आशा है भव्यजन इस सूत्र से लाभ उठाकर और नय निक्षेप के वेत्ता होकर पूर्ण दर्शन शुद्धि के विषय में स्वयात्मा को प्रविष्ट करते हुए मेरे परिश्रम को साफल्य करेंगे और जो कुछ मैंने लिखा है वह श्रीश्रीश्री १००८ आचार्य वर्य पञ्चत्रिंशत् गुणालंकृत श्रीश्रीश्री पूज्य मोतीरामजी महाराजजी की कृपा से लिखा है किन्तु मेरी मंद मति इस कार्य में सर्वथा असमर्थ थी।

सुज्ञजनो! अन्य विकथा युक्त उपन्यासादि ग्रंथों के पठन से आत्मिक लाभ नहीं हो सकता है इसलिये इस शास्त्र के पठन से अपना आत्मा को ज्ञान से विभूषित करें और अन्य आत्माओं का परोपकार द्वारा सन्मार्ग में प्रवृत्त कराय फिर जब "आत्मा" और "ज्ञान" एक रूप हो जायेंगे उस काल में ही आत्मा सिद्धगति को प्राप्त होगा जो सादि अनंत पदयुक्त है इसलिये उक्त पद के वास्ते प्रत्येक प्राणी को परिश्रम करना चाहिये॥

गुरु चरणकमल सेवी, विनीत—

उपाध्याय जैनमुनि आत्माराम (पंजाबी)

श्री वर्द्धमानाय नमः

श्री अनुयोगद्वार सूत्रम्

मूल-नाणं पंचविहं पण्णत्तं, तंजहा-आभिणिबोहियनाणं सुयनाणं ओहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं । तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं णो उद्दिसंति णो समुद्दिसंति णो अणुण्णविज्जति ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ-(नाणं) ज्ञान, (पंच विहं) पांच प्रकार से (पण्णत्तं) प्रतिपादन किया गया है, (तंजहा) जैसे कि, (आभिणिबोहियनाणं) आभिनिबोधिक-मति-ज्ञान, (सुयनाणं) श्रुतज्ञान, (ओहिनाणं) अवधिज्ञान, (मणपज्जवनाणं) मन.पर्यवज्ञान, (केवलनाणं) केवलज्ञान, (तत्थ) इन पांच ज्ञानों में (चत्तारि) चार (नाणाइं) ज्ञान, (ठप्पाइं) सव्यवहार्य नहीं, (ठवणिज्जाइं) स्थापनीय है, क्योंकि मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान ये चारों ही (णोउद्दिसंति) उद्देश—उपदेश-नहीं करते (णो समुद्दिसंति) समुद्देश नहीं करते (णो अणुण्णविज्जति) आज्ञा नहीं देते हैं " ... भावात् " मुख का अभाव होने से, क्योंकि ये चार ज्ञान अपने अनुभव को प्रकाश नहीं कर सकते. इस लिये परोपकारी न होने के कारण ये चार ही ज्ञान स्थापनीय हैं ।

भावार्थ-सर्व पदार्थों का ज्ञाता और शास्त्र की आदि में मङ्गल रूप, विघ्नों का उपशम करने वाला, निज आनन्द का प्रदाता, आत्मा का निज गुण प्रदर्शक, ज्ञान है, इसलिये सब से प्रथम ज्ञान का वर्णन किया जाता है । अर्हन् देवने ज्ञान पांच प्रकार से प्रतिपादन किया है क्योंकि ज्ञान शब्द का अर्थ यही है, कि जिस के द्वारा वस्तुओं का स्वरूप जाना जाय, अथवा जो निज स्वरूप का प्रकाशक है, वही ज्ञान है अथवा जो ज्ञानावरणीयादि कर्मों के क्षय वा क्ष

योपशम के कारण से उत्पन्न होता है वही यथार्थ ज्ञान है सो यह ज्ञान अर्ह
भगवन्तों ने तो अर्थ करके और गणधरों ने सूत्र करके पांच प्रकार से वर्ण
किया है जैसे कि–जो सन्मुख आए हुए पदार्थों का मर्यादा पूर्वक जानता
वह आभिनिबोधिक ज्ञान है तथा इस ज्ञान को मतिज्ञान भी कहते हैं। द्विती
जो सुनकर पदार्थों के स्वरूप को जानता है उसे श्रुतज्ञान कहते हैं। तृतीय जं
प्रमाणपूर्वक रूपवान् द्रव्यों को जानता है उसे अवधिज्ञान कहते हैं। चतुर्थ जं
मन के पर्यवों को भी जानलता है वही मन:पर्ययज्ञान है। और सम्पूर्ण लोकालो
के स्वरूप को जानने वाला केवलज्ञान कहलाता है, किन्तु इन पांचों में से श्रु
ज्ञान को छोड़ कर शेष चारज्ञान स्थापनीय (पृथक् करने योग्य) हैं। चा
ज्ञान लोक में व्यवहार का उपयोगी नहीं है, अर्थात् परोपकारी नहीं हैं, अपि
जिस आत्मा को जो ज्ञान होता है, वही उस का अनुभव करता है अन्य नहीं।
किन्तु श्रुतज्ञान परोपकारी है। इसलिये शास्त्र में अब श्रुतज्ञान का ही वर्णन किय
जायगा, क्योंकि उद्देशादि श्रुतज्ञान से ही उत्पन्न होते हैं, इस से भिन्न शेष ज्ञान
के उद्देश तथा समुद्देशादि नहीं है। जो गुरु कहते हैं वही श्रुतज्ञान है। अपि
जो चारों ज्ञानों का स्वरूप वर्णन किया जाता है वह सर्व श्रुतज्ञान के द्वारा ही वर्ण
किया जाता है।

अथ श्रुतज्ञान के विषय में सविस्तर स्वरूप।

मूल–सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्ण अणुओगोय पवत्तइ। जइ सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्ण अणुओगोय पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्ण अणुओगोय पवत्तइ? किं अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्ण अणुओगोय पवत्तइ? ॥ २ ॥

हिन्दी पदार्थ-(सुयनाणस्स) श्रुत ज्ञान का, (उद्देसो) उद्देश, (समुद्देसो
समुद्देश, (अणुण्ण) अनुज्ञा, और (अणुओगोय) अनुयोग ("पवत्तइ") होत
है। (जइ) यदि (सुयनाणस्स) श्रुतज्ञान का, (उद्देसो) उद्देश, (समुद्देसो
समुद्देश, (अणुण्ण) अनुज्ञा और (अणुओगोय) अनुयोग, (पवत्तइ) प्रवृ
होते हैं तो (किं अंगपविट्ठस्स) क्या अंगप्रविष्ट सूत्रों में श्रुतज्ञान का (उद्देसो
उद्देश, (समुद्देसो) समुद्देश, (अणुण्ण) अनुज्ञा, (अणुओगोय पवत्तइ) अनु

योग प्रवर्तता है। (विं अगबाहिरस्स) अथवा अगसूत्रों से बाहिर के उत्तराध्ययनादि सूत्रों म श्रुतज्ञान के (उद्देसो) उद्देश (समुद्देसो) समुद्देश, (अणुण्णा) अनुज्ञा, (अणुओगोय पवत्तई) और अनुयोग प्रवर्तता है ?

भावार्थः-इन पाच ज्ञानों में से श्रुतज्ञान के ही उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग होते हैं, किंतु शेष चारों के नहीं। ऐसा कहने पर शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! यदि श्रुतज्ञान के उद्देश, समुद्देश, आज्ञा और अनुयोग हैं तो क्या अग सूत्रों में जो श्रुतज्ञान है उसके उद्देश, समुद्देश, आज्ञा और अनुयोग हैं वा जो अग सूत्रों से बाहिर के उत्तराध्ययनादि सूत्र हैं उन में श्रुतज्ञान के उद्देश, समुद्देश आज्ञा और अनुयोग हैं ? शिष्य के ऐसा पूछने पर गुरु कहते हैं।

मूल-अगपविट्ठस्सवि उद्देसो जाव पवत्तइ, अग वाहिरस्सवि उद्देसो जाव पवत्तइ ? इम पुण पट्ठवणं पडुच्च अग वाहिरस्सवि उद्देसो ४ ॥ ३ ॥

हिन्दी पदार्थ-(अग पविट्ठस्सवि) अपि शब्द समुच्चयार्थ में है, अगप्रविष्ट सूत्रों में भी, (उद्देसो जाव पवत्तइ) उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग प्रवृत्त हैं। तथा (अग वाहिरस्सवि) अग बाहिर के सूत्रों में भी, (उद्देसो जाव पवत्तइ) उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा, अनुयोग प्रवर्त्तते हैं। (इम पुण पट्ठवणं) पुनः इस प्रकार वर्त्तमान आरम्भ की (पडुच्च) अपेक्षा से (अग वाहिरस्सवि उद्देसो ४) अग बाहिर के सूत्रों का उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग विद्यमान हैं।

भावार्थ-अगप्रविष्ट सूत्रों में भी उद्देशादि प्रवर्तमान है, और अगबाहिर के सूत्रों में भी श्रुतज्ञान के उद्देशादि विद्यमान है, तथा जो वर्तमान में अनुयोग का प्रारम्भ किया हुआ है, उसकी अपेक्षा से तो अगबाहिर के सूत्रों में श्रुतज्ञान के उद्देशादि विद्यमान हैं। शिष्यने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्!:-

मूल-किं कालियस्स उद्देसो ४ ? उक्कालियस्स उद्देसो ४ ? कालियस्सवि उद्देसो ४ उक्कालियस्सवि उद्देसो ४ इम पुण पट्ठवणं पडुच्च उक्कालियस्स उद्देसो ४ जइ उक्कालियस्स उद्देसो—

(निक्खिविस्सामि) निक्षेपों करके वर्णन करूगा (सुय निक्खिविस्सामि) श्रुत को भी निक्षपण करूगा, (खध निक्खिविस्सामि) स्कध को भी निक्षेपण करूगा और (अज्झयण निक्खिविस्सामि) अध्ययन को भी निक्षेपों करके निक्षेपण करूगा, (जत्थ जणाणिज्जा) जिस जीवादि वस्तुओं में जितना निक्षेपा जाने, (निक्खेव निक्खिवे) उस में उतना निक्षेपों का निक्षेपण करे (निरवसेस) सर्व प्रकार स, अपितु, (जत्थवि य न जाणिज्जा) जिस वस्तु में निक्षेपों का अधिक प्रकार न जाने उसमें भी (चउक्कय निक्खिवे तत्थ) चारों निक्षेप निर्विशेषता से निक्षेपण कर, अर्थात् उस वस्तु में भी चार निक्षेप करके दिखलावे।

भावार्थ-यदि आवश्यक सूत्र का अनुयोग किया जाता है तो क्या आवश्यक सूत्र एक अग है, या बहुत से अग हैं, अथवा एक श्रुतस्कन्ध है या बहुत से श्रुतस्कन्ध हैं? तथा एक अध्ययन है या बहुत से अध्ययन हैं, अथवा एक उद्देश है या बहुत से उद्देश हैं?। गुरु कहते हैं आवश्यक सूत्र एक अग नहीं है न बहुत से अग हैं, एक श्रुतस्कन्ध है, बहुत से श्रुतस्कन्ध नहीं हैं, और एक अध्ययन नहीं है किन्तु बहुत से अध्ययन हैं, न एक उद्देश है न बहुत से उद्देश हैं इसलिये आवश्यक सूत्र के निक्षेप करेंगे और श्रुत के भी चार निक्षेप करेंगे, स्कध के भी चार निक्षेप करेंगे, अध्ययन शब्द के भी चारों निक्षेप करेंगे क्योंकि जिन पदार्थों के जितने निक्षेप जाने उनके उतने निक्षेप निर्विशेषता से करे, अपितु जिन पदार्थों के पूर्ण स्वरूप को न जाने, उनमें भी चार निक्षेप करे अर्थात् उन पदार्थों को भी चार निक्षेपों द्वारा वर्णन करें, इसलिये अत्र आवश्यक का वर्णन किया जाता है।

"अथ आवश्यक विशेष"

मूल-१ सेकिंत आवस्सय ? आवस्सय चउविह पण्णत्त तंजहा नामावस्सय १ ठवणावस्सय २ दव्वावस्सय ३ भावा वस्सय ४ सेकिंत नामावस्सय २ ? जस्सण जीवस्सवा अजीवस्सवा जीवाणवा अजीवाणवा तदुभयस्सवा तदुभयाणवा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ ॥ ६॥

हिन्दी पदार्थ-(सेकिंत) अब वह आवश्यक कौनसा है ? गुरु कहते है (आवस्सय) आवश्यक (चउविहं पएणत्त) चतुर्विध से प्रतिपादन किया गया है (तजहा) जैस कि (नामावस्सय) नामावश्यक (ठवणावस्सय) स्थापनावश्यक (दव्वावस्सय) द्रव्यावश्यक (भावावस्सय) भावावश्यक, (सेकिंत नामावस्सय) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! वह नामावश्यक किस प्रकार से वर्णन किया गया है ? गुरु कहते हैं कि (नामावस्सय) नामावश्यक इस प्रकार से है जैसे कि (जस्स जीवस्स) जिस जीव का (वा) अथवा (अजीवस्स) अजीव का (वा) अथवा (जीवाण) बहुत से जीवों का (वा) अथवा (अजीवाण) बहुत से अजीवों का (वा) अथवा (तदुभयस्स) जीव अजीव दोनों का (वा) अथवा (तदुभयाणवा) बहुत से जीवों और अजीवों का (आवस्सएत्ति नाम कज्जइ) आवश्यक इस प्रकार से नाम किया जाता है (सेत नामावस्सय) वही नामावश्यक है ।

भावार्थ-शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! वह आवश्यक किस प्रकार से वर्णन किया गया है ? गुरु ने उत्तर दिया कि आवश्यक चार प्रकार से वर्णन किया गया है, जैसे कि नामावश्यक १, स्थापनावश्यक २, द्रव्यावश्यक ३, और भाव आवश्यक ४, शिष्य ने फिर पूछा कि हे भगवन् ! नामावश्यक किस को कहते हैं ? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य ! नामावश्यक उसे कहते हैं जैसे कि-किसी ने एक जीव का अथवा एक अजीव का तथा दोनों का वा बहुत जीवों और अजीवों का या दोनों का "आवश्यक" ऐसे नाम रख दिया सो वही नामावश्यक है, क्योंकि-फिर लोग उस भी आवश्यक, इस नाम से आमन्त्रण देते हैं, इसलिये ही उसे नामावश्यक कहा जाता है ।

⊛ अथ स्थापनावश्यक विषय ⊛

मूल-सेकिंत ठवणावस्सय ? २ जएण कट्ठकम्मे वा चित्तकम्मेवा पोत्थकम्मेवा लेप्पकम्मेवा गंथिमेवा वेढिमेवा पूरिमेवा सघाइमेवा अक्खेवा वराडएवा एगोवा अणेगोवा सब्भावठ्ठवणाएवा असब्भावठ्ठवणाएवा आवस्सएत्तिठ्ठवणा ठविज्जइ सेत ठवणावस्सय २ नामट्ठवणाण को पइविसेसो ?

(निक्खिविस्सामि) निक्षेपों करके वर्णन करूगा (सुय निक्खिविस्सामि) श्रुत को भी निक्षपण करूगा, (खघ निक्खिविस्सामि) स्कध को भी निक्षेपण करूगा और (अज्झयण निक्खिविस्सामि) अध्ययन को भी निक्षपों करके निक्षेपण करूगा, (जत्थ जजाणिज्जा) जिस जीवादि वस्तुओं में जितना निक्षेपा जाने, (निक्खेव निक्खिवे) उस में उतना निक्षेपों का निक्षेपण करे (निरवसेस) सर्व प्रकार से, अपितु, (जत्थवि य न जाणिज्जा) जिस वस्तु में निक्षेप का अधिक प्रकार न जाने उसमें भी (चउक्कय निक्खिवे तत्थ) चारों निक्षेप निर्विशेषता से निक्षेपण करे, अर्थात् उस वस्तु में भी चार निक्षेप करके दिखलावे ।

भावार्थ-यदि आवश्यक सूत्र का अनुयोग किया जाता है तो क्या आवश्यक सूत्र एक अग है, या बहुत से अग है, अथवा एक श्रुतस्कन्ध है वा बहुत से श्रुतस्कन्ध हैं? तथा एक अध्ययन है या बहुत से अध्ययन हैं, अथवा एक उद्देश है या बहुत से उद्देश हैं? । गुरु कहते हैं आवश्यक सूत्र एक अग नहीं है न बहुत से अग है, एक श्रुतस्कन्ध है, बहुत से श्रुतस्कन्ध नहीं हैं, और एक अध्ययन नहीं है किन्तु बहुत से अध्ययन हैं, न एक उद्देश है न बहुत से उद्देश हैं इसलिये आवश्यक सूत्र के निक्षेप करेंगे और श्रुत के भी चार निक्षेप करेंगे, स्कध के भी चार निक्षेप करेंगे, अध्ययन शब्द के भी चारों निक्षेप करेंगे क्योंकि जिन पदार्थों के जितने निक्षेप जाने उनके उतने निक्षेप निर्विशेषता से करे, अपितु जिन पदार्थों के पूर्ण स्वरूप को न जान, उनमें भी चार निक्षेप करे अर्थात् उन पदार्थों को भी चार निक्षेपों द्वारा वर्णन करें, इसलिये अब आवश्यक का वर्णन किया जाता है ।

"अथ आवश्यक विशेष"

मूल-१ सेकिंत आवस्सय ? आवस्सय चउविह पण्णत्तं तजहा नामावस्सय १ ठवणावस्सय २ दव्वावस्सय ३ भावावस्सय ४ सेकिंत नामावस्सय २ ? जस्सण जीवस्सवा अजीवस्सवा जीवाणवा अजीवाणवा तदुभयस्सवा, तदुभयाणवा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ सेत नामावस्सय ॥ ६ ॥

हिन्दी पदार्थ-(सेकिंत) अब वह आवश्यक कौनसा है ? गुरु कहते है (आवस्सय) आवश्यक (चउविह पण्णत्त) चतुर्विध से प्रतिपादन किया गया है (तजहा) जैस कि (नामावस्सय) नामावश्यक (ठवणावस्सय) स्थापनावश्यक (दव्वावस्सय) द्रव्यावश्यक (भावावस्सय) भावावश्यक, (सेकिंत नामावस्सय) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! वह नामावश्यक किस प्रकार से वर्णन किया गया है ? गुरु कहते हैं कि (नामावस्सय) नामावश्यक इस प्रकार से है जैसे कि (जस्स जीवस्स) जिस जीव का (वा) अथवा (अजीवस्स) अजीव का (वा) अथवा (जीवाण) बहुत से जीवों का (वा) अथवा (अजीवाण) बहुत से अजीवों का (वा) अथवा (तदुभयस्स) जीव अजीव दोनों का (वा) अथवा (तदुभयाणवा) बहुत से जीवों और अजीवों का (आवस्सएत्ति नाम कज्जइ) आवश्यक इस प्रकार से नाम किया जाता है (सेत नामावस्सय) वही नामावश्यक है ।

भावार्थ-शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! वह आवश्यक किस प्रकार से वर्णन किया गया है ? गुरु ने उत्तर दिया कि आवश्यक चार प्रकार से वर्णन किया गया है, जैसे कि नामावश्यक १, स्थापनावश्यक २, द्रव्यावश्यक ३, और भाव आवश्यक ४, शिष्य ने फिर पूछा कि हे भगवन् ! नामावश्यक किस को कहते हैं ? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य ! नामावश्यक उसे कहते हैं जैसे कि-किसी ने एक जीव का अथवा एक अजीव का तथा दोनों का वा बहुत जीवों और अजीवों का या दोनों का "आवश्यक" ऐसे नाम रख दिया सो वही नामावश्यक है, क्योंकि-फिर लोग उसे भी आवश्यक, इस नाम से आमन्त्रण देते हैं, इसलिये ही उसे नामावश्यक कहा जाता है ।

ॐ अथ स्थापनावश्यक विषय ॐ

मूल-सेकिंतं ठवणावस्सय ? २ जण्णं कट्ठकम्मे वा चित्तकम्मेवा पोत्थकम्मेवा लेप्पकम्मेवा गंथिमेवा वेढिमेवा पूरिमेवा सघाइमेवा अक्खेवा वराडएवा एगोवा अणेगोवा सब्भावट्ठवणाएवा असब्भावट्ठवणाएवा आवस्सएत्तिठवणा ठविज्जइ सेत ठवणावस्सय २ नामट्ठवणाणं को पइविसेसो

णाम आवकहियं ठवणा इत्तरियावा होज्जा आवकहिया ५ (सेत ठवणावस्सय) ॥ ७ ॥

हिन्दी पदार्थ-(सेकिंत ठवणावस्सय) शिष्य ने प्रश्न किया कि स्थापना आवश्यक कौनसा है ? गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य ! (वम्मय) स्थापना आवश्यक इस प्रकार से है जैसे कि-(जएणकट्ठकम्मे) काष्ठ कर्म अर्थात् काष्ठ में कोतरी हुई मूर्ति (वा) अथवा (चित्तकम्मे) कर्म चित्रचर (वा) अथवा (पोत्थकम्मे) वस्त्र की पुतली (लेप्पकम्मे लेपकर्म (वा) अथवा (गंठिम) गुथकर बनाया हुवा कोई रूप (वा अथवा (वेढिमे) वेष्टन से बनाया रूप (वा) अथवा (पूरिमे) कास्य आदि धातुए पिघला कर प्रतिमा आदि बनवाना वा माला आदि, (वा अथवा (सघाइमेवा) वस्त्रादि खंडों के संघात से बना हुवा रूप (अक्खेवा) अक्षरूप पासा आदि (वराडए) अथवा वराट (कौडी प्रमुख कर्प (एगोवा) एक रूप अथवा (अणेगोवा) अनेक रूप । (सब्भावठ वा) सद्‌स्थापना जैसे कि-आवश्यक की आकृति पूर्व प्रकार से ५ करना और (असब्भावठवणाएवा) असद् रूप स्थापना जैसे कि वराट आवश्यक मानना (आवस्सएत्तिठवणा ठविज्जइ) इस प्रकार से उक्त वस्तु आवश्यक के अभिप्राय से स्थापना करना, (सेतठ्ठवणावस्सय) वही स्था नावश्यक है, अर्थात् इस प्रकार से स्थापन श्यक माना जाता है, शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! (नामठवणाण) नाम स्थापना का (कोपइ विसेसो) परस्पर क्या विशेष है ? क्योंकि दोनों का स्वरूप परस्पर प्राय ए सामान्य है, गुरु कहते हैं कि भो शिष्य ! (णाम आवकहिय) नाम आयु पर्य्यन्त रहता है अथवा यावत् उस द्रव्य की स्थिति है तावत् काल पर्य्यन्त उसका न रहता है किन्तु स्थापना (ठवणा इत्तरियावा होज्जा) स्तोक काल तथा (आ वकहियावा हविज्जा) आयु पर्य्यन्त भी रह सकती है क्योंकि स्थापना वाले की इच्छा पर निर्भर है इसलिये इतना ही परस्पर दोनों का भेद है १ (ठवणावस्सय) सो वही स्थापनावश्यक है ॥

---

१ जैसे मुनि आवश्यक क्रियायें करता है, तद्वत् ध्यानमुद्रा उसकी स्थापना करना उसे स्थापना कहते हैं ।

भावार्थ -स्थापना आवश्यक उसका नाम है जो चित्रादि कर्म है उनमें आवश्यक की पूर्णाकृति की जाय यदि वे उसी प्रकार स्थापना की हुई है, तब वे सद्रूप स्थापना कही जाती है, यदि वराटादि को स्थापना माना हुआ है, तब वो असद् रूप स्थापना मानी जाती है और नामस्थापना का परस्पर भेद इतना ही है कि नाम आयु पर्यन्त रह सक्ता है स्थापना अल्प काल की भी हो सक्ती है, यावत् स्थिति पर्यन्त भी रह सक्ती है, सो इतना ही भेद होने पर इन को नाम और स्थापनावश्यक कहते हैं, किन्तु यहा पर स्थापना निक्षेप ही दिखाया गया है नतु पूजनीय, क्योंकि यदि वह पूजनीय ही होता तो सूत्रकार यहां उसका अवश्य ही विधान कर देते । अब द्रव्यावश्यक का वर्णन किया जाता है ।

मूल-सेकिंत दव्वावस्सय? २ दुविह पएणत्त तजहा आगमश्रो य नोआगमश्रो य। सेकिंत आगमश्रो दव्वावस्सय? २ जस्सण आवस्सएत्ति पय सिक्खिय ठिय जिय मिय परिजिय नामसम घोससम अहीणक्खर अणच्चक्खर अव्वाइद्धक्खरं अक्खलिय अमिलिय अवच्चामेलिय पडिपुन्न पडिपुन्नघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्क गुरुवायणोवगय सेण तत्थ वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्मकहाए णो अणुप्पेहाए कम्हा ? अणुओगो दव्वमितिकट्टु ॥ ८ ॥

हिन्दी पदार्थ-(सेकिंत दव्वावस्सय) वह कौनसा द्रव्यावश्यक है ? गुरु कहते हैं (दव्वावस्सय) द्रव्यावश्यक (दुविह पन्नत्तं) द्वि प्रकार से प्रतिपादन किया गया है । (तजहा) जैसे कि (आगमओय) आगम से और (नो आगमओय) नो आगम से, शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! (सेकिंत आगमओ दव्वावस्सय) आगम से द्रव्यावश्यक कौनसा है ? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य ! (आगमओ दव्वावस्सय) आगम से द्रव्यावश्यक उसका नाम है कि, (जस्सण) जिसने (आवस्सएत्ति) आवश्यक ऐसे (पय) पद (सिक्खिय) सीख लिया है (ठिय) हृदय में स्थित कर लिया है (जिय) अनुक्रमता पूर्वक उन किया (मिय) अक्षरादि की मर्यादा भी भली भान्ति से जानना है (प-

रिजिय) अननुक्रमता से भी पठन कर लिया है (नामसम) अपने नाम की माफक याद किया गया है (घोससम) उदात्तादि घोष भी सम हैं (अहीणक्खर) फिर हीन अक्षर भी नहीं है (अणच्चक्खरं) अधिक अक्षर भी नहीं है (अ व्वाइद्धक्खर) विपरीत अक्षर भी नहीं है और (अक्खलिय) पाठ स्खलित भी नहीं है (अमिलिय) परस्पर मिले हुए अक्षर नहीं हैं तथा अन्य सूत्रों के पाठों के साथ भी वर्ण एकत्र नहीं हुए हैं (अवच्चामेलिय) अन्य सूत्रों के पाठ एकार्थ रूप ज्ञात करके अन्य सूत्र में एकत्व कर देने उसका नाम वच्चामेलिय है, तथा स्वमति से कल्पित करके अधिक पाठ कर देना उसका नाम भी वच्चा मेलिय है सो वह आवश्यक रूप पद अवच्चामेलिय रूप है फिर वह (पडिपुन्न) प्रतिपूर्ण और (पडिपुन्नघोस) प्रतिपूर्ण घोष है फिर (कंठोट्ठविप्पमुक्क) कंठ और ओष्ट-होठ-दोनों के दोषों से रहित है, क्योंकि शुद्ध उच्चारण कंठादि के दोषों से रहित ही होता है, अपितु (गुरुवायणोवगय) गुरु से पठन किया हुआ है, किन्तु स्वबुद्धि से अध्ययन नहीं किया और नाहीं अविनय भाव से पठन किया है (सेणं तत्थ वायणाए) सो वह आवश्यक पद वाचना करके (पुच्छणाए) पृच्छणा करके (परियट्टणाए) परिवर्तना करके (धम्मकहाए) धर्मकथा करके तो पुनः पुनः अस्खलित किया हुआ है वह द्रव्यावश्यक है क्योंकि (णाअणुप्पेहाए) अर्थ ज्ञान पूर्वक अनुप्रेक्षा करके जिसकी पठनादि क्रिया प्र नहीं की अथवा अनुपेक्षा नहीं की। शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि (कम्हा) क्यों ? उसे द्रव्यावश्यक कहा जाता है ? गुरु ने उत्तर दिया कि (अणुवओगो-दव्वमितिकट्टु) अनुपयोग की अपेक्षा वह द्रव्यावश्यक है, क्योंकि यदि वाचनादि क्रिया उपयोगपूर्वक की जाय तब वे भावावश्यक ही हो जाता, द्रव्यावश्यक इसी लिये ही कहा गया कि वह उपयोगशून्य है।

भावार्थ द्रव्यावश्यक द्वि प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि-आगम से १ और नो आगम से २ सो आगम रूप द्रव्यावश्यक उसका नाम है कि जिसने "आवश्यक" ऐसे एक पद सीखलिया है और उसको चतुर्दश ज्ञान के दोषों से रहित ही उच्चारण करता है और घोष भी जिसका शुद्ध है, कंठादि स्थान भी पवित्र है, साथ ही वाचना १ पृच्छना २ परिवर्तना ३ धर्मोपदेश ४ में भी उक्त पद को व्यवहृत करता है, किन्तु एक अनुप्रेक्षा ही नहीं करता इसलिये वह द्रव्यावश्यक है, क्योंकि यदि उपयोग पूर्वक अनुप्रेक्षा हो तब वह भा-

वावश्यक हो जाए सो अनुपयोग के ही कारण से उसे द्रव्यावश्यक ऐसा पद दिया गया है।

अथ नयों की अपेक्षासे सूत्रकार द्रव्यावश्यक का विवेचन करते हैं।

मूल–णेगमस्सण एगो अणुवउत्तो आगमओ एग दव्वावस्सय दोन्नि अणुवउत्ता आगमओ दोन्नि दव्वावस्सयाइं तिन्निअणुवउत्ता आगमओ तिन्निदव्वावस्सयाइ एव जावइया अणुवउत्ता आगमओ तावइयाइं दव्वावस्सयाइ एवमेव ववहारस्सवि ॥ ६ ॥

हिन्दी पदार्थ–(णेगमस्सण एगो अणुवउत्तो) नैगमनय के मतमें यदि एक व्यक्ति अनुपयोग पूर्वक आवश्यक करता है तो (आगमओ) आगम से (एग दव्वावस्सय) एक द्रव्यावश्यक है अर्थात् नैगमनय के मत में एक द्रव्यावश्यक है यदि (दोन्निअणुवउत्ता) दो अनुपयोग पूर्वक आवश्यक करते हैं तो (आगमओ) आगम से (दोन्निदव्वावस्सयाइ) दो द्रव्यावश्यक हैं यदि (तिन्नि अणुवउत्ता) तीन पुरुष अनुपयोग पूर्वक आवश्यक करते हैं तो (आगमओ) आगम से (तिन्निदव्वावस्सयाइ) तीन द्रव्यावश्यक है (एव जावइया) इसी प्रकार से यावत् परिमाण (अणुवउत्तो) अनुपयोग पूर्वक आवश्यक करते हैं (आगमओ) आगम से (तावइयाइ) उतने ही परिमाण में (दव्वावस्सयाइ) द्रव्यावश्यक होते हैं (एवमेव ववहारस्सवि) इसी प्रकार मन्तव्य व्यवहार नयका भी है और अपि शब्द समुच्चार्थ में है ॥

भावार्थ–नैगमनय के मतमें यावत् प्रमाण अनुपयुक्त आगम से द्रव्यावश्यक करते हैं उतने ही नैगम नय के मत से द्रव्यावश्यक होते हैं, अपितु इसी प्रकार व्यवहार नयका भी मन्तव्य है।

मूल–संगहस्स ण एगो वा अणेगो वा अणुवउत्तोवा अणुवउत्तावा आगमओ दव्वावस्सय वा दव्वावस्सयाणि वा से एगे दव्वावस्सए ॥ १० ॥

हिन्दी पदार्थ–(संगहस्सण) संग्रह नयके मत से (एगो) एक (वा)अ-

यरा (अणेगो) अनेक (अणुवउत्तो) एक अनुपयुक्त पूर्वक (वा)अथवा (अ-णुवउत्तावा) बहुत अनुपयुक्त पूर्वक (दव्वावस्सयवा) एक द्रव्यावश्यक करता है अथवा (दव्वावस्सयाणिवा) बहुत जन द्रव्यावश्यक करता है (से एगेद व्वावस्सए) वह संग्रह क मत से एक ही द्रव्यावश्यक है ॥

भावार्थ-सग्रह नय के मत से यदि एक वा अनेक पुरुष अनुपयोग पूर्वक द्रव्यावश्यक करते हैं वह सर्व एक ही द्रव्यावश्यक है क्योंकि समान और वि-शेप भाव को सग्रहनय एक रूप से ही मानता है ॥

अथ ऋजुसूत्र नय विपय।

मूल-उज्जुसुयस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एग दव्वा वस्सय पुहुत्त नेच्छइ ॥ ११ ॥

हिन्दी पदार्थ-(उज्जुसुयस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एग दव्वावस्सय पुहुत्त नेच्छइ ॥ ११ ॥) ऋजुसूत्रनय के मत से एक अनुपयुक्त आगम से जो द्रव्यावश्यक करता है वह एकही द्रव्यावश्यक है, किन्तु यह नय पृथक् २ आ-वश्यक की इच्छा नहीं करता क्योंकि यह नय वर्तमान काल के पदार्थों को ही स्वीकार करता है ॥ ११ ॥

भावार्थ –ऋजुसूत्रनय के मत में यावन्मात्र प्रमाण आगम से द्रव्यावश्यक करते हैं वे सर्व अनुपयुक्त होने से एकही आगम से द्रव्यावश्यक हैं क्योंकि अनुपयुक्त भाव सर्व में एक समान ही है, इसलिये यह नय पृथक् २ आवश्यक को स्वीकार नहीं करता ॥

अथ शब्द, समभिरूढ एवभूत नय विपय।

मूल-तिएह सद्दनयाण जाणए अणुवउत्ते अवत्थु क-म्हा ? जइ जाणए अणुवउत्ते ण भवइ जइ अणुवउत्ते जाणए ण भवइ तम्हा नत्थि आगमओ दव्वावस्सय सेत आगमओ दव्वावस्सय ॥ १२ ॥

हिन्दी पदार्थ –(तिएह सद्दनयाण) तीनों शब्द नयों के मत से जैसे कि शब्दनय १ समभिरूढनय २ एवभूतनय ३ इन तीनों नयों का नाम ही शब्दनय है क्योंकि यह नय विशेष करके शुद्ध शब्दों पर ही स्थित हैं और

शुद्ध वस्तुओं को मानते हैं जैसे कि–तीनों नयोंके मत से (जाणए अणुव-उत्ते अवत्थु) जो जानता तो है किन्तु उपयोग पूर्वक नहीं है वह अवस्तु है (कम्हा) क्योंकि–(जइ जाणए) यदि जानता है तब (अणुवउत्तेण भवइ) अनुपयोग युक्त नहीं है (जइ अणुवउत्ते जाणए न भवइ) यदि अनुपयोग युक्त है तब जानकार नहीं है–(तम्हा) इसी वास्ते (नत्थि आगमओ दव्वावस्सय) तीनों नयों के मत में आगम से द्रव्यावश्यक होता ही नहीं क्योंकि यह तीन नय शुद्ध वस्तु पर ही आरूढ हैं और उस आगमरूप द्रव्यावश्यक को अवस्तु रूप से ज्ञात करते हैं इसलिये वे आगम रूप द्रव्यावश्यक को अवस्तु करके मानते हैं (सेत आगमओ दव्वावस्सय) यही आगम से द्रव्यावश्यक का स्वरूप है सो यह द्रव्यावश्यक का स्वरूप पूर्ण हुआ।

भावार्थ.–तीनों शब्द नय अनुपयुक्त आगम रूप द्रव्यावश्यक को अवस्तु रूप से मानते हैं, क्योंकि इन नयों का मन्तव्य है कि-यदि जानता है तब अनुपयुक्त नहीं है यदि अनुपयुक्त है तब जानता नहीं है सूत्रों में आत्मा का गुण ज्ञान माना है इसलिये ज्ञाता और अनुपयुक्त यह दोनों परस्पर विरोधी भाव है इसलिये इन नयों के मत से आगम रूप से द्रव्यावश्यक नहीं होता है सो यह आगम रूप द्रव्यावश्यक का विवेचन पूर्ण हुआ।

अथ नो आगम द्रव्यावश्यक का स्वरूप वर्णन किया जाता है।

मूल–सेकित नो आगमओ दव्वावस्सय ? २ तिविह पण्णत्त तजहा–जाणगसरीर दव्वावस्सय १ भवियसरीर दव्वावस्सयं २ जाणगसरीर भवियसरीरवइरित्त दव्वावस्सय ३ सेकिंत जाणगसरीरदव्वावस्सय ? २ आवस्सएत्ति पयत्थाहिगार जाणगस्स ज सरीरय ववगयचुयचाविय चत्त देह जीवविप्पजढ सिज्जागय वा सथारगयवा निसीहियागय वा सिद्धसिलातलगयवा पासित्ताण कोईवएज्जा अहो! ण इमेण सरीर समुस्सएण जिणोव इट्ठेणं भावेण आवस्सएत्तिपय आघविय पण्णविय परूविय दंसिय निदंसिय उवदंसिय

जहा कोदिट्ठतो ? अय महुकुंभे आसी अय घयकुंभे आसी सेत जाणगसरीरदव्वावस्सय ॥ १३ ॥

हिन्दी पदार्थ-(सेकित नो आगमओ दव्वावस्सय) नो आगम से वह द्रव्यावश्यक कौनसा है जो केवल क्रियारूप तो है किन्तु पठन रूप नहीं है अपितु नो शब्द सर्वथा पठन का निषेध करता है अर्थात् क्रियारूप नो आगम द्रव्यावश्यक कौनसा है ऐसी पृच्छा करने पर गुरु कहने लगे कि (नो आगमओ दव्वावस्सय तिविहं पन्नत्त तजहा) नो आगम द्रव्यावश्यक तीन प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि-(जाणग सरीर दव्वावस्सय) प्रथमज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक जैसे कि आवश्यक के पूर्ण ज्ञाता का शरीर (भविय सरीर दव्वावस्सय) द्वितीय भव्य शरीर द्रव्यावश्यक जैसे कि आवश्यक के सीखने वाले का शरीर और (जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्त दव्वावस्सय) तृतीयज्ञ शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक-यह तीनों प्रकार का नो आगम द्रव्यावश्यक है (सेकित जाणग सरीर दव्वावस्सय) ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक कौनसा है--गुरु कहने लगे कि (जाणग सरीर दव्वावस्सय) ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक इस प्रकार से है जैसे कि-(आवस्सएत्ति) आवश्यक के (पयत्थाहिगार) पद और अर्थ के अधिकार (जाणगस्स) के जानकार का (ज सरीरय) जो शरीर है किन्तु (ववगयचुयचावियचत्तदेह) चेतना से रहित प्राणों से मुक्त होकर केवल शरीर ही उपचय रूप है अर्थात् जो जीव से रहित शरीर है (जीव विप्पजढ) और जीव का त्यागन किया हुआ जो शरीर है (सिज्जागयवा) शय्या गत हो अथवा (सथारगयवा) सस्तार कगत हो अर्थात् प्राण छूटने पर भी समाधिस्थ हो अथवा बैठा हुआ हो (सिद्धसिलातलगयवा) जिस शिला पर मुनि अनशन करते है उस शिला पर (पासित्ताण) देख करके (कोई भणेज्जा) कोई भाषण करता कि (अहोण इमेण सरीर समुस्सएण) अहो यह शरीर का समूह (जिणोव इट्ठेण भावेण) जिनेन्द्र देव के उपदिष्ट भावों करके (आवस्सएत्तिपय) आवश्यक इस प्रकार का पद (आघविय) प्रतिपादन किया (पण्णविय) प्रज्ञप्त किया (परूविय) विशेष करके प्रतिपादन किया (दसिय निदसिय उवदसिय) आवश्यक पद को दिखाया और विशेष करके दिखलाया फिर उसका उपदेश करके इसने परिपक्व किया था (जहा को दिट्ठतो) किस दृष्टान्त से यह कथन सिद्ध हो जैसे कि (अय महुकुंभे आसी)

यह मधु का घट था अथवा (अय घयकुंभे आसी) यह घृत का घट था क्योंकि घट वर्तमान काल में विद्यमान रूप तो है, किन्तु घृत और मधु से रहित है इसी प्रकार घट तुल्य शरीर तो है अपितु घृत और मधु के समान जीव आवश्यक करने वाला वर्तमान काल में नहीं है इसी लिये ही उसका नाम (सेत-जाणगसरीर दव्वावस्सय) ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक है अर्थात् आवश्यक के जानकार का शरीर है।

भावार्थ—नो आगम द्रव्यावश्यक तीन प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक १ भव्य शरीर द्रव्यावश्यक २ ज्ञ शरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त, द्रव्यावश्यक ३ सो ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक उसका नाम है जो आवश्यक का पूर्ण विधि से करता हुआ किसी स्थान पर मृत्यु को प्राप्त होगया, किन्तु आवश्यक की आकृति पूरी उसी प्रकार से है जैसे कि आवश्यक के करने वालों की होती है, इस में केवल जानने वाले की अपेक्षा से नैगमनय के मतसे ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक कहा जाता है, जैसे मधु वा घृत का घट था।

अथ भव्य शरीर द्रव्यावश्यक विषय।

मूल—सेकित भवियसरीर दव्वावस्सय ? २ जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खते इमेण चेव आत्तएण सरीरसमुस्सएण जिणोव इट्ठेण भावेण आवस्सएत्तिपय सेयकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ जहा को दिट्ठतो ? अय महुकुंभे भविस्सइ अय घयकुंभे भविस्सइ सेत भवियसरीर दव्वावस्सय सेकितं जाणगसरीरभवियसरीरवतिरित्त दव्वावस्सय ? २ तिविहं पन्नत्त तजहा लोइय कुप्पावयणिय लोउत्तरिय। सेकित लोइय दव्वावस्सय ? २ जे इमे राईसर तलवर माडंविय कोडुंविय इब्भ सेट्ठि सेणावइ सत्थवाह प्पभिइओ कल्लं पाउप्पभाए रयणीए सुविमलाए फुल्लुप्पल कमल कोमलुम्मिलियम्मि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगासकिंसुयसुय मुह गुंजद्धरागसरिसे कमलायर नलिणि संडवोहए उट्ठिय-

म्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते मुहधोयण-दतपक्खालणतेल्लफणिहसिद्धत्थयहारियालिय अद्दागधूव पुप्फ मल्ल गध तबोल वत्थाइयाइ दव्वावस्सयाइ काउ तओ पच्छा रायकुल वा देवकुल वा आराम वा उज्जाण वा सभ वा पव वा णिगच्छति सेत लोइय दव्वावस्सय । सेकिंत कुप्पावयणिय दव्वावस्सय ? २ जे इमे चरग चीरिय चम्मखडिय भिक्खोंड पडुरग गोयम गोव्वइय गिहिधम्म धम्मचिंतग अविरुद्ध विरुद्ध वुड्ढसावयपभिइओ पासडत्था कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव तेयसा जलते इदस्स वा खदस्स वा रुद्दस्सवा सिवस्स वा वेसमणस्स वा देवस्स वा नागस्स वा जक्खस्स वा भूयस्स वा मुगुदस्सवा अज्जाएवा दुग्गाएवा कोट्टकिरियाएवा उवलेवण सम्मज्जणआवरिस्सणधूव पुप्फ गध मल्लाइयाइ दव्वावस्सयाइ करेंति सेत कुप्पावयणिय दव्वावस्सयं ॥ १४ ॥

हिन्दी पदार्थ (सेकिंत भवियसरीर दव्वावस्सय) शिष्यने प्रश्न किया कि हे भगवन्! कि भव्य शरीर द्रव्यावश्यक कोनसा है ? गुरु कहते हैं (भविय सरीर दव्वावस्सय) भव्यशरीरद्रव्यावश्यक उसका नाम है जैसे कि (जेजीवे जोणिजम्मणानिक्खत्त इमेण चेव आत्तएण सरीर समुस्सएण जिणोव इट्ठेण भावेण आवस्सएत्ति पय सेयकाल सिक्खिस्सइ नताव सिक्खइ) जो जीव योनि के द्वारा जन्म को प्राप्त हो गया है और वह आगामी काल में अपने शरीर समुदाय करके जिनेन्द्र उपदिष्ट भाव से " आवश्यक " एसे पद भविष्यत् काल में सीखेगा, किन्तु वर्तमान काल में उसने आवश्यक के पद को धारण नहीं किया है-इस में दृष्टान्त देते हैं कि (जहा को दिट्ठतो अय घयकुभेभविस्सइ) जैसे कि यह घट घृत के लिये होगा ।

---

१ स्याद् भव्य चैत्य चौर्य समेपुयात् ॥ स्यादादिषु चौर्य शब्देन समेपुच सयुक्तस्य यात् पूर्व इद् भवति ॥ प्राकृत व्याकरण-अ० ८ पा० २ सूत्र ॥ १०७ ॥

(अय महुकुभे भविस्सइ) यह कुंभ मधु के वास्ते होगा, अर्थात् इस में घृत इसमें मधु रखा जावेगा. (सेत भवियसरीरदव्वावस्सय) यही भव्य शरीर द्रव्यावश्यक है अर्थात् होने वाले शरीर को भव्य शरीर कहते हैं (से-किंतं जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्त दव्वावस्सय) इसके पश्चात् शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! ज्ञ शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक कौनसा है ? (जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तदव्वावस्सय) गुरु कहते हैं कि ज्ञ शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक (तिविह पण्णत्त तजहा) तीन प्रकार से प्रतिपादन किया गया है-जैसे कि (लोइय १ कुप्पावयणिय २ लोगुत्तरिय ३) लौकिक १ कुप्रावचनिक* २-परमत वालों का-और लौकोत्त-रिक ३ (सेकिंत लोइय दव्वावस्सय? लोइय दव्वावस्सय) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि लौकिक द्रव्यावश्यक कौनसा है ? गुरु कहते हैं कि लौकिक द्रव्या-वश्यक इस प्रकार से है जैसे कि-(जेइमे राईसरतलवर माडविय कोडुंबिय इब्भ सेट्ठिसेणावइसत्थवाह पभिइओ) जो राजा, ईश्वर, कोतवाल-थानेदार-माडबि, बड़े परिवार वाला, प्रधान श्रेष्टि-शेठ-सेनापति,— सार्थवाह प्रमुख लोग (कल्लपाउप्पभायाए) प्रभातकाल में किंचित् मात्र प्रकाश होते हुए और (रयणीए) रात्रि के व्यतिक्रम होने पर (सुविमलाए) अतिनिर्मल आकाश होने पर (फुल्लुप्पल कमलकोमलुम्मिलियम्मि) विकसित होगये है कमल और नेत्र और (अह पडुरेपभाए) प्रात काल में प्रकाश भी होगया है और जिसमें निम्नलिखित प्रकार से सूर्योदय हुआ है (रत्तासोगप्पगास किंसुयसुय मुहगुजद्धरागसरिसे) लाल अशोक वृक्ष के समान और केसुओं के पुष्प वा शुक मुख-तोते के तुल्य-तथा गुजार्द्ध-अर्द्ध गुजा, रत्ती- के रग स-मान (कमलागर) कमलों के जलाशय को जिसमें[1] (नलीण सडबोहए) नलि नादि कमल हैं उनको अथवा कमलों के वन को प्रतिबोधित करता हुआ (उट्ठियम्मिसूरे) उदय हुआ सूर्य जिसमें (सहस्सरस्सिमि) सहस्र किरणें है ऐसा (दिणयरे) दिनकर (तेयसा) तेजसे (जलते) जो प्रकाश मान है उसके उदय होने पर (मुहधोयण-) मुख धोते हैं ॥ (दंतपक्खालण) दांत प्रक्षालण करते हैं (तेल्लफणिहसिद्धत्थय) तेल

* अर्थात् निन्दनीय भूत आदिकों की उपासना करने वाला ॥

[1] – सह इनेन वतव इति सेना, इन प्रभो सूर्ये नृपे इत्यादि ॥

अथवा वेश समाचरण फणि अर्थात्–कंघी–(सिद्धत्थय) सरसों के पुष्प (हरियालिए) दग्गिताल अर्थात् दूर (अदाग) दर्पण, (धूव पुप्फ) धूप पुष्प (मल्लगध) माला अथवा सुगध (तबाल) ताम्बूल–पान–(वत्थमाइयाइ) वस्त्रादि को भी पहिरते हैं (दव्वावस्सयाइ करेंति) सो द्रव्यावश्यक इस प्रकार से वह नित्य ही करते हैं फिर वह इस प्रकार से द्रव्यावश्यक करके (तओपच्छा रायकुल वा देवकुल वा सभ वा पव वा) तत्पश्चात् राजकुल में अथवा देवकुल में अथवा सभा में पानी के स्थान में (आराम वा उज्जाणवाणिगच्छति) आराम अर्थात् बाग में अथवा उद्यान में–दौड–जाते हैं (सेतलोइय दव्वावस्सय) यही लौकिक द्रव्यावश्यक है (सेकित कुप्पावयणिय दव्वावस्सय कुप्पावयणिय दव्वावस्सय) अथ कुभावचन का वर्णन किया जाता है, शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! कुभावचनिक द्रव्यावश्यक ~~अनेकशा है~~ ? गुरु कहने लगे कि भो शिष्य ! कुभावचनिक द्रव्यावश्यक इस प्रकार से है जैसे कि (जे इमे चरग) जो चरक (चीरिय) वस्त्र के पहिरने वाले (चम्मखडिय) चर्म खड रखने वाले तथा मृग शाला धारण करने वाले (भिक्खोंड) भिक्षा करने वाले (पडुरग) भस्म शरीर के लगाने वाले (गोयम गोयव्वइय) वृषभादि के निमित्त से आजीविका करने वाले जैसे वृषभ को शृंगार के आजीविका के करने वाले और गोवृत्ति के समान भोजन करने वाले अर्थात् जैसे गो क्रिया करती है उसी प्रकार काम करने वाले और (गिहधम्म) गृहस्थधर्म के उपदेशक (धम्म चितगा) धर्म के चिन्तन करने वाले अर्थात् लौकिक शास्त्र अध्ययन करने वाले (अविरुद्ध) विनयवादी–विरुद्ध–नास्तिकवादी (वुड्ढसावय) वृद्ध श्रावक ब्राह्मणों का नाम है क्योंकि इन्होंने जैन धर्म को श्री ऋषभदेव भगवान् के समय धारण करके फिर पीछे त्याग कर दिया इसी करके इन्होंका नाम आजपर्यन्तभी वृद्ध श्रावक करके चला आता है (प्रभिओ) सो वृद्ध श्रावक प्रमुख (पासडथा) यावत्प्रमाण पाखंडी हैं वे सर्व (कल्लपाउप्पभायाए) प्रात काल होते ही जिस समय किञ्चित् मात्र ही प्रकाश होता है (रमणीय) रात्रि व्यतिक्रम होजाती है (जावजलते) यावत् जाज्वल्यमान सूर्य प्रकाश करता है उसी समय वे उक्त सर्व (इदस्सवा) इन्द्र को अथवा (खदस्सवा) स्कन्द को (रुद्दस्सवा) रुद्र को (सिवस्सवा) शिवको (वसमणस्सवा) वैश्रवण को (देवस्सवा) देव को (नागस्सवा) नागकुमार को (जक्खस्सवा) यक्ष को (भूयस्सवा) भूत को (मुगुदस्सवा) बलदेव को (अ-

ज्जाएवा) आर्य देवी अथवा (दुग्गाएवा) दुर्गा को (कोट्टकिरियाएवा) –कोट्ट किया उसका नाम है जो देविया हिंसा करवाती हैं–प्रतिमा और यह सर्व उपचार नय के मत से इन के आयतनही समझने चाहिये क्योंकि यह द्रव्यावश्यक कुमावचनिक तीनों काल की अपक्षा से है इसलिये इनके मंदिर ही ज्ञात करने चाहिये सो वे लोग इनके स्थानों को अथवा इनकी प्रतिमाओं को (उवलेवण) लेपन करते हैं (सम्मज्जण) समार्जन करते हैं (वरिसण) पानी के छींटे देते है। (धूव पुप्फ) धूप और पुष्प चढ़ाते हैं (गंध मल्लाइयाइ) सुगंध और पुष्पमालादि भी चढ़ाते हैं इस प्रकार से वे (दव्वावस्सयाइ करेंति) द्रव्यावश्यक करते हैं (सेत कुप्पावयणिय दव्वावस्सय) यही कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक है क्योंकि कु अव्यय निन्दा अर्थ में व्यवहृत है इसलिये जिन का कु प्रावचन है वे उक्त प्रकार से द्रव्यावश्यक करते हैं।

भावार्थः–भव्य शरीर द्रव्यावश्यक उसका नाम है जिस जीव ने भविष्यत् काल में अर्हन् देव के उपदेशानुकूल आवश्यक सीखना है, किन्तु वर्तमान काल में वह आवश्यक का अज्ञाता है जैसे यह घट, मधु वा घृत के लिये होगा. इसी प्रकार अमुक व्यक्ति भविष्यत् काल में आवश्यक सीखेगा उसी का नाम भव्य शरीर द्रव्यावश्यक है अपितु जो ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त आवश्यक है वह तीन प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि १ लौकिक, कुप्रावचनिक २, लोकोत्तरिक ३ सो लौकिक द्रव्यावश्यक उसको कहते हैं जैसे कि–राजा, ईश्वर, (तलवर) कोतवाल, धनाढ्य कौटुंबिक, प्रधान सेठ, सेनापति, सार्थवाह, प्रभृति लोक प्रातःकाल होते ही मुखधावन, दंतप्रक्षालन, तैल कंघी सरसों वा पुष्प, दुर्वादि का स्पर्श करके दर्पण को देखकर फिर धूप पुष्पमाला सुगंध ताम्बूल वस्त्रादि को पहिन कर फिर इसी प्रकार से नित्यमेवही द्रव्यावश्यक करके तत्पश्चात् राजद्वार वा यथेष्ट स्थानों में चले जाते हैं सो इसी का ही नाम लौकिक द्रव्यावश्यक है, किन्तु जो कुप्रावचनिक है जैसे कि–चरक चीर को धरने वाले, चर्म खंडको पहिरने वाले भिक्षा से आजीविका करने वाले अगपर भस्म लगाने वाले, गोतमवृत्ति, वा गोवृत्ति से निर्वाह करने वाले गृहस्थ धर्म के उपदेशक अथवा धर्म के चिन्तक विनयवादी वा नास्तिक आदि लोग प्रातः काल होते हुए इन्द्रादि के मन्दिरों में जाकर यथोचित क्रियायें करते हैं सो उसीका ही नाम कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक है और अब लोकोत्तर द्रव्यावश्यक

का वर्णन किया जाता है।

मूल–सेकितं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ? २ जेइमे समण गुणमुक्कजोगी छक्कायणिरणुकंपा हया इव उद्दामा गया इव निरकुसा घट्ठा मट्ठा तुप्पोट्ठा पडुरपडपाउरणा जिणाणमणाणाए सच्छंद विहरिउण उभओकालमावस्सगस्सउवट्ठति सेत लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं सेत जाणगसरीरभविय सरीरवइरित्त दव्वावस्सय सेत नो आगमओ दव्वावस्सय सेत दव्वावस्सय ।

पदार्थ–(सेकित लोगुत्तरिय दव्वावस्सय २) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! लोकोत्तर द्रव्यावश्यक कौनसा है? गुरु ने उत्तर दिया कि (जे इमे समण गुणमुक्कजोगी) जो यह प्रत्यक्ष साधु गुणों से रहित और जिसने अपने योगों को संयम से बाहिर कर लिया है और (छकाय निरणुकंपा) षट्काय के जीवों की अनुकंपा से भी रहित होगया है अपितु निर्दय होकर (हया इव उद्दामा) अश्व की नाई शीघ्र गामी है क्योंकि जैसे घोड़ा चलता हुआ अविवेक से जीवों का उपमर्दन करता है उसी प्रकार वह मुनि होगया, किन्तु (गया इवणिरकुसा) हस्ती की नाई निरकुश है किसी की भी आज्ञा नहीं मानता (घट्ठा मट्ठा तुप्पोट्ठा) नवनीत करके जाघों को मर्दन किया हुआ है, तैलादि करके शरीर और मस्तिष्क भी अलकृत है फिर जिसके ओष्ट भी शृगारित है अपितु (पडुरपडपाउरणा) श्वेत वस्त्र को जिसने पहिरा हुआ है, और (जिणाणमणाणाए) अर्हतों की विना आज्ञा (सच्छद विहरिउण) स्वच्छन्दता में विचर करके जो (उभओकाल आवस्सयस्स उवट्ठति)दोनों काल में आवश्यक को करता है अर्थात् आवश्यक के लिये दोनों काल में सावधान होता है, अपितु सूत्र में चतुर्थी के स्थान में षष्ठी विभक्ति दी हुई है सो यह (सेत लोगुत्तरिय दव्वावस्सय) लोकोत्तर द्रव्यावश्यक है क्योंकि यह द्रव्यावश्यक इसलिये है कि कथन मात्र ही यह आवश्यक है और यहा पर नो शब्द देश निषधक है (सेत जाणगसरीरभविय सरीर वइरित्त दव्वावस्सय) अब इस की पूर्ति इस प्रकार से की जाती है कि

यही ज्ञ शरीर भव्य शरीर से व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक है (सेत नो आगमओ दव्वावस्सय सेत दव्वावस्सय) अथानन्तरम् नोआगम द्रव्यावश्यक पूर्ण हो गया है और इसी का ही नाम द्रव्यावश्यक है।

भावार्थ-लौकोत्तरिक द्रव्यावश्यक उसका नाम है जो साधु गुणों से रहित षट्काय में दया न करने वाला अश्व की नाईं शीघ्रगामी गजवत् निरंकुश श्वेत वस्त्रों को धारण करने वाला, अपितु जिसने शरीर को शृंगारित किया हुआ अतः अरिहंतों की आज्ञा से रहित स्वच्छन्दता से विचरकर जो दोनों समय आवश्यक के लिये सावधान होजाता है उसी का नाम ज्ञ शरीर भव्य शरीरव्यतिरिक्त लौकोत्तरिक नो आगम द्रव्यावश्यक है क्योंकि पठन रूप ही उसका कर्तव्य है। इसीलिये उसका नाम नो आगम द्रव्यावश्यक है।

इस के अनन्तर भावावश्यक का व्याख्यान किया जाता है।

* अथ भावावश्यक विषय *

मूल-सेकित भावावस्सय ? २ दुविहं पण्णत्तं तंजहा आगमओय नो आगमओय सेकितं आगमओ भावावस्सयं ? २ जाणए उवउत्ते सेत आगमओ भावावस्सय ॥

पदार्थ-(सेकित भावावस्सय) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! भावावश्यक कौनसा है ? तब गुरु कहने लगे (भावावस्सय) भावावश्यक (दुविहं पण्णत्तं तंजहा) दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (आगमओय नो आगमओय) आगम से और नोआगम से अर्थात् क्रिया रूप। शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्! (सेकित आगमओभावावस्सय २) आगम से भावावश्यक कौनसा है ? तब गुरु ने उत्तर दिया कि (जाणए उवउत्ते) जो आवश्यक के स्वरूप का उपयोग पूर्वक जानता है, उसी का नाम आगम से भावावश्यक है (सेत आगमओभावावस्सय) अथानन्तर इसी का नाम आगम से भावावश्यक है सो आगम से भावावश्यक का स्वरूप पूर्ण हुआ।

भावार्थ[1]-भावावश्यक दो प्रकार से वर्णन किया गया है एक तो आगम से और द्वितीय नो आगम से जो आवश्यक के स्वरूप को उपयोग पूर्वक जानता है और आत्मा के भाव उसमें स्थित है वह आगम से भावावश्यक है।

१—सेकितमत्रादि उभयत्र निरर्थक पद है ॥

अथ द्वितीय भेद विषय ।

मूल–सेकिंत नो आगमओ भावावस्सय ? २ तिविह पन्नत तजहा लोइयकुप्पावयणिय लोगुत्तरिय, सेकिंतं लोइय, भावावस्सय ? २ पुव्वराहे भारहअवरराहे रामायण सेत लोइय भावावस्सय।

पदार्थः–(सेकिंत नो आगमओ भावावस्सय२) शिष्यने पूछा कि हे भगवन् ! नो आगम भावावश्यक कौनसा है ? गुरुने उत्तर दिया कि भा शिष्य ! नो आगम भावावश्यक (तिविह पन्नत तजहा) तीनों प्रकार से कथन किया गया है जैसे कि–(लोइय कुप्पावयणिय लोगुत्तरिय) लौकिक १ कुप्रावचनिक २ लौकोत्तरिक ३ (सेकिंत लोइय भावावस्सय २ पुव्वराहे भारह अवरराहे रामायण सेत लोइय भावावस्सय) शिष्यने फिर प्रश्न किया कि हेभगवन् ! लौकिक भावावश्यक कौनसा है ? गुरुने फिर कहा कि हे पृच्छक ! जो लोग प्रथम प्रहर में भारत और अपराह्न (पश्चिम) काल में रामायण सुनते हैं वा पठन करते हैं उसी का नाम लौकिक भावावश्यक है ।

भावार्थ –नो आगम भावावश्यक तीन प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि लौकिक १ कुप्रावचनिक २ लौकोत्तरिक ३ अपितु जो प्रात काल में भारत वा वेदाध्ययन करते हैं और अपरान्ह काल में रामायणादि ग्रन्थों को भावपूर्वक अध्ययनादि करते हैं उसी का नाम लौकिक भावावश्यक है ।

अथ कुप्रावचनिक भावावश्यक विषय ।

मूल–सेकिंत कुप्पावयणिय भावावस्सय ? २ जेइमे चरग चीरिय जाव पासडत्था इज्ज जलि होम जप उदुरुक्कण मोकारमाइयाइ भावावस्सयाइ करेंति सेत कुप्पावयणिय भावावस्सय ।

पदार्थ–(प्रश्न) कुप्रावचनिक भावावश्यक कौनसा है ! (उत्तर) कुप्रावचनिक भावावश्यक उसका नाम है जैसे कि (जेइमे चरग चीरिय जाव पासडत्था) जो चरक वस्त्रधारी यावत् पाषडी जो पूर्व कथन किये गये हैं वे सर्व (इज्ज

जलि) यज्ञव्य अपने इष्टदेव के सन्मुख हाथ जोड़ते हैं तथा निज माता को नमस्कार करते हैं अथवा (इद्दजलि) अपने इष्टदेव को अंजलि द्वारा नमस्कार करके तथा पानी देकर (होम) हवनादि क्रियायें करते हैं फिर (जप) गायत्री प्रमुख मन्त्रों का जाप करते हैं (उदुरुक्कणमोक्कारमाइयाइ भावावस्सय करेंति) मुख से वृषभवत् शब्द करके फिर नमस्कार आदि पूर्ण क्रियायें करते हुए इस प्रकार से भावावश्यक पूर्ण करते हैं, (सेत कुप्पावयणिय भावावस्सय) यही कुप्रावचनिक भावावश्यक है।

भावार्थ-कुप्रावचनिक भावावश्यक उसे कहते हैं जो परमतवाले लोग अपने इष्टदेव को अंजलि द्वारा नमस्कार करते हैं पुन: हवन और जाप करके वृषभवत् शब्द करते हैं, फिर नमस्कार प्रमुख भावावश्यक उक्त प्रकार से करके अपने भावावश्यक की पूर्ति करते हैं, यही कुप्रावचनिक भावावश्यक है।

अथ लौकोत्तरिक भावावश्यक विषय।

मूल—सेकिंत लोगुत्तरिय भावावस्सय ? २ जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए रागमणे अविमणे जिण वयण धम्मरागरत्ते तब्भावणा भाविए अण्णत्थ कत्थइ मणमकरे माणे उभओकाल आवस्सय करेइ सेत लोगुत्तरिय भावावस्सय सेत नोआगमओ भावावस्सय तस्सण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा णाणावजणा नामधेज्जा भवति तजहा आवस्सय अवस्सकरणिज्ज धूवणिग्गहो विसोहीय। अज्झयणच्छकवग्गो। नाओ आराहणामग्गो ॥ १ ॥ समणेण सावएणय। अवस्सकायव्वय हवइ जम्हा। अतो अहो निसस्सय तम्हा आवस्सय नाम ॥ २ ॥ सेत्त आवस्सय ॥

पदार्थ-(सेकिंत लोगुत्तरिय भावावस्सय २) लौकोत्तरिक भावावश्यक कौनसा है ? ऐसे शिष्य के प्रश्न करने पर गुरु कहने लगे कि भो शिष्य !

लौकोत्तरिक भावावश्यक इस प्रकार से है कि जैसे (जण समणोवा), जो साधु अथवा (समणीवा) साध्वी अथवा (सावओवा) श्रावक वा (सावियावा) श्राविका (तच्चित्त) जिनका आवश्यक में चित्त है (तम्मणे) आवश्यक में मन है (तल्लेसे) आवश्यक में भाव है (तदज्झवसिए) आवश्यक के ही अध्यवसाय है (तत्तिव्वज्झवसाण) अन्तःकरण में आवश्यक का तीव्र अध्यवसाय है (तदट्ठोवउत्ते) और आवश्यक के अर्थों में उपयोग लगा हुआ है (तदप्पियकरणे) आवश्यक के योग्य उपकरण जैसे कि रजोहरण, मुखपत्ति आदि भी शुद्ध है अर्थात् आवश्यक के अनुकूल हैं (तब्भावणाभाविए) और आवश्यक के विषय ही एकांत भाव है और उसी की भावना है फिर (एगमणे) आवश्यक के विषय एकाग्रमन है (अविमणे) अपितु विमन नहीं है जैसे कि चित्त की विकलता (जिणवयण) जिन वचनों में अथवा (धम्माणुरागरत्तमण) धर्मानुराग में रक्त है मन जिनका फिर (अण्णत्थ कत्थइ मण अकरमाणे) अन्य कहीं पर मन न करते हुए ज (उभओकाल आवस्सय करेंई) दोनों काल में शुद्ध आवश्यक को करते (सेत लोगुत्तरिय भावावस्सय) यही लोकोत्तर भावावश्यक है (सेत न आगमओभावावस्सय) अथ इसी का नाम नो आगम से भावावश्यक (सेत भावावस्सय) अथानन्तर इसी प्रकार से भावावश्यक होता है और यही भावावश्यक है किन्तु (तस्सण इमे एगट्ठिया) उस आवश्यक के परमार्थ करके एकार्थ रूप (नाणाघोसा) नाना प्रकार के घोष हैं (नाणा वजणा नामधेज्जा भवंति) और नाना प्रकार के व्यञ्जनों से युक्त इस आवश्यक के नाम भी हैं (तजहा) जैसे कि (आवस्सय अवस्स करणिज्ज) आवश्यक उसी का नाम है जो अवश्य करणीय है अपितु यह शब्दार्थ है किन्तु पर्यायार्थ इस प्रकार से है जैसे कि ज्ञानादि गुण वा मोक्ष जिसके वश में है उसी का नाम आवश्यक है अथवा सर्व प्रकार से इन्द्रिय जिसके वश में हो उसी का नाम आवश्यक है अथवा जो सर्व गुणों का आवास भूत है वही आवश्यक है सो यह आवश्यक (धुवनिग्गहा) ध्रुव और इन्द्रियों के निग्रह करने वाला है (विसोहीय) कर्मों की शुद्धि करने वाला है (अज्झयणछक्क वग्गो) सामायिक आदि षट् अध्यायों का एक वर्ग है (नाओ आराहणामग्गो न्यायमार्गी है जीव को आराधना कराने वाला और मोक्ष का मार्ग है म

(समणेणं) साधु को अथवा (सावएण) श्रावक को उपलक्षण से साध्वी और श्राविकाओं को (अवस्सकायव्वोव्वय हवइ जम्हा अतो अहोनिसस्स तम्हा आवस्सय नाम २) जो रात्रि दिवस के अन्तर में अवश्य ही करणीय है, इसी करके आवश्यक इसका नाम स्थापित है अथवा जो दोनों समय अवश्य-करणीय है इसी करके आवश्यक इसका नाम स्थापित हुआ है (सेत आव-स्सय) इस प्रकार से आवश्यक का स्वरूप है।

इतिश्री अनुयोग द्वार सूत्र में आवश्यक नामक प्रथमाधिकार समाप्त हुआ ॥८॥

भावार्थ.—लोकोत्तरिक भावावश्यक उसका नाम है जो साधु साध्वी श्रावक श्राविकायें एकाग्रता के साथ जिनवचनों में चित्त रखते हुए दोनों समय आवश्यक करते हैं वही नो आगम से लोकोत्तरिक भावावश्यक है अथवा इस आवश्यक के एकार्थरूप शब्द के नाना प्रकार के घोष व नाना प्रकार के व्यंजन हैं और चतुर्विध के सघ को अवश्य ही करणीय है क्योंकि ध्रुव और इन्द्रिया के निग्रह करने वाला विशुद्धि का मार्ग है सामायिकादि षट् अध्याय रूप एक वर्ग है न्यायकारी और मोक्षगामी मार्ग है साधु साध्वी और श्रावक श्राविकाओं को रात्रि और दिवस के अन्तर में अवश्य ही करणीय है, इसी लिये आवश्यक इसका नाम है और गुणों का आश्रयभूत है। इतिश्री अनुयो-गद्वार सूत्र में (शास्त्रमैत्रा) आवश्यक नाम प्रथमाधिकार समाप्त हुआ ॥

अथ श्रुतशब्द के निक्षेप चतुष्टय के विषय में कहते हैं.

मूल—सेकित सुय २ चउव्विह पएणत्तं तंजहा नामसुयं ठवणासुय दव्वसुय भावसुय नाम ठवणाओ भणिओ सेकित दव्वसुय ? २ दुविह पएणत्त तजहा आगमओय नो आगमओय सेकितं आगमओ दव्वसुय ? २ जस्सण सुएत्ति पय सिक्खियं ठिय मिय जिय परिजिय जीव णो अणुप्पेहाए कम्हा ? अ-णुवओगो दव्वमितिकट्टु णेगमस्सणं एगो अणुवउत्तो आग-मओ एगे दव्वसुय जाव जाणए अणुवउत्ते ण भवइ सेत आ-

गमओ दव्वसुय। सेकित नो आगमओ दव्वसुय ? २ तिविह पण्णत्त तजहा जाणगसरीरदव्वसुय भवियसरीरदव्वसुय जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्त दव्वसुय सेकिंत जाणग सरीरदव्वसुय ? २ सुयपदत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगयचुयच। विय चत्तदेह तचेव पुव्वभणिय भाणियव्व जाव सेत्त जाणगसरीर दव्वसुय। सेकित भवियसरीरदव्वसुय ? २ जे जीवे जोणीजम्मणनिक्खते जहा दव्वावस्सए तहेव भाणियव्व जाव सेत्त भवियसरीरदव्वसुयं सेकिंत जाणग सरीरभवियसरीरवइरित्त दव्वसुय २ त० पत्तयपोत्थयलिहियं।

पदार्थ-(सेकित सुय २ चउविह पन्नत्त तजहा) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! श्रुत कितने प्रकार से वर्णन किया है? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य! श्रुत चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (नामसुय ठवणासुय दव्वसुय भावसुय) नामश्रुत १ स्थापनाश्रुत २ द्रव्यश्रुत ३ और भावश्रुत ४ सो (नाम ठवणाओ भणिओ) नामश्रुत और स्थापना श्रुत का वर्णन पूर्ववत् है जैसे आवश्यक के स्वरूप में किया गया है उसी प्रकार जानना (सेकित दव्वसुय २ (प्रश्न) द्रव्य श्रुत के कितने भेद हैं (उत्तर) द्रव्य श्रुत (दुविह पन्नत्त तजहा) दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि (आगमओय नोआगमओय) आगम से द्रव्यश्रुत (सूत्र) और नोआगम से द्रव्यश्रुत (सेकित आगमओ दव्वसुय २) (प्रश्न) आगम से द्रव्य सूत्र (श्रुत) कैसे होता है (उत्तर) आगम से द्रव्यश्रुत इस प्रकार से है जैसे कि (जस्सण सुएत्ति पय सिक्खिय ठिय मिय जिय परिजिय जाव णो अणुप्पेहाए) जिसने श्रुत ऐसे पद सीख लिया है और हृदय में स्थापना कर लिया है और जिसको अक्षरों की मात्रा का भी बोध होगया है और पूछने पर अस्खलित है किन्तु पश्चात् अनुपूर्वी से भी स्पष्ट हो रहा है यावत् अनुप्रेक्षा से रहित होकर पठन किया जाता है अर्थात् पठन करते समय उपयोग पूर्वक पठन [illegible] जाता (कम्हा) किस लिये (अणुवओगो दव्वमितिकट्टु) [illegible] होने पर ही उसको द्रव्यश्रुत कहा जाता है सो (णाण आराहणाप्रमो [illegible] मोक्ष का मार्ग है मे

एगो आगमउ एग दव्वसुय) नैगमनय के मत से एक अनुपयुक्त आगम से एक द्रव्य श्रुत है (जाव जाणए अणुवउत्तेण भवइ) यावत् यदि जानता है तब अनुपयुक्त नहीं है। यदि अनुपयुक्त है तब जानता नहीं है जहा पर्यन्त यह पाठ है वहा पर्यन्त (सेतं आगमउ दव्वसुय) वही आगम से द्रव्य श्रुत है-(से किं त नो आगमउ दव्वसुय २) (प्रश्न) वह कौनसा है जो नो आगम से द्रव्य श्रुत माना जाता है (उत्तर) द्रव्य से नो आगम श्रुत (तिविह पन्नत्त तजहा) तीनों प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि:-(जाणयसरीरदव्वसुय) ज्ञ शरीर द्रव्य श्रुत १ (भविय शरीर दव्वसुय) भव्यशरीर द्रव्यश्रुत २ (जाणग सरीरभावियसरीरवइरित्त दव्वसुय) ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत (सेकित जाणगसरीरदव्वसुय २) शिष्यने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्! ज्ञ शरीर द्रव्यश्रुत किसको कहते हैं? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य! ज्ञ शरीर द्रव्यश्रुत उसका नाम है जैसे कि-(सुयपदत्थाहिगार जाणयस्स ज सरीरय ववगयचुयचवियचत्तदेह त चेव पुव्वमणिय भाणियव्व जावसेत्त जाणय सरीरदव्वसुय) श्रुतपद के अर्थाधिकार के ज्ञाता का जो शरीर है जिससे जीव च्युत होगया है और शरीर जीव से रहित है जैसे कि पूर्व वर्णन किया गया है उसी का नाम ज्ञ शरीर द्रव्यश्रुत है (से किंत भवियसरीरदव्वसुय २ जे जीवे जोणी जम्मण निक्खत्ते जहा दव्वावस्सय तहा भाणियव्व जावसेत्त भवियसरीर दव्वसुय) (प्रश्न) भव्यशरीर द्रव्यश्रुत किस का नाम है (उत्तर) जो जीव योनि के द्वारा जन्म लेकर श्रुतपद सीखेगा जैसे कि-पूर्व द्रव्यावश्यक का वर्णन किया गया है उसी प्रकार द्रव्यश्रुत का वर्णन जान लेना सो यही द्रव्यश्रुत है (सेकित जाणयसरीर भवियशरीरवइरित्त दव्वसुय त० पत्तयपोत्थय लिहिय) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्! ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत किस का नाम है? गुरु ने उत्तर दिया कि हे शिष्य! ज्ञ शरीर भव्य सरीर व्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत उसका नाम है जैसे कि-पत्र अथवा पुस्तक पर जो लिखा हुआ श्रुत है उसी का नाम ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत है। पुस्तक को द्रव्यश्रुत का पद इसलिये दिया गया है कि भावश्रुत का अधि' करण है।

भावार्थ -श्रुत शब्द के भी चार निक्षेप है जैसे कि-नाम १ स्थापना २ द्रव्य भाव ४ सो नाम और स्थापना का स्वरूप जैसे आवश्यक शब्द के

स्थान पर वर्णन किया गया है वैसे ही जानलेना किन्तु द्रव्यश्रुत के दो भेद हैं आगम से और नोआगम से आगम से पूर्ववत् कथन है जैसे कि-श्रुतशब्द को सर्व प्रकार से धारण किया हुआ है किन्तु अनुपयुक्त पूर्वक है। इसलिये नैगम और व्यवहार नय के मत से यावन्मात्र अनुपयोग पूर्वक पठन करने हों तावन्मात्र द्रव्यश्रुत हैं किन्तु संग्रह और ऋजुसूत्र नय के मत से यावन्मात्र पठन करते हों अनुपयोग पूर्वक होने से एक ही द्रव्यश्रुत है। अपितु तीनों शब्दादिक नयों के मत से अश्रुत है क्योंकि यदि जानता है तो अनुपयुक्त नहीं है। यदि अनुपयुक्त है तब जानता नहीं है। यही द्रव्य से आगम श्रुत है और नोआगम से द्रव्य श्रुत तीनों प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि ज्ञ शरीर द्रव्यश्रुत १ भव्य शरीर द्रव्यश्रुत २ ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत ३ सो प्रथम दोनों का स्वरूप तो पूर्ववत् ही है किन्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तश्रुत जो पत्र और पुस्तक पर लिखा हुआ हो तो उसका नाम भी श्रुत है। क्योंकि जो पुस्तकों पर सूत्र लिखे हुए हैं वे आगम से द्रव्य सूत्र हैं, क्रियादिरहित होने से उनकी द्रव्य संज्ञा होगई है ॥ अर्थात् प्राकृत में श्रुत शब्द तथा सूत्र शब्द इन दोनों के लिये केवल 'सुय" पद का प्रयोग किया जाता है। इसीलिये अब सूत्र "डोरा" शब्द के विषय में वर्णन किया जाता है।

मूल-अहवा जाणगभवियसरीरवइरित्तदव्वसुय पचविह पण्णत्त तजहा अडय वोडय कीडय वालय वक्कय सेकिंत अडय? २ हसगब्भाइ वोडय कप्पासमाइ कीडय पचविह पन्नत्त तजहा पट्टे मलए असुए चीणंसुए किमिरागे वालय पचविह पण्णत्त तजहा उरिणय उट्टिय मियलोमेय कोतवे किट्टिसे सेत्त वालय सेकिंत वक्कय सणमाइ सेत्त वक्कय सेत्त जाणगसरीर भवियसरीरवइरित्त दव्वसुय सेत्त नो आगमओ दव्वसुय सेत्त दव्वसुय।

पदार्थ -(अहवा) अथवा (जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्त दव्वसुय पचविह पण्णत्त तजहा) ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यसूत्र पांच प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि-अडय वोडय कीडय वालय वक्कयं) अंड से

उत्पन्न होने वाला सूत्रफल से उत्पन्न होने वाला कृमि से अथवा वाल और वल्कल से उत्पन्न होने वाला सूत्र जो हैं सो ये भी ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त सूत्र है। जहा पर कार्य और कारण के सम्बन्ध होने से ही इनको सूत्र शब्द दिया गया है सो (अदय हंसगम्भाए) अडक से हंसगर्भ प्रमुख जान लेना (बोंडय कप्पासमाइ) फल से अथवा वनस्पति प्रमुख से कर्पास का सूत्र २ (कीडय पचविहं पन्नत्त तजहा पट्टे १ मलए २ अंसुए ३ चीण सुय ४ किमि रागे ५) कीटक स जो सूत्र की उत्पत्ति है वे पाच प्रकार से कथन कीगई है जैसे कि-पट्ट १, मलयदेश का सूत्र २ अंशुक सूत्र ३ चीनांशुक सूत्र ४ कृमिराग सूत्र ५-यह पांच ही प्रकार के सूत्र की कृमियों से उत्पत्ति होती है इसीलिये इनको सूत्रपद दिया गया है। अपितु (वालय पचविह पन्नत्त तजहा) वालों से जो सूत्र की उत्पत्ति होती है वे भी ५ प्रकार से वर्णन कीगयी है जैसे कि-(उ-ण्णिए, उट्टिए, मियलोमए कुतवे किट्टिसे सेत्त वालय) उर्णिक के रोमों का सूत्र ऊन, उसी प्रकार ऊट के रोमों की ऊन और मृग के रोमों का सूत्र अथवा मृगवत् अन्य जीव विशेष के रोमों का सूत्र और ऊट के रोमों का सूत्र जो ऊनादि के वा नाना प्रकार के सयोग से सूत्र उत्पन्न होता है उसको किट्टस सूत्र कहते हैं॥ अथवा अश्वादि के रोमों से जो सूत्र उत्पन्न होता है उसको भी किट्टस सूत्र कहते हैं यही वालों का सूत्र है (सेकित वक्कय २) (प्रश्न) वल्कल (छाल्लि से कौनसा सूत्र उत्पन्न होता है) (उत्तर) (सणमाइ) सनि आदि यह वल्कल सूत्र है (सेत्त वक्कय) यही स्वरूप वल्कल सूत्र का है (सेत्त जाणग सरीरभवियसरीर वइरित्त दव्वसुय) अथानन्तर से यही ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यसूत्र है (सेत्त आगम उदव्वसुय सेत्त दव्वसुय) यही आगम से द्रव्य सूत्र है और इसी स्थान पर द्रव्यसूत्रका समास पूर्ण होगया है।

भावार्थः-द्रव्यसूत्र और भी प्रकार से कथन किया गया है जैसे कि-अडज१ बोंडज २ कीटज ३ वालज ४ वल्कलज ५ अडज हंसगर्भादि बोंडज कर्पासादि कीटज से पट्टज १ और मलय देशोद्भव २ अंशुय ३ चीणांशुक ४ कृमिराग ५, और वालज सूत्र यह हैं कि-ऊर्णादि का सूत्र १ उष्ट्रिकसूत्र २ मृगरोमसूत्र ३ उदारिक सूत्र ४ किट्टिस सूत्र और वल्कलज सूत्र सनि आदि है यह सर्व ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यसूत्र है और इसी स्थान पर नो आगम से द्रव्य सूत्र का समास पूर्ण होगया है॥

(अपितु सूत्र शब्द का वर्णन करते हुए जो सूत (दोरा) का वर्णन किया गया है वे प्राकृत की शैली के अनुसार किया गया है क्योंकि प्राकृत में सूत्र शब्द दोनों अर्थों में व्यवहृत है ॥

॥ अथ भावश्रुत विषय ॥

मूल–सेकिंत भावसुय २ दुविह पराणत्त तजहा आगमओ नोआगमओ सेकिंत आगमओभावसुय २जाणए उवउत्ते सेत्त आगमओ भावसुय सेकिंत नोआगमओ भावसुय २ नोआगमओभावसुय दुविह पन्नत्त तजहा लोइय लोगुत्तरियं सेकिंत लोइयनोआगमओभावसुय२ ज इमे अन्नाणीहिं मिच्छदिट्ठिहिं सच्छद बुद्धिमइ विकप्पिय तजहा भारह रामायण भीमासुरुक्ख कोडिल्लय घोडयमुह मगडभद्दियाओ कप्पासिय नागसुहम कणगसत्तरिवेसिय वइसेसिय बुद्धसासण काविल लोगायत सट्ठितत्त माढरपुराण वागरण नाडगाई अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारिय वेया सगोवगाण सेत्तनोआगमओ भावसुय ।

पदार्थ.–(सेकिंत भावसुय २ दुविह पण्णत्त तजहा) (प्रश्न) भावश्रुत कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) भावश्रुत दो प्रकार से कहा गया है जैसे कि–(आगमउय) आगम से और नो आगम से (सेकिंत आगमओ भावसुय २) (पूर्वपक्ष) आगम से भावश्रुत कौनसा है (उत्तरपक्ष) आगम से भावश्रुत उसका नाम है (जाणय उवउत्ते सेत्त आगमओ भावसुय) जो श्रुत शब्द के अर्थ को उपयोग पूर्वक जानता है वही आगम से भावश्रुत है (सेकिंत नोआगमओभावसुय २) (प्रश्न) नो आगम से भावश्रुत कितने प्रकार से है (उत्तर) नो आगम से भावश्रुत (दुविह पराणत्त तजहा) दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि–(लोइय लोगुत्तरिय) लौकिक और लोकोत्तरिक (सेकिंत लोइयनोआगमओभावसुय २) (पूर्वपक्ष) लौकिक नो आगम से भावश्रुत कौनसा है (उत्तरपक्ष) लौकिक नो आगम से भावश्रुत उस

का नाम है जैसे कि-(जइम अन्नाणीहिं मिच्छदिट्ठी हिसच्छंद बुद्धिमइ विगप्पिय तजहा) जो अज्ञानी तथा मिथ्यादृष्टियों न स्वच्छदता की बुद्धि से कल्पना किये जो ग्रन्थ हैं जैसे कि-(भारह) भारत (रामायण) रामायण २ (भीमासुरक्ख) भीमासुरुख ३ (कोडिल्लय) कौटिल्य (अर्थ) शास्त्र (घोडयमुह) घोड़ा मुख शास्त्र (सगडभद्दियाउ) शकटभद्रशास्त्र (कप्पासिय) कार्पासिक शास्त्र (नागसुहुम) नागसूक्ष्म (कणग सत्तरी) कनकसप्तति शास्त्र (वइसेसिय) वैशेषिक शास्त्र (बुद्धसासण) बुद्धशासन (काविल) कापिल (सारव्य) शास्त्र (लोगायत) लोकायित (चार्वाक) शास्त्र (सट्ठी तन्त) षष्ठितन्त्र शास्त्र (माढर पुराण) माढर पुराण (वागरण) व्याकरण शास्त्र (नाडगाई) नाटिकादि शास्त्र (अहवा) अथवा (बावत्तरिकलाओ) ७२ कलाओं से लकर (चत्तारि वेया सगोवगाण सत्त लोइयनोआगमओ भावसुय) चारवेद सांगोपांगयुक्त जैसे कि-शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ निरुक्त शास्त्र ५ ज्योति. ६ यह षट् शास्त्र वेदों के उपांग कहाते हैं यह सर्व लौकिक नोआगम से भावसूत्र हैं ॥

भावार्थ.--भावश्रुत दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि--आगम से और नो आगम से सो आगम से भावश्रुत उसका नाम है जो श्रुतशब्द के अर्थ को उपयोग पूर्वक जानता है वही आगम से भावश्रुत है अत नो आगम से भावश्रुत के दो भेद हैं लौकिक और लोकोत्तरिक, सो लौकिक उसका नाम है जो मिथ्यादृष्टि लोगों ने अज्ञानता के वश होकर नाना प्रकार के शास्त्र कल्पित कर लिये हैं और उन में पदार्थों का असत्य स्वरूप लिखा है वही नो आगम से लौकिक भावश्रुत हैं ॥

॥ अथ लोकोत्तरिक नो आगम से भावश्रुत विषय ॥

मूल-सेकिंतं लोगुत्तरियनोआगमओभावसुयं ? २ जंइयमं अरिहंतेहि भगवंतेहिं उप्पन्ननाणदसणधरेहिं तीय पडुप्पराण मणागयजाणएहिं तिलुकनिरक्खियवहियमहियपुइएहिं सव्वराणूहिं सव्वदरिसीहि अप्पडिहयवरनाणदसणधरेहिं पणीय दुवालसग गणिपिडग त आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपराणत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उ-

वासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पराहावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ य १२ सेत्त लोगुत्तरिय नोआगमओ भावसुय सेत्त नो आगमओ भावसुय सेत्त भावसुय तस्सण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा नामधेज्जा प० त० सुय १ सुत्त २ गथ ३ सिद्धत ४ सासण ५ आणती ६ वयण ७ उवएसो ८ पएणवने ९ आगमेय १० एगट्ठापज्जवा सुत्ते ११ सेत्तसुय ॥

पदार्थ -(सेकिंत लोगुत्तरिय नो आगमओ भावसुय २) (प्रश्न) वह कौनसा है जो लोकोत्तरिक नो आगम स भावश्रुत है (उत्तर) लोकोत्तरिक नो आगम से भावश्रुत उसका नाम है (जइमे अरिहतेहिं भगवतेहिं उप्पन्ननाण दसणधरेहिं तीय पडुप्पन्न मणागय जाणएहिं) जो यह अरिहतो करके भगवन्तो करके पुन' जिन्हों को ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होगया है सो ज्ञान दर्शन के धरने वालों ने तथा जो भूतकाल और वर्त्तमान और अनागत काल के ज्ञाताओं ने (तिलोक्कनिरक्खिय वहिय महिय पुइएहिं) और जिन्होंको देव मनुष्य भवनपत्यादि देवों ने आनन्दाश्रु पूर्णदृष्टि से अवलोकन किया है और जो गुण कीर्त्तनरूप भाव पूजा करके पूजित हैं तथा जो सर्वज्ञ पूज्य हैं उन्होंने अथवा जो (सव्वएणूहिं सव्वदरिसीहिं) सर्वज्ञ वा सर्वदर्शी हैं उन्होंने फिर (अप्पडिहयवरनाणदसणधरेहिं) अप्रतिहत (न हनन होने वाला) ज्ञान दर्शन के धरने वालों ने (पणीय) प्रतिपादन किया है (दुवालसग गणिपिडग तजहा) द्वादशाग की गणी जो आचार्यों की मञ्जूषा समान है जैसे कि-(आयारो सूयगडो ठाण समवाओ विवाहपएणत्ती नायाधम्मकहाओ वासगदसाओ अतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पराहावागरणाइ विवागसुय दिट्ठिवाओय सेत्त लोगुत्तरिय नो आगमओ भावसुय सेत नोआगमओ सुय सेत्त भावसुय) आचाराग सूत्र १ सूत्रकृताङ्ग सूत्र २ स्थानाङ्ग सूत्र ३ समवायाग सूत्र ४ विवाहप्रज्ञप्तिसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथाग सूत्र ६ उपासकदशांग सूत्र ७ अन्तकृतदशाग सूत्र ८ अनुत्तरोपपातिक सूत्र ९ प्रश्न व्याकरण सूत्र १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवाद सूत्र १२ यही लोकोत्तरिक नोआगम से भावश्रुत है और इसी स्थान पर नो आगम से भावश्रुत का संक्षेप से वर्णन पूर्ण किया गया है ॥

भावार्थः-लोकोत्तरिक नोआगम से भावश्रुत उसका नाम है जो अर्हन्त भगवन्तों ने जिन्होंको त्रिकाल ज्ञान उत्पन्न होरहा है और सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं त्रैलोक्य पूजनीय हैं सो उन्होंने द्वादशाग की वाणी प्रतिपादन की है अतः वही द्वादशाग लोकोत्तरिक नोआगम से भावश्रुत है। यहां पर नो शब्द देशनिषेध-वाची नहीं है (तस्सण इमे एगट्ठिया नाणा घोसा नाणा वजणा नामधेज्जा पन्नत्ता तजहा) उस भावश्रुत के यह एकार्थि नाम जिनके नाना प्रकार के घोष वा व्यञ्जन हैं निम्न प्रकार से कहे जाते हैं ॥

अथ भावश्रुत के पर्य्यायवाची नाम विषय ॥

मूल-सुय १ सुत्तं २ गंथ ३ सिद्धन्त ४ सासण ५ आणत्ति ६ वयण ७ उवएसो ८ पराणवणे ६ आगमेय १० एगट्ठा पज्ज-वासुत्ते सेत्तं सुय

पदार्थ.-भावश्रुत के निम्नलिखित दश नाम हैं जैसे कि-(सुय) गुरुमुख से श्रवण करने से इस भावसूत्र को श्रुत कहा जाता है १ (सुत्त) और अर्थ की सूचना होने से ही सूत्र भी इसी का नाम है २ (गथ) अतः नाना प्रकार की ग्रन्थना होने से ही इसे ग्रन्थ कहते हैं ३ (सिद्धन्त) जो स्वय प्रमाण में प्रतिष्ठित होकर ज्ञानस्वरूप को दिखलाता है उसी का नाम सिद्धान्त है ४ (सासण) और शिक्षाप्रद होने से ही शासन कहा जाता है ५ (आणत्ति) और मुक्ति के लिये आज्ञा करना इसी करके भावसूत्र का नाम भी आज्ञा है ६ (वयण) सत्यवक्ता होन से वचन भी इसी का नाम है ७ (उवएसो) प्राणीमात्र को सत्य में आरूढ करने से ही उपदेश भी इसी का नाम है ८ (पएणवण) सत्य कथन के प्रभाव से प्रज्ञापन नाम है ६ (आगमेय) और परम्परा से आरहा है इसी करके आगम कहा जाता है १० (एगट्ठे पज्जवा सुत्ते सेत्त सुय) सो यह एकार्थी शब्द पर्य्याय करके भावश्रुत के ही नाम हैं और इन्हीं का भावसूत्र कहा जाता है ॥

इति श्री अनुयोगद्वार सूत्र में द्वितीयाधिकार श्रुतरूप समाप्त हुआ ॥

भावार्थः-भावश्रुत के एकार्थी नाना प्रकार के घोष और व्यञ्जनों से युक्त दश नाम हैं जैसे कि-श्रुत १ सूत्र २ ग्रन्थ ३ सिद्धान्त ४ शासन ५

बचन ७ उपदेश ८ प्रज्ञापन ६ आगम १० सो यह पर्य्यायवाची दश नाम भावश्रुत के हैं और इसी स्थान पर अनुयोगद्वार सूत्र का द्वितीय अधिकार पूर्ण हो गया है। अब स्कन्ध का विवर्ण किया जाता है॥

॥ अथ स्कन्ध शब्द विषय ॥

मूल—सेकिंतं क्खधे ? २ चउव्विहे पराणत्ते तजहा नाम क्खधे ठवणाक्खधे दव्वक्खंधे भावक्खधे नाम ठवणाश्रो गयाश्रो सेकित दव्वक्खधे ? २ दुविहे पन्नते तजहा आगमओय नोआगमओ सेकिंत आगमओ दव्वक्खधे २ जस्सण क्खधेत्ति पय सिक्खियं, सेस जहा दव्वावस्सए तहा भाणियव्वा नवरं क्खधाभिलावो जाव सेकित जाणगसरीर भवियसरीरवइरित्ते दव्वक्खधे?२ तिविहे पराणत्ते तजहा सचित्ते अचित्ते मिस्सए।

पदार्थः—(सेकित खधे ? २ चउव्विहे पन्नत्ते तजहा नामक्खधे, ठवणा क्खधे, दव्वक्खधे, भावक्खधे नाम ठवणाश्रो गयाओ) (प्रश्न) स्कध शब्द कितने प्रकार से वर्णन किया गया है? (उत्तर) स्कंध शब्द भी चार प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि-नामस्कध १ स्थापनास्कध २ द्रव्यस्कध ३ और भावस्कध ४ सो नाम और स्थापना का विवण पूर्व आवश्यक के अधिकार में किया गया है (प्रश्न) द्रव्यस्कध के कितने भेद हैं ? (उत्तर) (सेकित दव्वक्खधे २ दुविहे पराणत्ते तजहा आगमओ नोआगमओय) द्रव्यस्कध भी दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि- आगम से और नोआगम से (सेकित आगमओ दव्वक्खधे २ जस्सण क्खन्धेति पय सिक्खिय सेस जहा दव्वावस्स ए तहा भाणियव्वा नवर क्खधाभिलावो) (प्रश्न) आगम से द्रव्यस्कध किस को कहते है ? (उत्तर) आगम से द्रव्यस्कध उस का नाम है जिसने स्कंध ऐसा पद सीख लिया है शेष विवर्ण जैसे द्रव्यावश्यक का है उसी प्रकार जानना चाहिये किन्तु यहा पर स्कध शब्द का आलापक ग्रहण करा। (जाव-सेकित जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्वक्खध तिविहे, पराणत्ते तजहा स-

चित्ते अचित्ते मिस्सए) यावत् ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यस्कंध तीनों प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि सचित्त १ अचित्त २ और मिश्र ३।

भावार्थः-स्कंध शब्द भी चारों प्रकार से वर्णित है जैसे कि-नामस्कंध १ स्थापनास्कंध २ द्रव्यस्कन्ध ३ भावस्कन्ध ४ सो नाम और स्थापना का विवर्ण पूर्व आवश्यक के अधिकार में किया गया है किन्तु द्रव्यस्कन्ध दो प्रकार से हैं आगम से और नोआगम से सो इन का भी विवर्ण पूर्व हो चुका है यावत् ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यस्कन्ध के भी तीन भेद हैं जैसे कि-सचित्त द्रव्यस्कन्ध अचित्त द्रव्यस्कन्ध २ मिश्र द्रव्यस्कन्ध ३। अब तीनों का विवरण सूत्रकार निम्न प्रकार से करते हैं।

मूल-सेकित सचित्ते दव्वक्खधे ? २ अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा हयक्खधे गयक्खधे नरक्खधे किनरक्खधे किंपुरिसक्खधे महोरगक्खधे गधव्वक्खधे उसभक्खधे सेत्त सचित्ते दव्वक्खधे।

पदार्थ-सेकित सचित्त दव्वक्खधे २ (प्रश्न) सचित्त द्रव्यस्कन्ध कौनसा है ? (उत्तर) सचित्त द्रव्यस्कन्ध (अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा) अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि (हयक्खन्धे १ गयक्खन्धे २ नरक्खन्धे ३ किंनरक्खन्धे ४ किंपुरिसक्खन्धे ५ महोरगक्खन्धे ६ गधवक्खन्धे ७ उसभक्खधे ८ सेत्त सचित्ते) अश्वस्कन्ध १ गजस्कन्ध २ मनुष्यस्कन्ध किनर (व्यंतर विशेष) स्कन्ध किंपुरुषस्कन्ध महोरगस्कन्ध गन्धर्वस्कन्ध यह व्यन्तर विशेष हैं वृषभस्कन्ध यह सब सचित्त द्रव्यस्कन्ध है।

भावार्थ-सचित्त द्रव्यस्कन्ध अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि वृषभ स्कन्ध अश्वस्कन्ध गजस्कन्ध नरस्कन्ध अथवा किंपुरुषादि देवों के स्कन्ध सचित्तस्कन्ध उसी का नाम है-जिस जीव के साथ स्कन्ध की उत्पत्ति हुई हो जैसे ऊपर लिखे हुए नरस्कंधादि हैं।

अथ अचित्त द्रव्यस्कन्ध विषय।

मूल-सेकित अचित्ते दव्वक्खधे ? २ अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा दुप्पयसिएक्खधे तिप्पएसिएक्खधे जावदसप्पएसिएक्खधे

सखेज्जपएसिएक्खंधे असखिज्जपयसिएक्खधे अणतपए सिएक्खंधे सेत्त अचित्ते दव्वक्खधे ।

पदार्थ-(सेकिंत आचित्ते दव्वक्खधे ? २ अणेगविहे पएणत्ते तजहा (प्रश्न) अचित्त द्रव्यस्कध कितने प्रकार से वर्णन किया गया है ? (उत्तर) आचित्त द्रव्यस्कध अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि (दुप्पएसिएक्खधे तिप्पए सिएक्खधे जावदसपएसिएक्खधे) द्विप्रदेशिक स्कध, त्रिप्रदेशिक स्कध यावत् दश प्रदेशिक स्कध (सखेज्जपएसिएक्खधे) सख्यात प्रदेशिक स्कध। असंख ज्जपएसिएक्खधे) असख्यातप्रदेशिकस्कध (अणतपएसिएक्खधे) अनत प्रदेशिक स्कध (सेत्त अचित्ते दव्वक्खधे) यही अचित्त द्रव्यस्कध है, अर्थात् आचित्त द्रव्यस्कध का समास पूर्ण हुआ।

भावार्थ-द्विप्रदेशिकादि से लेकर अनन्त प्रदेशिक पर्यंत अचित्त द्रव्यस्कंध होता है उसी का नाम अचित्त द्रव्यस्कध है क्योंकि परमाणुद्वय के एकत्व होने से द्विप्रदेशिक स्कध बन जाता है इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये।

अथ मिश्र द्रव्यस्कध विषय।

मूल-सेकिंत मीसए दव्वक्खधे ? २ अणेगविहे पन्नत्ते तंजहा सेणाए अग्गिमक्खधे सेणाए * मज्झिमक्खधे सेणाए पच्छिमक्खधे सेत्त मीसए दव्वक्खधे ॥

पदार्थ-(सेकिंत मीसए दव्वक्खधे ? २ अणेगविहे पएणत्ते तजहा) (प्रश्न) मिश्र द्रव्य स्कध किसका नाम है ? (उत्तर) मिश्र द्रव्यस्कध के अनेक भेद हैं जैसे कि (सेणाए अग्गिमक्खधे) सेना का अग्रिम स्कध है वा (सणाएमज्झिमक्खधे) सेना का मध्यम स्कध है (सेणाए पच्छिमक्खंधे) अथवा सेना का पश्चिम स्कध है (सेत्त मीसए दव्वक्खधे) इस प्रकार मिश्र द्रव्य स्कध का विवर्ण समाप्त हुआ।

भावार्थ-मिश्र द्रव्यस्कध उसका नाम है जिसमे सचित्त और अचित्त

---

* मध्यमकतमे द्वित्वस्य ॥ प्रा० ५४।० अ० ८ पा० १ सूत्र ४८ ॥ मध्यम शब्दक सम शब्दे च द्वित्वस्यात इत्व भवति ॥

दोनों ही सम्मिलित हो सो सेना का अग्रिम स्कंध कहने से सचित्त हस्त्यादि गर्भित हुए अचित्त खड्गादि शस्त्र लिये गए इसी प्रकार मध्यम वा पश्चिम भाग की भी संयोजना कर लेनी चाहिये इसी का नाम मिश्र द्रव्य स्कंध है।

अथ प्रकारान्तर विषय।

मूल—अहवा जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्व-क्खंधे तिविहे पण्णत्ते तंजहा कसिणक्खंधे अकसिणक्खंधे अणेगदवियक्खंधे सेकिंत कसिणक्खंधे ? २ सोचेव हयक्खंधे गयक्खंधे जाव उसभक्खंधे सेत्तं कसिणक्खंधे सेकिंत अक-सिणक्खंधे? २ सोचेव दुप्पएसियाइक्खंधे जाव अणंतपए सिएक्खंधे सेत्तं अकसिणक्खंधे सेकिंत अणेगदवियक्खंधे? २ तस्स चेव देसे अवचिए तस्स चेव देसे उवचिए सेत्तं अणेग दवियक्खंधे सेत्तं जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्वक्खंधे सेत्तं नोआगमओ दव्वक्खंधे सेत्तं दव्वक्खंधे ॥

पदार्थः-(अहवा) अथवा (जाणगसरीरभवियसरीरवईरित्ते दव्व-क्खंधे तिविहे पण्णत्ते तंजहा) ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्यस्कंध तीन प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (कसिणक्खंधे) सम्पूर्ण स्कंध (अकसिणक्खंधे) असम्पूर्ण स्कंध (अणेगदवियक्खंधे) अनेक द्रव्यस्कंध (सेकिंत कसिणक्खंधे? २ सोचेव हयक्खंधे गयक्खंधे जाव उसभक्खंधे सेत्तं क-सिणक्खंधे) (प्रश्न) सम्पूर्ण स्कंध किसे कहते हैं ? (उत्तर) सम्पूर्ण स्कंध उसी का नाम है जो पूर्व लिखा गया है जैसे कि अश्वस्कंध १ गजस्कंध २ यावत् वृषभस्कंध इत्यादि जान लेने क्योंकि वही सम्पूर्ण स्कंध है। उनमें किसी प्रकार की भी न्यूनता नहीं है (सेकिंत अकसिणक्खंधे) (प्रश्न) असम्पूर्ण स्कंध किसे कहते हैं ? (उत्तर) असम्पूर्ण स्कंध द्विप्रदेशिक से लेकर अनन्तप्रदेशी पर्यन्त जो स्कंध हैं उन्हीं का नाम असम्पूर्ण स्कंध है क्योंकि द्विप्रदेशिक से लेकर अनन्तप्रदेशिक पर्यन्त असम्पूर्ण स्कंध ही कहे जाते हैं (सेकिंत अणेगदवियक्खंधे? २) (प्रश्न) अनेक द्रव्यस्कंध किसे कहते

हैं (उत्तर) अनेक द्रव्यस्कंध उसका नाम है (तस्स चेव देसे अवचिए तस्स चेव देसे उवचिए सेत्त अणेगदवियक्खंधे) जो पूर्व अश्वादिस्कंधों का विवरण किया गया है उन्हीं स्कंधों का देशमात्र नखादिस्थान अचित्त जीव प्रदेशों से रहित होता है और हस्त उदरादि स्थान जीव प्रदेशों से सहित होते हैं इसी वास्ते उसे अनेक द्रव्यस्कंध कहते हैं क्योंकि एक शरीर में ही देशअपचित्त देशउपचित्त यह दोनों स्वरूप पाए जाते हैं और यही अनेक द्रव्य स्कंध का स्वरूप है (सेत्त जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्वक्खंधे सेत्त नोआगमओ दव्वक्खंधे सेत्त दव्वक्खंधे) अब वह ज्ञ शरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध का स्वरूप नोआगम से सम्पूर्ण हुआ क्योंकि इसी का नाम द्रव्यस्कंध है।

भावार्थः अथवा ज्ञ शरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यस्कंध तीनों प्रकार से अन्य भी कथन किया गया है जैसे कि सम्पूर्ण स्कंध १ असम्पूर्ण स्कंध २ अनेक द्रव्यस्कंध ३ सो सम्पूर्ण स्कंध पूर्ववत् अश्वादि के ही स्कंध हैं और असम्पूर्ण स्कंध द्विप्रदेशी आदिस्कंध से लेकर अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध पर्यन्त है किन्तु अनेक द्रव्यस्कन्ध उन्हीं का नाम है जो सचित्त स्कंध के विवर्ण में नखादि छोड़ दिये गये थे वही देश अपचित स्कंध हैं और करचरणादि देश उपचित स्कंध हैं सूत्र का आशय यह है कि जो जीव प्रदेशों से सहित स्कन्ध है वह उपचित के नाम से अनेक द्रव्य-स्कन्ध कहा जाता है जो हित हैं वह अपचित संज्ञा के नाम से उच्चारण किये जाते हैं सो इसी स्थान पर ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त नोआगम से द्रव्य-स्कन्ध का स्वरूप पूर्ण होगया है और उक्त लक्षणोंयुक्त को ही द्रव्यस्कंध कथन किया गया है ॥

॥ अथ भावस्कन्ध का व्याख्यान किया जाता है ॥

अथ भावस्कंध विषय।

मूल-सेकिंत भावक्खंधे? २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा आगमओय नोआगमओय सेकिंतं आगमओभावक्खंधे २ जाणए उवउत्त सेत्त आगमओभावक्खंधे।

पदार्थ—(सेकिंत भावक्खंधे २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा) (प्रश्न) भाव स्कन्ध किसे कहते हैं? (उत्तर) भावस्कन्ध दो प्रकार से वर्णन किया गया है

जैसे कि (आगमओ नोआगमओ) आगम से और नोआगम से (सेकिंत आगमओ भावक्खन्धे? २ जाणए उवउत्ते सेत्त आगमओ भावक्खन्धे) (प्रश्न) आगम से भावस्कन्ध किसे कहते हैं? (उत्तर) आगम से भावस्कन्ध उसका नाम है जो स्कन्ध शब्द के अर्थ को उपयोगपूर्वक जानता है यही आगम से भावस्कन्ध हैं।

भावार्थः–भावस्कध द्विप्रकार से प्रतिपादन किया गया है आगम से और नोआगम से, सो जो स्कध शब्द के अर्थ को उपयोगपूर्वक जानता है वही आगम से भावस्कध है।

अब नोआगम के विषय में कहते हैं।

मूल–सेकिंत नो आगमओ भावक्खधे ? २ एएसि चेव सामाइयमाइयाण छण्ह अज्झयणाण समुदयसमिइसमागमेण- निप्पएणे आवस्सयसुयक्खधे भावक्खधेत्ति लब्भइ सेत्त नो आगमओय भावक्खंधे सेत्त भावक्खधं सेत्त क्खधे तस्सण इमे एगट्ठिया नानाघोसा नामधेज्जा भवन्ति तजहा गण १ काए २ निकाए चिए ३ क्खधे ४ वग्गे ५ तहेव रासीय ६ पुजय ७ पिंडे ८ णिगरे ६ सघाए १० आउल ११ समूहे १२ सेत्तक्खन्धे। आवस्सयस्सणं इमे अत्थाहिगारा भवन्ति तजहा सावज्जजोग विरइ उकित्तण गुणवओय पडिवत्ती खलियस्स णिदणावण- तिगिच्छ गुणधारणा चेव १ आवस्सयस्सण एसो पिंड- त्थो वरिणओ समासेण एत्तो एकेक्क पुण अज्झयण कित्तइ- स्सामि· तसामाइय चउवीसत्थओ वदणय पडिक्कमण काउस- ग्गो पच्चक्खाण तत्थ पढम अज्झयण सामाइयं तस्सण इमे चत्तारि अणुओगदाराणि भवति तंजहा उवक्कमे निक्खेवे अणुगमे नए।

पदार्थः–(सेकिंत नो आगमओ भावक्खन्धे? २) (प्रश्न) नो आगम से

भावस्कन्ध किसे कहते हैं ? (उत्तर) नो आगम से भावस्कन्ध निम्न प्रकार से है (एएसिं चेव सामाइयमाइयाण) यह निश्चय ही सामायिकादि से लेकर (छण्ह अज्झयणाण समुदय (षट् अध्ययनों का जो समुदाय रूप है वह (समिइसमागमेण निप्पएणे आवस्सयसुयक्खन्धे भावक्खन्धेत्ति लब्भइ) सर्व परस्पर एकत्र करने पर आवश्यक सूत्र का भाव स्कन्ध निष्पन्न होता है और जो आवश्यक सूत्र क्रियायुक्त किया जाता है (भावक्खन्धेचिलब्भइ) वहीं आवश्यक सूत्र का भावस्कन्ध कहा जाता है अर्थात् जो भाव स्कन्धरूप आवश्यक सूत्र है वह अवश्यही करणीय है क्योंकि- भावस्कन्ध यहीं प्राप्त होता है (सेत्तनोआगमओय भावक्खन्धे) अब नोआगम से भावस्कन्ध का स्वरूप सम्पूर्ण हुआ क्योंकि (सेत्त भावक्खन्धे सेत्तक्खन्धे) यही भावस्कन्ध है और यही स्कन्ध का स्वरूप है (तस्सण) उस स्कन्ध के (इमे एगट्ठिया नाणा घोसा नामधेज्जा भवति तजहा) यह एकार्थिक और नाना प्रकार के घोषयुक्त नाम है जैसे कि अपेक्षा गण भी इस का नाम है १ (काय) षट्काय के समान काय भी है और । निकाय चिय) शरीर के तुल्य निकाय भी कहते हैं (क्खधे) द्विप्रदेशिक आदिस्कध के समान स्कन्ध है । (वग्गे) गो वर्ग के समान वर्ग (तहेव रासीय) उसी प्रकार शाल्यादि के तुल्य राशि (पुजय) धानों के समान पुज और गुड़ादि के समान (पिंड) पिंड भी कहते हैं द्रव्य के तुल्य (णिगरे) निकर भी इस का नाम है (सघाय) सघ मिलने के समान सघात भी इसी का नाम है और महानगर के समान (आउल) आकुल भी कहते हैं और (समूह) समूह भी इसे कहा जाता है (सेत्तक्खधे) यही स्कध का स्वरूप है और (आवस्सयस्सए इमे अत्थाहिगारा भवति तजहा) आवश्यक के यह आर्थाधिकार होते हैं जैसे कि (सावज्जजोग विरइ) सावद्य योग की विरति रूप प्रथमाध्याय है (उक्कित्तण) गुण कीर्तन रूप द्वितीयाध्याय है (गुणवओयपडिवत्ती) गुणयुक्त की वंदना रूप तृतीयाध्याय है (खलियस्स निंदणा वण तिगिच्छ गुणधारणा चेव) अतिचारों की निवृत्ति रूप चतुर्थ अध्याय है और व्रण की औषधि रूप पचमाध्याय है मूल गुण और उत्तर गुण के धारण करने रूप छठा अध्याय है (आवस्सयस्स एसो) यह आवश्यक रूप (पिंडत्थो वण्णिओ समासेण) स्कंध का सक्षेप से अर्थ वर्णन किया है किन्तु (एतो एक्कक्क पुण) स्कध के एक (अज्झयण्ण कित्तइस्सामि तजहा) अध्ययन

की व्याख्या करूंगा जैसे कि-(सामाइय) सामायिक (चउवीसत्थय चतुर्विंशति स्तव (वंदयण) वंदना (पडिक्कमण) प्रतिक्रमण (काउसग्गो) कायोत्सर्ग (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (तत्थ पढम अज्झयण सामाइयतस्सण इमे चत्तारि अणुओगदाराणि भवन्ति तंजहा-) उन षट् अध्यायों में से प्रथम अध्ययन सामायिक है उसके यह चार अनुयोगद्वार होते हैं जैसे कि-(उवकमे) जो वस्तु अत्यन्त दूर हो उसको निकट करना उसी का नाम उपक्रम है और फिर उसको (निक्खेवे) नामादि निक्षेपों में स्थापन करना उसका नाम निक्षेप है फिर सूत्रानुकूल कार्य करने का नाम (अणुगमे) अनुगम है अपितु (नय) अनन्त धर्मयुक्त वस्तुओं में से एक अंश को लेकर वस्तु के स्वरूप को वर्णन करना उसका नाम नय है उसी नय के द्वारा सदसद् का ज्ञान भली प्रकार से हो जाता है।

भावार्थ-नो आगम से भावरूप आवश्यक सूत्र के षट् अध्यायों का ही नाम है और यही भावस्कंध है इन्ही के नानाप्रकार के पर्यायुक्त द्वादश नाम हैं जैसे कि- गण १ काय २ निकाय ३ स्कंध ४ वर्ग ५ राशि ६ पुंज ७ पिंड ८ निकर ९ संघ १० आकुल ११ और समूह १२ फिर आवश्यक सूत्र के षट् अर्थाधिकार रूप अध्याय है जैसे कि-सामायिक १ चतुर्विंशति स्तव २ वंदना ३ प्रतिक्रमण ४ कायोत्सर्ग ५ और प्रत्याख्यान ६ अपितु अतिचार रूप व्रण की औषधि रूप पंचम अध्याय है औषधि भक्षण रूप छठा अध्याय है फिर जैसे महा नगर के चार मुख्य द्वार होते हैं उसी प्रकार इस सामायिक रूप प्रथम अध्याय के चार अनुयोगद्वार हैं जैसे कि उपक्रम जो वस्तु दूर हो उसको निकट करना १ फिर उसके निक्षेप करके अनुगम करना फिर नय द्वारा व्याख्या करनी यह चार अनुयोग द्वारा पदार्थों की व्याख्या अवश्य ही करणीय है। इसी कारण से प्रथम उपक्रम का वर्णन किया जाता है।

मूल-सेकिंत्त उवक्कमे ? २ छव्विहे पन्नत्ते तंजहा नामोवक्कमे १ ठवणोवक्कमे २ दव्वोवक्कमे ३ खेत्तोवक्कमे ४ कालोवक्कमे ५ भावोवक्कमे ६ नामठवणाओ गयाओ सेकिंत्तं दव्वोवक्कमे ? २ दुविहे पएणत्ते तंजहा आगमओय नोआगमओय जाव जाणगसरीरभवियसरीरवइ रित्तेदव्वोवक्कमे तिविहे पएणत्ते

तजहा सचित्ते अचित्ते मीसए। सेकिंत सचित्ते दव्वोवक्कमे?२ तिविहे पराणत्ते तजहा दुपए चउप्पए अपए एक्केक्क पुण दुविहे पराणत्ते तजहा परिक्कमेय वत्थुविणासेय।

पदार्थ –(सेकिंत उवक्कमे?२ छव्विहे पराणत्ते तजहा) (प्रश्न) उपक्रम कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) उपक्रम षट् प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि–(नामोवक्कमे १ ठवणोवक्कमे २ दव्वोवक्कमे ३ खेत्तोवक्कमे ४ कालोवक्कमे ५ भावोवक्कमे ६ नामठवणाओ गयाओ) नामोपक्रम १ स्थापनोपक्रम २ द्रव्योपक्रम ३ क्षेत्रोपक्रम ४ कालोपक्रम ५ भावोपक्रम ६ सो नाम और स्थापना का विवर्ण पूर्व किया गया है (सेकिंत दव्वोवक्कमे २) (प्रश्न) द्रव्योपक्रम किसे कहते हैं (उत्तर) द्रव्योपक्रम (दुविहे पराणत्ते तजहा) दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि–(आगमओय नोआगमओय) आगम से और नोआगम से (जाव जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तेदव्वोवक्कमे तिविहे पराणत्ते तजहा) यावत् ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्योपक्रम तीनों प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि–(सचित्ते अचित्ते मीसए) सचित्त अचित्त और मिश्र (सेकिंत सचित्तोवक्कमे २ तिविहे पराणत्ते तजहा दुप्पए चउप्पए अपए) (प्रश्न) सचित्तद्रव्योपक्रम कितने प्रकार से कथन किया गया है? (उत्तर) सचित्तद्रव्योपक्रम तीनों प्रकार से कथन किया गया है, जैसे कि–द्विपदोपक्रम १ चतुष्पदोपक्रम २ अपदोपक्रम ३ फिर (एक्केक्क पुण दुविहे पराणत्ते तजहा परिकम्म वत्थुविणासय) एक एक के दो दो भेद कहे गये हैं जैसे कि–परिक्रम जो वस्तु का मूल गुण है, उसका प्रकाश करना तिसको परिक्रम कहते हैं किन्तु जो किसी वस्तु द्वारा किसी पदार्थ के गुण का नाश किया जाय उसे वस्तुविनाश कहते हैं सो उक्त तीनों भंगों के साथ इन दोनों गुणों की भी प्राप्ति है।

भावार्थ–उपक्रम का षट् प्रकार से विवेचन किया गया है जैसे कि–नामोपक्रम, १ स्थापनोपक्रम, २ द्रव्योपक्रम, ३ क्षेत्रोपक्रम ४ कालोपक्रम, ५ भावोपक्रम, ६ नाम और स्थापना का विवर्ण तो पहिले किया जा चुका है किन्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्योपक्रम के तीन भेद हैं जैसे कि सचित्त अचित्त और मिश्र फिर सचित्त द्रव्योपक्रम तीनों प्रकार से वर्णित है,

द्विपदोपक्रम चतुष्पदोपक्रम अपदोपक्रम, अपितु इनके भी दो दो भेद हैं परिक्रम और वस्तुविनाश वस्तु के मूल गुण का प्रकाश करना उपक्रम कहाता है यदि मूल गुण का नाश किया जाय उसे वस्तुविनाशद्रव्यउपक्रम कहते हैं।

अथ द्विपदोपक्रम विषय ।

सेकिंतं दुप्पए उवक्कमे? २ दुप्पयाण नडाण नट्टाण जल्लाण मल्लाणं मुट्ठियाण वेलवगाण कहगाणं पवगाण लासगाणं आइक्खगाण लखाण मंखाणं तूणइल्लाण तुववीणियाण कावोयाण मागहाणं सेत्तं दुप्पए उवक्कमे ।

पदार्थ-(प्रश्न) द्विपदोपक्रम किसे कहते हैं ? (उत्तर) द्विपदोपक्रम निम्न प्रकार से है जैसे कि (नडाण) नचाने वाले (नट्टाण) नृत्य करने वाले (जल्लाण) राज्यस्तुति करने वाले (मल्लाण) मुष्टि आदि युद्ध करने वाले (मुट्ठियाण) केवल मुष्टि ही युद्ध करने वाले (वेलवगाण) नाना प्रकार के वेष करने (विदूषक) वाले (कहगाण) कथा करने वाले (पवगाण) गर्तादि वा नद्यादि के तैरने वाले (लासगाण) रास खेलने वाले अथवा जयध्वनि करने वाले (आइक्खगाण) दैवज्ञ आकाश विद्या के कथक (लखाण) वंशाग्र में नृत्य करने वाले (मखाण) चित्र पट्ट के द्वारा आजीविका करने वाले (तूणइल्लाण) वादित्र के बजाने वाले (तुववीणियाण) अलाबु की वीणा बजाने वाले (कावोयाण) कावड (कउड) के वहन वाले (मागहाण) मांगलिक वचन के बोलने वाले इनको यदि घृतादि द्वारा उपचित किया जाय उसे परिकर्म द्रव्योपक्रम कहते हैं यदि खड्गादि द्वारा विनाश किया जाय उसका नाम वस्तुविनाशद्रव्योपक्रम है क्योंकि बलादि वृद्धि के लिये प्रथम उपक्रम है इससे विपरीत द्वितीय उपक्रम है (सत्त दुप्पय उवक्कम) अथ द्विपद उपक्रम का स्वरूप इसी स्थान पर पूर्ण हुआ इसी का नाम द्विपद सचित्तोपक्रम है ।

भावार्थ-द्विपद उपक्रम उसे कहते हैं कि जो नृत्यादि क्रिया करने वाले हैं उनको बलादि की वृद्धि के वास्ते प्रथम उपक्रम होता है और नाश के लिये द्वितीय उपक्रम होता है सो इसका नाम द्विपद सचित्तोपक्रम है ।

अथ चतुष्पदोपक्रम विषय ।

सेकिंतं चउप्पए उवकमे २ चउप्पयाण आसाण हत्थीण इच्चादि सेत्त चउप्पए उवकमे ।

पदार्थ-(सेकित चउप्पय उवकमे ? २) (प्रश्न) चतुष्पदोपक्रम कौनसा है ? (उत्तर) चतुष्पदोपक्रम इस प्रकार से है जैसे कि–अश्वों को हस्तियों को इत्यादि चार पाद वाले जीवों का परिक्रम वा वस्तु विनाश के द्वारा शिक्षित वा नाश करना उसी का नाम चतुष्पदोपक्रम है ।

भावार्थ-चार पैर वाले जीवों को परिक्रम अथवा वस्तु विनाश द्रव्योपक्रम इनके द्वारा शिक्षितादि कर्म करने उसी को चतुष्पदोपक्रम अथवा द्रव्योपक्रम कहते हैं ।

अथ अपद विषय ।

सेकित्त अपए उवकमे ? २ अपयाण अंबाण अंबाडगाण इच्चाइ सेत्त अपए उवकमे सेत्त सचित्तदव्वोवकमे ।

पदार्थ-(सेकित अपए उवकमे ? २) (प्रश्न) अपद उपक्रम किसे कहते हैं ? (उत्तर) अपद उपक्रम उसे कहते हैं जैसे कि (अपयाण अंबाण अंबाड गाण इच्चाइ सेत्त अपए उवकमे) आम्रफल अंबाडग फल इत्यादि फलों को परिक्रमद्रव्योपक्रम के द्वारा पारिपक्व किया जाता है तथा वस्तु विनाश द्रव्योपक्रम के द्वारा इन फलों को अन्य प्रकार से किया जाय जैसे आम्रफल पाक वा कुष्माण्ड फल पाक बदाम पाक अथवा अन्य प्रकार से औषधियों का बनाना उस का नाम परिक्रम वस्तु विनाश है और इसी का नाम (सेत्त सचित्तदव्वोवक मे) सचित्त द्रव्योपक्रम है ।

भावार्थ-अपदसचित्तद्रव्योपक्रम उसका नाम है जो फलादि का परिक्रम और वस्तु विनाश के द्वारा बनाया जाए जैसे कि–फलादि के गुण दीर्घ करने तथा उनके पाकादि बनाने उसी का नाम अपदसचित्तद्रव्योपक्रम है । यह सचित्तद्रव्योपक्रम का स्वरूप पूर्ण हुआ ।

अथ अचित्त द्रव्योपक्रम विषय ।

से किंत अचित्तदव्वोवकमे ? २ खडाईणं गुडाईणं मच्छडीण सेत्तं अचितदव्वोवकमे ।

पदार्थ-(प्रश्न) अचित्तद्रव्योपक्रम किसे कहते हैं? (उत्तर) अचित द्रव्योपक्रम उसका नाम है (खडाइण गुडाईण मच्छडीण) जो खाड, गुड़, मत्सडी (मिसरी) आदि पदार्थों को परिक्रम और वस्तुविनाश के द्वारा, पवित्र व नाश किया जाय उसी का नाम (सेत्त अचितदव्वावकम) अचित्त द्रव्योपक्रम है ।

भावार्थ-अचित्तद्रव्योपक्रम उसका नाम है जो खाड, गुड, मत्सडी आदि पदार्थों को परिक्रम द्रव्योपक्रम द्वारा सिद्ध किया जाता है और वस्तुविनाश के द्वारा उसके रसादि का नाश किया जाता है उसी का नाम अचित्त द्रव्योपक्रम है ।

अथ मिश्र द्रव्योपक्रम विषय ।

सेकिंतं मीसए दव्वोवकमे ? २ सेचेव थासग मंडीए अस्साई सेत्त मीसए दव्वोवकमे ।

पदार्थ-(सेकित मीसएदव्वोवकमे) (प्रश्न) मिश्र द्रव्योपक्रम किसे कहते हैं (उत्तर) (सोचेवथासग मडीए अस्साइ सेत्त मीसए दव्वोवकमे) वही अश्वादि जो भूषणों से अलकृत होरहे हैं उनका उपक्रम द्वारा वा वस्तु विनाश द्वारा शिक्षित करना वा नाना प्रकार से दीप्त वा नाशकारी कार्य करने उन्हीं का नाम मिश्र द्रव्योपक्रम है सो इसी स्थान पर उक्त समास की पूर्ति है (सेत्त जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्वोवकमे सेत्त नो आगमओ दव्वोवकमे सेत्त दव्वोवकमे) यही ज्ञसरीरभव्यसरीरव्यतिरिक्त द्रव्योपक्रम है अब नो आगम से द्रव्योपक्रम का स्वरूप सम्पूर्ण हुआ ।

भावार्थ-मिश्र द्रव्योपक्रम उसे कहते हैं जो वही पूर्वोक्त अश्वादि आभूषणों से अलकृत हैं उनको परिक्रम द्रव्योपक्रम द्वारा वा वस्तु विनाश द्वारा शिक्षित करना अथवा विनाश करना सो इसी का नाम ज्ञसरीरभव्यसरीर व्यतिरिक्त नो आगम से द्रव्योपक्रम होता है और यही द्रव्योपक्रम है ।

॥ अथ क्षेत्रोपक्रम विषय ॥

सेकिंत खेत्तोवक्कमे? २ जरण हलकुलियाइहिं खेत्ताइ उव-कमिज्जति इच्चाइ सेत्त खेत्तोवक्कमे सेकिंत कालोवक्कमे? २ जण-नालियाईहिं कालस्सोवक्कमण कीरइ सेत्त कालोवक्कमे सेकिंत भावोवक्कमे? दुविहे पराणत्ते तंजहा आगमओय नोआगमओय आगमओ जाणए उवउत्ते नोआगमओ दुविहे पन्नत्ते तं-जहा पसत्थेय अप्पसत्थेय तत्थ अपसत्थे डोडिणिगणिया अमच्चाइण तत्थ पसत्थे गुरुमाइणं सेत्तनोआगमओ भावो-वक्कमे सेत्त भावोवक्कमे सेत्त उवक्कमे ।

पदार्थ—सेकिंत खेत्तोवक्कमे २) (प्रश्न) क्षेत्रोपक्रम किसे कहते हैं (उत्तर) (जण्ण हलकुलियाईहिं खेत्ताई ओवक्कमिज्जति इच्चाई) जो (ण इति व्याक्या लंकारे) हल और कुलिकर के क्षेत्रादि का उपक्रम वा वस्तुविनाश उपक्रम किया जाता है उसको क्षेत्रोपक्रम कहते हैं क्योंकि यह-सामान्य वचन है अपितु क्षेत्राधार वस्तु के ही उपक्रम होते हैं, क्षेत्र तो अमूर्ति पदार्थ है क्षेत्राधार भूमि और भूमि आधार तृणादि की उत्पत्ति वा विनाश करने को ही क्षेत्रोपक्रम कहा जाता है (सेत्त खेत्तोवक्कमे) अब क्षेत्रोपक्रम के पीछे कालोपक्रम का विवर्ण किया जाता है (सेकिंत कालोवक्कमे २) [illegible] किसे कहते हैं (उत्तर) जण्ण [illegible] कालस्सोवक्क [illegible] सेत्त कालोवक्कमे) जो घटी ([illegible] कालस्स उप [illegible] है उसे कालोपक्रम कहते हैं [illegible] आदि [illegible] और नक्ष [illegible] काल [illegible] जैसे [illegible] से [illegible] दुर्भिक्ष [illegible] विनाश [illegible] में

(

है उसे आगम से भावोपक्रम कहते हैं द्वितीय नोआगम से किन्तु (नोआगमओ दुविहे पएणत्ते तजहा) नो आगम से भाव उपक्रम द्वि प्रकार से है जैस कि- (पसत्थेय अपसत्थेय) सुन्दर भाव उपक्रम और अप्रशस्त भाव उपक्रम अर्थात् असुन्दर भाव उपक्रम अपितु (तत्थ अप्पसत्थे डोढिाणगणिया अमचाइया) इन दोनों में जा अप्रशस्त भाव उपक्रम है उसकी सिद्धि के लिये सूत्रकार ने तीन उदाहरण दिये हैं जो अनुक्रमता से निम्नलिखितानुसार प्रथम उदाहरण ब्राह्मणी का है द्वितीय वेश्या का तृतीय मन्त्री का। सो प्रथम ब्राह्मणी के उदा हरण का स्वरूप लिखा जाता है।

अमुक नगर में एक ब्राह्मणी की ३ पुत्रियां थी जो कि उसके हृदय को रंजित व हर्षित रखती थी ब्राह्मणी का भी उन पर असीम अनुराग था, वह सदैव चाहती थी कि क्षण मात्र भी इनका मेरे से वियोग न हो तथा इन को क्षण मात्र भी दु ख न हो, समय बीतने पर वह तीनों कन्या यौवनावस्था को प्राप्त हुई तथा लावण्यवती भी होगई, अतः माताने उन तीनों का विवाह कर दिया परन्तु मनमें सोचने लगी की कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिस से इन के पति इन पर सदैव प्रसन्न रहें और इनके सुख में कोई विघ्न नहा, ऐसा विचार कर पुत्रियों को विदा करने के समय बडी लड़की को कहीं एकान्त ले जा कर उसे कहन लगी की हे पुत्रीके! जब तेरा पति वासभवन में मिलने के लिये आवे तब तूने उसका कोई अपराध जानकर उस के मस्तक पर पाद प्रहार करना, ऐसा करने पर जा बर्ताव वह तेरे साथ करे वह मेरे से आकर कहना मेरी इस शिक्षा को अवश्यमेव याद रखना, अनन्तर कन्या के वैसे ही करने पर उस का पति स्नेह से आर्द्र हृदय होकर तथा उस के अपराध को गुण समझ कर उस से बोला कि प्रियतम! तेरे चरण रूपी कमल अतीव सुकोमल हैं और मेरा शिर पत्थर की ना अति कठिन है इसलिये तेरे पाद में पीड़ा तो नहीं हुई इस प्रकार अनेक विनय युक्त वचनों से अपनी पत्नी का शीतल करके प्रसन्न किया और उस के पांव को मर्दन किया। अनन्तर कन्याने आकर समस्त वर्ताव आद्योपान्त माता से कह सुनाया वह भी ऐसे जामातृ पर अति प्रसन्न हुई और अपनी पुत्री से बोली कि हे पुत्रिके! तेरे घर में तेरी अखंड आज्ञा चलेगी क्योंकि तेरे पति आज्ञानुकूल कार्य करने वाला है इसलिये तू निर्भय होकर अपने घर में यथेष्ट सुखों को भोग तुझे कोई डर नहीं। इसी

प्रकार ब्राह्मणी ने दूसरी कन्या को भी करने की शिक्षा दी इसलिये उसने भी अपने पति के मस्तक में पादप्रहार किया-तब उस का पति कुछ समय क्रोध करके तथा श्रेष्ठ पुरुषों को स्त्रियों से ऐसा अपमानित करवाना योग्य नहीं है, विचार कर फिर प्रसन्न हो गया और कन्या को कुछ भी न कहा।

दूसरी कन्याने भी अपनी माता के पास आकर वैसे ही सारा वृत्तान्त कहा माता आनन्दित होकर दूसरी पुत्री से बोली कि हे कन्ये ! तू भी मन माना सुख भोग जैसे तेरी इच्छा हो वैसे अपने घर में वर्तांव कर तुझ कोई भय नहीं है क्योंकि तेरा पति क्षणमात्र क्रोधित होकर प्रसन्न हो जायगा, इसी प्रकार ब्राह्मणी ने तीसरी कन्या को कहा उसने भी वैसे ही अपनी माता की आज्ञा पालन की अर्थात् जब उसका पति मिलने के लिये उसके आवास भवन में आया तो तीसरी कन्याने (अर्थात् उस की पत्नी ने) उसके मस्तक में पाद प्रहार किया, तब उसका पति विचार ने लगा कि पुरुषों को स्त्रियों से ऐसी अधोगति नहीं करवाना चाहिये अथवा कुलीन स्त्रियों का यह कर्तव्य नहीं है। पति की सेवा करनी ही नारियों का धर्म है नकि ऐसा अपमान करना इस प्रकार सोच कर उसने उसको (तीसरी कन्या को) बहुत मारा अंत में स्वगृह से बाहर कर दिया, सो वह भी अपने पति से निकाली हुई अपने घर आई तथा अपनी माता को सर्व वृत्तान्त कह सुनाया माता सुनकर बड़ी दुखित हुई और बोली कि हे पुत्रीके ! तेरा पति दुराराध्य होगा तू जितनी भी उसकी विनय भक्ति तथा उसकी आज्ञानुसार वर्तांव करेगी उतना ही तुझे सुख होगा यदि उस से पराङ्मुख होगी तो कदापि तुझे आनन्द और सुख प्राप्त न होगा इसलिये तुझे योग्य है कि सदैव काल अपने पति की आज्ञानुकूल वर्तांव करें ऐसी शिक्षा दे चुकने के पश्चात् ब्राह्मणी ने अपने जामाता को बुला कर बहुत नम्रता से तथा अनेक शीतलोपचारोंसे उसे सतुष्ट व शान्त कर दिया और पुन वह स्व पत्नी पर प्रसन्न होगया ब्राह्मणी ने एव (इस प्रकार) तीनों जामाताओं की परीक्षा कर ली सो इसी का नाम अप्रशस्त भावोपक्रम है।

अथ द्वितीय उदाहरण।

किसी नगर में ६४ चौसठ कला प्रवीण एक वेश्या व सती थी उसने दूसरों का अभिप्राय जानने के लिये एक रतिभवन बनवाया जिस की सर्व

तों पर, राजपुत्र, सेठ, सेनापति, आदि नगर में प्रधान पुरुषों के अत्युत्तम और मनोहर चित्रों से चित्र कर्म बनवाया अनन्तर राज पुत्रादि जो कोई भी हां आता है वह वहां अपने सुन्दर चित्र को देख कर अतीव आल्हादित होकर उसकी (गणिका की) प्रशंसा करता था इस प्रकार उसने (वेश्याने) नगर के प्रायः सर्व बड़े बड़े पुरुषों को अपने पर मोहित कर लिया और यथेष्ट धन उनसे लूटकर सुखों को भोगने लगी इस प्रकार से अप्रशस्त भावोपक्रम का द्वितीय उदाहरण है।

॥ अथ तृतीय उदाहरण ॥

किसी नगरी में कोई राजा राज्य करता था जो कि राजा के समस्त गुणों से युक्त प्रजा को पुत्रवत् समझने वाला और न्यायविक्रम अनुकम्पादि गुणों से भूषित था पुण्य योग से जिसका मन्त्री भी महाबुद्धि शील और अत्यन्त विचक्षण था किम्बहुना, राज्य में धुरा के समान होने से राज का सारा भार उसपर ही निर्भर था, राजा भी अन्तःकरण से उसपर मुग्ध तथा मोहित था अतएवः सर्व कार्यों में राजा उसकी सम्मति लेता था। एक समय राजा और मन्त्री दोनों ही घोड़े पर आरूढ़ होकर वन क्रीडा के लिये गये, तब मार्ग में चलते हुए राजा के घोड़े ने कहीं सखिलप्रदेश में प्रस्रवण (मूत्र) करने लगा अपितु वहां पर पृथिवी सुन्दर होने से वह मूत्र चिर के पश्चात् शुष्क होता था, इसलिये राजा ने ऐसी दशा देखकर विचार किया कि—यदि यहां पर तडाग बनवाया जावे तो वह बहुत सुन्दर चिरस्थायी होवे इस प्रकार चिरकाल तक उस अचंभे को देखता रहा किन्तु मन्त्री को कुछ भी न बोलकर चल दिया और भ्रमण करके अन्त में वे अपने २ स्थान पर आगये परन्तु इंगिताकार ज्ञान की कुशलता से मन्त्री झट ताड़गया कि राजा के मन में यह परिणाम उत्पन्न हुए थे उसके अनुसार राजा के न कहने पर भी विचारशील मन्त्री ने स्वअनुमति से वहां पर एक परम और मनोज्ञ सरोवर बनवाया और उसके चारों ओर नाना प्रकार के वृक्ष तथा अनेक प्रकार के पुष्प देने वाली लताए लगवाई जो कि षट् ऋतुओं के पुष्पों को देती थी इस प्रकार वह थोड़े काल में ही एक परम सुन्दर आराम (बाग) बन गया तथा उनकी शोभा ने उस सरोवर को महापद्म शतपत्र सहस्रपत्र आदि कमलों से उसका पानी सुगन्धि वाला तथा अतीव शीतल होगया। अन्यथा फिर कभी राजा मन्त्री के साथ वनक्रीड़ा के

लिये गया और जाते हुए राजा ने उसी सरोवर को देखा और आश्चर्य से मन्त्री को बोला कि हे मन्त्रिन् यह सुन्दर और रमणीय सरोवर किसने बनवाया है ! प्रधान ने उत्तर दिया कि हे देव ! यह आपका ही ताल है और आपने ही इसे स्वयं बनवाया था ऐसा उत्तर सुनकर राजा अत्यन्त आश्चर्य युक्त होकर बोला कि हे प्रधान ! इसके बनाने के लिये मैंने कब आज्ञा दी ? तब मन्त्री ने सविस्तर आद्योपान्त वह वृत्तान्त राजा को सुनाया सुनने के अनन्तर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और प्रधान की अति स्तुति करके कहने लगा कि हे मन्त्रिन् तू महा कुशाग्र बुद्धि तथा अत्यन्त मन के भावों का (इंगिताकार का परिचित है) इस प्रकार राजा ने मन्त्री की बहुतसी स्तुति करी और उसका वेतन अधिक कर दिया इसको सांसारिक फल होने से अप्रशस्त भावोपक्रम कहते हैं, अब प्रशस्त भावोपक्रम दो प्रकार से कथन करते हैं, एक तो गुरु सम्बन्धी, द्वितीय शास्त्र सम्बन्धी । प्रथम गुरु सम्बन्धी का विवर्ण किया जाता है (तत्थपसत्थो गुरु माइण) (तत्र) प्रथम प्रशस्त भावोपक्रम गुर्वादि का इंगितानुसार वर्ताव करना जैसे कि श्रुताध्ययन के समय गुर्वादि के भावोंकी परीक्षा करना तथा उनके इंगिताकार द्वारा जानकर, अन्न पानी वस्त्रादि द्वारा उनकी सेवा करनी सो इसे प्रशस्त भावोपक्रम कहते हैं (सेत्त नो आगम उभावोवक्कमे सेत्त भावोवक्कमे सेत्त उवक्कमे) अथ इसकी पूर्ति करते हैं कि यही नो आगम से भावोपक्रम है और इसे भावोपक्रम कहते हैं इतना ही स्वरूप भावोपक्रम का है अथ द्वितीय शास्त्रीय उपक्रम का स्वरूप वर्णन किया जाता है ।

भावार्थ-क्षेत्र सम्बन्धी उपक्रम उसे कहते हैं जो हल और कुलिकादि द्वारा क्षेत्र का माप किया जाए, कालोपक्रम उसका नाम है जो घटिकादि द्वारा काल मान किया जाता है किन्तु भावोपक्रम दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है एक नो आगम रूप से दूसरे नोआगम से, आगम से जो सामायिकादि भावों को उपयोग पूर्वक जानता है उसे आगम से भावोपक्रम कहते हैं अतः नोआगम से जो भावोपक्रम है वह भी दो प्रकार से है एक तो प्रशस्त, द्वितीय अप्रशस्त, अपितु अप्रशस्त भावोपक्रम में पूर्वोक्त तीनों उदाहरण हैं प्रशस्त में केवल गुर्वादि के आग सेष्टानुकूल कार्य करने उसी का नाम प्रशस्त भावोपक्रम है और इसे ही भावोपक्रम कहते हैं किन्तु एक भावोपक्रम शास्त्रीय भी होता है जो निम्न लिखितानुसार है ।

॥ अथ पुन: भावोपक्रम विषय ॥

अहवा ओवक्कमे छविहे पराणत्ते तंजहा आणुपुव्वी १ नाम २ पमाण ३ वत्तवया ४ अत्थाहिगारे ५ समवयारे ६ सेकिंतं आणुपुव्वी २ दसविहा पन्नत्ता तजहा नामाणु पुव्वी १ ठवणाणुपुव्वी २ दव्वणुपुव्वी ३ खेत्ताणुपुव्वी ४ कालाणुपुव्वी ५ ओक्कितणाणुपुव्वी ६ गणणाणुपुव्वी ७ संठाणाणुपुव्वी ८ सामायारीयाणुपुव्वी ९ भावाणुपुव्वी १० सेकिंतं नामाणुपुव्वी नामठ्ठवणाओ गयाओ तहेव दव्वाणुपुव्वी जाव सेकिंत जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी २ दुविहा पराणत्ता तजहा ओवणिहिया अणो वणिहियाय तत्थण जासाओ वणिहिया साठ्ठप्पातत्थण जासा अणो वणिहिया सादुविहा पन्नत्ता तजहा नेगम ववहाराण सगाहस्सय सेकित नेगम ववहाराणं अणो वणिहिया दव्वाणुपुव्वी २ पचविहा पं० तं० अट्ठपयपरूवणया १ भगसमुक्कितणया २ भंगोव दसणया ३ समोयारे ४ अणुगमे ५ ॥

पदार्थ:--(अहवा) अथवा (ओवक्कमे छविहे पन्नत्ते तजहा) शास्त्रीय उपक्रम षट् प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (आणुपुव्वी) आनुपूर्वी अनुक्रम १ (नाम) नाम उपक्रम २ (पमाण) प्रमाण उपक्रम ३ (वत्तवया) वक्तव्यता उपक्रम ४ (अत्थाहिगार) अर्थाधिकार उपक्रम ५ (समवयारे) समवतार उपक्रम ६ (सेकित आणुपुव्वी २ दसविहा पन्नत्ता तजहा) (प्रश्न) आनुपूर्वी कितने प्रकार से वर्णन कीगई है (उत्तर) दश प्रकार से जैसे कि-- (नामाणुपुव्वीठवणाणु पुव्वी दव्वाणुपुव्वी खेत्ताणुपुव्वी कालाणुपुव्वी) नामानुपूर्वी १ स्थापनानुपूर्वी २ द्रव्यानुपूर्वी ३ क्षेत्रानुपूर्वी ४ कालानुपूर्वी ५ (उक्कित्तणाणुपुव्वी गणणाणुपुव्वी सठाणाणुपुव्वी सामायारीयाणुपुव्वी भावाणु पुव्वी) उत्कीर्तानुपूर्वी ६ गणनानुपूर्वी ७ संस्थानानुपूर्वी ८ सामा-

चारी आनुपूर्वी ६ भावानुपूर्वी १० (सेकिंत नामाणु पुव्वी नामठवणा उगयाउ तहेव दव्वाणुपुव्वी जाव सेकिंत जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्ता दव्वाणु पुव्वी २दुविहा प० त० उवणिहिया अणो वणिहिया य)(प्रश्न) नामानु पूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) नाम स्थापना का पूर्व विवर्ण किया गया है उसी प्रकार जानना यावत् द्रव्यानुपूर्वी पर्यन्त (प्रश्न) ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी कितने प्रकार से कहीगई है ।

(उत्तर) ज्ञशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी दो प्रकार से प्रति पादन की गई है जैसे कि उपनिधि की और अनुपनिधि की क्योंकि उप नाम समीप का है निधि नाम निधान तुल्य जो होवे उसे कहिये निधिसो जो समीप की हुई वस्तुओं का स्वरूप पूर्ण प्रकार से करा जाए उसे उपनिधि कहते हैं तथा प्रयोजनार्थे इकण् प्रत्यायान्त करने से उपनिधि की ऐसे शब्द बन जाता है सो अनुक्रमता पूर्वक पदार्थों को स्थापन करना उसे " उपनिधिकी " कहते हैं अथवा वस्तुओं के स्वरूप को जो निक्षेप करे उसी का नाम " उपनिधिकी " है अपितु इससे विपरीत अर्थ देने वालों को अनु- पनिधि की कहते हैं सो यहा पर वर्तमान प्रयोजन सामायिकाधिकार है इस लिये इन्हीं की आवश्यक्ता है । अब इन्हीं का विस्तार फिर करते हैं (तत्थण जामा उवणि हिया साठप्पा) उनमें प्रथम जो उपनिधिकी है वह इस समय स्थापनीय है क्योंकि इसका स्वरूप अल्प है और अनुक्रमता पूर्वक है इसलिये सुगम भी है किन्तु (तत्थण जासा अणे वाणि हिया सादुविहा प० त० नेगम ववहाराण सग्गहस्सय) जो अनुपनिधिकी है वह भी दो प्रकार से प्रतिपादन की गयी है जैसे कि–नैगम व्यवहारनय के मत से और संग्रहनय के मत से (सेकिंत नगम ववहाराणं अणो वणिया दव्वाणु पुव्वी २ पच विहा प० त० (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत स अनुपनिधि की कितने प्रकार से वर्णन की गयी है (उत्तर) पाच प्रकार से जैसे कि (अट्ठपयपरूवणया) प्र थम भेद अर्थ पद या कथन रूप है जैसे कि–अर्थ परमाणु आदि की प्ररूपणा (भ- गसमुक्कित्तणया) द्वितीय भेद अर्थ पद के भगो को उत्कीर्तन रूप है अर्थात् जो भगवनए हुए है उन को प्रकाश करना (समो यारे) चतुर्थ भेद आनुपूर्वी आदि द्रव्यों को यथा स्थान समवतार करना जैसे कि–जो द्रव्य जिस जाति का हो उसी जाति में स्थापन करना (अणुगमे) पचम भेद अनुयाग द्वार करके वि चार करना उसे अनुगम कहते हैं अब सत्रकार पृथक् २ स्वरूप वर्णन करते हैं ।

भावार्थ-शास्त्रीय उपक्रम षट् प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि—आनुपूर्वी १ नाम २ प्रमाण ३ वक्तव्यता ४ अर्थाधिकार ५ समवतार ६ आनुपूर्वी दश प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि नामानुपूर्वी, स्थापनानुपूर्वी, द्रव्यानुपूर्वी, क्षेत्रानुपूर्वी, कालानुपूर्वी, उत्कीर्तनानुपूर्वी, गणनानुपूर्वी, संस्थानुपूर्वी, समाचारानुपूर्वी, भावानुपूर्वी, सो नाम और स्थापना का विवर्ण आवश्यक के अधिकार में किया जा चुका है, द्रव्यानुपूर्वी भी पूर्ववत् ही जान लेनी किंतु ज्ञशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी दो प्रकार से कथन कीगई है जैसे कि उपनिधिकी और अनुपनिधिकी, उपनिधिकी उसे कहते हैं जो अनुक्रमता पूर्वक वस्तुओं को स्थापनकरे. इस से विपरीत कानाम अनुपनिधि की है इस का विस्तार महान् है इसीलिये प्रथम अनुपनिधिकी का विस्तार किया जाता है वह दो प्रकार से वर्णित हैं नैगम व्यवहार और संग्रहनय के मत से अतः नैगम और व्यवहार नयके मत से उस के पांच भेद हैं जैसे कि अर्थपद प्ररूपणा भंग समुत्कीर्तनता भंगोपदर्शनता, समवतार, और अनुगम अब सूत्रकार इन्हीं का पृथक् २ ता से विवेचन करते हैं।

मूल—सेकिंत नेगम ववहाराणं अट्टपयपरूव णयातिपयसिए आणुपुव्वी चउपयसिए आणुपुव्वी जावदस पएसिए आणुपुव्वी संखेज्ज पएसिए आणुपुव्वी असखेज्ज पएसिए आणुपुव्वी अणत पएसिए आणुपुव्वी परमाणु पोग्गले अणाणु पुव्वी दुप्पएसिए अवत्तव्वए तिपएसिएया आणुपुव्वीओ जाव अणत पएसियाओ आणुपुव्वीओ परमाणु पोग्गला अणाणु पुव्वीओ दुपए सियइं अवत्तव्वयाइ सेत्त णेगम ववहाराणं अट्टपय परूवणया एयाएणे गम ववहाराण अट्टपयपरूवणयाए किं पयोयण एयाएणं णेगम ववहाराणं अट्टपय परूवण याए भंग समुक्त्तिणया कीरइ।

पदार्थ-(सेकिंत नेगम ववहाराण अट्टपय परूवणया) (प्रश्न) वह कौन है नैगम और व्यवहार नय के मतसे जो अर्थ पद की प्ररूपणा की जाती है (उत्तर)

नैगम और व्यवहार नय के मत से जो अर्थपद प्ररूपणा है वे निम्न लिखितानुसार है (तिपए सिए आणुपुव्विए चउपएसिए आणुपुव्वी जावदस पएसिए आणु पुव्वी सखेज्ज पएसिए आणुपुव्वी असखेज्ज पएसिए आणुपुव्वी अणत पएसिए आणु पुव्वी) जो तीन प्रादेशिक स्कंध चतुर प्रादेशिक स्कंध यावत् दश प्रादेशिक स्कंध इसी प्रकार सख्यात प्रादेशिक स्कन्ध असख्यात प्रादेशिक स्कन्ध अनंत प्रदेशिक स्कन्ध हैं वे सर्व आनुपूर्वी में ही गर्भित हैं इन्हें ही आनुपूर्वी कहते हैं (किन्तु परमाणु पोगले अनाणुपुव्वी) केवल परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी द्रव्य है क्योंकि अनानुपूर्वी नञ् समासान्त पद है न आनुपूर्वी यस्यासा अनानुपूर्वी और (दु-पएसिए अवत्तव्वए) द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्य होता है ये सर्व एक वच-नान्त शब्द हैं इसीलिये एक वचनान्त ३ भग हुए अब बहुवचनान्त तीन भग दिखलाते हैं (तिपयसिएया आणुपुव्वीओ जाव अणतपय सियाओ आ-णुपुव्वीओ) बहुत से ३ प्रदेशिक स्कन्ध से लेकर अनन्त प्रदेशि पर्यन्त पुद्गल द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्य में कहे जाते हैं और (परमाणु पोगला अणाणु पुव्वीओ) बहुत से परमाणु पुद्गल द्रव्य अनानुपूर्वी में होते हैं अर्थात् अनन्त परमाणु पुद्गल जो प्रत्येक २ फिरते हैं व सर्व अनानुपूर्वी द्रव्य में हैं किन्तु (दुपएसियाइ अवत्तव्वयाइ) अनेक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्य हैं (क्योंकि त्रिप्रदेशी से लेकर अनन्त प्रदेशी पर्यन्त द्रव्य आनुपूर्वी है एक परमाणु पुद्ग-लता प्रत्येक २ अनन्त परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी में हैं अपितु द्विप्रदेशी स्कन्ध अवक्तव्य सज्ञक होता है (सेतणेगमववहाराण) यही नैगम और व्यवहार नय के मत से (अट्ठपयपरूवणया) अर्थ पद की पदप्ररूपणा है उक्त पद् भग दोनों नयों के मत से सिद्ध है शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्! (एयाएणेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणया एकिंपयोयण) इन नैगम और व्य-वहार नय के मत से जो अर्थपद की पदप्ररूपणा कीगई है उसका क्या प्रयो-जन है क्योंकि-सूत्रों में निरर्थक वचन कोई भी नहीं होता फिर इन के कथन करने का प्रयोजन क्या है इस प्रकार से शिष्य के पूछने पर गुरु कहने लगे कि (एयाएणेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणाए भगसमुक्कित्तणयाकीरइ) इन नैगम और व्यवहार नय के मत से जो अर्थपद की प्ररूपणा कीगई है वे सर्व भगों की समुत्कीर्तन वास्ते ही है अर्थात् इनके द्वारा भगों की समुत्कीतनता कीजाती है अत. इन दोनों नयों के द्वारा भग बनाए जाते है।

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मत में अर्थपद की प्ररूपणा इस प्रकार से की गई है कि त्रिप्रदेशी से लेकर अनंत प्रदेशी पर्यन्त द्रव्याआनुपूर्वी में गिना जाता है और परमाणु पुद्गल अणाणु पूर्वी में होता है द्विप्रदेशी स्कंध अवक्तव्य संज्ञक कहलाता है एक वचनान्त से और बहुवचनान्त से इनके पद् भंग बन जाते हैं जैसे कि-नीचे पढ़िये.

आनु पूर्वी	अनानु पूर्वी	अवक्तव्य
१	१	१
३	३	३

और इन्हीं नैगम और व्यवहार नयके मत से भंगो की समुत्कीर्तनता की जाती है अर्थात् उक्त नयों द्वारा ही भंग बनाए जाते हैं। अब भंगो का स्वरूप निम्न प्रकार से सूत्रकार प्रति पादन करते हैं.

॥ अथ भंग समुत्कीर्तन विषय ॥

सेकित्त णेगम ववहाराण भंगसमुक्कित्तणया २ अत्थिआणुपुव्वी १ अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३ अत्थि आणुपुव्वी ३ ४ अत्थि अणाणुपुव्वी ३ ५ अत्थि अवत्तव्व याइ ६ अहवा अत्थि आणु पुव्वीय। अणाणु पुव्वी ७ अहवा अत्थि आणु पुव्वीय अणाणु ‍ुव्वीय ८ अहवा अत्थि आणु पुव्वीओय अणाणुपुव्वीय९अहवा अत्थि आणु पुव्वीओय अणाणु पुव्वीओय १० अहवा अत्थि आणु पुव्वीय अवत्तव्वएय ११ अहवा अत्थि आणु पुव्वीय अवत्त याइंच १२ अहवा अत्थि आणु पुव्वीओय अवत्तव्वएय १३ अहवा अत्थि आणुपुव्वी-

ओय अवत्तव्वयाइच १४ अहवा अत्थि अणाणु पुव्वीय अ-वत्तव्वएय १५ अहवा अत्थि अणाणु पुव्वीय अवत्तव्वयाइच १६ अहवा अत्थि अणाणु पुव्वीओय अवत्तव्वएय १७ अहवा अत्थि अणाणु पुव्वीओय अवत्तव्वयाइच १८ अहवा अत्थि आणु पुव्वीय अणाणु पुव्वीय अवत्तव्वएय १६ अहवा अत्थि आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीय अवत्तव्वयाइच २० अहवा अत्थि आणुपुव्वीय अणाणु पुव्वीओय अवत्तव्वएय २१ अहवा अत्थि आणु पुव्वीय अणाणु पुव्वीओय अवत्तव्वयाइच २२ अहवा आणु पुव्वीओय अणाणु पुव्वीय अवत्तव्वएय २३ अहवा अत्थिआणु पुव्वीओय अणाणु पुव्वीय अवत्तव्वयाइच २४ अहवा अत्थिआणु पुव्वीउय अणाणु पुव्वीओय अवत्तव्व एय २५ अहवा अत्थिआणु पुव्वीओय अणाणुपुव्वीओय अवत्त व्वयाइच २६ एए अट्ठभगाएव सव्वे विछव्वी सभगा सेत्तणे गम ववहाराण-भग समुकित्तणया एयाएणणे गमववहाराण भग समुकित्तणयाएकिं पओयण एयाएणे गमववहाराण भग समुकित्तणयाए भगो वदसणया कीरइ।

पदार्थ-(सेकिंतणे गमववहाराण भगसमुकित्तणया २) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन्! नैगम और व्यवहार नय के मत से भग समुत्कीर्तन कैसे होता है गुरु कहते हैं कि भो शिष्य! नैगम और व्यवहार नय के मत से षट् विंशति भगों की समुत्कीर्तना होती है जो निम्नलिखितानुसार है (अत्थि-आणुपुव्वी) जो अर्थपदका पूर्व विवर्ण किया गया है उस द्रव्य से २६ भग होते हैं जैसे कि-एक पुद्गल आनुपूर्वी का है १ (अत्थि अणाणु पुव्वी) एक अनानुपूर्वी का है २ (अत्थि अवत्तव्वए) एक अवक्तव्य का है ३ फिर (अत्थि आणुपुव्वीओ) बहुत से पुद्गल आनुपूर्वी के है ४ अत्थि अणाणुपुव्वीओ बहुत से पुद्गल अनानुपूर्वी के हैं ५ (अत्थि अवत्तव्वयाइ) बहुत से पुद्गल

अवक्तव्य के हैं ६ अब द्विकसयोगी १२ भंग कहते हैं जैसे कि-(अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य) अथवा एक आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी है ७ (अहवा अत्थि आणुपुव्वी अणाणुपुव्वीओ य) अथवा एक आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी है ८ (अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीय) अथवा बहुत से आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी है ९ (अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य) अथवा बहुत से आनुपूर्वी और बहुत से अनानुपूर्वी द्रव्य हैं १० किन्तु जो ऊपर आनुपूर्वी अनानुपूर्वी लिखी है वे इन के अन्तर्गत द्रव्य ही समझने चाहिए-अब आनुपूर्वी और अवक्तव्य के साथ चार भंग बनते हैं जो निम्न लिखितानुसार हैं (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अव्वत्तए य) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य और एक ही अवक्तव्य द्रव्य है ११ (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च) अथवा एक आनूपुर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य हैं १२ (अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य) अथवा बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य और एक अवक्तव्य द्रव्य है (अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च) अथवा बहुत से आनुपूर्वी बहुत से ही अवक्तव्य द्रव्य १४ यह चतुर्भंग और आनुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य के साथ हुए अब अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य के साथ चार भंग दिखलाए जाते हैं (अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीय अवत्तव्वए य) अथवा एक अनानुपूर्वी गतद्रव्य और एक अवक्तव्य द्रव्य है १५ (अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीय अवत्तव्वयाइं च) अथवा एक अनानुपूर्वी बहुत से अवक्तव्य द्रव्य हैं १६ (अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य) अथवा बहुत से अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य १७ (अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च) अथवा बहुत से अनानुपूर्वी द्रव्य और बहुत से अवक्तव्य १८ यह सर्व प्रश्न करने से द्विकसयोगी द्वादश भंग हुए अब त्रिकसयोगी ८ भंग का विवर्ण करते हैं (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य) अथवा एक द्रव्य आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य १९ (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य एक अनानुपूर्वी द्रव्य बहुत से अवक्तव्य द्रव्य २० (अहवा अत्थि आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीओय अवत्तव्वए य) अथवा एक आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य २१ (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य और बहुत से अनानुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य २२ (अहवा अत्थि आणु

पुव्वीओ य आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य) अथवा बहुत से आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी और एक अवक्तव्य २३ अहवा (अत्थि आणुपुव्विओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइ च) अथवा बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य एक अनानुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य २४ (अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य) अथवा बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य बहुतसे अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य २५ (अहवा आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइ च) अथवा बहुत से आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य २६ (एए अट्ठ भगा) यह त्रिकसयोगी अष्टभग है (एव सव्वे विछव्वीस भगा) अपि शब्द समुच्चयार्थ में है सो यह सर्व एकत्रित करने से षट् विंशति भग होत है जैसे कि–एक वचनात और बहुवचनान्त षट् भग हैं द्विकसयोगी द्वादश भग हैं तीन सयोगी ८ भग हैं सो (सेत्त णेगम ववहाराण भग समुक्कितणया) यह नैगम और व्यवहार नय क मत से भग समुत्कीर्तना पूर्ण हुई–ऐसे कहन पर शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! (एयाएण णेगमववहाराण भग समुक्कितणयाए किं पयोयण) इन नैगम और व्यवहार नय के मत से जो भग समुत्कीर्तनता है सो इस के करने से क्या प्रयोजन है–ऐसे शिष्य के प्रश्न को सुन कर गुरु कहने लगे कि (एयाए णेगमववहाराण भग समुक्कित्तणयाए भगोवदसणया कीरइ) भो शिष्य ! इस नैगम और व्यवहार नय के मत से और भगो को समुत्कीर्तनता से भगोपदर्शनता की जाती है अर्थात् प्रथम भग बनाकर फिर दिखलाए जाते हैं।

भावार्थः–नैगम और व्यवहार नय के मत से भगों की समुत्कीर्तनता की जाती है (गणना) सो सर्व भग षट् विंशति होते हैं जैसे कि–आनुपूर्वी द्रव्य १ अनानुपूर्वी द्रव्य २ अवक्तव्य द्रव्य यह तीन प्रकार के द्रव्य हैं इनके एक वचनान्त और बहुवचनान्त करने से षट् भग होजाते हैं और द्विसयोगी द्वादश भग है तीन सयोगी अष्ट भग हैं सर्व एकत्रित करने से षट् विंशति भग बन जाते है इनकी पूर्ण गणना पदार्थ में लिखी गइ है इसी का नाम समुत्कीर्तनता है अब सूत्रकार भगोपदर्शनता क विषय में कहत हैं।

मूल–सेकित णेगमववहाराण भगोवदसणया ? २ तिपए सिए आणुपुव्वी १ परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी दुपएसिए

अवत्तव्वए३ अहवा तिपएसिया आनुपुव्वीओ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ दुपएसिया अवत्तव्वयाइ ३ अहवा तिपए-सिया परमाणुपुग्गले अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ १ चउ-भंगो अहवा दुपएसिए तिपएसिए अ अणाणुपुव्वीअ अ अव-त्तव्वए य चउभंगो अहवा दुपएसिया य परमाणुपोग्गले अ अवत्तव्वए य आणुपुव्वी अ ३ अहवा तिपयेसिया य परमाणु पोग्गला य आणुपुव्वीओ अणाणुपुव्वीओ य ४ अहवा तिपए सिए अ दुपएसिए अ आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ५ अहवा तिपएसिए यदुपएसिआए आणुपुव्वी अवत्तव्वयाइ च ६ अहवा तिपएसिआ य आणुपुव्वी अ अवत्तव्वगाइंच ७ अहवा तिपए सिया दुपएसिए अ आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वएअ अहवा तिपए सिआय दुपेयसिए अ आणु० अवत्तव्वए अ अहवा तिपएसि-आ य दुपएसिआ य आणु० अवत्तव्वयाइ च ८ अहवा परमाणु पोग्गले अ दुपएसिए अणाणु० अवत्तव्व ए अ९ अहवा परमाणु पोग्गले अ दुपएसिआ एअणाणु अवत्तव्वयाइ च १० अहवा परमाणु पोग्गला य दुपएसिए अ अणाणु० अवत्तव्वए अ ११ अहवा परमाणुपोग्गला य दुपएसिआ य अणाणु० अवत्तव्व-याइ च १२ अहवा तिपएसिए अ परमाणु पोग्गल अदुपए सिए अ आणुपुव्वी अ अणाणु० अवत्तव्वए अ १ अहवा तिपए सिए अ परमाणुपोग्गले य दुपएसिआ य आणुपुव्वी अ अव-त्तव्वयाइ च २ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपुग्गले य दुपए सिआ य आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तए अ ३ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गला य दुपएसिए अ आणुपुव्वीय

अणाणुपुव्वीओ अवत्तव्वए अ ४ अहवा तिपएसिए अ परमाणु पोग्गला य दुपएसिआ य आणुपुव्वी अ आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ५ अहवा तिपएसिआ यपरमाणु पोग्गले अ दुपएसिए अ आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइ च ६ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गले अ दुपएसिआ य आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अवत्तव्वयाइ च ७ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोग्गले अ ए दुपएसिआ य आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अवत्तव्वयाइ च ८ से त्त नेगम ववहाराण भंगोवदसणया ॥

पदार्थ-(सेकिंत नेगमववहाराण भगोवदसणया २) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से भगोपदर्शनता किस प्रकार से होती है (उत्तर) नैगम और व्यवहारनय के मत से भगोपदर्शनता और भगो का अर्थ निम्न प्रकार से है जैसे कि (तिपएसिए आणुपुव्वी) तीन प्रदेशिक स्कध को आनुपूर्वी द्रव्य कहते हैं १ (परमाणपोग्गले अणाणुपुव्वी) परमाणु पुद्गल को अनानानुपूर्वी द्रव्य कहते हैं २ (दुप्पएसिए अवत्तव्वएय) द्विप्रदेशिक स्कध को अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं यह तीन भग एक वचनान्त हैं, अब तीनों भग बहु वचनान्त कहते हैं यथा (तिपएसियाइ आणुपुव्वीउ) बहुत से तीन प्रदेशिक स्कध अनुपूर्वी द्रव्य हैं ४ (परमाणु पोग्गला अणाणुपुव्वीउ) बहुत से परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी द्रव्य हैं ५ (दुप्पएसियाइअवत्तव्वयाइ) बहुत से द्वि प्रदेशिक स्कध अवक्तव्य हैं ६ यह तीन भग बहुवचनान्त हैं एव सर्व पद भगहुए अथ द्विकसयोगी द्वादश भगो का विवर्ण किया जाता है (अहवातिपएसिए य परमाणुपोग्गले आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीए य) अथवा एक तीन प्रदेशिकस्कध और एक परमाणु पुद्गल यदि एकत्व होजाय तो तब उनको आनुपूर्वी और अनानुपूर्वी कहते है ७ इसी प्रकार अग्रे भी सभावना करलेनी चाहिये (अहवा तिपएसिय परमाणुपोग्गलाय आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीउ य) अथवा एक तीन प्रदेशिक स्कध और बहुत से परमाणु पुद्गल उनको आनुपूर्वी और बहुत से अनानुपूर्वी द्रव्य कहते हैं ८ (अहवा तिपएसियाय परमाणुपोग्गले आणुपुव्वीव अ

अणाणुपुव्वी य) अथवा बहुत से तीन प्रदेशिक स्कंध और एक परमाणु पुद्गल उनको बहुत से आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी द्रव्य कहते हैं ६ (अहवा तिपए सियाय परमाणु पोग्गलाण आणुपुव्वीउ अणाणुपुव्वीउ य) अथवा बहुत से तीन प्रदेशिक स्कंध और बहुत से परमाणु पुद्गल उनको बहुत से आनुपूर्वी और बहुत से अनानुपूर्वी द्रव्य कहते हैं १० (अहवा तिपएसियाय दुपएसिय आणुपुव्वीउ अवत्तव्वय) अथवा बहुत से ३ प्रदेशिक स्कंध एक द्वि प्रदेशिक स्कंध उसे बहुत से आनुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं ११ (अहवा तिपए सिय दुप्पएसिया य आणुपुव्वीय अवत्तव्वयाइ च) अथवा एक ३ प्रदेशिक स्कंध बहुत से द्वि प्रदेशिक स्कंध उन्हें आनुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १२ (अहवा तिपएसिया य दुपएसिय आणुपुव्वीउ य अवत्तव्वयए) अथवा बहुत से ३ प्रदेशिक स्कंध और एक द्वि प्रदेशिक स्कंध उसे बहुत से आनुपूर्वी और एक अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १३ (अहवा तिपएसियाय दुप्पए सियाय आणुपुव्वाउय अवत्तव्वयाइच) अथवा बहुत से तीन प्रदेशिक स्कन्ध और बहुत से द्वि प्रदेशिक स्कंध उन्हें बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १४ (अहवा परमाणु पोग्गलय दुपए सिए य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वया य) अथवा एक परमाणु पुद्गल और एक द्वि प्रदेशिक स्कंध उसको एक अनानुपूर्वी और एक अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १५ (अहवा परमाणु पोग्गले य दुपएसिया य अणाणु पुव्वी य अवत्तव्वयाइ च) अथवा एक परमाणु पुद्गल और बहुत से द्विप्रदेशिक स्कंध वे एक अनानुपूर्वी बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहाते हैं १६ (अहवा परमाणु पोग्गलाय दुपएसिएय अणाणुपुव्वीउ अवत्तव्वएय) अथवा बहुत से परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें बहुत स अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १७ (अहवा परमाणु पोग्गलाय दुप्पएसियाय आणुपुव्वीउ य अवत्तव्वयाइ च) अथवा बहुत से परमाणु पुद्गल और बहुत से द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें बहुत से अनानुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १८ (अहवा तिपएसिएय "परमाणु पोग्गले" दुपएसिए य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वएय) अथवा एक तीन प्रदेशिक स्कंध एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें एक आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं १९ (अहवा तिपएसिय परमाणुपोग्गलेय दुपएसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी

य अवत्तव्वयाइच) अथवा एक तीन मदेशिक स्कंध और एक परमाणु पुद्गल बहुत से द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें एक आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी बहुत स अवक्तव्य द्रव्य कहते ह २० (अहवा तिपएसिय य परमाणुपोग्गला य दुपएसिए य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीउ अवत्तव्वए य) अथवा एक तीन मदेशिक स्कंध बहुत से परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें एक आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते है २१ (अहवा तिपएसिए य परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीउ य अवत्तव्वयाइ च) अथवा एक ३ मदेशिक स्कंध बहुत से परमाणु पुद्गल बहुत से द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें एक आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते है २२ (अहवा तिपएसियाय परमाणु पोग्गले य दुप्पएसिए य आणुपुव्वीउ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्व य) अथवा बहुत से तीन मदेशिक स्कंध एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध उसे बहुत से आनुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते है २३ (अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गले य दुप्पएसिया य आणुपुव्वीउ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइ च) अथवा बहुत से तीन मदेशिक स्कन्ध एक परमाणु पुद्गल बहुत से द्विप्रदेशिक स्कंध उन्हें बहुत से आनुपूर्वी एक अनानुपूर्वी और बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं २४ (अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य दुप्पएसिए य आणुपुव्वीओ य अनानुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य) अथवा बहुत से तीन मदेशिक स्कन्ध बहुत से परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध उन्हें बहुत से आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी एक अवक्तव्य द्रव्य कहते है २५ (अहवा तिपएसियाय परमाणु पोग्गलाय दुप्पएसियाय आणुपुव्वीउ य 'अणाणुपुव्वीउ य अवत्तव्वयाइ च) अथवा बहुत से ३ मदेशिक स्कन्ध बहुत से परमाणु पुद्गल बहुत से द्विप्रदेशिक स्कन्ध उन्हें बहुत से आनुपूर्वी बहुत से अनानुपूर्वी बहुत से अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं २६ (सेच नेगम ववहाराण भंगोवदसणया) अब इसकी पूर्ति कहते हैं, यही नैगम और व्यवहार नय के मत से भंगोपदर्शनता है ॥

भावार्थ–भंगोपदर्शनता उसका नाम है जो पूर्व भग बनाए गये थे उनका अर्थों में सयाजन करना वही भंगोपदर्शनता है जैसे कि कल्पना करो कि–एक तीन मदशिक स्कंध है, एक परमाणु पुद्गल है तब उनको बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य एक अनानुपूर्वी द्रव्य ऐसे कहा जाता है इसी मकार सर्व भंग जान लेने

जो ऊपर हिन्दी पदार्थ में लिखे गये हैं यह सर्व समास नैगम और व्यवहारनय के मत से होता है सो अब नैगम और व्यवहारनय के मत से समवतार का वर्णन किया जाता है।

॥ अथ समवतार द्वार विषय ॥

मूल-सेकिंतं समोयारे णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाईं कहिं समोयरति किं आणुपुव्वीदव्वे समोयरति अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरति अवत्तव्वयदव्वेहि समोयरति णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहि समोयरति णो अणाणुपुव्वी दव्वेहि समोयरति णो अव्वत्तव्वयदव्वेहि समोयरति एव अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वय दव्वाणि विसठाणे समोयारेयव्वाणि सेत्त समोयारे ॥

पदार्थ-(सेकिंत समोयारे २ णेगमववहाराण) शिष्य ने प्रश्न किया कि, हे भगवन् ! नैगम और व्यवहार नय के मत से समवतार कैसे होता है-अथवा (आणुपुव्वी दव्वाइ कहिं समोयरति) आनुपूर्वी द्रव्य कहा पर समवतार होते हैं (किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) क्या आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होते हैं अर्थात् वे स्वजाति में गर्भित होते हैं वा अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) अनानुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होते हैं अथवा (अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरति) अवक्तव्य द्रव्यों में समवतार होते हैं ऐसे शिष्य के पूछने पर गुरु कहते हैं कि (णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाइ आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) नैगम और व्यवहारनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होते हैं किन्तु (णो अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) अनानुपूर्वी द्रव्यों में समवतार नहीं होते हैं (णो अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरति) अवक्तव्यद्रव्यों में समवतार नहीं होते (एव अणाणु पुव्वी दव्वाइ) इसी प्रकार अनानुपुर्वी द्रव्य और (अवत्तव्वय दव्वाणिवि) अवक्तव्य द्रव्य भी (सठाणे समोयारे यव्वाणि सत्त समोयारे) स्वस्थानों में समवतार होते हैं यही समवतार द्वार का वर्णन है

भावार्थ-नैगम और व्यवहारनय के मत से जो आनुपूर्वी द्रव्य है वे स्वस्था-

नों में ही गर्भित होते हैं अर्थात् जिस जाति का जो द्रव्य है वे अपनी जाति में ही रहता है अथवा उसकी गणना उसकी जाति में की जाती है उसी का नाम समवतार द्वार हैं।

॥ अथ अनुगम विषय ॥

सेकिंत अणुगमे २ नवविहे पण्णत्ते तंजहा संतपयप रूवणया १ दव्वपमाणं च २ खेत्त ३ फुसणाय ४ कालो य ५ अंतरं ६ भाग ७ भाव ८ अप्पाबहुचेव ९ सेकिंतं णेगम ववहाराणं संतपयपरूवणया आणुपुव्वीदव्वाइंकिं अत्थि नत्थिति नियमा अत्थि एवं दोन्निवि १ नेगमववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं नो संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं अणंताइं एवं दोन्निवि ॥ २॥

पदार्थ.-(सेकिंत अनुगमे २) (प्रश्न) अनुगम किसे कहते हैं (उत्तर) अनुगम (नवविहे प० त०) नव प्रकार से प्रतिपादन किया गया है अनुगम उसका नाम है जो सूत्रानुसार व्याख्या कीजाए अथवा जिसके द्वारा अर्थों का पृथक् २ बोध हो, उसे अनुगम कहते हैं वे नव प्रकार से निम्न लिखितानुसार है, (संतपयपरूवणया) विद्यमान पदों की प्ररूपणा करनी अर्थात् सत्रूप पदार्थों का विवर्ण किन्तु असत् रूप खरशृंगवत् नहीं हैं १ (दव्वपमाण च) द्रव्यों का प्रमाण २ (खेत्त) क्षेत्रद्वार ३ (फुसणाय) स्पर्शनाद्वार ४ (कालोय) कालद्वार ५ (अन्तर) अन्तरद्वार ६ (भाग) भागद्वार ७ (भाव) भावद्वार (अप्पाबहुचेव) अल्प बहुत्वद्वार यह निश्चय ही नवद्वार हैं (सेकिंत णेगम ववहाराणं संतपयपरूवणया) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से (आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि नत्थिति) आनुपूर्वी द्रव्यों की अस्ति है किम्वा-नास्ति है गुरु कहते हैं (नियमा अत्थि एवं दोन्निवि) निश्चय ही अस्ति है है इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की भी निश्चय ही अस्ति है।॥१॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं) नैगम और व्यवहार नय के मत से आनु पूर्वी द्रव्य (किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं) क्या संख्यात पद वाले हैं

वा असख्यात अथवा अनन्तपद वाले हैं। गुरु कहते हैं (णो सखेज्जाइ णो अ-सखेज्जाई अणताइ एव दोन्निवि) आनुपूर्वी द्रव्य उक्त नयों के मत से सख्यात असख्यात नहीं है केवल अनन्त हैं इसी प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य भी अनन्त है ॥ २ ॥

भावार्थ—अनुगम नव प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि विद्यमान पदों की प्ररूपणा १ द्रव्यों का परिमाण २ क्षेत्र ३ स्पर्शना ४ काल ५ अन्तर ६ भाग ७ भाव ८ अल्प बहुत्व ९ सो प्रथम द्वार में नैगम और व्यवहार नय के मतमे तीनों द्रव्यों की सदैव काल अस्ति है फिर नैगम और व्यवहार नय के मत से तीनों द्रव्य अनत हैं अपितु सख्यात वा असख्यात नहीं हैं ॥

अथ क्षेत्र द्वार विषय ।

मूल—णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्सकड भागे होज्जा किं सखिज्जाइंभागे होज्जा असखेज्जाइंभागे होज्जा, सखेज्जेसु भागे होज्जा असंखेज्जेसु भागे होज्जा सव्वलोएसु होज्जा? एग दव्व पडुच्च संखेज्जइंभागे वा होज्जा असखेज्जेइंभागे वा होज्जा संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा सव्वलोए वा होज्जा नाना दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए वा होज्जा णेगमववहाराण अणाणुपुव्वीदव्वाइ किं लोगस्स सखेज्जइंभागे होज्जा असखेज्जइभागे होज्जा सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जे-सु भागेसु होज्जा सव्वलोए होज्जा?, एग दव्व पडुच्च नो, स-ज्जइभागे होज्जा असंखेज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागे-सु होज्जा नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो सव्वलोए होज्जा नाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं अवत्तव्व गदव्वाणिवि ।

पदार्थ-(नेगमववहाराण) नैगम और व्यवहारनय के मत से (आणुपुव्वी दव्वाइ लोगस्सकइ भागे होज्जा) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! जो आनुपूर्वी द्रव्य है वे लोक कितने भाग में होते हैं (कि संखिज्जाइभागे होज्जा असंखेज्जाइभागे होज्जा) क्या लोक के सख्यात भाग में होते हैं अथवा (संखेज्जेसु भागे होज्जा असंखेज्जे भागे होज्जा) बहुत से सख्यात भागों में होते हैं वा बहुत से असंख्यात भागों में होते हैं अथवा (सव्वलोए एसु होज्जा) सर्व लोग में होते हैं इस प्रकार के शिष्य के पूछने पर गुरु कहने लगे कि भो-शिष्य (एग दव्व पडुच्च) एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा (संखेज्जइभागे वा होज्जा) लोक के संख्यात भागमें भी होते हैं अथवा (असंखेज्जइ भावे होज्जा) असंख्यात भाग में भी होते हैं वा (संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा) बहुत से संख्यात भागों में भी होते हैं अथवा (असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा) बहुत से असंख्यात भागों में भी होते हैं अथवा (सव्वलोए वा होज्जा) सर्व लोक में भी होते हैं जैसेकि श्रीकेवली भगवान् के समुद्घात के समय आनुपूर्वी द्रव्य सर्व लोक में होजाते हैं किन्तु समुद्घात की स्थिति केवल अष्ट समय प्रमाण मात्र है और यह उक्त तीनों अंक केवली समुद्घात की अपेक्षा से कहे गये हैं अपितु [1](नाणा दव्वाइ पडुच्चनियमा सव्वलोए होज्जा) नाना द्रव्यों की अपेक्षा नियम से सर्व लोक में होते हैं यह सर्व गुरु का उत्तर आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा से है, अब शिष्य अनानुपूर्वी द्रव्य की पृच्छा करता है जैसे कि (नेगमववहाराण) नैगम और व्यवहार नय के मत से (अनानुपुव्वी दव्वाइ किं लोगस्स संखेज्जइ भागे होज्जा) शिष्य पूछता है कि हे भगवन् अनानुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में होते हैं अथवा (असंखेज्जइभागे होज्जा) असंख्यात भाग में होते हैं अथवा (संखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से संख्यात भागों में होते हैं वा (असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से असंख्यात भागों में होते हैं (सव्वलोए होज्जा) अथवा सर्व लोक में होते हैं गुरु कहने लगे कि (एग दव्व पडुच्च) एक द्रव्य की अपेक्षा (नो संखेज्जइभागे होज्जा) लोक के संख्यात भाग में नहीं होते क्योंकि अनानुपूर्वी द्रव्य एक परमाणु पुद्गल का नाम है (असंखेज्जइभागे होज्जा) अपितु लोक के असंख्यात भाग में होता है किन्तु (नोसंखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से संख्यात भागों में नहीं होता (नोअसंखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से

[1] एकसेसकोदो बुद्दिदिसो लुक् । न इस सूत्र से पञ्चमी लोप होगई है ।

असख्यात भागों में नहीं होते क्योंकि-केवल एक परमाणु है (नो सव्वलोएहोज्जा) और नाहीं सर्व लोक में होते हैं किन्तु (नाणादव्वाइ पडुच) नाना द्रव्यों की अपेक्षा (नियमा सव्वलोए होज्जा) निश्चय ही सर्व लोक में होते हैं (एव अ-वत्तव्वगदव्वाणिवि) इसी प्रकार अवक्तव्य द्रव्य भी जानलेने चाहिये जैसे कि अनानुपूर्वी द्रव्य का विवर्ण किया गया है ॥

भावार्थः-नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य लोक के सख्यात भाग में वा असख्यात भाग में अथवा बहुत से सख्यात भाग में वा असख्यात भाग में अथवा बहुत से सख्यात भागों म और बहुत से असंख्यात भागों मे होता है अथवा सर्व लोक में भी हो जाता है (केवली भगवान की समुद्घात की अपेक्षा यह विवर्ण केवल एक द्रव्य की अपेक्षा से है, किन्तु नाना द्रव्यों की अपेक्षा से यह द्रव्य निश्चय ही सर्व लोक में होते हैं। नैगम और व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी एक द्रव्य लोक के केवल असख्यात भाग में होता है किन्तु नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा यह द्रव्य निश्चय ही सर्व लोक में होते हैं सा इसी प्रकार अवक्तव्य द्रव्य के स्वरूप को भी जान लेना चाहिये ॥

॥ अथ स्पर्शना द्वार विषय ॥

मूल-णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्स किं सखेज्जइभागं फुसंति असखेज्जइभाग फुसंति सखेज्जइ सुभागे फुसति असखेज्जइसुभागे फुसति सव्वलोग फुसत्ति एगं दव्वं पडुच लोगस्स सखेज्जइभाग वा फुसइ असखेज्जइ भागं वा फुसन्ति सखेज्जेवाभागं फुसन्ति असखेज्जेवाभागे फुसन्ति सव्वलोग वा फुसन्ति नाणादव्वाइ पडुच नियमा सव्वलोग फुसन्ति ।

पदार्थ-(णेगम ववहाराण) नैगम और व्यवहार नय के मत से (आणु-पुव्वी दव्वाइ) आनुपूर्वी द्रव्य (लोगस्स किं सखेज्जइ भाग फुसति) क्या लोक के सख्यात भाग को स्पर्श करते हैं अथवा (असखेज्जइ भागे फुसति) असख्यात भाग को स्पर्श करते हैं (सखेज्जइ सुभागे फुसति) अथवा बहुत

से सख्यात भागों को स्पर्श करते हैं वा (असखेज्जेसु भागे फुसति) बहुत से असख्यात भागों को स्पर्श करते हैं अथवा (सव्व लोग फुसति) सर्व लोक को स्पर्श करते हैं। शिष्य के ऐसा पूछने पर गुरु कहने लगे कि (एग दव्व पडुच्च लोगस्स सखेज्जइ भाग वा फुसति) एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा स लोक के सख्यात भाग को स्पर्श करता है (अथवा असंखेज्जइ भाग वा फुसति) असख्यात भाग को स्पर्श करता है अथवा(संखेज्ज वा भागे फुसति) अथवा आनुपूर्वी द्रव्य बहुत से सख्यात भागों को स्पर्श होते है अथवा (असखेज्जे वा भागे सु फुसति) बहुत से असंख्यात भागों को स्पर्श होते हैं अथवा (सव्व लोग वा फुसति)* सर्व लोक को भी स्पर्श होते हैं यह केवल एक द्रव्य की अपेक्षा से है किन्तु (नाणा दव्वाइ पडुच्च नियमा सव्व लोग फुसति) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से निश्चय ही, सर्व लोक को स्पर्श होते हैं।

भावार्थ-एक आनुपूर्वी द्रव्य लोक के सख्यात वा असंख्यात अथवा बहुत से संख्यात भाग वा बहुत से असंख्यात भागों को अथवा सर्व लोक को स्पर्श होता है किन्तु नाना प्रकार के आनुपूर्वी द्रव्य सर्व लोक को स्पर्श करते हैं।

अथ अनानुपूर्वी विषय।

णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाण पुच्छा एगं दव्व पडुच्च नो सखेज्जइभाग फुसइ असखेज्जइभाग फुसति नो सखेज्जे भागे फुसति नो असखेज्जे भागे फुसति नो सव्व लोग फुसति नाणादव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वलोग फुसति एव अवत्तव्वगदव्वाणिवि भाणियव्वाणि ।

पदार्थ-(णेगमववहाराण) नैगम और व्यवहार नय के मत (से अणाणुपुव्वी दव्वाण पुच्छा) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! अनानुपूर्वी द्रव्य लोक के कितने भाग को स्पर्श होता है, गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य! (एग दव्व पडुच्च) एक द्रव्य की अपेक्षा से (नो सखेज्जइभाग फुसइ) लोक के सख्यात भाग को स्पर्श नहीं करता अपितु (असखेज्जइ भाग फुसति)

असंख्यात भाग को स्पर्श करता है किन्तु (नो सखज्जेभाग फुसति) बहुत सख्यात भागों को स्पर्श नहीं होते नाहीं (नो असखेज्जेभाग फुसति) लोक के बहुत से असख्यात भागों को स्पर्श होते हैं (नो सव्वलोग फुसति) किन्तु सर्व लोक को भी स्पर्श नहीं होते यह केवल तो एक द्रव्य की अपेक्षा है किन्तु (नाणा दव्वाइ पडुच्च) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से सर्व लोक को स्पर्श होते हैं (एव अवत्तव्वगदव्वाणि, विभाणि यव्वाणि) इसी प्रकार अवक्तव्य द्रव्य भी कथन करने चाहियें।

भावार्थ-अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य केवल लोक के असंख्यातवें भाग को ही स्पर्श करते हैं शेष भागों को स्पर्श नहीं होते।

अथ स्थिति द्वार विषय।

मूल-णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ कालओ केव चिरं होइ ?, एग दव्वं पडुच्च जहएणेण एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्ज काल नाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा एव दोन्निवि।

पदार्थ-(णेगमववहाराण) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् नैगम और व्यवहार नय के मत से (आणुपुव्वी दव्वाइ कालओ केवचिर होइ) आनुपूर्वी द्रव्य काल से कबतक रह सकता है अर्थात् एक आनुपूर्वी द्रव्य काल की अपेक्षा से कितने चिर की स्थिति युक्त होता है, इस प्रकार पूछने पर गुरु कहने लगे कि भो शिष्य! (एग दव्व पडुच्च जहन्नेणएग समय उक्कोसेण असखेज्ज काल) एक द्रव्य की अपेक्षा से जघन्य (न्यून से न्यून) एक समय प्रमाण स्थिति होती है उत्कृष्ट काल की अपेक्षा असख्यात काल पर्यन्त स्थिति करता है अर्थात् यदि एक आनुपूर्वी द्रव्य एक ही स्थान पर स्थिति करे तो उत्कृष्ट काल असख्यात काल पर्यन्त स्थिति कर लेता है किन्तु (नानादव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वद्धा) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा नियम से सर्व काल में रहते हैं क्योंकि नाना प्रकार के जो आनुपूर्वी द्रव्य हैं वे सदा काल ही रहते हैं इसलिये उनकी अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य सदा विद्यमान है (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य भी जान लेने चाहिये।

भावार्थ-तीनों द्रव्यों की स्थिति जघन्य एक समय प्रमाण उत्कृष्ट अस-

ख्यात काल पर्यन्त है नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा सदा ही विद्यमान रहते हैं।

अथ अन्तर द्वार विषय।

मूल-णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाण कालओ के वच्चिर अतर होइ?,एग दव्व पडुच्च जहएणेण एग समय उक्कोसेण अणत कालं नाणादव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर। णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाण कालओ केवइय अतर होइ? एगं दव्व पडुच्च जहएणेण एगं समय उक्कोसेण असंखेज्जं कालं नाणादव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर। णेगमववहाराण अवत्तव्वय दव्वाण; कालओ केवचिरं अतर होइ? एग दव्वं पडुच्च जहएणेण एगं समय उक्कोसेण अणत काल नाणादव्वाइं पडुच्च नत्थि अतर होइ ॥ ६ ॥

पदार्थ-(णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाण कालओ केवच्चिर अतरं होइ) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों का काल की अपेक्षा से कितने काल पर्यन्त अतर होता है अर्थात् आनुपूर्वी द्रव्यों का अन्तर काल कितना है (उत्तर) (एग दव्व पडुच्च जहएणेण एग समय उक्कोसेण अणत काल) एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेचा से न्यून से न्यून एक समय मात्र अतर काल होता है उत्कृष्ट अनत काल पर्यन्त अतर काल होता है जैसे कि-एक द्रव्य अब आनुपूर्वी द्रव्य की व्यवस्था में है किन्तु वह आनुपूर्वी भाव को छोड कर अन्य भाव को प्राप्त होगया यदि वह फिर आनुपूर्वी द्रव्य के भाव को प्राप्त हो जाय-तो जघन्य एक समय के पीछे हो जाय उत्कृष्टता से अनन्त काल पीछे आनुपूर्वी द्रव्य को प्राप्त होवे-इसी प्रकार सर्व द्रव्यों की सम्भावना कर लेनी चाहिये किन्तु (नाणादव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से अन्तर काल नहीं होता है क्योंकि वे सदैव काल विद्यमान रहते हैं (णेगमववहाराण अणाणुपुव्वी दव्वाण कालओ केवइय अतर होइ) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से अनानु

पूर्वी द्रव्यों का अतर काल कितना होता है (उत्तर) एगं दव्वं पडुच जह ण्णेण एग समय उक्कोसेण असखेज्ज कालं) एक अनानुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा से न्यून से न्यून एक समय मात्र अतर काल होता है उत्कृष्ट असंख्यात काल प्रमाण अतर काल कथन किया है अतर काल का अर्थ प्राग्वत् जान लेना किन्तु (नानादव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से अतर काल नहीं होता है (णेगमववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाणं कालओ केवइ चिर होइ) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से अवक्तव्य द्रव्यों का काल की अपेक्षा से कितना चिर अतर,काल है (उत्तर) एग दव्वं पडुच्च जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अणत काल) एक अवक्तव्य द्रव्य की अपेक्षा से न्यून से न्यून एक समय मात्र अतर काल उत्कृष्ट अनत काल पर्यन्त अन्तर काल होता है किन्तु (नाणादव्वाइ पडुच्च नत्थि अंतर) जो अवक्तव्य द्रव्य नाना प्रकार के हैं उन्हों की अपेक्षा से अतर काल नहीं होता है क्योंकि वे सदैव काल विद्यमान रहते हैं ।

भावार्थ–नैगम और व्यवहार नय मतसे आनुपूर्वी द्रव्यों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनतकाल पर्यन्त अतर काल होता है किन्तु नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा अतर काल नहीं है और अनानुपूर्वी द्रव्यों का अतर काल न्यून से न्यून एक समय प्रमाण उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त अतर काल होता है क्योंकि असख्यात काल प्रमाण परमाणु पुद्गल की स्थिति है और नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से अतर काल नहीं होता है अपितु अवक्तव्य द्रव्यों का अतर काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनत काल प्रमाण रहता है नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा अतर काल नहीं होता क्योंकि अवक्तव्य द्रव्य सदा विद्यमान रहते हैं ।

अथ भाग द्वार विषय ।

मूल–णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा किं संखेज्जइभागे होज्जा असखेज्जइभागे होज्जा सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो संखेज्जइभागं होज्जा नो असखेज्जइभागे होज्जा नो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा नियमाअसखेज्जेसु भागेसु होज्जा

नेगमववहाराण अणाणुपुव्वी दव्वाण पुच्छा असंखेज्जइ भागे होज्जा सेसेसु पडिसेहा एवं अवत्तव्वगदव्वाणिवि ॥७॥

पदार्थ-(णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाइ सेसदव्वाण कइभागे होज्जा) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्यों (अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य) के कितने भाग में होता है (किं सखेज्जइभागे होज्जा असखेज्जइभागे होज्जा) क्या उन के संख्यात भाग में या असख्यात भाग में अथवा (सखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से संख्यात भागों में होता है वा (असखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से असख्यात भागों में होता है गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य ! (नो सखेज्जइभाग होज्जा) सख्यात भाग में नहीं होता (नो असखेज्जइभाग होज्जा) और असख्यात भाग में भी नहीं होता (नो सखेज्जइसु भागेसु होज्जा) नाहीं बहुत से सख्यात भागों में होता है किन्तु (नियमा असखेज्जइसु भागेसु होज्जा) नियम से अर्थात् निश्चय ही बहुत से असख्यात भागों में होता है क्योंकि आनुपूर्वी द्रव्य तीन प्रदेशी से लेकर अनत प्रदेशी पर्यन्त हैं। वे अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य से असख्यात गुण अधिक हैं इस लिये सूत्र में कथन किया गया है कि उक्त दोनों द्रव्यों से असंख्यात गुणाधिक आनुपूर्वी द्रव्य हैं (णेगमववहाराण अणाणुपुव्वी दव्वाण पुच्छा) नैगम और व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी द्रव्यों का भी शिष्य ने पृच्छा की गुरु ने उत्तर में कहा कि (असखेज्जइभागे होज्जा सेसेसु पडिसेहा) आनुपूर्वी द्रव्य से अनानुपूर्वी द्रव्य असख्यात भाग में होता है, शेष प्रश्नों का निषेध किया गया है जैसे कि सख्यात भाग असख्यात बहुत से सख्यात भाग वा बहुत से असख्यात भाग इत्यादि (एव अवत्तव्व गदव्वा णिवि) इसी प्रकार अवक्तव्य द्रव्य के भी स्वरूप को अनानुपूर्वीवत् जानना चाहिये।

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य से असख्यात गुणाधिक हैं क्योंकि तीन प्रदेशी से लेकर अनत प्रदेशी स्कध पर्यन्त सर्व आनुपूर्वी द्रव्य हैं किन्तु अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य यह दोनों ही द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्य के असख्यात भाग में होते हैं अर्थात् असख्यात भाग न्यून है।

अथ भाग द्वार विषय ।

नेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ कतरंमि भावे होज्जा? किं उदइए होज्जा उवसमिय भावे होज्जा खइए भावे होज्जा खओवसमिए भावे होज्जा पारिणामिए भावे होज्जा सन्निवाइय भावे होज्जा? नियमा साइयपारिणामिए भावे होज्जा एव दोन्निवि ॥ ८ ॥

पदार्थ-(णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाई कयरंमि भावे होज्जा) (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कौन से भाव में होता है जैसे कि (किं उदइए भावे होज्जा) क्या उदय भाव में होता है (उवसमिए भावे होज्जा) उपशम भाव में होता है (खइए भावे होज्जा) अथवा क्षायिक भाव में होता है या (खओवसमिए भावे होज्जा) क्षयोपशम भाव में होता है वा (परिणामिए भावे होज्जा) पारिणामिक भाव में होता है अथवा (सन्निवाइय भावे होज्जा) सन्निपात भाव में होता है गुरु ने उत्तर दिया कि (नियमा साइयपारिणामिए भावे होज्जा) नियम से (निश्चय ही) सादि पारिणामिक भाव में होता है अर्थात् जिसकी आदि है और परिणमन शील है उसी का नाम सादि पारिणामिक भाव होता है (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी अवक्तव्य द्रव्य भी जान लेने चाहिये ।

भावार्थ-षट् भावों में सादि पारिणामिक भाव में आनुपूर्वी द्रव्य होता है क्योंकि आनुपूर्वी द्रव्य परिणमन शील होता है इसीलिये उसका नाम सादि पारिणामिक भाव है ।

॥ अथ अल्प बहुत्व विषय ॥

एएसिं णभंते ! णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं, अणाणुपुव्वीदव्वाण अवत्तव्वगदव्वाण य दव्वट्ठयाए पए सट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवाइ णेगमववहा

राण अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराण अणाणुपुव्वीदव्वाइ अपएसट्ठयाए अवतव्वगदव्वाइ पए सट्ठयाए विसेसाहियाइं आणुपुव्वीदव्वाइ पएसट्ठयाए अण-तगुणाइ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराण अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए १ अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठ-याए अपएसट्ठयाए विसेसा हियाइ २ अवत्तव्वगदव्वाइ पए सट्ठयाए विसेसाहियाइ ३ आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ ४ ताइ चेव पएसट्ठयाए अणतगुणाइ ५ सेत्त अणुगमे सेत्त णेगमववहाराण अणोवणिहिया दव्वाणु पुव्वी ॥

पदार्थः-(एएसिणं भंते णेगम ववहाराण आणुपुव्वी दव्वाण) हे ! भगवन् यह नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों की (अणाणुपुव्वी दव्वाण) अनानुपूर्वी द्रव्यों की (अवत्तव्वगदव्वाण) और अवक्तव्य द्रव्यों की (दव्वट्ठयाए) द्रव्यार्थिक से (पएसट्ठयाए) प्रदेशार्थिक से और (दव्वट्ठपएसट्ठयाए) द्रव्य और प्रदेशार्थिक से (कयरे २ हिंतो) सो किन २ से (अप्पा वा) अल्प अथवा (बहुया वा) बहुत (तुल्ला वा) तुल्य अथवा (विसेसाहिया वा) विशेषाधिक द्वार है अर्थात् यह द्रव्य परस्पर तुल्य हैं वा विशेषाधिक हैं वा अल्प हैं वा बहुत्व है। इस प्रकार प्रश्न करने पर भगवान् कहने लगे कि (गोयमा) हे गौतम ! (सव्वत्थोवाइ) (णेगमववहाराणं) नैगम और व्यवहार नय के मत से सर्व द्रव्यों की अपेक्षा से अवक्तव्यद्रव्यस्तोक है (अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए) ॥ (अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ) किन्तु अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से विशेषाधिक है (आणुपुव्वी

---

१ स्तोकस्य थोकथा यथेवा । प्राकृत व्याकरण पाद २ सू० १२५ स्तोक शब्दस्य एतेत्रय आदेशा भवति वा ।

दव्वाइं दव्वट्ठयाए) असंखेज्जगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थ से असंख्यात गुण हैं (पएसट्ठयाए) अपितु प्रदेशार्थिक से (सव्वत्थोवाइ) सर्व से स्तोक (णेगमववहाराण) नैगम और व्यवहार नय के मत से (अणाणुपुव्वी दव्वाइ अपएसट्ठयाए) अनानुपूर्वी द्रव्य अप्रदेशार्थ की अपेक्षा से हैं और (अवत्तव्वगदव्वाइ पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थिक से विशेषाधिक हैं किन्तु आणुपुव्वीदव्वाइ पएसट्ठयाए अणंतगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से अनंत गुण हैं अपितु (दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ) द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से सर्व से स्तोक (णेगमववहाराण अवत्तव्वग दव्वाइ दव्वट्ठयाए १) अवक्तव्य द्रव्य हैं अर्थात् नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य सर्व से स्तोक हैं किन्तु (अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से अप्रदेशों की अपेक्षा से विशेषाधिक हैं २ (अवत्तव्वग दव्वाइ पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थिक से विशेषाधिक हैं ३ (आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से असंख्यात गुण हैं ४ (ताइंचेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य से प्रदेशों की अपेक्षा वे द्रव्य अनंत गुण हैं (सेत्त अनुगमे) यही समास अनुगम का है इसीलिये इसे अनुगम कहते हैं (सेत्त णेगमववहाराण अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी) जब नैगम और व्यवहार नय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का समास सम्पूर्ण हुआ सो इसे ही अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी कहते हैं ॥

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय में आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्य अवक्तव्य द्रव्य द्रव्यार्थिक और प्रदेशार्थिक नयों के मत से निम्न प्रकार से उक्त द्रव्य न्यूनाधिक हैं ॥ नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्यार्थिक से सर्व से स्तोक अवक्तव्य द्रव्य हैं और अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से विशेषाधिक हैं और आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से असंख्यात गुणाधिक हैं फिर नैगम और व्यवहार नय के मत से अप्रदेशार्थिक भाव से सर्व से स्तोक अनानुपूर्वी द्रव्य हैं क्योंकि एक परमाणु का नाम अनानुपूर्वी है और प्रदेशों की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य विशेषाधिक हैं किंतु आनुपूर्वी द्रव्य अनंत गुणाधिक हैं अतः दोनों की अपेक्षा से नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा

राए अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराए अणाणुपुव्वीदव्वाइ अपएसट्ठयाए अवत्तव्वगदव्वाइ पए सट्ठयाए विसेसाहियाइ आणुपुव्वीदव्वाइ पएसट्ठयाए अणतगुणाइ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराए अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए १ अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसा हियाइ २ अवत्तव्वगदव्वाइ पए सट्ठयाए विसेसाहियाइ ३ आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ ४ ताइ चेव पएसट्ठयाए अणतगुणाइ ५ सेत्त अणुगमे सेत्त णेगमववहाराए अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(एएसिंण भंते णेगम ववहाराण आणुपुव्वी दव्वाण) हे ! भगवन् यह नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों की (अणाणुपुव्वी दव्वाण) अनानुपूर्वी द्रव्यों की (अवत्तव्वगदव्वाण) और अवक्तव्य द्रव्यों की (दव्वट्ठयाए) द्रव्यार्थिक से (पएसट्ठयाए) प्रदेशार्थिक से और (दव्वट्ठपएसट्ठयाए) द्रव्य और प्रदेशार्थिक से (कयरे २ हिंतो) सो किन २ से (अप्पा वा) अल्प अथवा (बहुया वा) बहुत्व (तुल्ला वा) तुल्य अथवा (विसेसाहिया वा) विशेषाधिक द्वार हैं अर्थात् यह द्रव्य परस्पर तुल्य हैं वा विशेषाधिक हैं वा अल्प हैं वा बहुत्व है। इस प्रकार प्रश्न करने पर भगवान् कहने लगे कि (गोयमा) हे गौतम ! (सव्वत्थोवाइ) (णेगमववहाराणं) नैगम और व्यवहार नय के मत से सर्व द्रव्यों की अपेक्षा से अवक्तव्यद्रव्यस्तोक है (अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए) ॥ (अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ) किन्तु अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से विशेषाधिक है (आणुपुव्वी

१ स्तोकस्य थोकथा थववा । प्राकृत व्याकरण पाद २ सू० १२५ स्तोक शब्दस्य एतेभय आदेशा भवति वा ।

दव्वाइं दव्वट्ठयाए) असंखेज्जगुणाइं) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थ से असंख्यात गुण हैं (पएसट्ठयाए) अपितु प्रदेशार्थिक से (सव्वत्थोवाइं) सर्व मे स्तोक (णेगमववहाराणं) नैगम और व्यवहार नय के मत से (अणाणुपुव्वी दव्वाइं अपएसट्ठयाए) अनानुपूर्वी द्रव्य अप्रदेशार्थ की अपेक्षा से है और (अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं) अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थिक से विशेषाधिक हैं किन्तु आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं) आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से अनंत गुण हैं अपितु (दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं) द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से सर्व से स्तोक (णेगमववहाराणं अवत्तव्वगं दव्वाइं दव्वट्ठयाए १) अवक्तव्य द्रव्य है अर्थात् नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य सर्व से स्तोक है किन्तु (अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइं) अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से अप्रदेशों की अपेक्षा से विशेषाधिक है २ (अवत्तव्वग दव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं) अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थक से विशेषाधिक हैं ३ (आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थिक से असंख्यात गुण है ४ (ताइंचेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं) आनुपूर्वी द्रव्य से प्रदेशों की अपेक्षा वे द्रव्य अनंत गुण हैं (सेत्तं अनुगमे) यही समास अनुगम का है इसीलिये इसे अनुगम कहते हैं (सेत्तं णेगमववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी) अब नैगम और व्यवहार नय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का समास सम्पूर्ण हुआ सो इसे ही अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी कहते हैं ॥

भावार्थ–नैगम और व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्य अवक्तव्य द्रव्य द्रव्यार्थक और प्रदेशार्थक नयों के मत से निम्न प्रकार से उक्त द्रव्य यूनाधिक है ॥ नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्यार्थक से सर्व से स्तोक अवक्तव्य द्रव्य है और अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से विशेषाधिक हैं और आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से असंख्यात गुणाधिक हैं फिर नैगम और व्यवहार नय के मत से अप्रदेशार्थक भाव से सर्व से स्तोक अनानुपूर्वी द्रव्य हैं क्योंकि एक परमाणु का नाम अनानुपूर्वी है और प्रदेशों की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य विशेषाधिक हैं किंतु आनुपूर्वी द्रव्य अनंत गुणाधिक हैं अब दोनों की अपेक्षा से नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा

सर्व से स्तोक द्रव्यार्थक से अवक्तव्य द्रव्य है १ अनानुपूर्वी द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से विशेषाधिक २ बहुत से अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थक से विशेषाधिक हैं ३ बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से असंख्यात गुणाधिक हैं ४ और प्रदेशों की अपेक्षा से वे द्रव्य अनंत गुणाधिक हैं ५ इसी का नाम अनुगम द्वार है सो नैगम और व्यवहार नय के मत से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का समास सम्पूर्ण हुआ ॥

अथ संग्रह नय के विषय ।

सेकिंत संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी २ पंचविहा प० त० अट्ठपयपरूवणया १ भंगसमुक्कित्तणया २ भंगोवदंसण या ३ समोयारे ४ अनुगमे ५ ॥

पदार्थः-(सेकिंत संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणु पुव्वी २ पंचविहा प० त०) (प्रश्न) संग्रह नय के मत से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी कितने प्रकार से वर्णन की गई है (उत्तर) पांच प्रकार से जैसे कि-(अट्ठपयपरूवणया) अर्थपद की प्ररूपणा १ (भंगसमुक्कित्तणया) भंगसमुत्कीर्तनता २ (भंगोवदंसणया) भंगोपदर्शनता ३ (समोयारे) समवतार ४ और (अणुगमे) पंचम अनुगम ॥५॥

भावार्थ-संग्रह नय के मत से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी पांच प्रकार से वर्णन की गई हैं जैसे कि-अर्थपद प्ररूपणा १ भंग समुत्कीर्तनता २ भंगोपदर्शनता ३ समवतार ४ और अनुगम ५ ।

अथ प्रथम भेद विषय ।

सेकिंत संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?, २ तिपएसिया आणुपुव्वी जाव अणंतपएसिया आणुपुव्वी परमाणुपुग्गले अणाणुपुव्वी दुप्पएसिया अवत्तव्वग सेत्तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया एयाए ण संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पयोयण एयाए ण संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए संगहस्स समुक्कित्तणया कीरइ ॥ ५३ ॥

पदार्थ-(सेकिंत संगहस्स अट्ठपयपरूवणया २ तिपए सिया आणुपुव्वी

जाव अणत पएसिया आणुपुव्वी) (प्रश्न) सग्रह नय से अर्थपद प्ररूपणा किसे कहते हैं (उत्तर) जो तीन प्रदेशिक स्कंध से लेकर अनन्त प्रदेशिक स्कंध पर्यन्त द्रव्य हैं वे सर्व आनुपूर्वी सज्ञक द्रव्य हैं और (परमाणु पोग्गले अणाणुपुव्वी) परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी द्रव्य है (दुपएसिया अवत्तव्वए) द्विप्रदेशिक स्कंध अवक्तव्य द्रव्य है (सेत्त सग्गहस्स अट्ठपयपरूवणयाए) अथानन्तर से इसी का नाम अर्थपद प्ररूपणा है किन्तु (एयाए सग्गहस्स अट्ठपय परूवणयाए किं पयोयण) इस सग्रह नय से जो अर्थपद प्ररूपणा कथन की गई है इस का प्रयोजन ही क्या है इस प्रकार के प्रश्न पूछने पर गुरु कहने लगे कि (एयाए ण सग्गहस्स अट्ठपयपरूवणयाए भगसमुक्कित्तणया कीरइ) इस सग्रह नय से अर्थपद की प्ररूपणा करने से भग समुत्कीर्तनता की जाती है यही इसका मुख्य प्रयोजन है।

भावार्थ–सग्रहनय के मत से अर्थ पद प्ररूपणा उसका नाम है जो तीन प्रदेशी द्रव्यों से लेकर अनन्त प्रदेशी द्रव्य पर्यन्त पुद्गल है वह सर्व आनुपूर्वी द्रव्य कहा जाता है जो परमाणु पुद्गल है उसका नाम अनानुपूर्वी द्रव्य है अतः जो द्विप्रदेशिक स्कंध है वह अवक्तव्य द्रव्य सज्ञक द्रव्य है और जो अर्थ पद प्ररूपणा सग्रहनय के मत से कीगई है उसका मुख्य प्रयोजन भग समुत्कीर्तन करना ही है।

अथ भंगसमुत्कीर्तनता विषय।

सेकिंत संग्गहस्स भगसमुक्कित्तणया ? २ अत्थि आणुपुव्वी १ अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अणाणुपुव्वी य ४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अवत्तव्वए य ५ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ६ अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ७ एव पएसत्त भंगा सेत्त संग्गहस्स भगसमुक्कित्तणया एयाए णं संग्गहस्स भगसमुक्कित्तणयाए किं पयोयण ? एयाए णं सग्गहस्स भग समुक्कित्तणयाए भगोवदसणया कीरइ॥

पदार्थ–(सेकिंत सग्गहस्स भगसमुक्कित्तणया २०) (प्रश्न) सग्रहनय के

सियाए अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ६ अहवा तिपएसियाए परमाणु पोग्गलेय दुपएसियाए आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ७ सेत्त संगहस्स भगोवदसणया ।

पदार्थ-(सेकित सग्गहस्स भगोवदमणया) (प्रश्न) संग्रह नय के मतसे भगोपदर्शनता किसे कहते हैं (उत्तर) संग्रह नय से भगोपदर्शनता निम्न प्रकार से है जैसे कि (तिपएसिया आणुपुव्वी) तीन प्रदेशिक स्कंध आनुपूर्वी द्रव्य कहाता है १ (परमाणु पोग्गल अणाणुपुव्वी) परमाणु पुद्गल का नाम अनानुपूर्वी द्रव्य है २ (दुपएसिया अवत्तव्वए) द्विप्रदेशिक स्कंध अवक्तव्य द्रव्य है ३ अथ द्विक सयोगी ३ भग दिखलाते हैं-(अहवा तिपएसिया परमाणु पोग्गलां य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य ४) अथवा यदि । तीन प्रदेशिक स्कंध और एक परमाणु पुद्गल इन दोनों का सम्बन्ध होवे तो उन को आनुपूर्वी और अनानुपूर्वी द्रव्य कहते हैं ४ (अहवा तिपएसियाए दुपएसियाए आणुपुव्वीए अवत्तव्वए ५) अथवा तीनप्रदेशिक स्कंध और द्विप्रदेशिक स्कंध एकत्व होवे तब उनको आनुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं ५ (अहवा परमाणु पोग्गलय दुपएसियाए आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य) अथवा परमाणु पुद्गल और द्विप्रदेशिक स्कंध मिल जावें तो आनुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य उन्हें कहते हैं ६ (अहवा तिपएसियाए परमाणुपोग्गले य दुपएसियाए आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ७) अथवा तीन सयोगी एक भग होता है उसका विवर्ण किया जाता है जैसे कि-एक ३ प्रदेशिक स्कंध है और एक परमाणु पुद्गल है और एक २ प्रदेशिक स्कंध है यदि वे सर्व एकत्र हो जावें तो उन को आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य कहते हैं ७ (सेत्त सग्गहस्स भगोवदसणया) यही संग्रह नय के मत से भगोपदर्शनता है और इसे ही भगोपदर्शनता कहते हैं ।

भावार्थ-भगोपदर्शनता के विषय पूर्ववत् ही कथन है ३ भग एक वचनान्त हैं और तीन भग द्विक सयोगी हैं और एक भग तीन सयोगी है-इन्हीं का नाम भगोपदर्शनता है इन का पूर्ण स्वरूप हिन्दी पदार्थ में लिखागया है ।

अथ समवतार विषय ।

सेकिंतं सग्गहस्स समोयारे ? २ सग्गहस्स आणुपुव्वी

मत से भग समुत्कीर्तनता किसे कहते हैं (उत्तर) सग्रहनय से भग समुत्कीर्तनता निम्न प्रकार से है जैसे कि (अत्थि आणुपुव्वी १) एक आनुपूर्वी द्रव्य १ (अत्थि अणाणुपुव्वी २) एक अनानुपूर्वी द्रव्य है २ (अत्थि अवत्तव्वए३) एक अवक्तव्य द्रव्य है ३ और द्विक सयोगी के ३ भग है, जैसे कि (अहवा अत्थि आणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी य) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य-एक अनानुपूर्वी द्रव्य है ४ (अहवा अत्थि आणुपुव्वी अवत्तव्वए य) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य एक अवक्तव्य द्रव्य है ५ (अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ६) अथवा एक अनानुपूर्वी द्रव्य और एक अवक्तव्य द्रव्य यह दो सयोगी ३ भग हैं किन्तु तीन सयोगी केवल एकही भग होता है जैसे कि (अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य) अथवा एक आनुपूर्वी द्रव्य और एक अनानुपूर्वी द्रव्य और एक अवक्तव्य, यह तीनों भग एक वचनान्त है सग्रहनय के मत से बहुवचन नहीं होता है (एव पयसत्त भगा) इस प्रकार से इन पदों के सात भग होते हैं (सेत्त सग्गहस्स भग समुक्कित्तणया) यह सग्रह नय से भग समुत्कीर्तनता पूर्ण हुई (एयाए ण सग्गहस्स भग समुक्कित्तणयाए इस सग्रह नय के मत से भग समुत्कीर्तना करने से (किं पयोयण) क्या प्रयोजन है ? गुरु कहने लगे कि (एयाए ण सग्गहस्स भग समुक्कित्तणयाए भगोवदसणया कीरइ) इस सग्रह नय के मत से भग समुत्कीर्तनता करने से भगोपदर्शनता की जाती है।

भावार्थ-सग्रहनय के मत से भग समुत्कीर्तनता के ७ भग होते हैं जैसे कि तीन भग एक वचनान्त है और तीन भग द्विक सयोगी हैं एक भग तीनसयोगी है इनका पूर्ण विवर्ण पदार्थ में दिया गया है और इन का मुख्य प्रयोजन भगोपदर्शनता करना ही है।

अथ भगोपदर्शनता विषय।

मूल-सेकिंत सग्गहस्स भगोवदसणया ? २ तिपएसिया आणुपुव्वी १ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी २ दुपएसिया अवत्तव्वए ३ अहवा तिपएसिया परमाणुपोग्गला य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य ४ अहवा तिपएसियाए दुपएसियाए आणुपुव्वीए अवत्तव्वए य ५ अहवा परमाणुपोग्गला य दुपए

अंतरं ६ भाग ७ भावे ८ अप्पा बहुं नत्थि १ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइ किं अत्थि नत्थि नियमा अत्थि एव दोन्निवि संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखिज्जाइ असंखेज्जाइ अणंताइं ? नो संखिज्जाइ नो असंखेज्जाइं नो अणंताइ नियमा एगो रासी एव दोन्निवि ॥

पदार्थ-(सेकिंत अणुगमे २ अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा) (प्रश्न) अनुगम कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) आठ प्रकार से जो निम्न-लिखितानुसार है (संतपयपरूवणया) विद्यमान पदार्थों की प्रति पादनता १ (दव्वपमाण च) द्रव्य प्रमाण और २ (खित्त ३) क्षेत्रद्वार (फुसणया ४) स्पर्शना द्वार ४ (कालोया) कालद्वार ५ (अन्तर) अन्तर द्वार ६ (भाग) भागद्वार ७ (भावे) भावद्वार (अप्पा बहु नत्थि) संग्रहनय के मत में अल्प बहुत्व द्वार नहीं होता क्योंकि संग्रह नय के मत में सर्व द्रव्य एक रूप में ही रहते हैं (संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइ किं अत्थि नत्थि) (प्रश्न) संग्रहनय के मत में आनुपूर्वी द्रव्य हैं किम्वा नहीं है (उत्तर) (नियमा अत्थि) नियम से हैं अर्थात् निश्चय ही हैं (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अव-क्तव्य द्रव्य भी जान लेने चाहिये इसी का नाम विद्यमान पदार्थों की प्रतिपाद-नता है । अब द्रव्यों के प्रमाण विषय में कहते हैं (संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ किं संखिज्जाइ असंखेज्जाइ अणंताइ) (प्रश्न) संग्रहनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात हैं अथवा असंख्यात हैं वा अनंत हैं (उत्तर) (नो संखि-ज्जाइ नो असंखेज्जाइ नो अणंताइ नियमा एगो रासी) संग्रहनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य संख्यात असंख्यात वा अनन्त नहीं हैं किन्तु नियम से ही एक राशि (समूह) है क्योंकि संग्रहनय द्रव्यों को अभेद रूप से मानता है सो (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य भी जानने चाहिये।

भावार्थ-अनुगम ८ प्रकार से कहा गया है जैसे कि विद्यमान पदार्थों की प्रतिपादनता १ द्रव्य प्रमाण २ क्षेत्र ३ स्पर्शना ४ काल ५ अंतर ६ भाग ७ और भाव ८ और संग्रह नय के मत से तीनों द्रव्यों की सदैव काल अस्ति भी है और द्रव्यों का प्रमाण संग्रहनय के मत से संख्यात असंख्यात वा अनन्त ऐसे भेद रूप नहीं हैं केवल एक राशि रूप है ।

दव्वाइ कहिं समोयरति किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरति ? अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरति ? संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरति नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरति नो अवत्त· अवत्तव्वगदव्वेहि समोयरति एव दोन्निवि सट्ठाणे समोयरति सेत्त समोयारे ॥

पदार्थ-(सेकिंत संगहस्स समोयारे २ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइ कहिं समोयरति) (प्रश्न) संग्रह नय के मत से समवतार किसे कहते हैं और आनुपूर्वी द्रव्य किस द्रव्य में समवतार होते हैं (किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) क्या आनुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होते हैं (अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) या अनानुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होते हैं (अवत्तव्वग दव्वेहिं समोयरति) अथवा अवक्तव्य द्रव्यों में समवतार होते हैं (उत्तर) (संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइ आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्यों में ही समवतार होते हैं किन्तु (नो अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति) आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्यों में समवतार नहीं होते (नो अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरति) न अवक्तव्य द्रव्यों में समवतार होते हैं अतः सिद्ध हुआ कि आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में ही समवतार होते हैं (एव दोन्निविसठाणे समोयरति सेत्त समोयारे) इसी प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य भी स्वस्थानों में ही समवतार होते हैं अन्य द्रव्यों में नहीं इसी का नाम समवतार द्वार है ।

भावार्थ-समवतार द्वार इसी का नाम है जो द्रव्य हैं वे अपने २ स्थानों में ही समवतार (गर्भित) होते हैं अन्य द्रव्यों में नहीं जैसे कि आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में समवतार होता है इसी प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य भी जान लेने चाहिये ।

अथ अनुगम विषय ।

सेकिंतं अणुगमे २ अट्ठविहे पराणत्ते तजहा सत पयपरूवणया १ दव्वपमाण च २ खित्त ३ फुसणया ४ कालोय ५

असखेज्जे भागे फुसति सव्व लोग फुसंति ? नो सखेज्जइ भाग फुसति जाव नियमा सव्वलोग फुसति एव दोन्निवि॥३॥

पदार्थ—(सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्स किं सखेज्जइ भागे फुसति असखेज्जइ भाग फुसति) (प्रश्न) सग्रह नय से आनुपूर्वी द्रव्य लोक के क्या सख्यातभाग भाग को स्पर्श होते हैं (सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जेसु भोगसु होज्जा) बहुत से सख्यात भागों को स्पर्श करते हैं अथवा बहुत से असख्यात भागों को स्पर्श होते हैं तथा (सव्वलोए फुसति) तथा सर्व लोक में स्पर्श होते हैं (उत्तर) (नो सखेज्जइ भाग फुसति जाव नियमा सव्वलोग फुसति एव दोन्निवि) सख्यात असख्यात वा बहुत स सख्यात बहुत से असख्यात भागों को स्पर्श नहीं करते केवल नियम से ही सर्व लोक को स्पर्श करते हैं क्योंकि जब सग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य सर्व लोक में है तब स्पर्श भी सर्व लोक को कर रहे हैं इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य भी जानलेने चाहिये ॥

भावार्थ-सग्रह नय के मत से तीनों द्रव्य सर्व लोक को स्पर्श कर रहे हैं क्योंकि यह तीनों द्रव्य सर्व लोक में हैं इसीलिये सर्व लोक को स्पर्श कररहे हैं ॥

॥ अथ शेष द्वार विषय ॥

सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ कालओ केवचिर होइ नियमा सव्वद्धा एव दोन्निवि ५ सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ अन्तर कालओ केवचिर होइ ? नत्थि अतर एव दोन्निवि ६ संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ सेसदव्वाण कइभागे होज्जा ? किं सखेज्जइभागे होज्जा असखेज्जइभागे होज्जा—सखेज्जेसुभागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? नो सखेज्जइ भागे होज्जा नो असखेज्जइ भागे होज्जा नो सखेज्जेसु भागेसुहोज्जा नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा नियमा तिभागे होज्जा एव दोन्निवि ॥ ७॥

अथ क्षेत्र द्वार विषय ।

सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्स कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइ भागे होज्जा असखेज्जइ भागे होज्जा सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा सव्वलोए होज्जा ? सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ नो सखेज्जइभागे होज्जा नोअसखेज्जइ भागे होज्जा नो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा नियमा सव्वलोए होज्जा, एव दोन्निवि ।

पदार्थ-(सग्गहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्स कइ भागे होज्जा) (प्रश्न) सग्रहनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य लोक के कितने भाग में होता है (किं सखेज्जइ भागे होज्जा असखेज्जइ भागे होज्जा) क्या लोक के सख्यात भाग में होता है वा असख्यात भाग में होता है तथा (सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा)लोक के बहुत सख्यात भागों में होता है वा बहुत से असख्यात भागों में होता है (सव्वलोए होज्जा) अथवा सर्व लोक में ही आनुपूर्वी द्रव्य होता है (उत्तर) नो सखेज्जइ भाग होज्जा नो असखेज्जइ भागे होज्जा) आनूपुर्वी द्रव्य लोक के सख्यात भाग में नहीं होता और असख्यात भाग में नहीं होता (नो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से सख्यात भागों में नहीं होता वा बहुत से असख्यात भागों में नहीं होता किन्तु (नियमा सव्वलोए होज्जा) नियम से (निश्चय ही) सर्व लोक में होता है क्योंकि सग्रह नय अभेद रूप द्रव्यों को मानता है । (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये ।

भावार्थ आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य सग्रह नय के मत से सर्व लोक में ही होते हैं ।

अथ स्पर्शना विषय ।

सग्गहस्स आणुपुव्वी दव्वाइ लोगस्स किं सखेज्जइ भाग फुसति असखेज्जइ भाग फुसति सखेज्जेसु भागे फुसति

रिणामए भावे होज्जा नियम से सादि पारिणामिक भाव में होते हैं अर्थात् जो आदि सहित परिणमन शील है (एव दाग्निवि) इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये (अप्पा बहुनत्थि) सग्रहनय से अल्प बहुत्व नहीं होता है (सेत्त अणुगमे) यही अनुगम द्वार है (सेत्त सग्गहस्स अणो-वणिहिया दव्वाणुपुव्वी सेत्त अणो वणिहिया दव्वाणुपुव्वी) यही सग्रहनय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी है अपितु अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप इस स्थल पर ही सम्पूर्ण होगया है।

भावार्थ–सग्रह नयसे आनुपूर्व्यादि द्रव्य सादि पारिणामिक भाव में रहते हैं और अल्प बहुत्व द्वार इस नय से नहीं होता है सो इस का नाम अनुगम है और सग्रहनय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का यहा पर ही समास सम्पूर्ण होगया है।

अथ उपनिधि का विषय ।

मूल–सेकिंत उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ? २ तिविहा पं० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणु-पुव्वी २ धम्मत्थिकाए १ अधम्मत्थिकाए २ आगासत्थिकाए ३ जीवत्थिकाए ४ पोग्गलत्थिकाए ५ अद्धासमय ६ सेत्त पुव्वाणु पुव्वी सेकिंत पच्छाणु पुव्वी ? २ अद्धासमय जावधम्मत्थिकाए सेत्तं पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणु पुव्वी २ एयाए चेव एग-इयाएच्छ गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्तं अणाणुपुव्वी ।

पदार्थ–(सेकिंत उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा प०) (प्रश्न) (उप-निधि का द्रव्यानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) उपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी तीन प्रकार से कथन की गई हैं जैसे कि (दव्वाणुपुव्वी) द्रव्यानुपूर्वी (पच्छाणु पुव्वी पश्चाद् आनुपूर्वी और (अणाणुपुव्वी) अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणु पुव्वी) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकार से है जैसे कि–(धम्मत्थिकाय) धर्मास्तिकाय (अहम्मत्थिकाय) अधर्मास्तिकाय (आगासत्थिकाए ३) आकाशास्तिकाय (जीवत्थिकाए) जीवास्तिकाय ४ (पोग्ग-

पदार्थ-(संगहस्स णाणुपुव्वी दव्वाइ कालओकेवचिर होइ) (प्रश्न) सग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों का काल स अन्तर काल कब तक होता हैं अर्थात् परस्पर द्रव्यों का अतरकाल कब तक रहता है (उत्तर) (नत्थि अतर एव दोन्निवि) अतरकाल नहीं होता है क्योंकि यह द्रव्य सदैव काल विद्यमान रहता है और इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये ६ (सगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ सेसदव्वाण कइभागे होज्जा (प्रश्न) सग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य, अनानुपूर्वी द्रव्यों के और अवक्तव्य द्रव्यों के कितने भाग में होता है (किं सखेज्जइ भागे होज्जा असखेज्जइ भागे होज्जा) क्या सख्यात भाग में होता है वा असख्यात भाग में होता है अथवा (सखेज्जे सुभागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत से सख्यात भागों में होता है या बहुत से असख्यात भागों में होता है (उत्तर) नो सखेज्जइ भागे होज्जा) सख्यात भाग में नहीं होता (नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा) असख्यात भागों में भी नहीं होता (नो सखेज्जे सुभागे सुहोज्जा) बहुत से सख्यात भागों में नहीं होता (नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा) बहुत स असख्यात भागों में भी नहीं होता किन्तु (नियमा तिभागे होज्जा) नियम से तीन भागों में से एक भाग में होता हैं क्योंकि-सग्रह नय के मत से तीनों द्रव्य है सो आनुपूर्वी द्रव्य तीसरे भाग में होता है (एव दोन्निवि) इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये ॥

भावार्थ-सग्रहनय से आनुपूर्वी द्रव्यों का अतर काल नहीं होता है और यह आनुपूर्वी द्रव्य दोनों द्रव्यों के तीसरे भाग में होता है क्योंकि सग्रहनय में तीन ही द्रव्य हैं सो यह तीसरे भाग में ही होता है ।

अथ भाव विषय ।

मूल-सगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ कयरमि भावे होज्जा?, नियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा एव दोन्निवि ८ अप्पाबहु नत्थि सेत्तं अणुगमे सेत्त सगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी सेत्त अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ।

पदार्थ-(सगहस्स) आणुपुव्वीदव्वाइ कयरमि भावे होज्जा) (प्रश्न) सग्रनय स आनुपूर्वी द्रव्य कौनसे भाव में होते हैं (उत्तर) (नियमासाइ पा-

रिणामए भावे होज्जा नियम से सादि पारिणामिक भाव में होते हैं अर्थात् जो आदि सहित परिणमन शील है (एव दोन्निवि) इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये (अप्पा बहुनत्थि) सग्रहनय से अल्प बहुत्व नहीं होता है (सेत्त अणुगमे) यही अनुगम द्वार है (सेत्त सगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी सेत्त अणो वणिहिया दव्वाणुपुव्वी) यही सग्रहनय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी है अपितु अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप इस स्थल पर ही सम्पूर्ण होगया है।

भावार्थ-सग्रह नयसे आनुपूर्व्यादि द्रव्य सादि पारिणामिक भाव में रहते हैं और अल्प बहुत्व द्वार इस नय से नहीं होता है सो इस का नाम अनुगम है और सग्रहनय से अनुपनिधि द्रव्यानुपूर्वी का यहां पर ही समास सम्पूर्ण होगया है।

अथ उपनिधि का विषय।

मूल-सेकिंत उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ? २ तिविहा पं० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ धम्मत्थिकाए १ अधम्मत्थिकाए २ आगासत्थिकाए ३ जीवत्थिकाए ४ पोग्गलत्थिकाए ५ अद्धासमय ६ सेत्त पुव्वाणु पुव्वी सेकिंत पच्छाणु पुव्वी ? २ अद्धासमय जावधम्मत्थिकाए सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणु पुव्वी २ एयाए चेव एगइयाएच्छ गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो सेत्तं अणाणुपुव्वी।

पदार्थ-(सेकिंत उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा प०) (प्रश्न) (उपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) उपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी तीन प्रकार से कथन की गई है जैसे कि (दव्वाणुपुव्वी) द्रव्यानुपूर्वी (पच्छाणु पुव्वी पश्चात् आनुपूर्वी और (अणाणुपुव्वी) अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणु पुव्वी) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकार से है जैसे कि-(धम्मत्थिकाय) धर्मास्तिकाय (अहम्मत्थिकाय) अधर्मास्तिकाय (आगासत्थिकाए ३) आकाशास्तिकाय (जीवत्थिकाए) जीवास्तिकाय ४ (पोग-

अनानुपूर्वी विषय निम्न लिखितानुसार है ।

सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए जाव अणतगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी सेत्त जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्ते दव्वाणुपुव्वी सेत्तं नोआगमओ दव्वाणुपुव्वी सेत्त दव्वाणुपुव्वी ।

पदार्थ-(सेकिंत अणाणुपुव्वी २) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) (एयाए चेव एगाइयाए एगुतरियाए जाव अणतगच्छ गयाए जाव अणतगच्छगयाए सेढीए) इन को एक से लेकर वृद्धि करते हुए यावत् अनतगच्छ किए जाए फिर अनतगच्छ की श्रेणी को (अन्न मन्नब्भासो दुरुवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी) परस्पर गुणा करने से यावत् भग बनजाते हैं उनमें से आदि अत के भग को न्यून करने से शेष रहेहुए भगो का नाम अनानुपूर्वी है सेत्त अणाणुपुव्वी) यही अनानुपूर्वी का स्वरूप है (सेत्त उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी) यही उपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी है सेत्त जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्त दव्वाणुपुव्वी सेत्त नो आगमओ दव्वाणुपुव्वी सेत्त नो आगमओ सेत्त दव्वाणुपुव्वी) यही ज्ञ शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी नो आगम से वर्णन की गई है और इसे ही द्रव्यानुपूर्वी कहते हैं ।

भावार्थ-अनानुपूर्वी उसे कहते हैं कि-जो अनत प्रदेशि श्रेणी है-उसको परस्पर गुणा करने से यावत् परिमाण भग बनते हैं उनमें से दो भग न्यून करने से अनानुपूर्वी बन जाती है और इसी का नाम उपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी है और इसी का नाम ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी नो आगम से वर्णन की गई है ।

अथ क्षेत्रानु पूर्वानुपूर्वी विषय ।

मूल-सेकिंत खेत्ताणुपुव्वी २ दुविहा प० तं० उवणिहिया अणोवणिहिया तत्थण जासा उवणिहिया साठप्पा तत्थण जासा अणोवणिहियासा दुविहा प० त० णेगम ववहाराण १

संगाहस्स २ सेकिंत णेगमववहाराण अणोवणिहिया खेत्ताणु पुव्वी २ पंचविहा प० त० अट्ठपयपरूवणया १ भगसमुकित्तणया भगोवदसणया समोयारे ४ अणुगमे ५ सेकिंत अट्ठपय परूवणया २ तिपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव असखेज्जपए सोगाढे आणुपुव्वी एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी दुपए सोगाढे अवत्तव्वएति सोगाढा आणुपुव्वीओ जावं असखेज्जपएसोगाढा आणुपुव्वीओ एगपए सोगाढा अणाणुपुव्वीओ दुपएसोगाढा अवत्तवए एयाए णेगमववहाराए अट्ठपयपरूवणया एए किं पयोयणं एयाणं णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए भगसमुक्कित्तणया कीरइ ।

पदार्थ-(सेकिंत खेत्ताणुपुव्वी २ दुविहा प० त० उवणिहिया अणोवणिहिया) (प्रश्न) क्षेत्रानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) क्षत्रानुपूर्वी द्विप्रकार से प्रतिपादन की गई है जैसे कि–उपनिधि का और अनुपनिधि का (तत्थण जासा उवणिहिया साट्ठप्पो) उन दोनों में से जो प्रथम उपनिधि है वह केवल स्थापनीय है क्योंकि उसका विवर्ण फिर किया जायगा अपितु जो (तत्थण जासा अणो वणिहिया सादुविहा प० त० णेगमववहाराण सगाहस्स २) अनुपनिधि का है वह दो प्रकार से वर्णन की गई है जैसे कि नैगम व्यवहारनय और सग्रहनय से–इस प्रकार क कथन करन पर शिष्य ने फिर शका की (सेकिंत णेगमववहाराण अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी २ पचविहा प० त०) वह कौनसी है जो नैगम और व्यवहार नय से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी है । गुरु ने उत्तर में कहा कि नैगम और व्यवहार नय से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी पाच प्रकार से प्रतिपादन कीगई है जैसे कि–(अट्ठपयपरूवणया) अर्थपद की प्रतिपादनता १ (भगसमुक्कित्तणया) भगसमुत्कीर्तनता २ (भगोवदसणया) फिर भगोपदर्शनता ३ और (समोयारे) समवतार ४ (अणुगमे) अनुगमता ५ (सेकिंत अट्ठपयपरूवणया २ (प्रश्न) अर्थ प्रतिपादनता किसे कहते हैं (उत्तर) (तिपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव असखेज्ज-

पए सोगाढे आणुपुव्वी) अर्थपद प्रतिपादनता उसका नाम है जो तीन प्रदेशि से लेकर आकाश के असंख्यात प्रदेशों पर पुद्गल अवगाहन हुआ है उसे क्षे त्रआनुपूर्वी कहते हैं और (एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी) आकाश के जो एक प्रदेशोपरि अवगाहन हुआ है उसका नाम अनानुपूर्वी है (दुपए सोगाढे अव त्तव्वए) द्विप्रदेशोपरि जो अवगाहन हुआ है उसका नाम अवक्तव्य द्रव्य है इसी प्रकार (तिपए सोगाढा आणुपुव्वीओ) बहुत से आनुपूर्वी द्रव्य बहुत से तीनों प्रदेशोपरि अवगाहन हुए हैं उनका नाम बहुत सी क्षेत्रानुपूर्वियां हैं (जाव असंखेज्ज पएसोगाढा आणुपुव्वी ३) इसी प्रकार यावत बहुत से असंख्यात प्रदेशोपरि अवगाहन कीहुई बहुतसी आनुपूर्वियायें हैं किन्तु (एगपएसो गाढा अणाणुपुव्वीओ) जो एक आकाश के प्रदेशों पर बहुत से पुद्गल अवगाहन हैं उनका नाम बहुतसी अनानुपूर्वियां हैं (दुपएसोगाढा अवत्तव्वए) पूर्ववत् ही बहुत से द्विप्रदेशों पर अवगाहन हुआ पुद्गल उसका नाम बहुत से अवक्तव्य द्रव्य है (एयाणं णेगमववहाराणं) इन नैगम और व्यवहारनय से (अट्ठपयपरूवणयाए किं पयोयण) जो अर्थ पद की प्रतिपादनता कीगई है उसका क्या प्रयोजन है? गुरु कहते हैं कि (एयाए णेगमववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए भंग समुक्कित्तणया कीरइ) इन नैगम और व्यवहारनय से अर्थ पद दिखलाया गया है इसका मुख्य प्रयोजन भंगों का कीर्तन करना ही है।

भावार्थ-क्षेत्रानुपूर्वी द्रव्यों की अपेक्षा से ही सिद्ध है क्योंकि जैसा द्रव्य जिस प्रकार से क्षेत्र में स्थित है उसी प्रकार उसकी गिणती की जाती है सो क्षेत्रानुपूर्वी द्वि प्रकार से प्रतिपादन की गई है जैसे कि-उपनिधि का और अनुपनिधि का सो उपनिधि का अभी स्थापनीय हैं अनुपनिधि का द्वि प्रकार से प्रतिपादन की जाती है एक नैगम व्यवहार नय से द्वितीय संग्रह नय से-सो नैगम और व्यवहार नय के मत से अनुपाधि क्षेत्रानुपूर्वी पांच प्रकार से कही गई है जैसे कि-विद्यमान अर्थों की प्रतिपादनता १ भंग समुत्कीर्तनता २ भंगोपदर्शनता ३ समवतार ४ और अनुगम ५ विद्यमान पदार्थों की प्रतिपादनता उसका नाम है जो तीन प्रदेशि से लेकर असंख्यात प्रदेशों पर्यन्त आकाश में पुद्गल स्थित हैं वे क्षेत्रानुपूर्वी हैं एक प्रदेश पर जो स्थित है-उसका नाम अनानुपूर्वी है द्वि प्रदेशों पर जो हैं वे अवक्तव्य द्रव्य हैं यह कथन एक वचनान्त है किन्तु इसी प्रकार यही कथन बहुवचनान्त भी जान लेना तब बहुत आनुपूर्वि-

यमें अनानुपूर्वियाँ अवक्तव्य द्रव्य सिद्ध हो जाते हैं अतः इस नियमान अर्थ प्रतिपादनता का मुख्य प्रयोजन भग समुत्कीर्तन करना ही है, अपितु यह सर्व कथन नैगम और व्यवहार नय से कहा गया है जो अर्थ पद है वह सर्व तीनों प्रकार से द्रव्यों की सिद्धि करता है सो लोक में तीनों प्रकार के द्रव्यों की अस्ति है इसीलिये इसका नाम अर्थ प्रतिपादनता है ॥

अथ भग समुत्कीर्तनता विषय ।

मूल-सेकिंतं णेगमववहाराण भग समुकित्तणया ? २ अत्थिआणुपुव्वी १ अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वएय ३ एव जहे वहेठा तहेवने यव्व नवरउगाटा भाणियव्वा तहेव भगो व दसणया तहेव समोयारे ।

पदार्थ-(सेकिंत णेगमववहाराण भग समुकित्तणा २ (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनय के मत से भग समुत्कीर्तनता किस प्रकार से है (उत्तर) नैगम और व्यवहारनय से भग समुत्कीर्तनता निम्नप्रकार से है जैसे कि-(अत्थिआणुपुव्वी १ अणाणुपुव्वी २ अत्थिअवत्तव्वएय ३) एक आनुपूर्वी द्रव्य १ एक अनानुपूर्वी २ एक अवक्तव्य ३ (एव जहेवहेट्ठा तहेव नेयव्व नवरउगाढा भाणियव्वा तहेव भगोवदसणया तहेव समोयारे) इसी प्रकार भग जो पूर्व लिखे गये हैं वैसे ही यहा पर जान लेने चाहिये और उसी प्रकार पद् विंशति भग चेत्रानुपूर्वी के जान लेने किन्तु अवगाहन शब्द का प्रयोग कर लेना चाहिये और पूर्ववत् ही समवतार द्वार जान लेना तद्वत् ही भगोपदर्शनता है ॥

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मत से प्राग्वत् भग समुत्कीर्तना और भगोपदर्शनता समवतार द्वार अथवा चेत्रानुपूर्वी आदि सर्व जान लेने क्योंकि-इनका विवर्ण पूर्व कई स्थलों में किया गया है ॥

अथ अनुगम विषय ।

सेकिंत्त अणुगमे २ नवविहे पराणत्ते तजहा संतपयपरूवणया गाहा सेकिंत संतपयपरूवणया २ णेगमववहाराण खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइ कि अत्थि नत्थि नियमा अत्थि एवं दो-

असंख्यात वा बहुत से लोक के संख्यात भागों में वा बहुत से वा असंख्यात भागों में अथवा अल्प देश न्यून सर्व लोक में होजाता है क्योंकि यदि अचित्त महास्कंध सर्वलोक प्रमाण भी होजावे तो तब भी तीन प्रदेश न्यून होता है जो अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य के स्थानों को छोड़ देता है यह दोनों द्रव्य सदैव काल इस लोक में विद्यमान रहते हैं अपितु नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा निश्चय ही यह द्रव्य सर्वलोक में विराजमान रहते हैं और इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये और स्पर्शना द्वार काल द्वार भावत् ही जान लेने चाहिये ।

अथ स्थिति द्वार विषय ।

खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवच्चिरं होइ एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं नाना दव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा एवं दोन्निवि णेगमववहाराणं खेत्ताणुपुव्वी दव्वाइ कालउ केवचिरं अंतरं होइ एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं नानादव्वाइं पडुच्च नत्थि अंतरं एवं दोन्निवि णेगमववहाराणं खेत्ताणुपुव्वी दव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा किं संखेज्जइ भागे एवं पुच्छाणि वयणं च जहेव हेट्ठा तहेव नेयव्वा अणाणुपुव्वी दव्वाइ अवत्तव्वगदव्वाणिवि जहेव हेट्ठा णेगमववहाराणं खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइं कयरंमि भावे होज्जा नियमा साइ परिणामिए भावे होज्जा एवं दोन्निवि ॥

पदार्थ-(णेगमववहाराणं खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवचिरं होइ) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे पूज्य ! नैगम और व्यवहार नय से क्षेत्रानुपूर्वी गत द्रव्य काल से कब तक एक स्थान में स्थिति करते हैं गुरु कहने लगे कि भो शिष्य कि नैगम और व्यवहार नय के मत से क्षेत्रानुपूर्वी गत द्रव्यों की गति निम्न प्रकार से है यथा-(एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखे ज्जकालं) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्यस्थिति एक समय प्रमाण उत्कृष्ट अस

ख्यात काल पर्यन्त होती है यदि एक द्रव्य एक एक स्थान पर स्थित रहे तो न्यून से न्यून एक समय मात्र उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त रह सकता है अपितु-(नानादव्वाइ पडुच्च सव्वद्धा एव दोन्निवि) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा सर्व काल में आनुपूर्वी द्रव्य रहते हैं और इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य भी जानने चाहिये (णेगमववहाराण खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइ कालओ केवचिर अतर होइ) नैगम और व्यवहार नय के मत से जो क्षेत्रानुपूर्वी गत द्रव्य है उनका काल से कितना चिर अतर होता है-ऐसा शिष्य के पूछने पर गुरु कहने लगे कि-(एग दव्व पडुच्च जहन्नेण एग समय उक्कोसेण असखेज्जकाल) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय मात्र अन्तरकाल होता है उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त अन्तर होता है किन्तु-(नानादव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर एव दोन्निवि) नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा अन्तरकाल नहीं होता है इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के विषय में भी जानना चाहिये (णेगमववहाराण खेत्ताणुपुव्वी दव्वाइ सेस दव्वाण कइ भागे होज्जा) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से क्षेत्रानुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्यों के कितने भागों में होता है (किं सखेज्जइ भागे होज्जा एव पुच्छाणि वयण च जहेवद्दव्वा तहेव नेयव्वा) क्या सख्यात भाग में होते हैं वा असख्यात भाग में इत्यादि जैसे पूर्व इस विषय में लिखा गया है कि वैसे ही जानना चाहिये (अणाणुपुव्वी दव्वाइ अवत्तव्वगदव्वाणिवि जहेव हेट्ठा) अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य भी प्राग्वत हैं। (णेगमववहाराण खेत्ताणुपुव्वी दव्वाइ कयरंमि भावे होज्जा) नैगम और व्यवहार नय के मत से क्षेत्रानुपूर्वी गत द्रव्य कौन से भाव में होते हैं-ऐसे पूछने पर गुरु कहने लगे कि-(नियमासाइ पारिणामिए भावे होज्जा) निश्चय ही यह द्रव्य सादि पारिमाणिक भाव में होते हैं किन्तु यह द्रव्य नित्य नहीं हैं, इसलिये सादि पारिणामिक भाव में कहे गये है-(एव दोन्निवि) इसी प्रकार दोनों द्रव्य भी जानने चाहिये ॥

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मत से क्षेत्रानुपूर्वी गत द्रव्यों की स्थिति जघन्य एक समय प्रमाण उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त है किन्तु सर्व द्रव्यों की अपेक्षा सर्व काल में नाना प्रकारों के द्रव्यों की स्थिति रहती है इसी प्रकार इनका अन्तर काल है शेष द्रव्यों के कितने भाग में यह द्रव्य हैं इस विषय में प्राग्वत् जानना चाहिये और यह द्रव्य नियम से सादि पारिणामिक

भाव में होते हैं क्योंकि ये परिणमन शील हैं अपितु यह द्रव्य स्वाभाविक नित्य नहीं होते इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये ॥

अथ अल्प बहुत्वद्वार विषय ।

एएसि णं भंते णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अवत्तव्वगदव्वाण य दव्वट्ठयाय पयसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा गोयमा सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइ अप्पएसट्ठयाए अवत्तव्वगदव्वाइ पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ आणुपुव्वीदव्वाइ पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ दव्वट्ठपएसट्ठया सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए अप्पएसट्ठयाय विसेसाहियाइ अवत्तव्वगदव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ आणुपुव्वी दव्वाइ दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ ताइ चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ सेत्तं अणुगमे सेत्तं णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी॥ सेकिंतं संगाहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणु जहेव दव्वाणुपुव्वी तहेव खेत्ताणुपुव्वी विसेत्तं संगाहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥

पदार्थ–(एएसि णं भंते णेगमववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वी दव्वाणं अवत्तव्वगदव्वाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाय कयरेर हितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहियाइ वा) श्री गौतम प्रभुजी श्री

भगवान् से पूछते हैं कि–हे भगवन् ! नैगम और व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्य, अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य द्रव्य, यह तीनों ही द्रव्य द्रव्यार्थिक से और प्रदेशार्थिक से तथा द्रव्य और प्रदेश दोनों के युगपत् से कौन २ से द्रव्य अल्प हैं वा बहुत हैं वा तुल्य हैं या विशेषाधिक हैं, इस प्रकार के पूछने पर श्री भगवान् उत्तर देते हैं कि–(गोयमा) हे गौतम (सव्वत्थोवाइ णेगमववहाराण) सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय के मत से (अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए) अवक्तव्य द्रव्य द्रव्यार्थक से हैं १ अपितु (अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइ) अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से विशेषाधिक है २ (आणुपुव्वी दव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से असख्यात गुणाधिक हैं किन्तु (पएसट्ठयाए) प्रदेशार्थक से (सव्वत्थोवाइ णेगम ववहाराण) सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय के मत से (अणाणुपुव्वी दव्वाइ अप्पएसट्ठयाए) अनानुपूर्वी द्रव्य अप्रदेशार्थक से हैं किन्तु (अवत्तव्वगदव्वाइ पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अवक्तव्य प्रदेशार्थिक से विशेषाधिक हैं उनसे–(आणुपुव्वीदव्वाइ पएसट्ठयाए असखेज्जगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेशार्थक से असख्यात गुणाधिक हैं अपितु (दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थो वा णेगमववहाराण अवत्तव्वगदव्वाइ दव्वट्ठयाए) द्रव्यार्थक और प्रदेशार्थक से सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य हैं अपितु (अणाणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठअप्पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से और प्रदेशार्थक से विशेषाधिक हैं फिर उनसे (अवत्तव्वगदव्वाइ पएसट्ठयाए विसेसाहियाइ) अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशार्थक से विशेषाधिक हैं फिर (आणुपुव्वीदव्वाइ दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणाइ) आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से असख्यात गुणाधिक हैं (ताइ चेव पएसट्ठयाए असखेज्जगुणाइ) उन द्रव्यार्थक से प्रदेश असख्यात गुणाधिक हैं (सेत्त अणुगमे) यही अनुगम है (सेत्त णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी) यही नैगम और व्यवहारनय के मत से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी है । (सेकिंत सगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी जहेव दव्वाणुपुव्वी तहेव खेत्ताणुपुव्वी सेत्त सगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी) (प्रश्न) सग्रह नय के मत से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी किस प्रकार से है (उत्तर) जैसे द्रव्यानुपूर्वी कथन की गई है वैसे ही क्षेत्रानुपूर्वी का भी समास जान लेना यही सग्रह नय के मत से क्षेत्रानुपूर्वी है ॥

भावार्थ—श्री गौतम स्वामीजी उक्त द्रव्यों को अल्प बहुत के नियम से भगवान् से विशेष निर्णय करते हैं कि हे भगवन्! उक्त तीनों द्रव्यों में अल्प बहुत्व कौन २ से द्रव्य हैं, श्री भगवान् कहते हैं कि हे गौतम! सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय के मत में द्रव्यों की अपेक्षा से अवक्तव्य द्रव्य हैं उन से अनानुपूर्वी द्रव्यों का द्रव्य विशेषाधिक है। और उनसे आनुपूर्वी द्रव्यों का द्रव्य असंख्यात गुणाधिक है। अपितु प्रदेशों की अपेक्षा से सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी द्रव्य अप्रदेशार्थक हैं। और अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से उनसे विशेषाधिक हैं। फिर उनसे भी आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से असंख्यात गुणाधिक हैं किन्तु द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से सर्व से स्तोक नैगम और व्यवहार नय के मत से द्रव्यार्थक से अवक्तव्य द्रव्य हैं उनसे अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्य और अप्रदेशार्थक की अपेक्षा से विशेषाधिक हैं फिर उनसे अवक्तव्य द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से विशेषाधिक हैं फिर आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थक से असंख्यात गुणाधिक हैं किन्तु प्रदेश उनसे भी असंख्यात गुणाधिक हैं सो इसी का नाम अनुगम है नैगम और व्यवहार नय के मत से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी का समास सम्पूर्ण हुआ और संग्रह नय के मत से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी जैसे कि द्रव्यानुपूर्वी पहिले वर्णन की गई है उसी प्रकार जान लेनी चाहिये और संग्रह नय के मत से इसी का नाम अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी कहते हैं।

अथ उपनिधि का पूर्वी विषय।

मूल—सेकिंत उपणिहिया खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी२ अहोलोए तिरियलोए उड्ढलोए सेत्त पुव्वाणपुव्वी ॥१॥ सेकिंत पच्छाणुपुव्वी उड्ढलोए तिरियलोए अहलोए, सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाएतिगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंत उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा प० तं०) (प्रश्न) अब क्षेत्रानुपूर्वी उपनिधिका कौनसी है (उत्तर) उपनिधिका क्षेत्रानुपूर्वी तीनों प्रकार से प्रतिपादन कीगई है जैसे कि (पुव्वाणुपुव्वी) पूर्वानुपूर्वी (पच्छाणुपुव्वी) पश्चात् आनुपूर्वी (अणाणुपुव्वी) अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पूर्वानुपूर्वी तीनों प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि (अहोलोए तिरियलोए उड्ढलोए) अधोलोक तिर्यक्लोक ऊर्ध्वलोक (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) यही पूर्वानुपूर्वी है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पश्चात् आनुपूर्वी भी तीनों प्रकार से वर्णित है जैसे कि (उड्ढलोए तिरियलोए अहोलोए) ऊर्ध्वलोक तिर्यक लोक अधोलोक (सेत्तं पच्छाणुपुव्वी) यही पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगुत्तरियाए तिगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन्हीं तीनों आनुपूर्वी द्रव्यों को तीनों गच्छ करके अर्थात् (१–२–३) तीनों श्रेणिया स्थापन करके फिर इन्हीं को परस्पर गुणा करके दो आदि अत के भग न्यून करने से जो भग शेष रहते हैं उन्हीं को अनानुपूर्वी कहते हैं (सेत्त अणाणुपुव्वी) यही अनानुपूर्वी है ॥

भावार्थ-उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी तीनों प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ सो पूर्वानुपूर्वी भी तीनों प्रकार से है अधोलोक तिर्यक्लोक ऊर्ध्वलोक इन्हीं को उल्था करके पठन करना उन का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है अपितु अनानुपूर्वी में तीनों गच्छ करके फिर उनको परस्पर अभ्यास (गुणा) करने से यावन्मात्र भग बनते हों उनमें से आदि और अन के भग को न्यून करने से यावन्मात्र भग शेष रहे हों सो उन्हीं का नाम अनानुपूर्वी है ॥

अथ अधोलोक विषय ।

अहो लोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा पं० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ रयणप्पभा १ सक्करप्पभा २ वालुयप्पभा ३ पकप्पभा ४ धूमप्पभा ५ तमा ६ तमतमा ७ सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २

तमतमा जाव रयणप्पभा सेत्त पुच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणु पुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए सत्त गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरुवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(अहो लोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा प० त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) अधोलोक की अपेक्षा मे क्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ और अनानुपूर्वी ३ इस प्रकार के गुरु के वचन सुनकर शिष्य ने प्रश्न किया कि (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमप्पभा तमप्पभा तमतमाप्पभा) हे भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं, गुरु ने उत्तर में कहा कि अधोलोक के क्षेत्र की अपेक्षा से सात प्रकार की आनुपूर्वी है क्योंकि नीचे लोक में सात पृथिवियां हैं जैसे कि रत्नप्रभा १ शर्करप्रभा २ वालुप्रभा ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमाप्रभा ७ से यह अनुक्रमता पूर्वक गणन करने से इनकी आनुपूर्वी बन जाती है (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) यही पूर्वानुपूर्वी है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी तमतमा जाव रयणप्पभा सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) सातवें नरक से प्रथम पर्यन्त गणन करना उसे (७-६-५-४-३-२-१) पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं, सो यही पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरिया सत्त गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणा सेत्त अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन सातों को एक एक की वृद्धि करते हुए जो सात गच्छ किये हैं जैसे कि (१, २, ३, ४, ५, ६, ७) इनको परस्पर गुणाकार करने से ५०४० भग बन जाते हैं जिनमें आदि अत के भग को छोडकर ५०३८ भग रहते हैं उन्हीं का नाम अनानुपूर्वी है।

भावार्थ-अधोलोक की तीनों प्रकार से आनुपूर्वी होती हैं सात ही नरकों के नाम आनुपूर्वी और पश्चात् आनुपूर्वी पूर्ववत् ही जान लेनी चाहिये किन्तु अनानुपूर्वी में सात को परस्पर गुणाकार करने से ५०४० भग बन जाते हैं सो उनमें से आदि अत के भग को छोडकर शेष जो ५०३८ भग रहते हैं उन्हीं को अनानुपूर्वी कहते हैं ॥

अथ तीर्यक्लोक विषय ।

तिरिय लोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा पं० तं० पुव्वाणु-पुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ जवूद्दीवे लवणे २ धायइ ३ कालोय ४ पुक्खरे ५ वरुणे ६।७। खीर ८ घय ९ खोयनदी अरुणवरे कुडले रुयगे आभरण १ वत्थ २ गंध ३ उप्पल ४ पउमेय ५ पुढवी ६ निधि ७ रयणे ८ वासहर ९ दह १० नइओ ११ विजया १२ वक्खार १३ क-प्पिंदा १४ । १५ । २ कुरा १६ मदर १७ आवासा १८ कूडा १९ नक्खत्त २० चद २० चंद २१ सूरा य २२ देवे १।१ नागे १।१ जक्खो १। १ भूएय १। १ सयभू रमणे य १। १ ॥ ३ ॥ सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिन्तं पच्छाणुपुव्वी २ सयभू रमणे भूय जाव जवूद्दीवे सेत्तं पच्छाणुपुव्वी सेकित्तं अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असखिज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी "

पदार्थ[1] (तिरियलोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा प० त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छा-णुपुव्वी अणाणुपुव्वी) तिर्यक्लोक की क्षेत्रानुपूर्वी तीनों प्रकार से वर्णन की गई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ और अनानुपूर्वी ३ इस प्रकार के गुरु के वचन सुनकर शिष्य ने प्रश्न किया कि (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २) हे भगवन् पूर्वानुपूर्वी किसे कहते है गुरु कहने लगे कि भो शिष्य ! पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकार से है जैसे कि-(जबूद्दीवे १ लवणे २) जबूद्वीप १ लवणसमुद्र २ (धायई ३ कालोय) धात की खड ३ कालोदधि ४ (पुक्खरे ५-६) पुष्कर-द्वीप ५ और पुष्करसमुद्र ६ (वरुणे ७।८) वरुणद्वीप ७ वरुणसमुद्र ८ (खीर ९-१०) क्षीरद्वीप ९ और क्षीर समुद्र १० (घयं ११। १२) घृत

१-ऋतोऽत् प्रा० व्या० अ० ८ सूत्र १२६ आदेर्ऋकारस्य अत्वमभवति यथायथ तयम् कयम् वसहो मयो घडो इत्यादि ॥

द्वीप ११ और घृतसमुद्र १२ (खोय १३ । १४) इक्षुद्वीप १३ और इक्षुसमुद्र १४ (नन्दी १५ । १६) नदीद्वीप १५ नदीसमुद्र १६ (अरुणवरे १७ । १८) अरुणद्वीप १७ और अरुणसमुद्र १८ कुडल १९ । २०) कुडलद्वीप १९ और कुडलसमुद्र २० (रुयगे २१ । २२) रुचकद्वीप २१ और रुचकसमुद्र २२॥ अब विशेष द्वीपों के जानने का उपाय वर्णन करते हैं (आभरण १) आभूषणों के नामों पर द्वीप और समुद्र हैं १ (वत्थ २) वस्त्रों क नामों पर २ (गंध ३) गंध के नामों पर ३ (उप्पल ४ पद्मेय ५ पुढवी ६ निधि ७) और यावन्मात्र उत्पल कमलों के नाम हैं ४ पद्म कमलों के नाम हैं ५ पृथिवियों के नाम हैं ६ और निधियों के नाम हैं ७ (रयणे ८ वासहर ९ दह १० नइउ ११ विजया १२ वक्खार १३ कप्पिंदा १४–१५) रत्नों के नामों पर ८ वर्ष धरों के नामों पर ९ (जो पर्वत क्षेत्रों के नियम कर्ता है) ह्रदों के नामों पर १० विजयों के नामों पर इसी तरह आगे भी जान लेने चाहिये वक्षरों के नाम पर (यह भी पर्वत है) कल्पों के नाम पर १४ और इन्द्रों के नाम १५ (कुरु १६ मंदिर १७ आवास १८ कूडा १९ नक्खत्त २० चन्द २१ सूर २२ देवे २३ नाग २४ जक्खे २५ भूयय २६ सयभूरमणे २७) देवकुरु आदि क नाम मंदिरों के नाम आवासों के नाम कूटों के नक्षत्रों के चन्द्रमा के सूर्य के यावन्मात्र नाम हैं उसी प्रकार द्वीप समुद्रों के असंख्यात नाम जानने चाहिये किंतु देव नाग यक्ष भूत स्वयम्भूरमण इन पांच द्वीप और पांच ही समुद्रों के एकैक ही नाम है इसलिये यह पांच एकत्व वर्णन किये गये हैं (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) यही पूर्वानुपूर्वी है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ सयभूरमणे भूय जाव जंबूद्दीवे सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) स्वयंभूरमण समुद्र से लेकर जंबूद्वीप पर्यन्त यावन्मात्र द्वीप और समुद्र हैं उन्हीं का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगा इयाए एगुत्तरियाए असंखिज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्न मन्नम्भासो दुरूवणो सेत्त अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन सर्व को एक एक की वृद्धि करते हुए असंख्यात गच्छ रूप श्रेणि की जाय फिर उन को परस्पर गुणा करें यावन्मात्र भगवन्ने वर्णन से आदि और अन्त के भग को वर्जे करके शेष भग अनानुपूर्वीय कहलाते हैं सो इसी का नाम अनानुपूर्वी है।

भावार्थ–जम्बूद्वीप से लेकर स्वयम्भू रमण समुद्र पर्यन्त गणन करने को

पूर्वानुपूर्वी कहते हैं स्वयम्भू रमण से जम्बूद्वीप पर्य्यंत गिणती को पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं असंख्यात रूप गच्छ श्रेणी को परस्पर गुणा करने पर यावन्मात्र भंग बनें उनमें से आदि और अंत के भंग को छोड़कर शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं।

ऊर्ध्वलोक क्षेत्रानुपूर्वी विषय।

उड्ढलोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा पन्नत्ता त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिन्त पुव्वाणुपुव्वी २ सोहम्मे १ इसाणे २ सणंकुमारे ३ माहिन्दे ४ वम्भलोए ५ लंतए ६ महासुक्के ७ महस्सारे ८ आणए ९ पाणए १० आरणे ११ अच्चुए १२ गेविज्जविमाणे १३ अणुत्तरविमाणे १४ इसीप्पभारा १५ सेत्तं पुव्वाणुपुव्वी सेकिन्तं पच्छाणुपुव्वी इसीप्पभारा जाव सोहम्मे सेत्तं पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए पन्नरस गच्छगयाए सेढिये अन्न मन्नभासो दुरूवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी॥

पदार्थ-(उड्ढलोए खेत्ताणुपुव्वी २ तिविहा प० त०) ऊर्ध्वलोक क्षेत्रानुपूर्वी तीनों प्रकार से वर्णित है जैसे कि (पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) पूर्वानुपूर्वी पश्चात् आनुपूर्वी अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) उर्ध्वलोक की पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकार से है जैसे कि-(सोहम्मेसाणेसणं कुमार माहिन्देवम्भलोए लन्तए महासुक्के सहस्सारे आणए पाणए आरणे अच्चुए गविज्जविमाणे अणुत्तरोविमाणे इसीप्पभारा सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) सुधर्मदेवलोक इसी प्रकार देवलोक शब्द सर्वत्र संयोजन कर लेवें १ ईशान २ सनत्कुमार ३ माहेन्द्र ४ ब्रह्मलोक ५ लांतक ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ ग्रैवेयक १३ अनुत्तरविमान १४ ईषत्प्रभारा पृथिवी १५ इन्हीं का नाम पूर्वानुपूर्वी है। (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ इसीप्पभारा जावसोहम्मे सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) ईसत्प्रभा पृथिवी से लेकर सुधर्म देवलोक

पर्यन्त जो गणना है उन्हीं का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकित अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए पन्नरसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी । (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन पच दश (१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५) अकों को परस्पर गुणा करने पर यावन्मात्र भग*बने उनमें से आदि अत क भगों को छोड़कर शेष भग अनानुपूर्वी कहलाते हैं सो इन्हीं का नाम अनानुपूर्वी है ॥

भावार्थ-ऊर्ध्व लोक की तीनों प्रागवत् पूर्विया हैं सो द्वादश कल्प देवलोक ग्रैवयक १३ अनुत्तर विमान १४ ईषत् प्रभा १५ इस प्रकार की गणना को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं इससे विपरीत को पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं पच दश अकों की श्रेणी का परस्पर गुणा करने पर यावन्मात्र भग बने उनमें से आदि अतके भग को छोड़ कर शेष रहे हुए भग अनानुपूर्वी कहाते हैं सो इन्ही का नाम अनानुपूर्वी है ।

अथ प्रकारान्तर विषय ।

अहवा उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिन पुव्वाणुपुव्वी २ एग पए सोगाढे जाव असखेज्जपए सोगाढे सेत पुव्वाणु- सेकित पच्छाणुपुव्वी २ असखेज्जपए सोगाढे जाव एगपए सोगाढे सेत्त पच्छाणु सेकित अणाणुपुव्वी एगाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असखेज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्न मन्न भासो दुरूवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ।

पदार्थ-(अहवा) अथवा (उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा प० त०) उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार से विवर्ण की गई है जैसे-कि पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३) पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ इस प्रकार गुरु के कहने पर शिष्यने फिर प्रश्न किया कि-गुरु

* नोट-१३०७६७४,३६८००० इतने भग १५ अको के होते हैं ॥

(सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी) हे भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं गुरुने उत्तर दिया भो शिष्य ! पूर्वानुपूर्वी उसका नाम है जो (एगपए सोगाढे जाव असखेज्ज-पएसोगाढे सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) द्रव्य अनुक्रमता पूर्वक आकाश के एक प्रदेश से लेकर यावत् असख्यात प्रदेशों पर्यन्त अवगाहन हुआ है उसे क्षेत्रानुपूर्वी कहते हैं (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ असखेज्जपएसोगाढे जाव एगपए सोगाढे सेत्त पच्छापुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) जो असख्यात प्रदेशोपरि द्रव्य अवगाहन हुआ है यावत् एक प्रदेशोपरि अवगाहन होरहा है उसे पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असखेज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इस आनुपूर्वी को एक २ की वृद्धि करते हुए असख्यात गच्छरूप श्रेणियें जब होजाए तब उनको परस्पर गुणाकार करके फिर उसके आदि और अत के रूप को छोड़ कर शेप जो भग रहते हैं उनको अनानुपूर्वी कहते हैं क्योंकि अनानुपूर्वी में यावन्मात्र अक होते हैं उनको परस्पर गुणा किया जाता है अपितु आदि और अत के अकों को वर्ज करके शेप रहे हुए अक अनानुपूर्वी कहलाते है। (सेत्त उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी) यही उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी होता है ॥

भावार्थ-उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी, पश्चात् आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी जो द्रव्य आकाश के एक प्रदेश से लेकर यावत् असख्यात प्रदेशों पर अवगाहन हुआ है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं ठीक इससे विपरीत गणना को पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं और एक प्रदेश से लेकर यावत् असख्यात प्रदेश पर्यन्त जो श्रेणियें है उनको परस्पर गुणा करने से यावत्-प्रमाण भग बनते हैं उनमें से आदि और अत के भग को वर्ज करके, शेप रहे हुए भग अनानुपूर्वी कहलाते हैं यही उपनिधिका क्षेत्रानुपूर्वी है और इसे ही उपनिधिका कहते है ॥

अथ कालानुपूर्वी विषय ।

सेकिंतं कालाणुपुव्वी २ दुविहा पं० तं० उवणिहिया अणोवणिहिया तत्थ णं जा सा उवणिहिया सा ठप्पा तत्थ णं

जासा अणोवणिहिया सा दुविहा प० त० णेगमववहाराण सग्गहस्स णेगमववहाराण तहेव पचविहा जाव तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी जाव असखेज्ज समयट्ठिइए आणुपुव्वी एगसमय ट्ठितीय अणाणुपुव्वी दुसमयट्ठितीए अवत्तव्वए तिसमयट्ठितीयाओ आणुपुव्वीओ जाव असखेज्ज समयट्ठितीयाओ आणुपुव्वीओ एगसमय ट्ठितीयाओ अणाणुपुव्वीओ दुसमयट्ठितीयाइ अवत्तव्वयाइ सेत्त णेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणया एयाए चेव णेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणयाए किं पओयण २ भग समुक्कित्तणया कीरइ सेकिंत णेगमववहाराण, भगसमुक्कित्तणया २ अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वए एव दव्वाणुपुव्वी गमेण कालाणुपुव्वी एवित्ते चेव छव्वीस भगाणेयव्वा जाव सेत्त णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणयाए एयाए णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणयाए किं पओयण २ भगोवदसणया कीरइ सेकित्त णेगमववहाराणं भगोवदसणया २ तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी एगसमयट्ठिइए अणाणुपुव्वी दुसमयट्ठितीए अवत्तव्वए एत्थविसो चेव गमो सेत्त भगोवदसणया सेकित समोयारे णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाइ कहिं समोयरति किं आणुपुव्वि दव्वेहिं समोयरति पुच्छागो, आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति नो अणाणुपुव्वी दव्वेहि समोयरति नो अवत्तव्वग दव्वेहिं समोयरति एव दोन्निवि सट्ठाणे २ समोयरति सेत्त समोयारे सेकित्त अणुगमे २ नवविहे पण्णत्ते तजहा सतपयपरूवणया जाव अप्पाबहु ॥

पदार्थ-(सेकिंत कालाणुपुव्वी २ दुविहा प० त०) (प्रश्न) कालानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) कालानुपूर्वी द्विप्रकार विवर्ण कीगई है जैसे कि (उवणिहियाय अणोवणिहियाए) उपनिधि का और अनुपनिधि का अपितु (तत्थ ण जा सा उवणिहियाए साइप्पा) जो उपनिधि का है वह इस समय स्थापनीय है क्योंकि उसका स्वरूप फिर किया जायगा किन्तु जो (तत्थ णजा सा अणावखिहिया सा दुविहा प० त०) उनमें से जो अनुपनिधि का है वह द्विप्रकार से प्रतिपादन कीगई है जैसे कि (णेगमववहाराण संगहस्स) नैगम और व्यवहारनय और सग्रहनय के मत से किन्तु (णेगमववहाराण तहेव पचविहा) नैगम और व्यवहारनय से पूर्ववत् पाच प्रकार से वर्णन कीगई है (जाव तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी जाव असखेज्ज समयट्ठिइए आणुपुव्वी) यावत् तीन समय की स्थिति वाला द्रव्य आनुपूर्वी सज्ञक होता है इसी प्रकार असख्यात समय की स्थिति वाला भी आनुपूर्वी सज्ञक होता है स्थिति की अपेक्षा से द्रव्यों की कालानुपूर्वी वनती है क्योंकि अभेदरूप होने से अपितु (एगसमयट्ठितीए अणाणुपुव्वी) एक समय की स्थिति वाला द्रव्य अनानुपूर्वी होता है (दुसमय ट्ठितीय अवत्तव्वए) द्विसमय की स्थिति वाला द्रव्य अवक्तव्य सज्ञक होता है यह तीन भग एक वचनान्त हैं अब तीनों के सूत्रकार बहुवचन सिद्ध करते हैं (तिसमयट्ठितीयाओ आणुपुव्वी जाव असखेज्ज समयट्ठितीयाओ आणुपुव्वीओ) बहुत से द्रव्य तीनों समय की स्थिति वालों की अपेक्षा से बहुतसी कालानुपूर्विया होती हैं इसी प्रकार यावत् असख्यात समय की स्थिति वालों द्रव्यों की अपेक्षा से बहुतसी कालानुपूर्विया होती है । (एगसमयट्ठितीयाओ अणाणुपुव्वीओ) बहुत से द्रव्यों की एक समय की स्थिति की अपेक्षा से बहुत सी अनानुपूर्विया होती है (दुसमयट्ठितीयाइ अवत्तव्वयाइ) बहुत से द्विसम की स्थिति वाले द्रव्यों की अपेक्षा से बहुत से अवक्तव्य द्रव्य होते हे (सेत्त णेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणया) यही नैगम और व्यवहारनय के मत से अर्थ पद की प्रतिपादनता है । जब गुरु ने इस प्रकार से कहा तब शिष्य ने शका की कि हे भगवन ! (एयाए चव णेगमववहाराण अट्ठपयपरूवणयाए किं पओयण) इन नैगम और व्यवहारनय के मत से अर्थ पद प्रतिपादनता का मुख्य प्रयोजन क्या है ? इस प्रकार शिष्य की शका होने पर गुरु कहने लगे कि ! इनका मुख्य प्रयोजन (भगसमुक्कित्तणया कीरइ) भगों की समुत्कीर्तन

करना है अर्थात् इनके द्वारा भगों की समुत्कीर्तनता कीजाती है जब गुरु ने इस प्रकार से कहा तब शिष्य ने फिर पूछा कि (सेकिंत णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणया) वह कौनसी है जो नैगम और व्यवहारनय के मत से भग समुत्कीर्तनता है, गुरु ने उत्तर दिया कि (अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वय एव दव्वाणुपुव्वी गमेण कालाणुपुव्वी एविंचे चेव छव्वीस भगाणेयव्वा जाव सेत्त णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणयाए) एक आनुपूर्वी द्रव्य है एक अनानुपूर्वी द्रव्य है २ एक अवक्तव्य द्रव्य है ३सी प्रकार द्रव्यानुपूर्वीवत् कालानुपूर्वी जाननी चाहिये सो वही षट् विंशति भग भी जानने चाहिये माग्वत् यावत् यही नैगम और व्यवहारनय के मत से भगों की समुत्कीर्तनता है जब गुरु ने ऐसे कहा, तब फिर शिष्य ने शका की कि (एयाए णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणयाए किंपओयण २ भगोवदसणया कीरइ) इस नैगम और व्यवहारनय के मत से भग समुत्कीर्तनता का मुख्य प्रयोजन क्या है जब शिष्य ने ऐसे कहा तब गुरु ने उत्तर दिया कि इनका मुख्य प्रयोजन भगोपदर्शनता है अर्थात् इनके द्वारा भगोपदर्शनता कीजाती है शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि (सेकिंत णेगमववहाराण भगोवदसणया २ तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी एगसमयट्ठिइए अणाणुपुव्वी दुसमट्ठितीय अवत्तव्वए एत्थ विसो चेव गमो सेत्त भगोवदसणया) वह कौनसी नैगम और व्यवहारनय से भगोपदर्शनता है गुरु ने कहा कि तीन समय की स्थिति वाला द्रव्यआनुपूर्वी सञ्ज्ञक है एक समय की स्थिति वाला अनानुपूर्वी सञ्ज्ञक है, द्विसमय की स्थिति वाला अवक्तव्य सञ्ज्ञक है सा इसी प्रकार यहां पर उन्हीं भगों का उच्चारण करना चाहिये जो भगपूर्व दिखलाए गए हैं से शब्द अर्थ शब्द का वाचक है सो यही भगोपदर्शनता है (सेकिंत समोयारे) (प्रश्न) समवतार किसे कहते हैं (णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाइ कहिं समोयरति) और नैगम व्यवहार नयके मतसे आनुपूर्वी द्रव्य कहांपर समवतार होते है (किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति पुच्छा) क्या आनुपूर्वी द्रव्यों में ही समवतार होते हैं या अनानुपूर्वी द्रव्यों में अथवा अवक्तव्य द्रव्यों में समवतार होते हैं (गोयमा आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति नो अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरति नो अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरति) भगवान् ने उत्तर दिया कि हे गौतम ! आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में ही

समवतार होते हैं अनानुपूर्वी द्रव्यों में समवतार नहीं होते अवक्तव्य द्रव्यों में भी समवतार नहीं होते केवल स्वजाति में ही समवतार होते हैं। (एव दोन्निवि सट्ठाणे २ समोयरति सेत्त समोयारे) इसी प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य और अवक्तव्य भी स्वस्थानों में ही समवतार होते हैं अन्य स्थानों में समवतार नहीं होते सो यही समवतार द्वार हैं (सेकित अनुगमे २ नवविहे प० त०) (प्रश्न) अनुगम कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) नव प्रकार से जैसे कि (सेत पयपरूवणया जाव अप्पाबहु) विद्यमान पदों की प्रतिपादनता यावत् अल्प बहुत पर्यन्त पूर्ववत् जानना चाहिये अब इनका पृथक् २ ता से विवर्ण किया जाता है जिससे बहुत ही सुलभ बोध हो।

भावार्थ-कालानुपूर्वी उसका नाम है जो द्रव्य काल से अभेद रूप हैं, जिनकी स्थिति काल से विद्यमान है सो कालानुपूर्वी कही जाती है स्थिति की अपेक्षा से कालानुपूर्वी बनजाती है सो कालानुपूर्वी के मुख्य दो भेद हैं उपनिधि का और अनुपनिधि का उनमें से उपनिधि का स्थापनीय है उसका स्वरूप फिर किया जायगा अपितु अनुपनिधि का दो प्रकार से कही गई है नैगम व्यवहार से और सग्रहनय से पुनः नैगम और व्यवहार नय के मतसे उसके ५ भेद हैं यावत् तीन समय की स्थिति वाला द्रव्य आनुपूर्वी सज्ञक होता है इसीप्रकार असंख्यात समय की स्थिति वाले द्रव्य को भी जान लेना चाहिये एक समय की स्थिति वाला अनानुपूर्वी होता है द्विसमय की स्थिति वाला अवक्तव्य सज्ञक होता है इन तीनों को बहुवचनान्त करने से आनुपूर्वी द्रव्य अनानुपूर्वी और अवक्तद्रव्य होते हैं, इस प्रकार जान लेने चाहिये यही नैगम और व्यवहारनय के मत से अर्थपद की प्रतिपादनता है सो इसका प्रयोजन भगों की समुत्कीर्तन करना है। भगों की समुत्कीर्तनता जैसे पूर्वद्रव्यानुपूर्वी में की गई है उसी प्रकार जान लेनी षट् विंशति भगों का स्वरूप यहापर दिखलाया गया है और भग समुत्कीर्तनता का मुख्य प्रयोजन भगोपदर्शनता है वहभी प्राग्वत् है क्योंकि पूर्व इनका सविस्तर स्वरूप दिखलाया जाचुका है अपितु नैगम और व्यवहार के मत यावन्मात्र द्रव्य हैं वह स्व जाति में समवतार होते है अन्यजातियों में नहीं जैसे कि आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में समावेश किए जाते हैं अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों में नहीं, इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये इसी का नाम समवतार द्वार

है अतः अनुगम द्वार यावत् नव प्रकार से प्रतिपादन किया गया है, विद्यमान अर्थोंका प्रतिपादन यावत् अल्प बहुत पर्यन्त जानना ॥ अब इनका सविस्तार स्वरूप वर्णन किया जाता है ॥

मूल–णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ किं अत्थि नत्थि नियमा अत्थि एवं दोन्निवि ॥

पदार्थ—(णेगमववहाराण आणुपुव्वी दव्वाइ किं अत्थि नत्थि नियमा अत्थि एव दोन्निवि) (प्रश्न) नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों की अस्ति है किम्वा नास्ति है (उत्तर) नैगम और व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्यों की निश्चय ही अस्ति है इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की भी अस्ति है ॥

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मत से तीनों द्रव्यों की सदैव काल अस्ति है तीनों द्रव्य दोनों नयों के मत से सदैव काल विद्यमान रहते हैं ॥

अथ द्रव्यों के प्रमाण विषय ।

मूल-(णेगम ववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ किं संखेज्जाइ असंखेज्जाइ अणताइ नो सखेज्जाइ असखेज्जाइ नो अणताइ एव दोन्निवि णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं सखेज्जइभागे पुच्छा एग दव्वं पडुच्च सखेज्जइ भागे वा होज्जा जाव देसूणे लोए वा होज्जा नानादव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा एव दोन्निवि एव फुसणावि णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ कालओ केवचिर होइ एग दव्व पडुच्च जहन्नेण तिन्निसमया उक्कोसेण असखेज्ज काल नाना दव्वाइ पडुच्च सव्वद्धा णेगमववहाराण अणाणुपुव्वीदव्वाइ कालओ केवचिर होइ एग दव्व पडुच्च अजहन्नमणुक्कोसेणएग समय नानादव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वद्धा अवत्तव्वगदव्वाण पुच्छा एग दव्व पडुच्च अजहन्नमणुक्कोसेण दोसमयाइ नाना

दव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ अतर कालओ केवचिर होइ एग दव्व पडुच्च जहन्नेण एग समयं उक्कोसेणं दोसमया नाना दव्वाइ पडुच्च नत्थि अतर णेगमववहाराण अणाणुपुव्वीदव्वाण पुच्छा एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेण दोसमया उक्कोसेण असखेज्ज कालं नाना दव्वाइ पडुच्च नत्थि अंतर णेगमववहाराण अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा एग दव्व पडुच्च जहन्नेण एग समय उक्कोसेण असखेज्ज काल नाना दव्वाइं पडुच्च नत्थि अतर णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाण कइभागे होज्जा पुच्छा जहेव खेत्ताणुपुव्वीय भावो वितहेव अप्पा वहुपि तहेवनेयज जावमेत्त णेगम ववहाराण अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी

पदार्थ-(णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ किं सखेज्जाइ असखेज्जाइ अणताइ) (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या सख्यात द्रव्य हैं वा असख्यात द्रव्य हैं तथा अनत द्रव्य हैं (उत्तर) (नो सखेज्जाइ असखेज्जाइ नो अणताइ) सख्यात नहीं हैं असख्यात हैं किन्तु अनत भी नहीं है (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य भी जान लेने चाहिये । (णेगमववहाराण आणुपुव्वीदव्वाइ लोगस्स किं सखेज्जइ भागे होज्जा पुच्छा) (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य लोक के सख्यात भाग में होते हैं वा असख्यात भाग में अथवा बहुत से सख्यात असख्यात भागों में होते हैं तथा सर्व लोक में ही होते हैं (एग दव्व पडुच्च सखेज्जइ भागे होज्जा जाव देसूणे वा लोए होज्जा नानादव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा) (उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा से लोक के सख्यात भाग में होजाता है असख्यात भाग में भी होजाता है यावत् स्वल्प भाग को छोडकर सर्वलोक में भी होजाता है अचित महास्कधवत् अथवा केवली की समुद्घातवत् अपितु नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से निश्चय ही सर्व लोक में आनुपूर्वी द्रव्य होते हैं (एव दोन्निवि) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के स्वरूप को भी जानना चाहिये (एव फुसणावि) इसी

भागे होज्जा पुच्छा) हे भगवन् ! नैगम और व्यवहारनय के मत से , आनुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्यों के कतिपय भाग में होता है गुरु कहते हैं (जहेव खत्ताणुपुव्वीए भावो तितहेव अप्पाबहुपि तहेव नेयव्व जाव सेत्त णेगमववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी) जैसे क्षेत्रानुपूर्वी का भाव वर्णन किया गया है-उसी प्रकार कालानुपूर्वी का भी भाव जान लेना चाहिये , और उसी प्रकार अल्प बहुत्वद्वार भी जान लेना यही नैगम और व्यवहारनय के मत से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी है स शब्द अथ शब्द का वाची है इसीवास्ते सूत्र में से शब्द पुन २ ग्रहण किया गया है ।

भावार्थ-नैगम और व्यवहार नय के मतमे तीनों द्रव्य असंख्यात हैं और तीनों द्रव्य लोक के सख्यात भाग में वा असख्यात भाग में वा दशून सर्व लोक में हो सकते हैं अत. तीनों द्रव्य नाना प्रकार के द्रव्यों अपेक्षा से सदैव काल विद्यमान रहते है इसी प्रकार स्पर्शनाद्वार जान लेना । नैगम और व्यवहार नय क मत से आनुपूर्वी द्रव्य जघन्य काल तीन समय उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त रहता है अपितु नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से यह द्रव्य सदैव काल रहते हैं तथा उक्त दोनों नयों के मतसे एक अनानुपूर्वी द्रव्य एक समय मात्र रहता है नाना प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा से सदैव काल रहते है और अवक्तव्य द्रव्य की स्थिति दो समय मात्र है नाना प्रकार के अवक्तव्य द्रव्य सदैव काल रहते हैं और नैगम व्यवहार नय के मत से एक आनुपूर्वी द्रव्य का जघन्य से एक समय प्रमाण उत्कृष्ट दो समय मात्र अतर काल होता है किन्तु नाना प्रकार के आनुपूर्वी द्रव्यों की अपेक्षा से अतर काल नहीं होता है और अनानुपूर्वी द्रव्य का जघन्य दो समय प्रमाण उत्कृष्ट असख्यात काल का अतर काल हो जाता है किन्तु नाना प्रकार के अनानुपूर्वी द्रव्यों का अतर काल नहीं होता है क्योंकि वे सदैव काल रहते हैं नैगम और व्यवहार नयके मत से एक अवक्तव्य द्रव्य का जघन्य से एक समय प्रमाण उत्कृष्ट असख्यात काल पर्यन्त अतर काल है अपितु अनेक अवक्तव्य द्रव्यों की अपेक्षा से अतर काल नहीं होता है मो अतर काल का तात्पर्य इतना ही है कि-अपनी जाति को छोडकर पर जाति में प्रवेश करना फिर स्वजाति में आजाना तो उसको अतर काल कहते है यह वर्णन उक्त दोनों नयों के मत से किया गया है और यह तीनों द्रव्य परस्पर द्रव्यों के कतिपय भागों में होते है इस विषय में

जैसे क्षेत्रानुपूर्वी में कथन किया गया है उसी प्रकार जान लेना चाहिये वैसेही अल्प बहुत्व द्वार का भी समास जान लेना । यह नैगम और व्यवहार नयके मत से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी वर्णन की गई है अब संग्रहनय के मत से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी का विवर्ण किया जाता है ।

अथ संग्रह नय विषय ।

सेकिंत संग्गहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी पंचविहा प० तं० अट्ठपयपरूवणया एवमाइ जहेव खेत्ताणुपुव्वी संग्गहस्स तहा कालाणुपुव्वी एविभाणियव्वाइ नवर ठिइ अभिलावे जाव सेत्त अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंत संग्गहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी २ पचविहा पं० त०) हे पूज्य ! संग्रह नय के मत से वर्णन की हुई अनुपनिधि का कालानुपूर्वी कौनसी है गुरु कहते हैं कि-संग्रह नय के मत से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी पांच प्रकार से प्रतिपादन कीगई है जैसे कि-(अट्ठपयपरूवणया एवमाइजहेव खेत्ताणुपुव्वी संग्गहस्स तहेव कालाणुपुव्वी एविभाणियव्वाइ) जैसे कि-अर्थ पद प्रतिपादनता १ भंगसमुत्कीर्तनता २ भगोपदर्शनता ३ समवतार ४ और अनुगम ५ और शेष विवर्ण जैसे क्षेत्रानुपूर्वी का कथन किया गया है उसी प्रकार कालानुपूर्वी का भी समास जान लेना चाहिये (नवर ठिइअभिलावे जाव सेत्त अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी) किन्तु इतना विशेष है कि स्थिति बोधक सूत्र कहना चाहिये सो इसी का नाम अनुपनिधि का कालानुपूर्वी कहते हैं ॥

भावार्थ-संग्रह नय के मत से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी पाच प्रकार से वर्णन कीगई है शेष विवर्ण जैसे पूर्व क्षेत्रानुपूर्वी का विवर्ण किया गया है उसी प्रकार कालानुपूर्वी का विवरन जान लेना चाहिये अपितु यहां पर स्थिति का अभिलापक ग्रहण करो सो इसी का नाम अनुपनिधि का कालानुपूर्वी कहते हैं अब इस के पश्चात् उपनिधि का कालानुपूर्वी का वर्णन किया जाता है ॥

अथ उपनिधिका कालानुपूर्वी विषय ।

सेकिंत उवणिहिया कालाणुपुव्वी २ तिविहा पण्णत्ते

तंजहा पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंतं पुव्वा-
णुपुव्वी समय १ आवलिया २ आणा पाणु ३ थोवे ४
लवे ५ मुहुत्ते ६ अहोरत्ते ७ पक्खे ८ मासे ९ उऊ १० अयणे ११
संवच्छरे १२ जुगे १३ वाससए १४ वाससहस्से १५ वाससय
सहस्से १६ पुव्वगे १७ पुव्वे १८ तुडियगे १९ तुडिय २० अड्ड-
डागे २१ अडडे २२ अववगे २३ अववे २४ हुहुअगे २५ हुहु-
ए २६ उप्पलगे २७ उप्पले २८ पउमगे २९ पउमे ३० णलिणगे
३१ णलिणे ३२ अत्थिणिऊरगे ३३ अत्थिणिउरे ३४ अजु-
यगे ३५ अजुए ३६ नउअगे ३७ नउय ३८ पउअगे ३९ पउए
४० चूलिअगे ४१ चूलिया ४२ सीसपहेलिअगे ४३ सीसपहे-
लिए ४४ पलिउवमे ४५ सागरोवमभे ४६ ओसप्पिणि ४७
उस्सप्पिणि ४८ पोग्गलपरियट्टे ४९ तीतद्धा ५० अणागयद्धा
५१ सव्वद्धा ५२ सेत पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी सव्व
द्धा जाव समय सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए
चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणतगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्न
ब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी अहवा उवणिहिया का-
लाणुपुव्वी २ तिविहा प० त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी २
अणाणुपुव्वी सेकित पुव्वाणुपुव्वी २ एग समयट्ठितीए जाव
असखेज्ज समयट्ठिइए सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी
२ असखेज्ज समयट्ठिइय जाव एगसमयट्ठिइय सेत्त पच्छाणु-
पुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरि-
याए असखेज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो
सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त उवणिहिया कालाणुपुव्वी सेत्त का-
लाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंत उवणिहिया कालाणु पुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणु पुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) हे भगवन् ! उपनिधि का कालानापूर्वी कितने प्रकार से वित्रर्ण की गई है। ऐसे शिष्य के पूछने पर गुरु कहते हैं भो-शिष्य ! उपनिधि का कालानुपूर्वी तीना प्रकार से कथन की गई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणु पुव्वी २) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) उपनिधि का कालानुपूर्वी उसका नाम है जो उपनाम समीप का है कालानुपूर्वी नाम कालानुक्रमता का है सो जो काल को समीप किया जाय वही उपनिधि का कालानुपूर्वी कही जाती है उस की पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकार से है (समय १) सर्वसे सूक्ष्म जिस क द्विभाग न हो उसे समय कहते है वही काल की गणना का आदिभूत है इसलिये प्रथम समय कथन किया गया है फिर (आवलिया २) असंख्यात समयों क काल को आवलिका कहते हैं (आण पाणु ३) संख्यात आवलिकाओं का एकसा श्वोछ्वास होता है उसी को एक प्राण कहते है (थोवे ४) सात प्राणों का एक थोव (स्तोक) होता है (लवे ५) सात स्तोकों का एक लव होता है (मुहु-त्ते ६) और ७७ लवों का एक मुहूर्त (दोघटिका) होता है (अहोरत्ते ७) तीस मुहूर्तों का एक अहोरात्र होता है (पक्खे ८) १५ पंचदश अहोरात्रों का एक पक्ष होता है (मासे ९) २ पक्षों का एक मास होता है (उऊ १०) दो मासों की एक ऋतु होती है (अयणे ११) और तीन ऋतुओं की एक अयण होती है (सम्वत्सरे १२) दो अयणों का एक सम्वत्सर (वर्ष) होता है (युगे) पाच सम्वत्सरों का एक युग होता है और (वाससए १४) बीस युगों के १०० वर्ष होते हैं (वाससहस्से १५) दश शत एकत्र करने पर एक सहस्र होता है (वाससयसहस्से १६) एक शत सहस्र वर्ष एकत्र होने पर एक लक्ष वर्ष होता है (पुव्वंगे १७) चौराशी ८४ लक्ष वर्षों का एक पूर्वाङ्ग होता है (पुव्वे १८) और ८४ लाख पूर्वाङ्गों का एक पूर्व होता है अर्थात् पूर्वांग को चौरासी लाख गुणा करने से एक पूर्व होता है एक पूर्व के सत्तर लाख करोड़ और छप्पन सहस्र करोड़ वर्ष होते हैं तथा अङ्कों को भी देख लीजिये ७०५६००००००००००

और (तुडियंगे १९) और एक पूर्व को ८४ लाख गुणा करने से एक त्रुटि-ताग होता है और (तुडिए २०) और त्रुटिताग को चोराशी लाख गुणा करने एक त्रुटित होता है (अडडांगे २१) चोराशी लाख त्रुटितों का एक

अट्टांग होता है इसी प्रकार आगे सर्व को चोराशी लाख गुणा करते चले जाना (अडड २२) चोराशी लाख अट्टांगों का एक अटट होता है (अवबंगे २३) चोराशी लाख अटट को गुणा करने से एक अववग होता है (अवने २४) और उसको चोराशी लाख गुणा करने से एक अवव होता है (हु हु अगे २५) अवव को चौराशी लाख गुणा करने से एक हुहुतांग होता है (हुहुए २६) और हुहुतांग को चोराशी लक्ष गुणा करने से एक हुहुक होता है (उप्पलगे २७) चोरासी लक्ष हुहुक को गुणा करने से एक उत्पलांग-होता है (उप्पले २८) उत्पलांग को ८४ लक्ष गुणा करने से एक उत्पल होता है (पउमगे २९) उक्त को ८४ लक्ष गुणा करने से एक पद्मांग होता है इसी प्रकार आगे भी समझ लेना किंतु पिछले से अगला चौरासी लाख गुणा करते जाना (पउमे ३०) पद्म (णलिणगे ३१) नालिनाग (णलिण ३२) नलिन (अत्थिणि उरे ३३) अर्थिनि पूरांग (अत्थिणिपुरे ३४) अर्थिनी पूर. (अजुयगे ३५) अयुताग (अजुय ३६) अयुत (नउअगे ३७) नियुताग और (नउय ३८) नियुत (पउमगे ३९) और प्रयुतांग (पउय ४०) प्रयुत (चूलिअगे ४१) चूलिकांग और (चूलिया ४२) चूलिका (सीस पहेलि अगे ४३) शीर्ष प्रहेलिकाग और (सीस पहेलिय ४४) शीर्ष प्रहेलिका यह सर्व पिछले अकों से अगला अंक चौराशी लाख गुणा किया जाता है तब शीर्ष प्रहेलिका के सर्व अंक इतने हुए, ७५०२६३२०, ३०७३२०१०२४११ ५७९७३५६९९७५६९४०, ६२१८९६६८४८०८०३२९६ इनों से आगे १४० चाली करल विन्दु लिखे जावें तब १९४ अकों पर्यन्त सख्या शब्द व्यवहृत होता है अर्थात् गणना १९४ वें अक्षरों पर्यन्त है आगे उपमा से काम लिया जाता है जिसका विवर्ण चेत्र प्रमाण के विषय में किया जायगा (पलिउवमे ४५) पल्योपम प्रमाण और (सागरोवमे ४६) सागरोपम प्रमाण (उसप्पिणि ४७) उत्सर्पिणी काल (उस्सप्पिणिन ४८) अवसर्पिणी काल (पोग्गले परियट्टे ४९) दश कोटाकोटि सागरोपम से एक अवसर्पिणी काल होता है और दश कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण एक उत्सर्पिणी काल अपितु अनन्त उत्सार्पिणी और अवसर्पिणियों के एकत्रित करने से एक पुद्गल परावर्तन होता है (तीतद्धा ५०) अनन्त पुद्गल परावर्तनों का भूतकाल है और (अणागयद्धा ५१) तावत्प्रमाण भविष्यत् काल है (सव्वद्धा ५२) दोनों के मिलने से सर्व

काल होता है (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) सो इसको पूर्वानुपूर्वी कहते हैं (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी सव्वद्धा जाव समय सेत्त पच्छाणुपुव्वी) हे भगवन् ! पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं भो शिष्य ! सर्व काल से लेकर यावत् एक समय पर्यंत जो गणना कीजाती है उसी को पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणन्त गच्छ गयाए सढीए अन्न मन्नभासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी) शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य ! यह जो पूर्वानुपूर्वी की गणना है इसको एक से वृद्धि करते हुए अनन्त गच्छ रूप श्रेणियें जब होजाए तब परस्पर गुणा करने से यावन्मात्र भग बनते हैं उनमें से आदि और अंत के भग के न्यून करने से शेष रहे हुए भगों को अनानुपूर्वी कहते हैं। यही

अनानुपूर्वी का विवर्ण है। अब सूत्रकार अन्य प्रकार से भी इनका विवर्ण करते हैं जैसे कि- (अहवा उवणिहिया कालाणुपुव्वी तिविहा प० त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) अथवा उपनिधि का कालानुपूर्वी तीनों प्रकार से विवर्ण की गई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ इस प्रकार के गुरु के वचन सुनकर शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे पूज्य ! (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ एगसमयट्ठिईए जाव असंखेज्ज समयट्ठिइए सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य ! पूर्वानुपूर्वी उस कहते हैं जो द्रव्य काल से एक समय की स्थिति वाला है यावत् असंख्यात समयों की स्थिति वाला है इस प्रकार की अनुक्रमता पूर्वक गणना को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं और यही पूर्वानुपूर्वी है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ असंखेज्जसमयट्ठिइए जाव एग समयट्ठिइए सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) जो पूर्वानुपूर्वी की गणना है उससे विपरीत गणना करना उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है जैसे कि--असंख्यात समयों की स्थिति वाले द्रव्य से लेकर एक समय की स्थिति पर्यन्त जो द्रव्य हैं उन्हें पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं और यही पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्तं उवणिहिया कालाणुपुव्वी सेत्त कालाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन एक समय से आ लेकर असंख्यात समयों पर्यन्त स्थिति वाले द्रव्य हैं उनकी असंख्यात गच्छरूप श्रेणी

जब की जावे तब उनको परस्पर गुणा करने से यावन्मात्र भंग बनते हैं उनमें से आदि अंत के रूप को छोड़कर शेष अंक अनानुपूर्वी के माने जाते हैं इस लिये अनानुपूर्वी गत उपनिधि का कालानुपूर्वी का व्याख्यान किया गया और इसी को कालानुपूर्वी कहते हैं अपितु समानता से तीनों का विवर्ण सम्पूर्ण होगया ।

भावार्थ-उपनिधि का कालानु पूर्वी तीनों प्रकारों से विवर्ण की गई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ अतः कालसे पूर्वानुपूर्वी निम्न प्रकारसे है जैसे कि—जो विभाग से रहित और सबसे सूक्ष्म हो उसे समय कहते हैं सो काल से गणना जो की जाती है उसकी आदि में प्रथम समय ही ग्रहण किया जाता है अपितु असंख्यात समयों के प्रमाण से एक आवलिका होती है संख्यात आवलिकाओं का एक प्राण होता है सात प्राणों का थोव (स्तोक) और सातों थोवों का एक लव, ७७ लवों का मुहूर्त, ३० मुहूर्तों की दिन रात्रि होती है १५ दिनों का एक पक्ष, २ पक्षों का मास, २ मासों का ऋतु ३ ऋतुओं की अयण २ अयणों का सम्वत्सर ५ सम्वत्सरों का युग, २० युगों का शतवर्ष १० शतवर्ष का एक सहस्र, १०० सहस्र का एक लक्ष ८४ लक्षवर्षों का एक पूर्वांग होता है और पूर्वांग को चौरासी लाख गुणा करने से एक पूर्व होता है इसी प्रकार शीर्षप्रहेलिका पर्यन्त चौरासी लाख गुणा करते जाना सो यहांतक गणित का विषय है उनके १९४ अक्षर बन जाते हैं इनसे आगे पल्योपम वा सागरोपम से माप लिया जाता है यह सर्व ५२ अंकों की पूर्वानुपूर्वी है इनका विवर्ण पदार्थ में किया गया है और इन्हीं को उल्था गणन करने पश्चात् आनुपूर्वी बन जाती है अपितु ५२ अक्षरों का परस्पर गुणा करने से फिर आदि और अन्त के रूप को छोड़ कर शेष जो भंग हैं उनको अनानुपूर्वी कहते हैं अथवा एक समय से लेकर यावत् असंख्यात समयों पर्यन्त पूर्वानुपूर्वी होती है इसका उल्था करने से पश्चात् आनुपूर्वी बन जाती है जैसे कि असंख्यात समय से लेकर यावत् एक समय पर्यंत अनानुपूर्वी है जो असंख्यात रूप श्रेणि को परस्पर गुणा करने से जो भंग बनते हैं उसके आदि और अन्त के भंगों को छोड़कर शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी का नाम उपनिधि का कालानुपूर्वी है ।

अथ उत्कीर्तन पूर्वानुपूर्वी विषय ।

सेकित उक्कित्तणाणुपुव्वी २ तिविहा पन्नते तजहा पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकित पुव्वाणुपुव्वी उसभे १ अजिय २ सभवे ३ अभिणदणे ४ सुमई ५ पउमप्पहे ६ सुपासे ७ चद्रप्पहे ८ सुविहे ९ सीमले १० सेज्जसे ११ वासुपुज्जे १२ विमले १३ अणते १४ धम्मे १५ सति १६ कुथु १७ अरे १८ मल्ली १९ मुनिसुव्वए २० णमी २१ अरिट्ठनेमी २२ पासे २३ वद्धमाणे २४ सेत्तपुव्वाणुपुव्वी सेकिन पच्छाणुपुव्वी २ वद्धमाणे जाव उसभे सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए चउव्वीसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकित उक्कित्तणाणुपुव्वी २ तिविहा पन्नत्तेतजहा पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) उत्कीर्तनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) उत्कीर्तनानुपूर्वी भी तीनों प्रकार से विवर्ण की गई है जैसे कि-पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ (सेकित पुव्वाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पूर्वानुपूर्वी उसका नाम है जो अनुक्रमतापूर्वक गणन किया जावे जैसे कि-(उसभे) ऋषभदेव १ (अजिय) अजितनाथ २ (सभवे) शभवनाथ ३ (अभिणदणे) अभिनदननाथ ४ (सुमई) सुमतिनाथ ५ (पउमप्पहेसुपासे चद्रप्पह) पद्मप्रभु ६ सुपार्श्वनाथ ७ चद्रप्रभु ८ (सुविहे सीयलेसेज्ज सेवासुपुज्जे) सुविधिनाथ ९ शीतलनाथ १० श्रेयासनाथ ११ वासुपूज्य स्वामी १२ (विमले अणते धम्मेसति) विमलनाथ १३ अनतनाथ १४ धर्मनाथ १५ शान्तिनाथ १६ कुथुनाथ १७ अरनाथ १८ मल्लिनाथ १९ मुनिसुव्रतस्वामी २० (णमीअरिट्ठनेमि पासेवद्धमाणे) नमिनाथ २१ अरिष्टनेमि २२

---

१ द्वेरोमबा प्रा० व्या० अ० ८ पा० २ सू० ८० इत्यादे रेफस्य वा लुग भवति ।

पार्श्व १४ २३ वर्द्धमानस्वामी २४ (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) अथ यही पूर्वानुपूर्वी है अर्थात् अनुक्रमता पूर्वक यह गणना है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते है (उत्तर) पश्चात् आनुपूर्वी उसे कहते हैं जो वर्द्धमानस्वामी से लेकर ऋषभदेव पर्यन्त गणना की जाए उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चे व एगादियाइ एगुत्तरियाए च उवीसगच्छगयाएसेढिए अन्नमन्नब्भासो दुरूवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी सत्त उक्कित्तणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते है (उत्तर) अनानुपूर्वी उसका नाम है जो इनको एक २ की वृद्धि करते हुए चतुर्विंशति अंकों पर्यंत गच्छरूप श्रेणि की जाए जैसे कि-१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४ फिर इनको परस्पर गुणा करना जैसे कि-१ का द्विगुण २ को त्रिगुण ६ फिर चतुर्गुण करने पर २४ इनको पांच गुणा करने से १२० फिर इन्हीं को ६ गुणा करने से ७२०, ७२० को ७ गुणा करने से ५०४० यावत् २७१४४६१७५७५८२९२२-५४७२०००० इसी प्रकार २४ अंक पर्यन्त परस्पर गुणा करके आदि और अंत के भंग को छोड़कर शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी का नाम अनानुपूर्वी है ॥ और यही उत्कीर्तनानुपूर्वी है ॥

भावार्थ-उत्कीर्तनानुपूर्वी के पूर्ववत् तीनों भेद है किन्तु अनानुपूर्वी में २४ चतुर्विंशति तीर्थंकरों को चतुर्विंशति अंकों से परस्पर गुणा करने से यावन्मात्र भंग बनते है उनमें से आदि और अन्त के भंगों का वर्जके शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी का नाम अनानुपूर्वी है और इसे ही उत्कीर्तनानुपूर्वी कहते हैं ॥

अथ गणनानुपूर्वी विषय ।

सेकिंत गणणाणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वी एगो दस सय सहस्स दससहस्साइ लक्ख दसलक्ख कोडि दसकोडिओ कोडिसयाइ सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ दसकोडिसयाइ जाव एको सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव

एगादियाए एगुत्तरियाए दसकोडि सयाइं गच्छगया सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त गणणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंत गणणाणुपुव्वी ? तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) गणनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) गणनानुपूर्वी उसका नाम है जो गणना कीजाती है वह तीन प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अणाणुपूर्वी ३ (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किस प्रकार से वर्णन कीगई है (उत्तर) जैसे (एगोदस सयसहस्स दससहस्साइ लक्ख दसलक्ख कोडि) एक-दश १० शत १०० सहस्र १००० दशसहस्र १०००० लक्ष १००००० दशलक्ष १०००००० कोटि १००००००० (दसकोडिओ कोडिसय दसकोडिसयाइ सेत्त गणणाणुपुव्वी) दश कोटि १००००००००० इस प्रकार सो करोड सहस्र करोड इत्यादि प्रकार से गणनानुपूर्वी होती है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी दसकोडिसयाइ जाव एको सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किस प्रकार है (उत्तर) जो दश करोड से आरम्भ होकर एक पर्यन्त गणना कीजावे उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए दस कोडिसयाइ गच्छगया सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त गणणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) जो आनुपूर्वी गत गणना है उनको एक से लेकर दश सहस्र कोटि प्रमाण गच्छरूप श्रेणि कीजावे फिर उनको परस्पर अभ्यास करके गुणा किया जावे यावत् प्रमाण भग बने उनमें से आदि और अंत के रूप को छोडकर शेष रूप अनानुपूर्वी के ही होते हैं ॥

भावार्थ-गणनानुपूर्वी भी पूर्ववत् तीनों प्रकार से वर्णित है किन्तु एक से लेकर दश सहस्र कोटि पर्यन्त गणना की संख्या बतलाई गई है अनुक्रमतापूर्वक गणना को पूर्वानुपूर्वी होते है । ठीक उसके विपरीत गणना का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है । इनको परस्पर गुणा करके जो भग होते हैं उनमें से आदि और अन्त के भग को छोडकर शेष भंग अनानुपूर्वी के ही होने हैं सो इसी का नाम गणनानुपूर्वी है ॥

पार्श्वनाथ २३ वर्द्धमानस्वामी २४ (सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) अथ यही पूर्वानुपूर्वी है अर्थात् अनुक्रमता पूर्वक यह गणना है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पश्चात् आनुपूर्वी उसे कहते हैं जो वर्द्धमानस्वामी से लेकर ऋषभदेव पर्यन्त गणना की जाए उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए च च एगादयाइ एगुत्तरियाए च उव्वीसगच्छगयाएसेढिए अन्नमन्नभासो दुरूवुणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त उकित्तणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) अनानुपूर्वी उसका नाम है जो इनको एक २ की वृद्धि करते हुए चतुर्विंशति अंकों पर्यन्त गच्छरूप श्रेणि की जाए जैसे कि–१–२–३–४–५–६–७–८–९–१०–११–१२–१३–१४–१५–१६–१७–१८–१९–२०–२१–२२–२३–२४ फिर इनका परस्पर गुणा करना जैसे कि–१ को द्विगुण २ को त्रिगुण ६ फिर चतुर्गुण करने पर २४ इनको पांच गुणा करने से १२० फिर इन्हीं को ६ गुणा करने से ७२०, ७२० को ७ गुणा करने से ५०४० यावत् २७१४४६१७५७५८२९९२-५४७२०००० इसी प्रकार २४ अंक पर्यन्त परस्पर गुणा करके आदि और अंत के भंग को छोड़कर शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी का नाम अनानुपूर्वी है ॥ और यही उत्कीर्तनानुपूर्वी है ॥

भावार्थ–उत्कीर्तनानुपूर्वी के पूर्ववत् तीनों भेद हैं किन्तु अनानुपूर्वी में २४ चतुर्विंशति तीर्थकरों को चतुर्विंशति अंकों का परस्पर गुणा करने से यावन्मात्र भंग बनते हैं उनमें से आदि और अन्त के भंगों का वर्जके शेष भंग अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी का नाम अनानुपूर्वी है और इसे ही उत्कीर्तनानुपूर्वी कहते हैं ॥

अथ गणनानुपूर्वी विषय ।

सेकिंत गणणाणुपुव्वी २ तिविहा प० त० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वी एगो दस सय सहस्स दससहस्साइ लक्ख दसलक्ख कोडि दसकोडिओ कोडिसयाइ सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ दसकोडिसयाइ जाव एको सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव

एगादियाए एगुत्तरियाए दसकोडि सयाइ गच्छगया सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त गणणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंत गणणाणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) गणनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) गणनानुपूर्वी उसका नाम है जो गणना कीजाती है वह तीन प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अणाणुपूर्वी ३ (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किस प्रकार से वर्णन कीगई है (उत्तर) जैसे (एगादस सयसहस्स दससहस्साइं लक्ख दसलक्ख कोडि) एक-दश १० शत १०० सहस्र १००० दशसहस्र १०,००० लक्ष १००००० दशलक्ष १०००००० कोटि १०००००००(दसकोडिओ कोडिसय दसकोडिसयाइ सेत्त गणणाणुपुव्वी) दश कोटि १०००००००० इस प्रकार सो करोड सहस्र करोड इत्यादि प्रकार से गणनानुपूर्वी होती है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी दसकोडिसयाइ जाव एको सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किस प्रकार है (उत्तर) जो दश करोड से आरम्भ होकर एक पर्यन्त गणना कीजावे उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए दस कोडिसयाइ गच्छगया सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त गणणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) जो आनुपूर्वी गत गणना है उनको एक से लेकर दश सहस्र कोटि प्रमाण गच्छरूप श्रेणि कीजावे फिर उनको परस्पर अभ्यास करके गुणा किया जावे यावत् प्रमाण भंग बने उनमें से आदि और अंत के रूप को छोडकर शेष रूप अनानुपूर्वी के ही होते हैं ॥

भावार्थ-गणनानुपूर्वी भी पूर्ववत् तीनों प्रकार से वर्णित है किन्तु एक से लेकर दश सहस्र कोटि पर्यन्त गणना की संख्या बतलाई गई है अनुक्रमतापूर्वक गणना को पूर्वानुपूर्वी होते हैं । ठीक उसके विपरीत गणना का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है । इनको परस्पर गुणा करके जो भंग होते हैं उनमें से आदि और अन्त के भंग को छोडकर शेष भंग अनानुपूर्वी के ही होते हैं सो इसी का नाम गणनानुपूर्वी है ॥

अथ संस्थानानुपूर्वी विषय ।

सेकिंत सट्ठाणाणुपुव्वी २ तिविहा पं० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकित पुव्वाणुपुव्वी २ समचउरसे नग्गोहपरिमंडले साइ वामणेक्खुज्जे हुंडे सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ हुंडे जाव सामचउरसे सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त सट्ठाणाणुपुव्वी ॥

पदार्थ-(सेकिंता सट्ठाणाणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) संस्थानानुपूर्वी कितने प्रकार से विवर्ण कीगई है (उत्तर) तीनों प्रकार से है जैसे कि पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी २ अनानुपूर्वी ३ यह तीन प्रकार हैं (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ समचउरसो नग्गोहपरि मण्डले साइ वामखेक्खुज्ज हुडे सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किस प्रकार से है (उत्तर) पट् प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि-समचतुरस्र संस्थान उसे कहते हैं जिसके शरीर के सर्व अंगोपांग पूर्ण हों और पर्यंक आसन में (जानु और स्कंधों की विषमता न होवे) न्यग्रोध परिमंडल उसका नाम है जिसका शरीर नाभि से उपरिभाग में प्रमाणयुक्त हो जैसे वट वृक्ष होता है २ सादि संस्थान उसका नाम है जिसके शरीर के अंगोपांग नाभि के नीचले भाग के सुंदर होवें ३ वामन संस्थान उसे कहते हैं जिसका हृदय पृष्टि भाग और उदर का छोड़कर शेष अंग हीन होवें अर्थात् प्रमाण पूर्वक न होवें ४ कुब्ज संस्थान वह होता है जिसका हृदय पृष्टिभाग और उदर यह सर्वथा लक्षण रहित होवे और शेष अंग सुंदर होवें ५ जो सर्व प्रकार के शुभ लक्षणों से वर्जित होता है और अंगोपांग भी सम नहीं हैं अपितु अदर्शनीय हैं उसीको हुंड संस्थान कहते हैं सो इन पट् प्रकार के संस्थानों का अनुक्रमतापूर्वक गणना करना उसी का नाम पूर्वानुपूर्वी है (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ हुडे जाव सम चउरसे सेत्त पच्छाणुपुव्वी) (प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी

किस प्रकार से होती है (उत्तर) जो अनुक्रमपूर्वक गणना न की जावे वही पश्चात् आनुपूर्वी है जैसे कि–हुड संस्थान यावत् सम चतुरश्र संस्थान इसीका नाम पश्चात् आनुपूर्वी है–(सेकिंत अणाणुपुव्वी २) एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो सत्त अणाणुपुव्वी सेत्त सट्ठाणाणुपुव्वी) (प्रश्न) अनानुपूर्वी की व्याख्या किस प्रकार से वर्णन की गई है (उत्तर) जैसे इन पद् गच्छरूपों की श्रेणी की जावे १–२–३–४–५–६ तब इनको परस्पर गुणा करके यावन्मात्र भंग बनें उनमें से आदि और अंत के रूप को न्यून करके शेषरूप अनानुपूर्वी के होते हैं और इसी का नाम अनानुपूर्वी है अतः इसी स्थानों पर संस्थानानुपूर्वी का समास हो गया है ॥

भावार्थ–संस्थानानुपूर्वी भी पूर्ववत् है किन्तु स्थानों के पट् भेद हैं जैसे कि समचतुरश्र संस्थान १ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान २ सादि संस्थान ३ वामन संस्थान ४ कुब्ज संस्थान ५ हुड संस्थान ६ अनुक्रमता से गणना करने का नाम पूर्वानुपूर्वी है उल्टा गणन करना उसे पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं २ पद् रूपों का परस्पर अभ्यास करके रूप बनाने फिर उनमें से आदि और अंत के रूप को छोड देना उसे अनानुपूर्वी कहते हैं ॥

अथ समाचारी आनुपूर्वी विषय ।

सेकिंतं समयारी आणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणु पुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ इच्छामिच्छातहकारो आवस्सियाए निस्सिहियाए आपुच्छ-णा य पडिपुच्छणा य छंदणा निमंतणा उवसंपया य काले समा-यारी भवे दसविहा उ १ सेत्त पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी२ उवसंपया जाव इच्छा सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसगच्छगयाए सेढीए

१–७२० भंग होते हैं ।

भक्ति करे ६ श्रुताध्ययन के वास्ते अन्य के समीप रहे १० ॥ इसे आनुपूर्वी कहते हैं ॥ और इन्हीं को उलथा गणन करने को पश्चात् आनुपूर्वी कहते हैं अपितु जो दश अङ्क हैं उनको परस्पर गुणा करने से ३६ लक्ष २८ हजार ८०० अङ्क बनते हैं उनमें से आदि और अंत के रूप को छोड़कर शेषरूप अनानुपूर्वी के होते हैं सो इसी को समाचारी आनुपूर्वी कहते हैं अब सूत्रकार भावानुपूर्वी का स्वरूप वर्णन करते हैं जिसके द्वारा भावों का भी बोध होजाए॥

अथ भावानुपूर्वी विषय ॥

सेकिंत भावाणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ उदइए उवसमिय खईय खओवसमिए पारिणामिए सन्निवाइए सेत पुव्वाणुपुव्वी सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ सन्निवाइए जाव उदइय-सेत्त पच्छाणुपुव्वी सेकिंत अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगा-इयाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो सेत्त अणाणुपुव्वी सेत्त भावाणुपुव्वी सेत्तं आणुपुव्वी-ति पय सम्मत्त ॥ १ ॥

पदार्थ-(सेकिंत भावाणुपुव्वी २ तिविहा प० तं० पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी) (प्रश्न) भावानुपूर्वी कितने प्रकार से वर्णन कीगई है (उत्तर) तीनों प्रकार से जैसे कि-पूर्वानुपूर्वी १ पश्चात् आनुपूर्वी अनानुपूर्वी (सेकिंत पुव्वाणुपुव्वी २ उदइय उवसमिएखईए खओवसमिए पारिणामिए सन्निवाइय सेत्त पुव्वाणुपुव्वी) प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) पूर्वानुपूर्वी षट् प्रकार से वर्णन कीगई है जैसे कि उदयिक भाव १ उपशमिकभाव २ क्षायिक भाव ३ क्षयोपशमिक भाव ४ पारिणामिक भाव ५ सन्निपातिक भाव ६ इनका सविस्तर स्वरूप आगे लिखा जाएगा इसलिये यहां पर इनका अर्थ नहीं लिखा है इस प्रकार इन भावों की गणना को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं (सेकिंत पच्छाणुपुव्वी २ सन्निवाइय जाव उदइय सेत्त पच्छाणुपुव्वी)

(प्रश्न) पश्चात् आनुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) जो सन्निपात से लेकर उदयिक भाव पर्यन्त गणना कीजावे उसी का नाम पश्चात् आनुपूर्वी है (सेकिंत्त अणाणुपुव्वी २ एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सत्त अणाणुपुव्वी सेत्त भावाणुपुव्वी सेत्त आणुपुव्वी तिपय सम्मत्त) (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं (उत्तर) इन पद् अंकों को एक से लेकर १-२-३-४-५-६ एक एक की वृद्धि करते हुए जब पद् गच्छरूप श्रेणी होजाए तब परस्पर अभ्यास से गुणा करे जिसके ७२० रूप होते हैं उनमें से आदि और अन्त के रूप को छोडकर शेष रूप अनानुपूर्वी के होते हैं यही अनानुपूर्वी है और इसी स्थानोपरि भावानापूर्वी का समास सम्पूर्ण होगया है ॥

अथ शब्द मंगलवाची भी है इसलिये इस समास के अंत में दिया गया है और आनुपूर्वी पद की भी यहां पर समाप्ति है ॥

इति श्री अनुयोग द्वार शास्त्र में हिन्दी भाषा टीका रूप आनुपूर्वी पद समाप्त हुआ ॥

भावार्थ-पद् प्रकार के भावों को तीनों आनुपूर्वी आदि हैं जिनका सम्पूर्ण स्वरूप तो आगे लिखा जायगा किन्तु अनुक्रमता पूर्वक नामोत्कीर्तन यहां पर किया गया है सब भावों का आधार भूत प्रथम उदयिक भाव है फिर उपशम भाव है जिसका स्वरूप स्वल्प है क्षायिक भाव का उपशम से विशेष स्वरूप है अपितु क्षयोपशम का उससे भी विस्तारपूर्वक वर्णन है पारिणामिक भाव का क्षयोपशम भाव से विशेष कथन है सन्निपात का तो महान् स्वरूप है इस प्रकार से इनकी अनुक्रमता बांधी गई है पूर्वानुपूर्वी पश्चात् आनुपूर्वी मागवत् हैं किन्तु अनानुपूर्वी के ७२० रूप बनते हैं जिन में दो रूप आदि और अन्त के न्यून करने से ७१८ रूप अनानुपूर्वी के होते हैं इसी का नाम अनानुपूर्वी है और भावानुपूर्वी भी इसी का नाम है अतः आनुपूर्वी पद की समाप्ति भी इसी स्थान पर होगई है इसके अनन्तर उपक्रम के द्वितीय भेद की व्याख्या कीजाती है ॥

अथ नाम विषय।

मूल-सेकिंत नामे नामे दसविहे पगणत्ते तंजहा एग

नामे १ दुनामे २ तिनामे ३ चउनामे ४ पचनामे ५ छ नामे ६ सत्तनामे ७ अट्ठनामे ८ नवनामे ९ दसनामे १० सेकिंत एगनामे नामाणि जाणि काणिय दव्वाण गुणाण पज्जवाण च तेसि आगमणिहसे नामति परूविया सन्ना १ सेत्त एगनामे सेकित दुनामे दुविहे पण्णत्ते तजहा एक्खरिए १ अणेगक्खरिए य सेकिंत एगक्खरिए १ अणेगविहे प० त० ह्री श्री धी स्त्री सेकित एगक्खरिए सेकिंत अणेगक्खरिय २ अणेगविहे पण्णत्ते तजहा कन्ना वीणा लता माला सेत्त अणेगक्खरिए अहवा दुनामे दुविहे प० त० जीवनामे य अजीवनामे य सेकित जीवनामे २ अणेगविहे प० त० देवदत्ते जण्णदत्ते विण्हुदत्ते सोमदत्ते सेत्त जीवनामे सेकित अजीवनामे २ अणेगविहे प० त० घडो पडो कडो रहो सेत्त अजीवनामे ॥ ८२ ॥ *

पदार्थ–सेकित नामे नामे दसविह पण्णत्त तजहा एगनामे दुनामे ? तिनामे चउनाम पचनामे छनामे सत्तनामे अट्ठनामे नवनामे दसनामे) शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! नाम किस कहते है गुरु न उत्तर दिया कि–भो शिष्य ! नाम उसका नाम है जिसके द्वारा वस्तुओं के स्वरूप का पूर्ण बोध हो सो उस नाम क दश भेद वितर्ण किये गये ह जैसे कि–जो ज्ञानादि गुण

पदार्थों को कहा जाए वही नव नाम है ९ दश प्रकार से जो पदार्थ वर्णन किये जावें उन्हीं का नाम दश नाम है १० ॥ गुरु के इस प्रकार के वचन सुनकर शिष्य ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन् (सेकिन एगनामे २ नामाणि जाणि काणिय दव्वाण गुणाण पज्जवाण चतेसि आग मणिहसे नामति परूविया-सन्ना १) एक नाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है गुरु कहने लगे कि भो शिष्य ! एक नाम इस प्रकार से हैं जैसे कि-(नामाणि) नाम अभिधान (जाणि) यावन्मात्र उनमें से (काणिय) कितनेक एक नाम जैसे कि-द्रव्यों के (जीव जंतु आत्मा प्राणीसत्व) नाम जीव द्रव्य के अनेक नाम है उसी प्रकार आकाश द्रव्य के नाम हैं नभः आकाशमम्बर इत्यादि यह द्रव्यों के नाम हैं और गुणनाम जैसे ज्ञानादि गुण है ज्ञान निबोध आत्मा इत्यादि तथा रूप, रस, गंध, स्पर्श यह भी अजीव गुण हैं और पर्यायनाम नरकतिर्यक् मनुष्यदेव इन भावों को प्राप्त होना उसे पर्यायनाम कहते हैं तथा एक गुण कृष्ण इत्यादि यह भी पर्यायवाची नाम है इत्यादि यह सर्व द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ च पुन (तेसिं) उन सबको आगमरूपी निकष के (कसौटी) विषय नाम पदरूप सन्ना प्रतिपादन कीगई है अथवा यह नाम पद आगम में कसौटी तुल्य है इसके द्वारा सर्व पदार्थों का बोध यथावत् होजाता है तथा द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ यह तीनों आगमरूपी कसौटी में यथावत् सिद्ध होचुके हैं जो संसार भर में वस्तु हैं वे सर्व समान प्रकार से एक नाम से भाषण कीजाती है सर्व द्रव्यों के एकार्थ-वाची अनेक नाम होते हैं किन्तु वह एक नाम में ही गर्भित होजाते हैं तथा जैसे कसौटी (परीक्षणप्रस्तर) के द्वारा सुवर्णादि पदार्थों की परीक्षा कीजाती हैं उसी प्रकार ज्ञानरूपी कसौटी में जीवाजीव पदार्थ जो सुवर्णादि के तुल्य हैं उनकी परीक्षा कीजाती है तथा नामपद कसौटी तुल्य है (सत्त एगनामे) सो यही एक नाम है जो अनेक नाम होने पर भी एक ही अर्थ में रहते हैं । इस कथन से जिज्ञासुओं को कोष की आवश्यकता है क्योंकि-एक २ वस्तु के अनेक नाम कोषों में लिखे गए हैं सो आगमरूपी कसौटी में नामरूपी सन्ना कथन कीगई है यही सन्ना एक नाम है ॥

अब शिष्य द्विनाम के निर्णय के लिये पृच्छा करता है कि (सेकित दु-नामे २ दुविहे प० तं० एगक्खरिए अणेगाक्खरिएय) (प्रश्न) द्विनाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) द्विनाम दो प्रकार से प्रतिपादन किया

गया है जैसे कि–एकाक्षरिक नाम और अनेकाक्षरिक नाम–शिष्य ने फिर शंका की कि हे भगवन् ! (सेकिंत एगक्खरिए २ अणेगविहे पएणत्ते तंजहा ह्रीं. श्री धीं' स्त्री सेत्त एगक्खरिए) एकाक्षरिक नाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है ॥ गुरु ने समाधान किया कि हे शिष्य ! एकाक्षरिक नाम उसे कहते हैं जिसके उच्चारण में एक ही अक्षर हो तथा जिसके उच्चारण में अनेक अक्षरों की प्राप्ति हो उसका नाम अनेकाक्षरिक है किन्तु एकाक्षरिक नाम के सूत्र ने चार उदाहरण दिये हैं जैसे कि–ह्रीं श्री धी स्त्री–यही एकाक्षरिक नाम हैं क्योंकि इनका उच्चारण रूप एक ही अक्षर है (सेकिंत अणगक्खरिय २ अणेगविहे प० त० कन्ना वीणा लता माला सेत्त अणेगक्खरिए) (प्रश्न) अनेकाक्षरिक नाम किसे कहते हैं (उत्तर) वह भी अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि–कन्या वीणा लता माला, यह सर्व अनेकाक्षरिक नाम हैं क्योंकि प्राकृत भाषा में द्विवचन के स्थानों पर बहुवचन दिया जाता है इसीलिये द्वि शब्द के स्थानोंपरि अनेक शब्द ग्रहण किया गया है इस प्रकार गुरु शिष्य का समाधान करके फिर शिष्य को कहने लगे कि हे श्रुत वासिन् ! (अहवा दुनामे दुविहे प० त०) अथवा द्विनाम अन्य प्रकार से भी वर्णन किया गया है जैसे कि–(जीवनामेय) जीवनाम (अजीवनामेय) और अजीवनाम च समुच्चयार्थ में है शिष्यने फिर पूछा (सेकिंत जीवनामे २) कि हे भगवन् ! जीव नाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है गुरु ने उत्तर दिया कि (अणेगविहे प० त०) भो शिष्य ! जीव नाम अनेक प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि–(देवदत्ते जएणदत्ते विएहुदत्ते सोमदत्ते सेत्त जीवनामे) देवदत्त शब्द इसी प्रकार यज्ञदत्त, विष्णुदत्त, सोमदत्त, यही जीव संज्ञक नाम हैं (सेकिंत अजीवनामे २) (प्रश्न) अजीव नाम किसे कहते हैं (उत्तर) अजीव नाम (अणेगविहे प० त०) अनेक विधि से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि–(घडो पडो कडो रहो) घट, पट, कट, रथ (सेत्त अजीवनामे यही अजीव नाम है क्योंकि–घटपटादि अजीव पदार्थ हैं इसलिये इनको अजीव नाम से लिखा गया है ॥

भावार्थ–नामपद दस प्रकार से वर्णन किया गया है जो पदार्थ हैं उनको दस विभागों में करके जिज्ञासुओं के सुखाव बोध वास्ते नाम दिखलाया गया है क्योंकि– यावन्मात्र संसार में द्रव्य हैं उनमें से कितनेक द्रव्य गुण पर्यायों

के अनेक नाम एकार्थी होते हैं जैसे कि जीव चेतन आत्मा जंतु सत्त्व इत्यादि यह सर्व अनेक नाम एकार्थी हैं इसी प्रकार गुणों के नाम और पर्यायों के नाम भी समझने चाहिये सो आगमरूपी सुवर्ण की परीक्षा के विषय यह नाम पद-रूप सज्ञा कसौटीरूप से प्रतिपादन कीगई है इसके द्वारा द्रव्य गुण पर्यायों का भलीभांति सो बोध होजाता है सो इसी का नाम एकनाम् है और द्विनाम भी द्विप्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि–एकाक्षरिक और अनेकाक्षरिक–एकाक्षरिक उसका नाम है जैसे कि "ह्रीः श्री धी स्त्री" ये शब्द एकाक्षरिक हैं इससे यह सिद्ध होता है कि प्राकृत भाषा में किसी अनुकरण के विषय में इन संस्कृत शब्दों का प्रयोग हो सकता है क्योंकि प्राकृत के व्याकरण में इनकी सिद्धि इस प्रकार से कीगई है यथा– श्री, ह्री–कृत्स्न क्रियादिष्ट्यास्वित् ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा २ सू० १०४ ॥ ई, श्री–ह्री इत्यादि शब्दों के संयुक्त अन्त व्यञ्जन के पूर्व इकार का आगम होजाता है तब निम्नलिखित सर्व रूप हुए अरिहइसिरी–हिरी–कसिणो–किरिया–दिट्ठिया–इस प्रकार रूप सिद्धि होनेपर सिरी (श्री१ *) और हिरी इस प्रकार के रूप बने और स्त्री शब्द प्राकृत भाषा में ऐसे बनता है जैसे कि स्त्री शब्द इस प्रकार से स्थित है तब सर्वत्र लव राम चन्द्रे प्रा० व्या० अ० ८ पा २ सूत्र ७६ ॥ वन्द्र शब्दादन्यत्र लवरा सर्वत्र संयुक्तस्योर्ध्वमधश्च स्थितानां लुग् भवति ।

इस सूत्र से रकार का लोप होजाता है तब रेफ का लोप होने पर स्ती ऐसे शब्द बना फिर–स्तस्यथो समस्तस्तम्बे ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा २ सू० ४५ ॥ समस्त स्तम्ब वर्जितस्तस्यथो भवति । इस शब्द से स्ती शब्द के स्त को थी ऐसे रूप बन गया फिर अनादौ शेषा दशयोर्द्वित्वम् । सूत्र ८६ इस सूत्र से थी के थकार के दो रूप हुए तब थ्थी ऐसे रूप बना फिर द्वितीयतुर्ययो रुपरि पूर्वः । सू० ६० इस सूत्र से प्रथम थकार के स्थानोपरि तकार होगया तब त्थी इस प्रकार से प्राकृत भाषा में रूप सिद्ध हुआ तथा स्त्रिया इत्थी सू० १३० इस सूत्र से स्त्री शब्द को विकल्प से इत्थी ऐसे भी आदेश हो

---

* क्विब्वचि प्रच्छिश्रिस्रुद्रुप्रुज्वा दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च, उणादिवृत्तौ द्वितीयपादस्य ५७ सूत्रम् ॥ अनेनसूत्रेण श्रिञ् सेवायाम् धातुरवात् श्रीरूप सिद्ध भवति ॥

जाता है सो मूल में अनुकरण अर्थ में स्त्री * शब्द ग्रहण किया गया है तथा सूत्र प्रमाण होने पर उक्त प्रयोग सर्वदा आचरणीय है इन्हीं को एकाक्षरिक नाम से लिखा गया है और द्विवचन के स्थान में प्राकृत भाषा में बहुवचन दिया जाता है इसलिये अनेकाक्षरिक नाम कन्या वीणा, लतामाला इत्यादि प्रयोग ग्रहण किये गये हैं तथा द्विनाम अन्य प्रकार से भी वर्णन किया गया है जैसे कि--जीवनाम और अजीवनाम-जीवनाम के उदाहरण यह हैं--यथा देवदत्त यज्ञदत्त (ज्ञोर्णः) इस सूत्र से प्राकृत भाषा में ज्ञ को णकार हुआ और आदि यकार को जकार होजाता है फिर "अनादि शेषादेशयोर्द्वित्व" इस सूत्र से णकार द्वित्व होगया तब जण्णदत्त ऐसे रूप बन गया और विष्णुदत्त को । सूक्ष्म पूनष्ण-स्नहणक्ष्ण राह । इस सूत्र से विराहुदत्त बन गया और सोमदत्तादि यह सर्व जीव सज्ञक नाम हैं अजीव सज्ञक नाम निम्न प्रकार से हैं यथा--घट पट कटः रथ. यह शब्द प्राकृत में घडो पडो कडो रहो इस प्रकार से लिखे गये हैं क्योंकि--(टोड) इस सूत्र से प्राकृत में टकार को डकार हो जाता है तब कड भड घड पड यह शब्द सिद्ध होते हैं (अत सेर्डो.) इस सूत्र से प्रथमान्त होजाते हैं क्योंकि सिवि भक्ति के स्थान में डोकार का आदेश होकर पडो-घडो इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं किन्तु रथ शब्द को रहो ॥ "ख, घ, थ, ध भाम्" इस सूत्र से थकार को हकार होगया तब रहो ऐसे प्रथमान्त शब्द सिद्ध हुआ सो यह सर्व अजीव शब्द के नाम हैं अत. इस प्रकार से द्वि प्रकार नाम पद की प्रतिपादनता की गई है इस के द्वारा जो जो द्वि प्रकार के द्रव्य हैं उन सभों का ज्ञान भली भाति से हो सकता है इसी कारण से सूत्रकार अब अन्य प्रकार से द्विनाम वर्णन करते हैं ॥

पुन द्विनाम विषय ॥

अहवा दुनामे नवविहे पएणत्ते तजहा विसेसिएय १

* स्त्यायतेर्ड्रट ॥ उणादि वृत्तौ चतुर्थपादस्य १६५ सूत्रम् ॥ स्त्यैशब्द सघातयो. ॥ अस्मात् ड्रट् । डित्वात् टिलोप. टित्वात्ङीप् । वलिलोप. । स्त्रीस्तन येश च्यतो ॥ इति रूप सिद्ध । तथा चे स्यतेस्त्यायते स्तृणातेस्तनोतेर्वा । औणादिक सूत्रेण ड्रट् प्रत्ययो धातोश्च सकारा देशो निपात्यत । टित्वात्ङी । तृणाति स्व परच दोषमाच्छादयतीति स्त्री ॥

अवसेसिएय २ ॥ १ ॥ विसेसियं दव्व विसेसिय जीवदव्वं च अजीवदव्व च २ अविसेसिय जीवदव्वं च विसेसियं नेरइउ-तिक्ख जोणि उमणुस्सो देवो ३ अविसेसिउनेर. इउविसेसि-उरयणप्पभाए सकरप्पभाए वा लुप्पभाए पकप्पभाए धूमप्प-भाए तमाए तमतमाए ४ अविसेसिये रयणप्पभाए पुढविने-रइए विसेसिए पज्जत्तए अपज्जत्तए ५ एव जाग अविसेसिउ तमतमा पुढविनेरइउ विसेसिउ तमतमा पुढविनरेइउ पज्जत्ता-पज्जत्तउ ११ अविसेसिए तिरिक्ख जाणिएविसेसिए एगिं-दिय वेइदिए तेइंदिए चउरिंदिए पचेंदिए १२ अविसेसिए एगिंधिए विसेसिए पुढविकाइए आउकाइए तेऊकाइय वाऊ-काइय वणस्सइकाइय १३ अविसेसिए पुढविकाइए विसेसिए सुहम पुढविकाइयं वादर पुढविकाइय १४ अविसेसिए सुहुम पुढविकाइए विसेसिए पज्जत्तए सुहुम पुढविकाइए अपज्ज-त्तए सुहुम पुढविकाइय १५ । अविसेसिए वादर पुढविकाइय विसेसिए पज्जत्तए वादर पुढविकाइय १६ अविसेसियं एवं आउकाइय १६ तेऊकाइय २२ वाउकाइय २५ वणस्सइका-इय २८ अविसेसिए अपज्जत्तभेदेहिं भाणियव्वा अवसेसिय वेइदिय विसेसिय पज्जत्तउय अपज्जत्तउय २६ एव तेइदिए ३० चउरिंदिय ३१ ॥

पदार्थ-(अहवा दुनाम दुविह पन्नत्ते तजहा विसेसिएय १ अवसेसिएय २) गुरु शिष्य को द्विनाम अन्य प्रकार से भी दिखलाते हैं ईसीलिये सूत्र में यह पद है अथवा द्विनाम द्वि प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि - एक विशेष नाम दूसरा अविशेष नाम सा सर्व पदार्थ द्वि प्रकार से हैं इसी कारण से सूत्र-

कार ने इनका सविस्तर वर्णन किया है। अविशेष नाम का यह अर्थ है कि-जो नाम सर्व स्थानोंमें गर्भित होजावे, विशेष नाम उसे कहते है जो केवल उसी द्रव्य का बोधक होवे--जो निम्नलिखितानुसार उदाहरण हैं॥ १ ॥ (अविसेसियदव्व विसेसिय जीवदव्व च अजीवदव्व च) अविशेष नाम साधारण रूप से द्रव्य का बोधक है क्योंकि यह शब्द जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य दोनों में व्यवहृत होता है इसीलिये अविशेष नाम में द्रव्य शब्द ग्रहण किया गया है और विशेष शब्द में जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य हैं २ और इसी प्रकार आगे भी सम्भावना करलेनी चाहिये जैसे कि--(अविसेसिय जीवदव्व विसेसिय नेरइयतिरिक्ख जोणिउ मणुस्सो देवो २) अविशेषक जीवद्रव्य है विशेषक इसी जीव के भेद हैं जैसे कि नारकीय १ तिर्यग्योनिक २ मनुष्य ३ और देव ॥ ४ ॥ ३ ॥ इसी प्रकार आगे हैं जैसे कि (अविसेसिय नेरइय) अविशेषक नाम नारकीय है और (विसेसिए) विशेषक नाम में नरकों के भेद हैं यथा -(रयणप्पभाए) रत्नप्रभा च पुनर् अर्थ में हैं (सक्करप्पभाए) शर्करप्रभा (वालुप्पभाए) वालुप्रभा (पकप्पभाए) पकप्रभा (धूमप्पभाए) धूमप्रभा (तमप्पभाए) तमप्रभा (तमतमाप्पभाए) तमतमाप्रभा ७ यह सर्व नरकों के गोत्र विशेषक नाम में है ४॥ फिर (अविसेसिए) अविशेषक (रयणप्पभाए पुढवी नेरइय) रत्नप्रभा के नारकीय (विसेसिए) विशेषक उसके भेद (पज्जत्तएय) पर्याप्त और (अपज्जत्तए) अपर्याप्त हैं ५ (एव जाव अविसेसिए तमतमा पुढवि नेरइय) इसी प्रकार सर्व नरकों का स्वरूप जानना चाहिये यावत् अविशेषक तमतमापृथ्वी के नारकीय और (विसेसिय पज्जत्तएय अपज्जत्तएय ११) विशेषक नाम में पर्याप्त और अपर्याप्त भेद जानने चाहियें ११ ॥ अब तिर्यक योनि के विषय में वर्णन करते हैं जैसे कि-(अविसेसिए) अविशेषक नाम में (तिरिक्खजोणिए) तिर्यक् योनिक् जीव हैं और (विसेसिए) विशेषक नाम में (एगिंदिए बेइंदिए तेइंदिए चउरिंदिए पचेन्द्रिये १२) एकेन्द्रिय जीव हैं इसी प्रकार द्विइन्द्रिय जीव हैं, त्रिइन्द्रिय

चतुरिंद्रिय और पचिंद्रिय जीव है १२ और फिर (अविसेसिए) अविशेपक नाम में एकेन्द्रिय पद है और (विसेसिए) विशेपक पद में (पुढविकाइए आउकाइय तेउकाइय वाइय वणस्सइकाइए १३) पांच स्थावर हैं जैसेकि पृथ्वीकायिक जीव इसी प्रकार अप्कायिक जीव २ अग्निकायिक ३ वायु कायिक ४ वनस्पति कायिक ५ फिर (अविसेसिए) अविशेपक नाम में (पुढविकाइए) पृथ्वीकायिक हैं और (विसेसिइय) विशेपक पद में (सुहुमपुढविकाइय वादर पुढविकाइय) सूक्ष्म पृथ्वीकायिक और वादर (स्थूल) पृथ्वीकायिक हैं १४ फिर (अविसेसिए सुहुमपुढविकाइए) अविशेपक नाम में पृथ्वीकायिक सूक्ष्म जीव हैं और (विसेसिए पज्जत्तए सुहुमपुढविकाइए) विशेपक नाम में पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक और (अपज्जत्तए सुहुमपुढविकाइय १५) अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक हैं (अविसेसिय वादर पुढविकाइय) अविशेपक में वादर पृथ्वीकायिक हैं और (विसेसिए पज्जत्तए वादर पुढविकाइय) विशेपक नाम में पर्याप्त वादर पृथ्वीकायिक है १६ (अविसेसिए) अविशेपक पद में (एव आउकाइय) इसी प्रकार अप्काय के भी भेद जानने चाहिये जैसे कि-प्रथम भेद अविशेपक का होता है दूसरा भेद विशेपक होना है सो पृथ्वी कायवत् अप्काय के भी सूक्ष्म वादर पर्याप्त और अपर्याप्त भेद जानने चाहिये १६ (तेउ) चार भेद तेजस्काय के २२ (वाउ) चार ही वायुकाय के २५ (वणस्सइ २८) चार ही भग वनस्पति के हैं (अविसेसिए अपज्जत्त भेदेहिं (भाणियव्वा) इस सूत्र का सम्बन्ध पूर्व सूत्र के साथ है अविशेपक नाम पद में अपर्याप्तादि भेद पूर्ववत् जानने चाहिये ॥

अब द्विइन्द्रिय आदि जीवों के विषय में वर्णन किया जाता है ॥

(अविसेसिउ वेइदिउ) अविशेपक नाम में द्विइन्द्रिय जीव हैं और (विसेसिउ) विशेपक नाम में द्विन्द्रिय जीवों के (पज्जत्तउय अपज्जत्तउय) पर्याप्त और अपर्याप्त भेद हैं २६ (एवते इद्रिप ३० चउरिंद्रिय ३१) इसी प्रकार त्रिरिंद्रिय और चतुरिंद्रिय जीवों के भेद भी जानने चाहिये अब पचेंद्रिय के विषय में विवर्ण किया जाता है ॥

भावार्थ–द्वि नाम अन्य प्रकार से भी वर्णन किया गया है जैसे कि विशेपक नाम और अविशेपक नाम २ अविशेपक नाम से समान पदार्थों का वोध होता है विशेपक नाम से उनके भेदों का भी ज्ञान हो जाता है जैसे कि अवि-

शेषक नाम में द्रव्य शब्द ग्रहण किया है किन्तु विशेषक नाम में उसी के भेदा का विवर्ण है यथा जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य-इस प्रकार आगे, भी समझना चाहिये अविशेषक पद में जीव द्रव्य है विशेषक पद म चार गति रूप जीवों के भेद हैं फिर नरक गति अविशेषक पद है-सात उन के भेद विशेषक पद में ग्रहण किये गये हैं फिर रत्नप्रभा अविशेषक शब्द है पर्याप्त और अपर्याप्त उसके भेद विशेषक पद में लिये गये हैं इसी प्रकार सातों नरकों के स्वरूप को जानना चाहिये फिर अविशेषक शब्द में तिर्यग्योनि है विशेषक पद में एकेन्द्रिय से लेकर पचेंद्रिय पर्यन्त जीव हैं और अविशेषक पद में पृथ्वीकायिक जीव हैं विशेषक पद में सूक्ष्म वादर उन जीवों के भेद है इसी प्रकार पर्याप्त और अपर्याप्त यह भी भेद जान लेने चाहिये जैसे कि-पृथ्वी के चार भेद विवर्ण किये गये हैं उसी प्रकार अपकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय इन के भेद भी जान लो अपितु द्विइन्द्रिय जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त इस प्रकार के द्विविधि भेद है जिस प्रकार द्विइन्द्रिय जीवों के भेद हैं तद्वत् त्रिरिंद्रिय चतुरिंद्रिय जीवों के भेद भी जान लेने चाहिये यहां तक ३१ सूत्र हुए हैं इसके अनतर पचेंद्रिय जीवों के भेदों का विवर्ण किया जाता है जिस के अविशेषक विशेषक पूर्ववत् भेद है ॥

॥ अथ पचेंद्रियादि जीवों के विषय ॥

अवसेसिएपचेंदिएतिरिक्खजोणिय विसेसिय जलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिय थलयरपचेंद्रियतिरिक्ख जोणिय खेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय ३२ अविसेसिए जलयर पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिय विसेसिय समुच्छिय जलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिय गब्भ वक्कतियजलयरपचेंदियति-रिक्खजोणिय ३३ अविसेसिए समुच्छिमजलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणियए विसेसिय पज्जत्तएसमुच्छिमजलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिय अपज्जत्तएसमुच्छिमजलयर पचें-दिएतिरिक्खजोणियए ३४ अविसेसिए गब्भ वक्कतिय

जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय विसेसिय पज्जत्तएय गभ्भ वक्कतियजलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तए गभ्भ वक्कतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए ३५ अविसेसिए थलयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए विसेसिए चउप्पए थलयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए उरपरिसप्पथलय पचेंदिए तिरिक्खजोणिए य ३६ अविसेसिए चउप्पएथलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणिए विसेसिए संमुच्छिमचउप्पएथलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणिए गभ्भ वक्कतियचउप्पयथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिएय ३७ अविसेसिए समुच्छिमचउप्पएथलयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए य विसेसिए पज्जत्तयसमुच्छिम चउप्पयथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तए समुच्छिमचउप्पयथलयरपचेंदियएतिरिक्खजोणिएय ३८ अविसेसिए गभ्भ वक्कतियचउप्पयथलयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए विसेसिए पज्जत्तए गभ्भ वक्कतियचउप्पयथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय अपज्जत्त गभ्भ वक्कतियचउप्पय थलयरपचेदियतिरिक्खजोणिय ३६ अविसेसिए परिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय विसेसिए उरपरिसप्पथलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिय भुजपरिसप्पथलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणिए य ४० एतेवि समुच्छमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य गभ्भवक्कतिय विपज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा अविसेसिए खेयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए विसेसिए समुच्छिमखेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय विसेसिए पज्जत्तय समुच्छिम खेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए य ४७ अविसेसिए समुच्छिमखेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय विसेसिए पज्जत्तए

समुच्छिमखेयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य ४८ अविसेसिए गब्भ वक्कतियखेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय विसेसिए पज्जत्तए गब्भ वक्कतियखेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तए गब्भ वक्कतियखेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय ४६ ॥

पदार्थ-(अविसेसिए) अविशेषक पद में (पचेंदिए तिरिक्ख जोणिय) पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक शब्द है और (विसेसिए) विशेषक पद में (जलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिए) जलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक जीव हैं और (थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए) स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक जीव हैं (खेयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए) और खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक् जीव हैं ३२ और (अविसेसिय) अविशेषक पद में (जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए) जलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक् हैं। (विसेसिए) विशेषक पद में (समुच्छिमजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए) समूर्च्छिम जलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक् और (गब्भवक्कतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय) गर्भ से उत्पन्न होने वाले जलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक् शब्द हैं ३२ फिर (अविसेसिए) अविशेषक नाम में (समुच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्ख जोणिए) समूर्च्छिम जलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक् हैं और (विसेसिय पज्जत्तए समुच्छिमजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय अपजत्तए समुच्छिमजलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिए य ३४) विशेषक में पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पांचेन्द्रिय तिर्यग् योनिक् और अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं ३४ अपितु फिर (अविसेसिए गब्भ वक्कतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए) अविशेषक नाम में गर्भ से उत्पन्न होने वाले जलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं और (विसेसिए पज्जत्तए गब्भ वक्कतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए अपज्जत्तए गब्भवक्कतियजलयर पचेन्द्रियतिरिक्खजोणिए य) विशेषक नाम में पर्याप्त गर्भ से उत्पन्न होने वाले जलचर पांचेन्द्रिय तिर्यग् योनिक और अपर्याप्त गर्भ से उत्पन्न होने वाले जलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक जीव हैं अब स्थलचरों के विषय में विवर्ण किया जाता है (अविसेसिए थलयरपचेंद्रिय

तिरिक्ख जोणिए) अविशेषक नाम में थलचर पाचेन्द्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं किन्तु (विसेसिए चउप्पएथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिय उर पर परिसप्पथलचर पचन्द्रियतिरिक्खजोणिएय) विशेषक नाम में चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक और छाती के बल से चलने वाले सर्प स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं ३६ (अविसेसिए चउप्पएथलयरपंचेंदिए तिरिक्खजोणिएय) अविशेषक चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं और (विसेसिए समुच्छिमचउप्पएथलयरपंचेंन्द्रियतिरिक्ख जोणिए य गम्भ वक्कतिय चउप्पएथलयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिएय) विशेषक समुर्च्छिम चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक् और गर्भ से उत्पन्न होने वाले चार पाद वाले स्थलचर पाचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं चपाद पूरणार्थ में है ३७ फिर (अविससिए समुच्छिमचउप्पएथलयर पचेंदियतिरिक्खजोणिए य) आविशेषक समूर्छिम चार पाद वाले स्थलचर पाचेंद्रिय तिर्यक योनिक और (विसेसिए पज्जत्तय समुछिमचउप्पएथलयरपचेंदिय तिरिक्खजोणिय अपज्जत्तय समुच्छिमचउप्पएथलयरपचेंदिएतिरिक्खजोणिए य) विशेषक नाम में पर्याप्त समूर्च्छिम चार पाद वाले स्थलचर पाचेंद्रिय तिर्यक योनिक और अपर्याप्त समूर्च्छिम चार पाद वाले स्थलचर पाचेंद्रिय तिर्यक योनिक जीव हैं ३८ (अविसेसिए गम्भ वक्कतियचउप्पएथलयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिए) अविशेषक नाम में गर्भ से उत्पन्न होने वाले चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक हैं और (विसेसिए पज्जत्तए गम्भवक्कतिय चउप्पए थलयर पचेंदिय तिरिक्ख जोणिय अपज्जत्तए गम्भवक्कति चउप्पए थलयर पचेंद्रिय तिरिक्ख जोणिय ३६) विशेषक पर्याप्त गर्भ से उत्पन्न होने वाले और चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक और अपर्याप्त गर्भ से उत्पन्न होने वाले चार पाद वाले स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं ३६ (अविसेसिए उरपारिसप्प थलयरपचेंद्रिय तिरिक्खजोणिए) आविशेषक नाम में उरपारिसर्प स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यक् योनिक् जीव हैं और (विसेसिए उरपारिसप्प थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय भुयपरिसप्पथलयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिए य) विशेषक नाम में छाती के बल चलने वाले स्थलचर पाचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक और भुजा के बलसे

चलने वाला परिसर्प स्थलचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक जीव हैं ४० (एतेवि सम्मुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा गभ्भ वक्कंतिय विपज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा) फिर इन के भी समूर्छिम अविशेपक पद में रख कर पर्याप्त और अपर्याप्त गर्भ से उत्पन्न होने वालों के भी पर्याप्त अपर्याप्त भेद जानने चाहिए ४६ अथ खेचरों के विषय में विवर्ण किया जाता है (अविसेसिए खेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिय) अविशेषक नाम में खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक् शब्द है और (विसेसिए सम्मुच्छिमखयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिय) विशेषक में सम्मूर्छिम खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक हैं ४७ फिर (अविसेसिए सम्मुच्छिम खहयर पचेंद्रियतिरिक्खजोणिए) अविशेषक में सम्मुर्छिम खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक हैं और (विसेसिए पज्जत्तए सम्मुच्छिमखेयरपचेंदियतिरिक्ख जोणिए य) विशेषक में पर्याप्त सम्मुर्छिम खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक हैं ४८ फिर (अविसेसिए गभ्भ वक्कंतियखेयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिए) अविशेषक में गर्भ से उत्पन्न होने वाले खेचर पांचेंद्रिय तिर्यक योनिक् जीव हैं और (विसेसिए पज्जत्तए गभ्भ वक्कंतिय खेयरपचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तए गभ्भ वक्कंतियखयरपचेंद्रियतिरिक्खजोणिए य) विशेषक में गर्भ से उत्पन्न होने वाले खेचर पांचेंद्रिय तिर्यग् योनिक पर्याप्त और अपर्याप्त रूप दो भेद हैं इस प्रकार से तिर्यग् योनि के जीवों का विशेष और अविशेष नाम से विवर्ण किया गया है अब मनुष्य विषय विवर्ण किया जाता है ॥

भावार्थ—अविशेष नाम में पांचेंद्रिय तिर्यक् स्थापन करके विशेष नाम में फिर उनके जलचर स्थलचर और खेचर इस प्रकार के तीनों भेद विवर्ण किये गये हैं और फिर प्रत्येक २ के समूर्छिम और गर्भज पर्याप्त और अपर्याप्त इस प्रकार के चार चार भेद कहे हैं किन्तु स्थलचर के भेदों में चार पाद वाले जीव और सर्पादि भी ग्रहण किये गये हैं इनका पूर्ण विवर्ण पदार्थ में लिखा गया है क्यूंकि अविशेष नाम सामान्य अर्थ का सूचक है और विशेष नाम में उसके भेद वर्णन किये जाते हैं सो यह सर्व जलचर स्थलचर खेचर समूर्छिम और गर्भज पर्याप्त और अपर्याप्त प्रथम भेद को अविशेष नाम में रखकर फिर विशेष नाम में उनके भेद विवरण करने चाहिये अब मनुष्य जाति के विषय में वर्णन किया जाता है ॥

अथ मनुष्याणां भेदाना माह ।

अविसेसिओ मणुस्सो विसेसिओ समुच्छिम मणुस्सो य गभवक्कति य मणुस्सोय ५० अविसेसिउ समुच्छिममणुस्सो विसेसिउ पज्जत्तउय अपज्जत्तउय ५१ अविसेसिउ गभ वक्कतिय मणुस्सो विसेसिउ कम्मभूमिगो अकम्मभूमिउ य अतर दीवगो य सखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय पज्जत्तउ अपज्जत्तउ भेदो भाणियव्वो ५७–८५ ॥

पदार्थ-(अविसेसिओ मणुस्सो) अविशेषक नाम में मनुष्य शब्द है किन्तु (विसेसिओ) विशेष नाम में (समुच्छिम मणुस्सो य गभ्भ वक्कतियमणुस्सो य) समूर्च्छिम मनुष्य और गर्भ से उत्पन्न होने वाले मनुष्य हैं। अर्थात् गर्भज मनुष्य हैं ५० फिर (अविसेसिउ समुच्छिम मणुस्सो) अविशेष नाम में समूर्च्छिम मनुष्य है और (विसेसिओ पज्जत्तउ य अपज्जत्तउ य) विशेष नाम में पर्याप्त और अपर्याप्त उसके भेद हैं ५१ और (अविसेसिओ गभ्भ वक्कतियमणुस्सो) अविशेष गर्भज मनुष्य है किन्तु (विसेसिओ कम्म भूमिगो अकम्म भूमिउय अन्तरदीवगो य संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय पज्जत्ता अपज्जत्तउ भेउ भाणियव्वो) विशेष नाम में कर्म भूमिज मनुष्य १ अकर्म भूमिक मनुष्य २ और अन्तर्द्वीपों के मनुष्य ३ फिर सख्यात वर्षों की आयु वाले ४ और असख्यात वर्षों की आयु वाले ५ फिर पर्याप्त और अपर्याप्त रूप यह दोनों भेद सर्व प्रकार से कहने चाहिये अर्थात् मनुष्यों के भेदों में जो मनुष्य पच दश क्षेत्रों में उत्पन्न होते हैं उनको कर्म भूमिक कहते हैं और तीस क्षेत्रों में उत्पन्न होने वालों को अकर्मक भूमिक कहते हैं ५६ अपितु ५६ अन्तर्द्वीपों के मनुष्य भी युगलिय सज्ञक हैं इन सर्व मनुष्यों के भेद पूर्ववत् करने चाहियें ५७ अब देवों के विषय में व्याख्यान करते हैं ॥

भावार्थ-अविशेष नाम में मनुष्य पद है विशेष नाम में समूर्च्छिम मनुष्य और गर्भज मनुष्य उनके भेद हैं। इसी प्रकार पर्याप्त और अपर्याप्त भेद भी

जान लेने चाहियें किन्तु जैसे सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के भेद हैं उसी प्रकार गर्भज मनुष्यों के भेद भी जानने चाहिये अपितु विशेष इतना ही है कि गर्भज मनुष्यों के तीन भेद हैं कर्मभूमिक १ अकर्मभूमिक २ और अन्तरद्वीपों के मनुष्य ३ फिर इनके भी संख्यात वर्षों की आयु वाले और असंख्यात वर्षों की आयु वाले पर्याप्त और अपर्याप्त इत्यादि भेद वर्णन करने चाहियें । मनुष्यों के पश्चात् अब देवों का विवर्ण किया जाता है ॥

अथ देवों विषय ।

(अविसेसिउ देवो विसेसिउ भवणवासी वाणमतर जोइसिय विमाणिय ५८ अविसेसिउ भवणवासी विसेसिउ असुर कुमारो १ एव नाग २ सुवन्ना ३ विज्जु ४ अग्गिग ५ दीव ६ उदहि ७ दिसा ८ वाउ ६ थणिउ १० ॥ ५६ ॥ सव्वे सिंपि अविसेसिउय विसेसिउय पज्जत्तग अपज्जत्तग भेया भाणियव्वो ६६ अविसेसिउ वाणमतरो विसेसिउ पिसाय १ भूय २ जक्खे ३ रक्खसे ४ किन्नरे ५ किंपुरिसे ६ महोरगे ७ गधव्वे ८ ॥ ६१ ॥ एतेसिंपि अविसेसिए विसेसिए पज्ज त्ता अपज्जत्ताया भेया भाणियव्वा ७८ अविसेसिउ जोइ-सिओ विसेसिउ चद १ सूर २ गगह ३ नक्खत्त ४ तारा ५ ॥ ७६ ॥ एते सिंपि अविसेसिए विसेसिए पज्जत्तय अपज्जत्त य भेदा भाणियव्वा ८० अवसेसिउ विमाणिओ विसेसिओ कप्पोवउयकप्पा तइउय ८४ अविसेसिओ कप्पोवउय विसेसि-ओसुहम्माए १ इसाणेय २ सणकुमारेय ३ माहिंदए ४ वभलो ए ५ लत्तए ६ महासुक्कय ७ सहस्सारे ८ आणय ६ पाणय ए १० आरणए ११ अच्चुयए १२ एतेसिंपिय अविसेसिय वि सेसिय पज्जत्तय अपज्जत्तए भेदा भाणियव्वा ६८ अविसेसि

उ कप्पातइय विसेसिउ गेविज्जउय अणुत्तरोववाइउय ६६ अविसेसिउ गेविज्जउ विसेसिउ हेट्ठिमगेविज्जए मज्झिमगेविज्जए उवरियगेवेज्जएय ६३ अवसेसिए हेट्ठिमगेविज्जए विसेसिए हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जए हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जए हेट्ठिम उवरिगगेवेज्जए ६४ अविसेसिए मज्झिमगेवेज्जए विसेसिए माज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जए मज्झिम मज्झिमगेवेज्जए मज्झि- उवरिमगेवेज्जए ६५ अविसेसिए उवरिमगेवेज्जए विसेसिए उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जए उवरिम मज्झिमगेवज्जए उवरिम उवरिमगेवेज्जए ६६ एतेसिंपि सव्वेसि अविसेसिए विसेसिए पज्जत्तएअपज्जत्तए भेया भाणियव्वा १०५ अविसेसिय अणुत्तरोववाइए विसेसिय विजय वेजयतेए जयतेए अपराजिए सव्वट्ठसिद्धय १०६ एतेसिंपि सव्वेसि अविसेसियविसेसिय पज्जत्तयअपज्जत्तएभेया भाणियव्वा ११।११ अविसेसिए अजीवदव्वे विसेसिए धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमय? अविसेसिए पोग्गलत्थिकाय विसेसिए परमाणु पोग्गले दुपएसिय तिपएसिय जाव दसपएसिए जाव अणत पएसिये २।२० सेत्त दुनामं ८६ ॥

पदार्थ-(अविसेसिउ देवो) अविशेषक नाम में देव शब्द है किन्तु (विसेसिउ भवणवासी वाणमतर जोइसिए वेमाणिय) विशेषक नाम में चारों प्रकार के देव हैं जैसे कि भवनपति १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४-५८ फिर (अविसेसिउ भवणवासी) अविशेष नाम में भवनपति देव हैं और (विसेसिउ असुर कुमारो १ एव नाग २ सुवन्ना ३ विज्जु ४ अग्गि ५ दीव ६ उदहि ७ दिसा ८ वाउ ९ थणिउ १०) विशेषक नाम में भवनपतियों की दश प्रकार की जातिग्रहण की गई है जैसे कि असुरकुमार १ नागकुमार २ सुपर्णकुमार ३ विद्युत्कुमार ८ वायुकुमार ६ स्तनितकुमार १०।५६॥ (सव्वेसिंपि

अविसेसिउय विसेसिउय पज्जत्तग अपज्जत्तग भेया भाणियव्वा) अपि शब्द समुच्चयार्थ में है इसलिये इन सर्व भेदों के अविशेष नाम और विशष नाम पर्याप्तअपर्याप्त यह सर्व भेद जानने चाहिये अथवा कहने चाहिये जैसे कि असुरकुमार अविशेष नाम है और पर्याप्त अपर्याप्त यह दोनों भेद विशेष नाम में ग्रहण किये गये हैं इसी प्रकार दशों जातियों के भेद जान लेने चाहियें ६६ अब व्यतरों के विषय कथन किया जाता है अविसेसिउ वाण मतरो) अविशेष नाम में वाणव्यतर शब्द है और (विसेसिउ) विशेषक नाम में व्यतरों के भेद विवर्ण किए गये है जैसे कि-(पिसाए) पिशाच जाति के व्यतर इसी प्रकार (भूय) भूत २ (जक्खे रक्खसे) यक्ष ३ राक्षस ४ (किन्नरे किं पुरिसे) किन्नर ५ किं पुरुष ६ महोरगेगधव्वे) महारग ७ गधर्व ८ यह आठ जाति के व्यतर प्रधान कहलाते हैं इसलिए इनका नाम सूत्र में दिया गया है और अष्ट अन्य परायादि जाति के व्यतर समान होते हैं इसी लिए उनका नामोल्लेखन ही हुआ है ७० अपितु (एतसिंपि अविसेसिउ विसेसिउ पज्जत्ता अपज्जत्ताय भेया भाणियव्वा) इनके भी अविशेष नाम और अविशेष नाम पर्याप्त अपर्याप्त इत्यादि प्राग्वत् भद कहने चाहिए जैसकि पिशाच जाति के व्यतर अविशेष नाम है और विशष नाम में पर्याप्त और अपर्याप्त भेद कहने चाहिये ७८ और (अविसेसिउ जोइसिउ) अविशेष नाम में ज्योतिष्क देव है किन्तु (विसेसिउ चद सूर गह नक्खत्त तारा) विशेषक पद में चद्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ और तार ५ हैं ७६ फिर (एतेसिंपि अविसेसिउ विसेसिउ पज्जत्तय अपज्जत्तय भेदा भाणियव्वा) इनके भी अविशेप और विशेष पर्याप्त और अपर्याप्त भेद कहने चाहिये जैसकि-चद्र शब्द अविशेषक है और पर्याप्त अपर्याप्त उसके भेद विशेषक हैं इसी प्रकार सर्व की सम्भावना कर लेनी चाहिय ८४ और (अविसेसिउ वेमाणिउ) अविशेपक नाम में वैमानिक शब्द है अत (विसेसिउ कप्पोवउय कप्पातइउय) विशेषक नाम में कल्प देवलाक और कल्पातीत देवलोग ग्रहण किये जाते हैं ८५ फिर (अविसेसिउ कप्पोवउय) अविशेष नाम में कल्प देव हैं अपितु (विसेसिउ सुहम्माए १ ईसाणसणकुमारे माहिंदए विशेषक नाम में द्वादश कल्प देवलाक हैं जैसेकि-सुधर्मदेवलोक १ ईशानदेवलोक २ सनत्कुमार देवलोक ३ महेन्द्रदेवलोक ४ (बमलोए लांतए महासुक्कए सहस्सारे) ब्रह्म देवलोक ५

लान्तक देवलोक ६ महाशुक्र देवलोक ७ सहस्रार देवलोक ८ (आणयए पाणयए आरणए अच्चुयए) आनत देवलोक ९ प्राणत देवलोक १० आरणय देवलोक ११ और अच्युत देवलोक १२। ८९ ॥ फिर इनके भी (एतेसिंपि अविसेसिउ विसेसिय पज्जत्तय अपज्जत्तय भेदा भाणियव्वो) अविशेष नाम और विशेष नाम पर्याप्त और अपर्याप्त रूप भेद कहने चाहिये ९८ फिर (अविसेसिउ कप्पा-तइग) अविशेष नाम में कल्पातीत स्वर्ग हैं किन्तु (विसेसिउ गेविज्जउय अणुत्तरो ववाइउय) विशेष नाम में ग्रैवेयक और अनुत्तरो वैमानवासी देव है ९९ अत' फिर भी (अविसेसिउ गेविज्जउ) अविशेष नाम में ग्रैवेयक है और (विसेसिउ हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जउ) विशेषक नाम में अध' अधो गवेयक १ (हेट्ठि मज्झिम गेविज्जउ) अधो मध्यम ग्रैवेयक (हेट्ठिम उवरिमगेवेज्जउ) नीचे के उपरला ग्रैवेयक फिर (अविसेसिए हेट्ठिमगविज्जउ) अविशेष नीचे का ग्रैवेयक है और (विसेसिए हेट्ठिमग्रेवेज्जउ हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जउ हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जए) विशेषक नाम में नीचला ग्रैवेयक १ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक २ नीचे के उपरला ग्रैवेयक ३ फिर (अविसेसिए मज्झिमगेवेज्जउ) अविशेष नाम में मध्यम ग्रैवेयक हैं किन्तु (विसेसिए मज्झिम हेट्ठिमगेवेज्जउ मज्झिम मज्झिम गेवज्जए मज्झिमउवरिमगेवेज्जए) विशेष नाम में मध्यम के नीचे का ग्रैवेयक और मध्यम के मध्यम का ग्रैवेयक, मध्यम के उपर का ग्रैवयक फिर (अविसे-सिउ उवरिमगेवेज्जए) अविशेष नाम में उपरला ग्रैवेयक है (विसे-सिउ उवरिम हेट्ठिमगेवेज्जए उवरिम मज्झिम गेवेज्जए उवरिम उवरिम गेवेज्जए) और विशेष नाम में उपर के नीचे का ग्रैवेयक, फिर उपर के मध्यमका ग्रैवेयक और ऊपर के ऊपर का ग्रैवेयक ३ । १०० ॥ (एतेसिंसव्वेसिं अविसेसिउय विसेसिय पज्जत्तय अपज्जत्तय भेदाणियव्वा) फिर इन के भी अविशेष और विशेष पर्याप्त और अपर्याप्त रूप भेद सर्व माग्वत् कहने चाहिये १०१ फिर (अविसेसिउ अणुत्तरोववाइउ) अविशेषक नाम में अणुत्तरोपातिक देव हैं किन्तु (विसेसिउ विजय विजयंत जयत अपराजित सव्वट्ठ सिद्धउ) विशेषक नाम में विजय १ विजयत २ जयत ३ अपराजित ४ सर्वार्थ सिद्ध ५ यह पाच ही लोक देव है फिर (एतेसिंपि सव्वेसिं अविसेसिउ विसे-सिउ पज्जत्तए अपज्जत्तय भेदा भाणियव्वा) इन सर्वो के अविशेषक नाम और

विशेषक नाम पर्याप्त और अपर्याप्त नाम यह सर्व भेद कहने चाहिये क्युकि समान भेद अविशेष नाम होता है और उसके भेदों को विशेष नाम कहते हैं ११५ ॥

अब अजीव द्रव्य के विषय में विवर्ण किया जाता है जैसेकि (अविसेसिउ अजीवदव्वे) अविशेष नाम में अजीव द्रव्य है और (विसेसिउ धम्मात्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासात्थिकाय पोग्गलात्थिकाय अद्धासमए) विशेष नाम में धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय और समय (काल) फिर (अविसेसिउ पोग्गलत्थिकाय) अविशेष नाम में पुद्गलास्ति काय है (विसेसिए परमाणु पोग्गले दुप्पएसिए तिपएसिए जावदस पएसिए जाव अणतपएसिए) और विशेषक नाम में परमाणु पुद्गल द्विप्रदेशिक स्कध त्रिप्रदेशिक स्कध यावत् दश प्रदेशिक स्कध संख्यात प्रदेशिक स्कध असख्यात प्रदेशिक स्कध यावत् अनन्त प्रदेशिक स्कध यह सर्व भेद विशेष नाम के है (सेत्त दुनामे) अथ शब्द अथानन्तर के विषय में है और द्विनाम का विवर्ण पूर्ण हुआ इसी को द्विनाम कहते हैं ॥

भावार्थ —अविशेष नाम पद में देव शब्द ग्रहण किया गया है अत विशेष नाम में चारों जाति के देव हैं फिर अविशेष नाम में भवनपति देव रख कर विशेष नाम में उनकी सख्या की गई है सो इसी प्रकार फिर उनके पर्याप्त अपर्याप्त भेद कथन किये गये है जैसे भवन पतियों का विवर्ण है उसी प्रकार वाण व्यतर ज्योतिषी वैमानिक देवों के भी भेद जानने चाहिये अपितु आठ जाति के व्यतर ५ ज्योतिषी २६ वैमानिक देवों के भेद हैं यह सर्व जीव द्रव्य के ही विशेष और अविशेष नाम से ११५ सूत्र विवर्ण किये गये हैं किन्तु अजीव द्रव्य के अविशेष नाम में धर्मास्तिकायादि पांच भेद हैं क्योंकि जीव द्रव्य का विवर्ण तो पहिले किया जा चुका है और अविशेष नाम में पुद्गलास्तिकाय के परमाणु पुद्गल से लेकर अनन्त प्रदेशिक स्कध पर्यन्त विवर्ण है क्योंकि यह सर्व पारिणामिक भाव होने से विशेष नाम में ग्रहण किये गये हैं अत धर्मास्तिकायादि अपने शुद्ध स्वभाव में स्थित हैं इसलिये उनके भेद नहीं कहे गये सो यह केवल दोनों सूत्र अजीव द्रव्य के हैं और इसी स्थान पर द्विनाम का विवर्ण भी पूरा किया गया है इसके अनतर अब तीन नाम को व्याख्यान करते हैं ॥

॥ अथ त्रिनाम विषय ॥

(सेकित तिनामे २ तिविहे पएणत्ता तंजहा, दव्वनामे गुणनामे २ पज्जवनामे सेकिंत दव्वनामे २ छव्विह पएणत्ते तजहा धम्मात्थिकाय अधम्मात्थिकाय आगासत्थिकाय ३ जीवत्थिकाय ४ पोग्गलत्थिकाय ५ अद्धासमयए सेत्त दव्वनामें सेकिंतं गुणनामे २ पचविहे पएणत्ते तजहा वन्ननामे गंधनामे रसनामे फासनामे संठाणनामे सेकिंत वन्ननामे पंचविहे पएणत्ते तजहा कालवन्न परिणामे नीलवन्न परिणामे लेहियवन्न परिणामे हलिद्धवन्न परिणामे सुकिलवन्न परिणामे सेत्तंवन्न नामे सेकिंत गन्धनामे २ दुविहे पं० त० सुभिगन्धनामे य दुभ्भिगधनामे से त्त गधनामे सेकित रसनामे २ पचविहे प० त० तित्तरसनामे कडुयरसनामे कसायरसनामे अम्बिलरसनामे मुहुररसनामे से त्त रसनामे सेकित फासनामे २ अठविहे पएणत्त त० कक्खड कासनामे मउयफासनामे गरु अफासनामे लहुअफासनामे सीयोफासणामे उसिण फासनामे निद्धफासनामे लुक्खफासनामे से त्त फासनामे सेकिंत सठाणपरिणामे २ पचविहे पं० त० परिमण्डलसंठाण नामे वट्टसठाणनामे तसनामे चउरंसनामे आयासठाण नामे सेत्तसठाणनामे सेत्त गुणनामे सेकित पज्जवनामे २ अणेगविहे प० तं० एगगुणकालए दुगणकालए जाव दसगुणकालए सखेज्जगुणकालए असखेज्जगुणकालए अणंतगुणकालए एगगुणनीलए दुगुणनीलए तिगुण नीलए जावदसगुणनीलए जावअणतगुणनीलए एवलोहि-

यहालिद्दसुकलावि भाणियव्वा एगगुणसुरभिगधे दुगुण-सुरभिगधे तिगुणसुरभिगधे जावदसगुणसुरभिगधे सखे-ज्जगुणसुरभिगधे असखेज्जगुणसुरभिगधे, अणतगुणसुर-भिगधे एवदुरभिगधो भाणियव्वा एगगुणातित्ते दुगुण-तित्ते तिगुणातित्ते जावदसगुणतित्ते सखेज्जगुणातित्ते अस-खेज्जगुणतित्ते अणतगुणतित्ते, एवकडुयकसायअम्बिलमहुरा भाणियव्वा एगगुणकक्खडे दुगुणकक्खडे तिगुणकक्खडे जावदसगुणकक्खडे सखेज्जगुणकक्खडे असखेज्जगुणकक्खडे अणतगुणकक्खडे एवमउयगरुयलहुअसीय उसीणनिद्धलुक्खे भाणियव्वा सेत्त पज्जवनामे ॥

पदार्थ-(सेकिंत तिनामे २ तिविहे प० त० दव्वनामे गुणनामे पज्जव नामे) (प्रश्न) तीन नाम किसे कहते हैं । (उत्तर) तीन नाम भी तीनों प्र कार से वर्णन किया गया है जैसेकि-द्रव्यनाम गुणनाम पर्यायनाम (से किंत दव्वनामे २ छव्विहे प० त०) (प्रश्न) द्रव्यनाम कितने प्रकार से कहा गया है (उत्तर) द्रव्य नाम षट प्रकार से वर्णन किया है जैसे कि-(धमत्थि-काय) धर्मास्तिकाय (अधमत्थिकाय) अधर्मास्तिकाय २ (आगासत्थिकाय) अकाशास्तिकाय ३ (जीवत्थिकाय) जीवास्तिकाय ४ (पोग्गलत्थिकाय) पु-द्गलास्तिकाय ५ और (अद्धासमय) कालद्रव्य (सेत्त दव्वनामे) यही द्रव्य नाम है अर्थात् षट द्रव्यों का बोध होना और गति स्थिति अवगाह स्थान चैत न्यता सयोग वियोग परिमाणुओं का होजाना वर्तना यह षट ही इन क लक्षण हैं सो इन्हीं षट् द्रव्यों को द्रव्य नाम कहते हैं (सेकिंत गुण नामे २ पच विहे पणत तजहा) (प्रश्न) गुणनाम किसे कहते हैं (उत्तर) गुणनाम पाच प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसेकि-(कालवन्ननामे) कृष्णवर्ण नाम (नीलवन्ननामे) नीलवर्ण नाम (लोहियवन्ननामे) रक्तवर्ण नाम (हालिद्द-वन्ननामे) पीतवर्ण नाम (सुकिलवन्ननाम) श्वेतवर्ण नाम (सेत्तवन्ननामे) यही वर्ण नाम है क्योंकि द्रव्यों के मुख्यतया पाच ही वर्ण है जैसेकि कृष्ण १ नील २ रक्त ३ पीत ४ और श्वेत ५ (सेकिंत गधनामे) (प्रश्न)

गंध नाम किसे कहते हैं (उत्तर) गंधनाम (दुविहे प० त०) दो प्रकार से कथन किया गया है जैसेकि -(सुरभिगंधनामे) एक सुगंध और द्वितीय (दुरभिगंधनामेय सेतगंधनामे) दुर्गन्ध नाम अप शब्द प्राग्वत् है सो इसी को गंध नाम कहते हैं (सेकिंत रस नामे २ पंचविहे पणते तंजहा (प्रश्न) रसनाम किसे कहते हैं (उत्तर) रसनाम भी पांच प्रकार से कहा गया है जैसे कि-(तित्तरस नामे) श्लेष्मादि रोगों को हरण करने वाला तिक्तरस होता है (कडुयरस नामे) कंठ रोगादि के विध्वंस करने वाला कटुकरस होता है (कसाय रसनामे) कषायलारस रक्तविकारादि के दोषों को दूर करता है (अंबिल रसनामे) खट्टारस जो अग्निदीपक होता है (महुररसनामे) मधुररस जो पित्तादि के हरण करने वाला है इनका विवर्ण वैद्यक शास्त्र में सविस्तर कथन किया गया है क्योंकि यह पांच रस मुख्यता से संसार में हैं इसलिये इन का विवर्ण किया गया है किन्तु जो लवण रस भी एक प्रकार से माना जाता है वह इनके संयोग से ही उत्पन्न होता है इसलिये उसकी पृथक् भाव से विवक्षा नहीं की अब स्पर्श विषय प्रश्न करते हैं (सेकिंत फासनामे २ अट्ठविहे प० त० (प्रश्न) स्पर्शनाम किसे कहते हैं (उत्तर) स्पर्शनाम आठ प्रकार से है जैसे कि-(कक्खडफासनामे) कर्कस्पर्शनाम जैसे पाषाणादि १ (मउय फासनामे) मृदुस्पर्शनाम जैसे नवनीतादि पदार्थों में मृदुता होती है उसे मृदुस्पर्शनाम कहते हैं (गरुयफास नामे) गुरुस्पर्श नाम उसे कहते हैं जो पदार्थ उपरि प्रक्षेप किये हैं फिर वह अधागमन स्वभाव वाले हैं जैसे लवण पाषाण अपादि ३ (लहुयफासनामे) लघुस्पर्शनाम जो पदार्थ लघु हैं जैसे कि अर्कतूलादि आक और सीमल आदि की रूइ जिन्हों का ऊर्ध्वगमन स्वभाव हो ॥ ४ ॥ (सीयफासनामे) जो शीतस्पर्शनाम जैसे है मादि पदार्थ हैं ५ (उसणफासनामे) उष्णस्पर्शनाम जैसे अग्न्यादि पदार्थ हैं (निद्धफास नामे) स्निग्धस्पर्शनाम जिस के कारण से पदार्थ एकत्व होजावे जैसे तैलादि फिर (लुक्खफासनामे) रूक्ष स्पर्श नाम जैसेकि-भस्मादि पदार्थ हैं (सेत्त फासनामे) यही आठ प्रकार स्पर्श नाम है क्योंकि यह सर्व पौद्गलिक गुण हैं अब संस्थानों के विषय में कहते है (सेकिंत संठाण नामे पंचविहे प० त०)

१-गुरौ रुचा ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पाद १ सूत्र १०१ ॥
गुरौ स्वार्थे कसति आदेरतो अदवा भवति ॥

(प्रश्न) संस्थान किसे कहते हैं (उत्तर) संस्थान (आकृति) पांच प्रकार से कहा गया है जैसे कि (परिमंडल संठाणनामे) परिमंडल संस्थान गोल आकृति जैसे चूड़ी (वट्टनाम) वृत्ताकार मोदकवत् २ (तंस सट्ठाणनामे) त्र्यस्राकार त्रिकोण जैसे सिंघाड़ा (चउरस सट्ठाणनामे) चतुरस्राकार चतुष्कोण (आयत सट्ठाणनामे) दीर्घाकार दंडवत् (सेत्त सट्ठाणनामे यही संस्थान नाम है (सेत्त गुणनामे) और इसी को गुण नाम कहते हैं अब पर्याय विषय में कहते हैं (सेकिंत पज्जवनामे अणेगविहे प० तं०) (प्रश्न) पर्याय नाम किसे कहते हैं (उत्तर) पर्याय नाम अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि-जो द्रव्य के समान सदा स्थिर न रहे उसे पर्याय कहते हैं अथवा जो द्रव्य को अवस्थातर करे उसे पर्याय कहते हैं तथा जो पूर्व पर्याय सर्वथा द्रव्य से भिन्न हो जावे और नूतन उत्पन्न हो उसे भी पर्याय कहते हैं जैसे कि–सुवर्ण के आभूषणादि नाना प्रकार के पर्याय धारण करते हैं सो यह पर्याय अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि–(एगगुणकालए) एकगुण कृष्ण द्रव्य सर्व द्रव्यों की अपेक्षा से है जैसे असत् कल्पना द्वारा यदि सर्व कृष्ण द्रव्य एकत्र किया जाय फिर उसके भेद किए जाएं उस द्रव्य की अपेक्षा एक परमाण्वादि द्रव्य एकगुण कृष्ण वर्ण कहा जाता है इसी प्रकार (दुगुणकालए) द्विगुण कृष्णवर्ण (तिगुणकालए) त्रिगुणकृष्णवर्ण (जावदशगुणकालए) यावत्दशगुण कृष्णवर्ण (संखेज्ज कालए) संख्यातगुण कृष्णवर्ण (असखेज्जगुण कालए) असंख्यातगुण कृष्णवर्ण (अणतगुण कालए) अनंत गुण कृष्ण वर्ण इसी प्रकार (एगगुण नीलए) एकगुण नीलवर्ण (दुगुण नीलए) द्विगुण नीलवर्ण (तिगुणनीलए) त्रिगुण नीलवर्ण (जावदसगुण नीलए) यावत्दशगुण नीलवर्ण (जावअणतगुण नीलवणए) फिर संख्यात गुण नीलवर्ण असंख्यातगुण नीलवर्ण अनंतगुण नीलवर्ण (एवं लोहिय हालिद्दसुक्कलावि भाणियव्वा) इसी प्रकार रक्तवर्ण पीतवर्ण और शुक्लवर्ण के भी भेद जानने चाहिए और (एगगुणसुरभिगंधे दुगुणसुरभिगंधे तिगुण सुरभिगंध जावदसगुणसुरभिगंध) गंध की अपेक्षा से एकगुणसुगंध द्विगुण सुगंध त्रिगुणसुगंध यावत्दसगुणसुगंध भी होती है तथा (संखेज्जगुण सुरभिगंध) संख्यातगुण सुगंध (असंखेज्जगुण सुगंध) असंख्यातगुण सुगंध (अणतगुण सुरभिगंधे) अनंतगुण सुगंध (एवं दुरभिगंध) इसी प्रकार दुर्गं

रस के भी भेद जानने चाहिये। अब रसों का पर्याय वर्णन करते हैं (एगगुण-तित्ते) एक गुण तिक्त रस (दुगुण तित्ते तिगुण तित्ते जाव दस गुणतित्ते (द्विगुण तिक्त रस त्रिगुण तिक्त रस यावत् दश गुण तिक्त रस (संखेज्ज गुणतित्ते असंखेज्ज गुण तित्ते अणंतगुण तित्ते) संख्यात गुण तिक्त रस असंख्यात गुण तिक्त रस अनंतगुण तिक्त रस (एवं कडुय कसाय अंबिले महुराविभाणि यव्वा) इसी प्रकार कटु रस कषाय रस खट्टा रस और मधुर रसों के भेद भी जानने चाहिये॥

अथ स्पर्श विषय।

(एगगुण कक्खडे दुगुणकक्खडे तिगुणकक्खडे जावदसगुण कक्खडे संखेज्जगुण कक्खड असंखेज्जगुण कक्खडे अणंतगुण कक्खडे) एक गुण कर्कश-स्पर्श द्विगुण कर्कशस्पर्श त्रिगुण कर्कशस्पर्श यावत् दश गुण कर्कशस्पर्श इसी प्रकार संख्यात गुण कर्कशस्पर्श असंख्यात गुण कर्कशस्पर्श अनंत गुण कर्कशस्पर्श (एवं मउय गरुय लहुय सीयउ सिण णिद्धलुक्खा भाणियव्वा सेत्तं पज्जव नामे) इसी प्रकार मृदु स्पर्श गुरु स्पर्श लघु स्पर्श शीत स्पर्श उष्ण स्पर्श स्निग्ध स्पर्श रुक्ष स्पर्श इन सबों के भेद जानने चाहिये क्योंकि गुण कहने से यह तात्पर्य है कि पुद्गल द्रव्य गुण युक्त है और पर्याय परिवर्तन अवश्य होता रहता है सामान्य गुण द्रव्यों में अवश्य रहता है पुद्गल द्रव्य की पर्याय इसीलिये दिखलाई गई है कि जिज्ञासुओं को शीघ्र बोध होजावे क्योंकि यह द्रव्यरूपी होने से सब के प्रत्यक्ष है किन्तु धर्मादि द्रव्य अबोध प्राणियों के परोक्ष हैं इसी वास्ते उनकी पर्याय नहीं कथन कीगई अपितु सहवर्ती होने पर गुण शब्द ग्रहण किया गया है सो इसी का नाम पर्याय रूप तृतीय भेद है।

भावार्थ-जो पदार्थ हैं वे सर्व तीनों प्रकार से हैं जैसेकि-द्रव्यनाम गुणनाम और पर्याय नाम क्योंकि द्रव्य होने पर गुण पर्याय सिद्ध होते हैं इसलिए ए तीन नाम में इन तीनों का ग्रहण किया गया है सो द्रव्य षट् प्रकार से हैं जो पूर्व लिखे गए हैं किन्तु पुद्गल द्रव्य पांच प्रकार से गुण कथन किए हैं जैसेकि-वर्ण १ गंध २ रस ३ स्पर्श ४ और संस्थापन ५ वर्ण पांच प्रकार के होते हैं जैसेकि कृष्ण १ नील २ रक्त ३ पीत ४ और श्वेत ५, गंध दो प्रकार है सुगन्ध और दुर्गन्ध, रस के पांच भेद हैं तिक्त रस १ कटुक रस २ कषाय रस ३ खट्टा रस

४ मधुर रस ५, स्पर्श के ८ भेद हैं कर्कशस्पर्श, मृदुस्पर्श, गुरुस्पर्श, लघुस्पर्श, शीतस्पर्श, उष्णस्पर्श, स्निग्धस्पर्श, रुक्षस्पर्श, और सस्थान के भी पाच ही भेद हैं जैसकि-परिमडल सस्थान १ वृताकार सस्थान २ त्र्यससस्थान ३ चतुरस्र सस्थान ४ आयातसस्थान ५ इनको गुणनाम कहते हैं क्योंकि पुद्गल द्रव्य के यही गुण हैं और इसी के होने से पुद्गल द्रव्य रूपी माना जाता है और पर्याय नाम उसे कहते हैं जो द्रव्य से द्रव्यान्तर करे स्वमवस्था से अवस्थान्तर कर देवे अपितु द्रव्य के समान जो सदा स्थिर रहे उसे ही पर्याय कहते हैं किन्तु जो द्रव्यों को द्रव्यान्तर तो करदेव आर आप उत्पन्न होकर नाश भाव को प्राप्त होता रहे उसे पर्याय कहते हैं सो वह ऊपर लिखे हुए पुद्गल द्रव्यों के भेदों को एक गुण से लेकर अनतगुण पर्यन्त वृद्धिरूप अथवा हानि रूप करे उसी का नाम पर्याय है पुद्गल द्रव्यों के गुणों का नाश कभी नहीं होता किन्तु पर्यान्तर अवश्य होता है सो ससार भर में जो द्रव्य हैं वह सर्व तीनों नामों के अन्तर्गत है इसलिये तीनों नामों का विवर्ण पूर्ण हुआ अपितु नाम शब्द नपुसकलिंग है इसलिये जिज्ञासुओं को लिंग बोध भी सुगम होजाए इस बात के आश्रित होकर सूत्र तीनों लिंगों के अतिम वर्णों के स्वरूप का सामान्य प्रकार से विवर्ण करते हैं ॥

अथ तीनों लिंग विषय ।

त पुणनामतिविह इत्थिपुरिसनपुसगचेव एएसिं तिएह-पिंहु अतमि परूवण गोछ्र १ तत्थपुरिसस्सअता आई ऊ उ हवंति चत्तारितेचेव इत्थियाए हवंति उयार परिहीणा २ अ-तिय इतिय उतिय अताउ नपुमगस्स बोधव्वा एएसिति एह पियरोच्छामि निदरिसण एतो ३ आकारतोराया इकारतो गिरीय सिहि सीहरी ऊकारतो विराहू दुमोउ अताउ पुरि-साणं ४ आकारतोमाला इकारंतोसीरीय लच्छीय उकारतो जम्बूवहुयअताउ इत्थीण ५ अकारत धन्न इकारत नपुसग अच्छि उकारत पीलुमहुंचअता नपुसाण सेत्तितिनामे ।

पदार्थ-(तपुण नाम तिविह) फिर वह नाम तीन प्रकार से और भी कथन किया गया है जैसेकि-(इत्थिपुरिसनपुंसगचेव) स्त्री नाम पुल्लिंग नाम नपुंसक नाम क्योंकि निश्चयही लिंग तीनों हैं इसलिये (एएसिंति राइ विहु) अब इन तीनों के (अतमि परूवण वोच्छं १) (अंतिम वर्णों की प्रतिपादनता करूंगा अपि शब्द समुच्चयार्थ में है १ अथ अंतिम वर्णों के विषय में कहते हैं (तत्थ पुरिसस्स अता) उन में प्रथम पुरुष लिंग के अंत में (आईऊउइरतिचत्तारि) आकार-ईकार-ऊकार-उकार यह चार वर्ण होते हैं (तेचेव इत्थियाएहवंति) और वही उक्त वर्ण स्त्री लिंग के अंत में होते हैं किन्तु (उकारपरिहीणा) उकारांत को वर्जना चाहिये क्योंकि प्राकृत में स्त्रीलिंग उकारान्त शब्द नहीं होते २ (अंतिय इंतिय उंतिय) आकारांत इकारांत उकारांत (अनाउ नपुंसगाण बोधव्वा) अंत में वर्णन होते हैं नपुंसक लिंग में ऐसे जानना चाहिये (एएसिंनि राह विवोच्छामि) इन तीनों के उदाहरण भी कहूंगा- अपि शब्द पूर्ववत् है (निदरसणपतो ३) और शब्द भेद भी दिखलाऊंगा इन तीनों के उदाहरण विषय में कहते हैं ॥

(आकारांतो राया) प्राकृत में आकारान्त राया शब्द है और (इकारंतो गिरीयसिहरीय) इकारांत गिरी शब्द और शिखरी शब्द हैं और (ऊकारांतो विराहू दुमोउ) ऊकारान्त विराहू शब्द और दुमोऊ शब्द है (अताउ पुरिस्माण ४) अंत में यह शब्द पुरुष लिंग में कहे गये हैं ४ अथ स्त्री लिंग के उदाहरण कहते हैं (आकारता माला*) आकारांत शब्द स्त्रीलिंग में माला होता है और (ईकारत सिरीय लच्छीय) ईकारान्त सिरी और लच्छी शब्द हैं चपादपूरणार्थ में है (ऊकारांता जबू बहूय) ऊकारांत जबू और बहू शब्द हैं (अताउ इत्थीण ५) स्त्रीलिंग में उक्त वर्ण अन्तिम होते हैं ५ अब नपुंसक लिंग के उदाहरण दिखलाते हैं यथा-(अकारतधन) अकारान्त धन और धान्य शब्द हैं (इकारत नपुसग अच्छि) इकारांत नपुंसक लिंग में अच्छि शब्द हैं (उकारा-

---

[१] अु गामि-हरि विदि दाशि मुचि वाचि छिदि-भिदि मुजी ओच्छ गच्छ शच्छ रुच्छ दर्छु 'मोच्छ वोच्छ छेच्छ भेच्छ भोच्छ ॥

[२] आदीतो धातुर्मा भविष्यद्विधिविहितस्य ताभा स्थान सोच्छमित्ययोनि पात्य से ॥

* ऋकारान्ताम यत्रावि.कुम सुमझरसुर भदोमम २ भेर शुक्र शुद्ध गी स्वरेश माला ॥ हेमादि प० पा० २ सू० ८ ॥ शत्यारे १ सिदा स्वरा राइकार-माला स्त्रीलिंग म्क ॥

आगमेण सेकिंन लोवेणं २ ते अत्र तेऽत्र पठो अत्र पठोत्र घटो अत्र घटोत्र सेत्त लोवेणं सेकिंतं पगइएण २ अग्निएतो पटूइमो शाले एते माले इमे सेत्त पगईए-सेकिंत विगारेण दडस्य अग्र दडाग्रसाआगता सागता दधिइद दधीद नदीइह नदीह मधुउदकं मधूदक सेत्त विगारेण सेत्त चउनामे ॥

पदार्थ-(सेकित चउनामे २ चउव्विहे प त) से शब्द अथ शब्द का वाची है इसलिये से शब्द प्रश्न की आदि में ग्रहण किया जाता है सो अब प्रश्न लिखते हैं (प्रश्न) चार नाम किस प्रकार से है (उत्तर) चार नाम चार प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि-(आगमेण १) अक्षरों के आगम से जो नाम पद बनाया जता है अर्थात वर्णों के आगम से पद बनता है इसी प्रकार (लावेण) वर्णों के लोप होने से पद होता है (पगईए ३) प्रकृति भाव से पद बनता है (विगारेण ४) अक्षरों के विकार होने स जो पद बनता है सो इन्हीं का नाम चार नाम है अब सूत्रकार इनके उदाहरण देते हैं जैसे कि (सेकित आगमेण २) (प्रश्न) आगम से पद किस प्रकार से होता है (उत्तर) विभक्त्यन्त पद होता है और उसमें ही वर्ण का आगम हो जाता है जैसे कि-(पद्मानि पयांसि) पद्म शब्द है फिर " जश्शसः " शि इस सूत्र से नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा विभक्ति के बहुवचन (जस् को) शि का आदेश होगया फिर पद्म=शि इस प्रकार रूप होने पर शकार का लोप करके इकार मात्र रह गया तब पद्म इ ऐसे हुआ फिर " नुमच " इस सूत्र से पद्म शब्द को नम का आगम हुआ तब पद्म-नम्-इ इस प्रकार शब्द बना फिर अम् मात्र का लोप होने पर पद्म-न् इ एसे पद रहा अपितु " न्यक् सूत्र से नकार से पूर्व पद्म शब्द का आकार दीर्घ होगया तब पद्मा न्-इ इस प्रकार से प्रयोग बन गया फिर " अन चर् शब्द रूप पर वर्णमा श्रयेत् " इस वचन से पूर्ण प्रयोग बनगया है जैसे कि-" पद्मानि " सो यह नपुंसक लिंग के प्रथमा का बहुवचनान्त पद है सो यह आगम होने पर पद बना है इस का अर्थ है कि बहुत से पद्म हैं द्वितीय उदाहरण-पयस् शब्द है फिर नपुंसक लिंग प्रथमा के बहुवचन के स्थानों परि " जस् " प्रत्यय को शिका आदेश होगया फिर इकार मात्र शेष रहा

१ शाल चलने धातोनात् शाल शब्द सिद्धोभवति पश्चात् स्त्रीलिंगे शाला इतिसिद्धम्।

तब पयस्-इ इस प्रकार से रूप बना फिर " शात्वचः " सूत्र से नम्का आगम हुआ फिर थम् मात्र का लोप करके न् कार शेष रहा तब-पय-न्-स्-इ इस प्रकार से प्रयोग हुआ क्योंकि नम्का आगम अत के अच के पीछे होता है इसलिये इस प्रकार से प्रयोग बना फिर " न्यक् " सूत्र से दीर्घ करके अनचक शब्द रूप पर वर्णमा श्रयेत् " इस वचन से परिपक्व प्रयोग बनगया तब " पयांसि " यह रूप सिद्ध हुआ इसका अर्थ यह है कि बहुत जल है वा बहुत दूध है इसी प्रकार अन्य वर्णों के भी आगम होजाते हैं जैसेकि-" ङनस्तट सोऽथ" इस सूत्र से तट्मात्र का आगम होजाता है तथा सट् का आगम इत्यादि अनेक प्रकार के वर्णों का आगम होता है इसी लिये इसे आगम कहते हैं (सेत्त आगमेण) यही आगम वर्ण का स्वरूप है और आगम होने से ही पद बन जाता है ॥ अब लोप वर्णों का विवर्ण किया जाता है ॥ (सेकिंत लोवेण २) (प्रश्न) वर्णो के लोप होने से पद कैसे बनता है (उत्तर) वर्णों के लोप होने से पद इस प्रकार से होता है जैसेकि (ते अत्र तेत्र पटाअत्र पटात्र) तद् शब्द को " सुसोचात् " इस सूत्र से दकार मात्र को अद् हो गया तब " एदे " सूत्र से पूर्व अकार का लोप हो गया तब " त " ऐसे प्रयोग बन गया फिर पुलिङ्ग में प्रथमा के बहुवचन जस् प्रत्यय का "जसः शि " इस सूत्र से शिकार का आदेश हो गया फिर शिकार का लोप होकर इकार मात्र शेष रहा तब त-इ-एसे प्रयोग बन गया अत' फिर "इवर्णेदर्"सूत्र से संधि कार्य करके अर्थात् अकार वर्ण को इकार वर्ण परवर्ती होने पर एकार होजाता है तब "ते ऐसे प्रयोगबना फिर ते अत्र ऐसी स्थिति करने पर "पदा न्तेऽतो " इस सूत्र से अत्र शब्द के अकार का लोप कर के " तेत्र " प्रयोग बन गया किंतु जहा पर वर्णों का लोप किया जाता है वहां पर " ऽ " इस प्रकार से एक चिन्ह भी करदते हैं जैसेकि " तेऽत्र " इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये, इसका अर्थ यह है कि व यहा पर है इसी प्रकार " पटोअत्र " शब्द को " पदांतेऽत्येद् " इसी सूत्र से पटोत्र प्रयोग होगया. अर्थ यह है कि वस्त्र यहा पर है -तथा (घटोअत्र, घटोत्र) घट' शब्द प्रथमा का एक वचन है इसके सकार को "सजूरहससोऽतिप्यक्ष्वम्न्तु ध्वन्सोरिः इस सूत्र से सकार को रिकार होगया फिर इकार मात्र का लोप करके शेष रकार रहगया फिर "अ-तोऽद्धणु. " इस सूत्र से रकार का उकार होगया फिर " इवर्णेदर् " इस सूत्र

स संधि कार्य करके पटोअत्र प्रयोग होगया फिर "एङान्तेऽत्येङ्" इस सूत्र अकार मात्र का लोप करके पटोऽत्र इस प्रकार स प्रयोग बनगया इसका अ पद है कि-घट यहां पर है (सेत्तं लोवए) इस प्रकार अन्य वर्णों उदाहर भी जानने चाहिये इसका नाम लोप पद कहा जाता है अर्थात् वर्णों का लो किया जाता है-

अब प्रकृतिभाव का विवर्ण किया जाता है ॥ (सेकिंतपगईए २) (प्रश्न) प्रकृति भाव किस कहते हैं (उत्तर) प्रकृतिभाव उसका नाम है जो संधिकार्य के प्राप्त होने पर भी संधि कार्य न किया जाय और इस प्रकरण को निषेध संधि भी कहते हैं अब इसके उदाहरण दिखलाए जाते हैं जैसे कि-(अग्नीए तौपद्इमौ) जा द्विवचन होता है उसको द्विवचन की क्रिया दी जाती है सो यह " अग्नि " इस प्रकार से रूप स्थित है फिर इसको प्रथमा के द्विवचन की प्राप्ति होगई तब " अग्निऔ " ऐसे रूप बनगया फिर " इदुतो गिर्व्वौताऽस्त्र " इस सूत्र से औ मात्र को गिकार का आदेश होगया फिर अग्नि-गि एसे सिद्ध हुआ फिर गकार की इत् संज्ञा करके शेष इकार मात्र रह गया तब अग्नि-इ इस प्रकार से प्रयोग बनगया फिर " दीर्घः " इस सूत्रसे दीर्घ करके तब अग्नी ऐसे परिपक्व प्रयोग बनगया सो यह प्रथमा का द्विवचन है इसको द्विवचन की क्रिया करने से अग्नी एतौ ऐसे प्रयोग रक्खा किन्तु अब इसको " अस्वे " इस सूत्र से संधि कार्य की प्राप्ति हुई थी अर्थात् इकार को यकार की प्राप्ति थी किन्तु "गित." सूत्र से संधि कार्य का निषेध किया गया क्योंकि जिसका गकार इत्संज्ञक होजाता है फिर उसकी संधि नहीं की जाती इसलिये अग्नी एतौ, ऐसा ही प्रयोग बना रहा इसका अर्थ यह है कि यह दो अग्निये हैं इसी प्रकार " पटु इमौ " पटु शब्द को " इदुतो गिर्व्वौ ताऽस्त्रे " इससूत्र से पटु प्रयोग बनगया फिर " पटुइमौ " पद रखने पर गित' सूत्र से संधि कार्य की निषेध किया गया क्योंकि यहा पर " अस्वे " सूत्र की प्राप्ति थी किन्तु " गित. " सूत्रने संधि कार्य का निषेध कर दिया है इसका यह अर्थ है कि यह दोनों बुद्धिमान् हैं सर्व यह द्विवचनांत पद हैं इसी प्रकार (शाले ए-ते माले एते) यह स्त्रीलिंग के द्विवचनान्त दोनों पद हैं इनकी सिद्धि निम्न प्रकार से है'– यथा " शाल शब्द को अजाद्यताप् " इस सूत्र से आदत करके शाला शब्द सिद्ध होता है यह एक वचनान्त शब्द है किन्तु स्त्रीलिंग

के प्रथमा के द्विवचन को " औडर्थ्यौतागी " इस सूत्र से औकार आदेश होगया फिर गकार की इत् संज्ञा करके शेष ईकार रह गया तब " इकोयेडर् " सूत्र से संधि कार्य किया गया तब शाले एते यह प्रयोग सिद्ध होगया इसी प्रकार माले एते शब्द भी जानना चाहिये क्योंकि यह दोनों शब्द स्त्रीलिंग के द्विवचनान्त हैं (सेत्त पगईए) इसे ही प्रकृतिभाव कहते हैं अपितु प्रकृति भाव के अन्य नियम प्राकृत भाषा के व्याकरण में देखने चाहिये क्योंकि वहां पर प्रकृति भाव के बहुत से सूत्र वर्णन किये गये हैं किन्तु यहां पर तो केवल उदाहरण मात्र ही कथन किया गया है और इनका अर्थ यह है कि द्वेशालाएँ हैं दो मालायें हैं यदि यहां पर प्रकृति भाव न किया जाता तब "एचोऽयवायावः" सूत्र से संधि कार्य होजाता सो निषेध संधि के द्वारा संधि कार्य का निषेध होगया ॥ अब विकार भाव का वर्णन करते हैं ॥ (सेकिंत विगारेण २) (प्रश्न) वर्णों के विकार होने पर पद कैसे बनता है अथवा विकार करने से पदान्त कैसे होता है (उत्तर) वर्णों के विकार करने से जो पद बनते हैं उनके उदाहरण नीचे पढ़िये (दडस्य अग्र दडाग्र सा आगता सागता) यहां पर अकार को विकार होगया जैसे दड-अग्र-सा-आगता-यह दो शब्द हैं इनको "दीर्घ."* इस सूत्र से दीर्घ होगया तब दडाग्र सागता यह दोनों प्रयोग सिद्ध हुए इनका अर्थ यह है कि दड का जो अग्र भाग है उसी को दडाग्र कहते हैं और स्त्रीवाची शब्द में सा का प्रयोग होता है तब "सागता" शब्द का अर्थ यह हुआ कि-"वह आई" इसी प्रकार (दधि इद दधीद) यह दधि है इस अर्थ वाले शब्द को "दधि इद को " दधीद" दीर्घ "सूत्र की प्राप्ति हुई तब उक्त प्रयोग सिद्ध होगया और (नदिइह नदीह) नदिइह शब्द को भी" दीर्घ. "सूत्र से नदीह होगया अर्थात् यह नदी है फिर (मधुउदक) (मधूदक) मधुउदक शब्द को" दीर्घ "सूत्र से ही बनगया अर्थात् मधुरूप पानी है (सेत्त विगारेणं) इसी को विकार कहते हैं क्योंकि सवर्णों वर्ण को दीर्घता की प्राप्ति होती है और इसी को विकार के नाम से सूत्र ने सिद्ध किया है यदि असवर्णी वर्णों की प्राप्ति हो तो "नयु वर्णस्यास्वे" इस सूत्र में संधि कार्य नहीं होता अर्थात् दीर्घादि कार्य नहीं होते तथा "एदोता. स्वरे "स्वरस्योद्वृत्ते" "त्यादे "इत्यादि

---

* दीर्घ हा० व्या० अ० १ पा० १ सू० ७१ ॥ अर्थ स्थाने परेण पा सन्धिरस्य तद् समोर्दीर्घो भिन्न पदयोर्वा पर, दडाग्र, सागता, मुनीन्द्र । नदीह । मधूदक । वधून्र । पितृषभः।

सूत्र सधिकार्य के निषय कर्ता है अत ऋकार का प्रयोग सूत्र में इसलिये नहीं दिखलाया कि ऋकार के स्थानों परि इकार अकार उकार आकार इत्यादि आदेश होजाते हैं यथा एक उदाहरण देखिये "महा ऋषि" एमे रूप स्थित है तब इसको " इत् कृपादौ ' इस सूत्र से ऋकार को इकार होगया तब " महाइषि " ऐसे प्रयोग बनगया फिर " शषोस. " सूत्र से मुर्धन्य षकार को दंती सकार होगया तब " महाइसि " इस प्रकार से प्रयोग बनगया फिर " इएवेद्र " सूत्र से सधि कार्य करने से अर्थात् अकार को परवर्ती अच् के साथ ही एकार होगया तब–महेसि ऐसे प्रयोग बनगया फिर " अक्लीबेसौ " सूत्र से प्रथमान्त शब्द दीर्घ होकर " महेसी " इस प्रकार से रूप बना सो इसी प्रकार अन्य भी रूप जानने चाहिये (सेत चउनामे) यही चार नाम का स्वरूप है और इसे ही चार नाम कहते हैं अथ शब्द पूर्ववत है ॥

भावार्थ–चार नाम चार प्रकार से वर्णन किया गया है जैसेकि–आगम १ लोप २ प्रकृति भाव ३ विकार ४ आगम नाम उसे कहते है जो वर्णों के आगम से पदबनते हों जैसाकि " पद्मानि " " पयासि " यह नपुसकलिङ्ग के प्रथमान्त बहुवचन हैं इनका नम् का आगम हुआ है सो इसी को आगम नाम कहते हैं लोप नाम यह है कि–तस्त्र–तेऽत्र–पटोअत्र–पटोत्र–घटोअत्र–घटोत्र इनमें पदान्त से परवर्ती अकार मात्र का लोप किया गया है और " पदान्तेऽयेड " सूत्रकी सर्वत्र प्राप्ति है सो इसीको लोप नाम कहते हैं–क्योंकि अकार मात्रका लोप किया गया है अत प्रकृति भाव उसे कहते हैं–जिन शब्दों को सधि कार्य्य की प्राप्ति भी होजावे फिर भी वह शब्द वैसे ही बन रह किन्तु सधि न की जावे उसे प्रकृति भाव कहते हैं जैसाकि " अग्नीएतौ " " पटूइमौ " " शालेएते " ' मालेइमे " इन शब्दों को "ईदूदेद्द्विवचनम्" सूत्र से सधि कार्य प्राप्त था अपितु किया नहीं गया क्योंकि यदि सधि कार्य करते तब " अग्नीतौ ' ऐसे प्रयोग बनजाता इसलिये यह सर्व द्विवचनात शब्द प्रकृति भाव में रहते हैं और सधि प्राप्त होन पर भी सधि कार्य्य नहीं किया जाता सो इसी का नाम प्रकृति भाव है ॥ विकार का यह अर्थ है कि यदि दो वर्ण सवर्णी एक रूप हो जायें तब उनको परस्पर मिलाकर दीर्घ किये जाय उसीको विकार कहते हैं जैसेकि दड–अग्र–यह शब्द है और डकार में अकार है सो अग्र शब्द के अकार के साथ उसको दीर्घ किया जाता है तब "दडाग्र" यह प्रयोग बनगया इसीप्रकार

सा-आगता-सागता । दधि-इद-दधीद । नदी-इह-नदीह । मधु-उदक-मधूदक । इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं यह सर्व वर्ण स्वजाति वाले वर्णों के साथ दीर्घता को प्राप्त होगये हैं सो इन्हीं को विकार नाम से कहते हैं यह सर्व व्याकरण के प्रयोग हैं इनके वर्णन करने का मुख्य प्रयोजन यह है कि सर्वनाम चार प्रकार से ही होते हैं क्योंकि कोई आगम से पद बनता है कोई लोप से २ कोई प्रकृति भाव से ३ कोई विकार से ४ जब इनका पूर्ण बोध होजाय तब ज्ञान के चतुर्दश दोष सुगमता से दूर होसक्ते हैं क्योंकि –" हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं" इत्यादि यह ज्ञान के दोष बतलाये गये हैं किन्तु जो व्याकरण के शेष प्रकरण हैं उनका सन्क्षेपता से विवर्ण पांच नाम में किया गया है इसलिये अब पांच नाम का विवर्ण करते हैं ॥

॥ अथ पांच नाम विषय ॥

सेकिंतं पंच नामे २ पंचविहे प० तं० नामिकं १ नैपातिकं २ आख्यातिकं ३ औपसर्गिकं ४ मिश्रं च ५ अश्वइतिनामिकं १ खल्विति नैपातिकं २ धावतीत्याख्यातिकं ३ परीत्यौपसर्गिकं ४ संयतइतिमिश्रं ५ सेतं पंच नामे ॥

पदार्थ-(सेकिंतं पंच नामे २ पंचविहे प० तं०) अब शिष्य फिर प्रश्न करता है कि हे भगवन् ! पांच नाम कितने प्रकार से वर्णन किया गया है इस प्रकार से शिष्य के प्रश्न को सुन कर गुरुने उत्तर दिया कि भोशिष्य ! पांचनाम पांच प्रकार से वर्णन किया गया है जैसेकि-(नामिकं) जो नाम (नाममाला) आदि कोशों में वर्णन किये गये हैं उनको नामिक कहते हैं तथा नाम शब्द प्रकृति का नाम भी है क्योंकि प्रकृति से परे ही प्रत्ययों की प्रयोजना की जाती है सो जो प्रकृति में ही आकृति रहै उसको नामिक कहते हैं द्वितीय (नैपातिक) जो निपात में वर्णन किये गये हैं उनको नैपातिक शब्द कहते हैं तृतीय (आख्यातिक) जो आख्यात में शब्दों का विवर्ण किया गया है उसको आख्यातिक कहते हैं चतुर्थ (औपसर्गिक) नाम जो उपसर्गों में वर्णन किया गया है उसको औप

१ समास १ तद्धित २ धातु ३ निरुक्ति ४ इनका विषय आगे किया जायेगा ॥

नोट १× समास १ प्रागभाव प्राप्त च निरुक्त निपातनामिति कथ्यते ॥

सगिक कहते हैं पदम (मिश्र) नाम मिश्र होता है जो उपसर्ग धातुक आदि प्रत्ययों द्वारा सिद्ध होता है उसको मिश्र नाम कहते हैं अब सूत्रकार इनके उदाहरण दिखलाते हैं (अश्व इति नामिक) अश्व इस प्रकार से एक नाम है फिर इसको प्रकृति रूप स्थापन करके प्रत्ययों की संयोजना करनी चाहिये जैसेकि अश्व', अश्वौ, अश्वा, अश्व, अश्वौ, अश्वान इत्यादि सातों विभक्तियों के रूप जानने चाहिये इसी प्रकार पुरुष धर्म वृक्ष घटपटादि सर्व नाम प्रकृति रूप होते हैं फिर यह प्रत्ययों के लगाने से विभक्तियान पद होजाते हैं सो जो नाम (नाम मालादि) शास्त्रों में पठन किये गये हैं उनको नामिक कहते हैं जिसका उदाहरण सूत्र में अश्व शब्द से सूचित किया गया है अश्व शब्द गाहेका वाची है १ अब निपातका उदाहरण देते हैं (खल्विति नैपातिक २ (खलु आदि नैपातिक शब्द हैं और इनके अंतर्गत ही अव्यय प्रकरण है क्योंकि जो शब्द तीनों लिंगों और सातों विभक्तियों और सर्व वचनों में एक समान रहे उस शब्द की अव्यय संज्ञा होती है। निपात उसको कहते हैं जिसका सूत्रों द्वारा कुछ और रूप सिद्ध होता हो किन्तु निपात करके उसका वही रूप रखा जाए वही नैपातिक होता है २ और जो क्रिया के बोधक पद हैं उनको आख्यातिक पद कहते हैं जैसे कि—(धावति त्याख्यातिक ३) धावति यह क्रिया पद है यथा अमुक पुरुष धावति अमुक पुरुष भागता है इसकी सिद्धि निम्न प्रकार से है। सर्त्तेर्धौ । शाक० । अ० ४ । पा० २ । सूत्र० ५६ । इस सूत्र से सृगतौ धातु का " धौ " आदेश होगया फिर " क्रियार्थो धातु " इस सूत्रसे धातु संज्ञा बांधकर फिर " सति " शा० । अ० ४ । पा० ३ । सू० २१७ । इस सूत्र से वर्त्तमान काल में लट् का आगम हुआ फिर लट् के स्थान पर " लाऽन्ययुष्मदस्मत्सु तिप्तसन्झि सिप्थस्थ मिब्वस् मस् " इन प्रत्ययों की प्राप्ति हुई अपितु इनके अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष, तीनों भेद करके फिर एक २ के तीन २ वचन करने चाहिये अत " धौति " इस प्रकार से अन्य पुरुष के एकवचन को फिर " कर्तरिशप " ॥ शा० । अ० ४ । पा० ३ । सू० २० इस सूत्र से शप् का निष्कर्ष हुआ अत. शपावितौ पर के शेष आकार रहा तब " धौ-अ-ति " इस प्रकार से रूप बना तब " एचोऽच्ययवायाव् " शा० अ० १ पा० १ सूत्र ६ इस सूत्र से औकार को आव् आदेश कर के फिर अनचक् शब्द रूप पर वर्णमाश्रयेत् इस वचन से सन्निकर्ष करना चाहिये तब धावति

ऐसे एक क्रियापद सिद्ध हुआ अपितु, धावति–धावतः–धावन्ति, यह तीनों व चन अन्यपुरुष के हैं और धावसि–धावथ: धावथ–यह तीनों मध्यम पुरुष के हैं और धावामि–धावाव –धावाम यह तीनों उत्तम पुरुष के हैं सो इसी प्रकार दशों लकारों में सर्व क्रिया पदों के रूप जानने चाहिये अतः इसी को आख्यातिक पद कहते हे और आख्यातिक पद में सर्वगण सर्व प्रक्रियाएं लकारार्थादि सर्वगर्भित हैं किन्तु सूत्र में केवल उदाहरण मात्र ही एक प्रयोग दिखलाया गया है अब औपसर्गिक पद का विवर्ण करते हैं यथा (परीत्यौपसर्गिक ४) प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, यह उपसर्ग हैं और यह नाना प्रकार के अर्थों में प्रयुक्त होते हैं सो परि आदि उपसर्गों से युक्त जो पद कहे गये हैं वह औपसर्गिक पद हैं अत उपसर्ग के सम्बन्ध होने पर धातुओं के अर्थों का भी परिवर्तन होजाता है यथा, आहार विहार, सहार, प्रहार इत्यादि प्रयोगों मे अर्थों का परिवर्तन होता है इसलिये उपसर्गों का विशेष विवर्ण उपसर्ग इत्यादि व्याकरण ग्रंथों से देखना चाहिये सूत्र में केवल एक उदाहरण दिखलाया गया है किन्तु परि उपसर्ग "परिसमततोभाव व्याप्ति दोषाख्यानो परम भूषण पूजा वर्जन लिंग नति वसन व्याप्ति शोक वीप्सासु" इन द्वादश अर्थों में व्यवहृत होता है इसलिये उपसर्गों में रहने वाले पद को औपसर्गिक पद कहते हैं अब मिश्रज पद का विवेचन करते है (सयतइतिमिश्र ५) मिश्रज नाम उसको कहते हे जो दोतीन प्रकरणों से मिलकर शब्द बनता हो जैसेकि सम् उपसर्ग है यमु उपरम धातु ह कृदन्त क्त प्रत्यय है सो तीनों के मिलने से "सयत" शब्द बनगया है इस लिये इसको मिश्रज नाम कहते हैं (सेत पचनामे) सो यह पाच नाम का स्वरूप पूर्ण होगया है और इसको पाच नाम कहते हैं।

---

१ परिणतेषु द्वादश स्वर्थेषुवर्तते। समन्त तो भावे परिम् ठमति। व्याप्तौ परिमतोसिनामाम। दोषाख्याने परिभवति देवदत्तः। परमेपरि पूर्णो घट। भूषणे परि करोति कन्याम्। पूजाया परिचारायति गुरून्। वर्जने परित्रिगर्तेभ्यो वृष्टोदेव। आलिङ्ग परिष्वजते कन्याम्। निवसने परिदधाति। व्याप्तौ परि वाहक। शोके परि दव्यति। वीप्साया वृक्ष वृक्ष परि सिंचति। सो यह द्वादश अर्थों मे परि उपसर्ग व्यवहृत होते ह इसी प्रकार अन्य उपसर्ग भी नाना प्रकार के अर्थो में व्यवहृत होते है फिर उनका उसी प्रकार से अर्थ किया जाता है इसलिये सूत्रकारने औपसर्गिक पद उपेही बतलाया है जो पद उपसर्गों के अन्तर्गत रहनेवाला हो॥

भावार्थ-पांच नाम पांचों प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि नामिक १ नैपातिक २ आख्यातिक ३ औपसर्गिक ४ और मिश्रज ५-नामिक उसे कहते हैं जो मूल प्रकृति रूप होवे जैसे अश्व शब्द के बल प्रकृति रूप है फिर इसको विभक्तियों द्वारा पद किया जाता है नैपातिक प्रयोग खल्वित्यादि हैं जो स्वयमेव होने वाले हों उसे नैपातिक पद कहते हैं आख्यात श्रुति से आख्यातिक पदों का भलीभांति से बोध हो जाता है जैसे धावति इत्यादि यह क्रिया पद है इनके द्वारा क्रिया पदों का ज्ञान ठीक होता है यथा स धावति तौ धावत , ते धावन्ति, त्वं धावसि, युवाम् धावथ ,युयम् धावथ, अहं धावामि, आवाम् धावाव , वयं धावाम । अर्थात् वह भागता है वह दो भागते हैं, वह बहुत से भागते हैं, तू भागता है, तुम दोनों भागते हो, तुम सब भागते हो, मैं भागता हूं, हम दो भागते हैं हम सब भागते हैं इत्यादि यह सब आख्यातिक पद हैं। जो उपसर्गों द्वारा सिद्ध हो उसे औपसर्गिक पद कहा जाता है अतः जो कतिपय प्रकरणों से सिद्ध हो उसे मिश्र नाम कहते हैं जैसे संयत शब्द है सो यही पांच प्रकार के नाम हैं किन्तु तीन नाम चतुर्नाम पांच नाम इनमें केवल व्याकरण का स्वरूप दिखलाया गया है इस लिये सूत्रकारका आशय सिद्ध होता है कि शब्द शास्त्र (व्याकरण) अवश्यमेव पठन करना चाहिये और साथ ही जैन न्याय (तर्क) शास्त्र का भी बोध होना चाहिये इसलिये जो जैन व्याकरण है उसमें यथाशक्ति परिश्रम करना वह शास्त्र विहित है क्योंकि श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र के द्वितीय श्रुत स्कंध के द्वितीयाध्याय में लिखा है कि तथा च पाठ ।

मूल-नामक्खाय निवात उवसग्गतद्धिय, समाससंधिपयहे उजोगिय उणाइकिरिय विहाण धातुसर विभत्तिवणजुत्तंतिकाल दशविहंपि सच्च जहभणिय तहयकम्मुणाहुति दुवालसमविहायहोइ भासावयणंपिय होइ सोलस्स विहएव अरहंतमणुणाय ॥

टीका-तथा नामाख्यात निपातोपसर्ग तद्धित समास संधिपदहेतु योगिकोणादि क्रिया विधान धातु स्वरविभक्ति वर्णयुक्तमिति तत्र नामेति पद शब्द सम्बन्धाभाव पदमेव मुत्तरत्रापितथा व्युत्पन्नेतर भेदात् द्विधातत्र व्युत्पन्न देवदत्तादि

अभ्युत्थानदित्येत्यादि आख्यातिपद साध्यक्रिया पद यथा अकरोत् करोति क-
रिष्यति तत्तदर्थद्योत नाय तेषु तेषु निपतन्ती तिनिपाताः तत्पद निपातपद यथा
वात्रा खल्वित्यादि उपसृज्यते धातु समीपे युज्यते इत्युपसर्गास्तद्रूप पदमुपसर्गपद
मपरादेत्यादिवत् तस्मैहित तद्धितमित्यान्वर्थाभिधाय कार्ये प्रत्ययास्तेतद्धिता
स्तदन्तपद यथा गोभ्योहितेगव्योदेशः नाभेरपत्य नाभेय इत्यादि समसन समासः
पदानामेकी करण रुपः तत्पुरुषा दिस्तत्पद समासपद यथा राज पुरुषेत्यादि
सधि' सन्निकर्षस्तेन पद यथा दधीद नद्येपेत्यादि तथाहेतु साध्या विना भूतत्व
लक्षण यथा नित्य शब्द' कृतकत्वादितियोगिकपदेतपामेवदुव्यादिसयोगत
तयाउपकरोतिसेनयाभि याति अभिषेणयतीत्यादि तथा उणादिउणप्रभृति
प्रत्यया तपद यथा आशुम्वादु तथा क्रियाविधान सिद्ध क्रिया निधे' कान्तम
त्ययान्तपदविधेरित्यर्थ. यथा पावक. पाक इत्यादि तथा धातवोभ्वादयः क्रि
याप्रतिपादिकाः स्वरा अकारादय स्वङ्गादयोर्वासमक्कचिद्रसाइतिपाठ' तत्रर-
सा.शृङ्गार दयो नवयदाह शृङ्गारहास्य करुणारौद्र वीरभया.नक.-वीभत्साद्भुत
शान्ताश्चनव नाट्यरसास्मृताः विभक्तयः प्रथमाद्याः सप्त वर्णा ककारादि
व्यञ्जनानिएभियुक्तयत्तथा अथ सत्य भेद तमाह त्रकाल्य त्रिकाल
विशय दश विधमपिसत्य भवतीति योगः दश विधत्वच सत्यस्पजन पद
सम्मत सत्यादि भेदात् आहच जणत्रग १ समय २ ठवणा ३ नाम ४ रुवे
५ पडुच्च ६ सच्चेयववहार ७ भाव ८ जोगे ९ दशमेउवम्म सच्चेयाति तत्र जन
पद सत्य यथा उदकार्थे कोंकणादि देशस्दयापय इति वचन समत सत्य यथा
समानेपि पङ्कसम्भव गोपालादि नामपिसम्मतत्वे नारविन्द मव पङ्कजमुच्यते न-
कुवलयादीनि स्थापना सत्य प्रतिमादिषु नामसत्य यथा कुलमवर्द्धयन्नपि कुल-
वर्द्धन इत्युच्यते रूपसत्य यथा भावतो असमणो पितद्रूपधारि श्रमण इत्युच्यते
प्रतीतसत्य यथा अनामिका कनिष्ठका प्रतीत्यदीर्घेत्युच्यतेसैवमध्य माप्रतीत्य ह
स्वेतिव्यवहारसत्य यथा गिरितृणादिषुदह्यमानेषु व्यवहारादिरिर्दह्यते इति भाव-
सत्य यथा सत्यपिपञ्च वर्णत्वे शुक्लत्वलक्षण भावोत्कटत्वाच्छुक्ला बलाकेति
योगसत्य यथा दण्डयोगाद्दण्डेत्यादि औपम्यसत्य यथा समुद्रवत्तडाग इत्यादि
तथा जहभणियत तहयकम्मुणाहोइनि यथा येनप्रकारेण भाणित भणन क्रियादश
विधसत्यसद भूतार्थवयाभवति तथा तेनैव प्रकारेणकर्मणा वाक्परलक्षनाति क्रि
ययासद्भूतार्थ ज्ञापने सत्य दश विधमेव भवतीति अनेन चेदमुक्त भवति न केवल

सत्यार्थ वचन वाच्य हस्तादि कर्माण्य व्यभिचार्यर्थ सूचकमत्रे मु यत्राप्य व्यभि चारि तथा पराभ्यसनस्या कुटिला यवसायस्यच तुल्यत्वादिति तथा दुवान् स विहाय हाइ भामश्चि द्वादश विधाच भवति भाषा तथाच प्राकृत संस्कृत भाषा मागध पिशाचसूरसेनीच पष्ठोत्र भूरि भेदो देश विशेषादपभ्रंश इयमेव षड्विधा भाषा गद्य पद्य भेदेन भिन्ना माना द्वादश धामवतीति तथा वचन मापपाडश विध भवति तथाहि वयणतिय ३ लिंगतिय ३ कालतिय ३ तहपरोक्ख पच्चक्ख उवणीयाइ चउक्क अज्झत्थ चेवसोलसम तत्र वचनत्रय एक वचनद्विवचन बहु वचन रूप तथा धर्म' धर्मा धर्मा लिंगत्रिक स्त्री पुनपुंसक रूप यथा कुमारि वृक्षा कुण्ड कालत्रिकमतीतानागत वर्त्तमान कालरूप यथा अकरोत् करिष्यति करोति मन्यक्ष यथाय एप. परोक्ष यथा सातथाउपनीत वचनगुणोप नयन रू यथा रूपवानय अपनीय वचन गुणाय नयन रूप यथा दु शीलोय उपनीताप नीत वचन यत्रैक गुण मुपनीय गुणान्तर मपनीयते यथा रूप वानय किं तु दु शील विपर्ययणत्वऽपनीतोपनीत वचन तद्यथा दु शीलोय किन्तु रूपवान् अध्यात्म वचन अभिप्रेतमर्थंगोपयितु कामस्य सहना तस्यैव भणन मति एव मितिउक्त सत्यादि-स्वरूपाव धारण मकारेण अर्हदनुज्ञात ॥

भावार्थ-नाम पद उसे कहते हैं जो विभक्ति स रहित हो किन्तु कतिपय व्याकरणों में नाम पदकी प्रकृति सज्ञा बाधी है और प्रकृतिसे परे प्रत्ययों की सयोजना की है जैस कि-धर्म शब्द को पुल्लिंग में सातों विभक्तियों स इस प्रकार साधन किया * " अव्ययात्स्वोजस् " " एकद्विबहो " इन शाकटायन व्याकरण के सूत्रों का यह आशय है कि-अव्ययसपरसु-औ,, जस् ,, प्रत्यों की प्राप्ति होती है फिर उनके यथाक्रम एकवचन द्विवचन, और बहु वचन किये जाते हैं किन्तु उकार और जकार की इतसज्ञा है अत जिसकी इत् सज्ञा होती है उसका लोप होजाता है तब, स्, आ, ऽस्, ऐसे प्रत्यय रहते हैं "प्रत्यय: कृताऽपस्था " शा० अ० २। पा १। सू०४१। इस सूत्र से प्रत्यय सज्ञा की गई है किन्तु " परः " ।१। १।१४४। प्रत्यय प्रकृति से परवर्तीही होते हैं जैसे कि धर्म शब्द तो प्रकृति रूप है तब धर्म स्, धर्म औ धर्म अस्, एसे एकवचन द्विवचन और बहुवचन किये गये फिर " सुप्पदम् " १। १। ६२। इस सूत्र से सुबन्त और तिङन्त के प्रत्यय लगने से पद बन जाता है तब " धर्म स् " एस शब्द के सकार को " सजु रहस्सो ऽतिप्पक स्वन्सुध्वन्सारि "

* यह अधिकार सूत्र है

१।१।७२। इस सूत्र से रिकार किया गया फिर इकार के इत् संज्ञा करके " रः पदान्ते विसर्जनीयः ।१।१।६७। इस सूत्र से रेफ की विसर्ग की गई तब धर्मा, ऐसे प्रयोग सिद्ध होगया और धर्म औ शब्द को एजू ऐचू " १।१।८२। सूत्र से संधि कार्य करके " धर्मौ " प्रयोग सिद्ध होगया और धर्म अस् शब्द का " एदे " ।१।२।१०६। सूत्र से अकार के लोप की प्राप्ति थी किन्तु " भत्या." ।१।२।१६२। सूत्र से अनुमात्र को आत् होगया फिर उस के अकार को " दीर्घः" सूत्र से दीर्घ किया गया और सकार को रिकारादेश और रेफ को विसर्जनीय पूर्व सूत्रों से करलेने चाहिये तब " धर्मा, " ऐसे प्रयाग प्रथम विभक्ति के बहु वचन का सिद्ध होता है ॥ यदि कार्यान्तर में कोई व्यक्ति व्यापृत हो उसको अपने सन्मुख करना होतो उसको सम्बोधन कहते हैं और उसकी विवचार्य आपन्ये ।१।३।६६। सूत्र से सु औजस । एकत्वादि संख्या में प्रत्यय लगाये जाते हैं फिर ह्रस्वोऽश्रित्यादः।१।२।१२२॥

सूत्र से एक वचन में सु का लोप करके और सम्बोधन में हे शब्दका प्रयोग करना चाहिये तब हे धर्म, हेधर्मौ हेधर्माः ऐसे प्रयोग बन जाते हैं और " कर्मणि " १ । ३ । १०५ । सूत्र से क्रिया विषय में कर्म होता है सो कर्म में अम् और शस्, यह प्रत्यय लगाये जाते हैं जिसमें ट और शकार की इत्संज्ञा होती है फिर " मोऽग्णोऽम. । १ । २ । ३६ । सूत्र से अम् मात्र के अकार को मकार होगया फिर " पदस्य " १ । २ । ८७ । सूत्र से पदकी ही लुग्की प्राप्ति होती थी किन्तु " षष्ठ्याः स्थानऽतेऽल . । १ । १ । ४७ । इस सूत्रमें अन्त के वर्णका लोप किया जाता है तब " धर्मम् " ऐसे प्रयोग सिद्ध होगया फिर धर्म औ शब्द की पूर्ववत् एच् करलेना चाहिये तब धर्मौप्रयोग सिद्ध होगया और " नन्त- पुंसः " १ । १ ७६ । शस् के स्थान पर साथ अच्नान्त शब्द होजाता है तब धर्मान् ऐसे रूप सिद्ध हुआ और तृतीया विभक्ति के " टाभ्या भिस्सिद्धौ " सूत्र से टाभ्याम् भिस प्रत्यय होते है और-" हेतु कर्तृ करणेत्थं भूतलक्षणे " । १ । ३ । १२८ । इत्यादि कारणों में तृतीयाविभक्ति

होती है फिर "ङसास्येस्स्ये नायम्" १ । २ । १६५ । इस सूत्रसे टा मात्रको इन आदेश होगया फिर " अभिभे " इस सूत्रसे नकारको णकारादेश होगया किन्तु "ष्युल्टुस्तौनान्तरे " १ । २ । ५१ । श–और च वर्गमें ल–और टवर्ग में स और तवर्ग में न को णकारादेश नहीं होता. फिर " इक्येद्द्र् " सूत्रसे एड् करने से " धर्मेण " ऐसे प्रयोग सिद्ध हुआ और भ्याम् प्रत्यय के परे होने से " भ्यत्याः" सूत्रसे दीर्घ होकर धर्माभ्याम् रूप बनगया फिर ऐरिभ-सोऽआश् । १ । २ । १६४ । इस सूत्र से भिस् मात्र को ऐसादेश होगया फिर ऐचादेश करने से और सकार को रिकारादेश रेफ को विसर्जनीय तब परिपक्व प्रयोग धर्मैः सिद्ध हुआ फिर "ङेभ्यां भ्यस् " । १ ३ । १३४ । सूत्रसे चतुर्थी को उक्तप्रत्ययों की प्राप्ति हुई फिर ङसेत्यादि सूत्र से ङेकोयकरादेश होगया और भ्यत्या सूत्रसे धर्म शब्दका अकार दीर्घ होगया तब एकवचन में धर्माय द्विवचन में धर्माभ्याम् प्रयोग सिद्ध हुए और बहुवचन में यहोसिस्भ्येत् । १ । २ । १६३ । सूत्रसे एकार की प्राप्ति होती है तब धर्मेभ्यः ऐसे प्रयोग बनजाता है " अयायेऽत्वधौ " । १ । ३ । १५६ इस सूत्रसे पांचवीं विभक्ति की सिद्धि होती है और ङसिभ्यां भ्यस् प्रत्ययों की प्राप्ति है फिर ङितावितौ करके ङसेत्यादि सूत्र से ङसि को आत् का आदेश होजाता है फिर उसे " दीर्घ." सूत्र से दीर्घ करलेना चाहिये फिर " चर्जश." सूत्र से विराम में जश् को चर भी होजाता है तब धर्मात् वा धर्माद् ऐसे प्रयोग बनजाते हैं और भ्याम् परवर्ती होने पर प्राग्वत् ही कार्य किया जाता है और भ्यास् को भी पूर्ववत् ही कार्य होता है तब धर्माभ्याम् धर्मेभ्य प्रयोग सिद्ध हुए और ङसोसाम् । १ । ३ । १६२ । सम्बन्ध में षष्ठी होती है उसके प्रत्यय ङस् ओस् आम् है फिर ङसेत्यादि सूत्र से ङस् को " स्य का आदेश होजाता है तब धर्मस्य प्रयोग सिद्ध हुआ फिर ओस्परे होने पर एत्व होगया फिर एचोऽच्ययवायाव । १ । १ । ६० । सूत्र से अया देश किया गया फिर सकार को पूर्ववत् कार्य करने से धर्मयोः प्रयोग सिद्ध होगया और नमुड्हस्वाट्साट् । १ । २ । ३३ ।

इस सूत्र से आम् मात्र को नाम् आदेश किया गया फिर " नाम्यतिसृचतुरः १।२।१४०। सूत्र से पूर्वअक् दीर्घ किया तब धर्माणां प्रयोग सिद्ध होगया और "आधारे। १।३।१७५। सूत्र से आधार में सातवीं विभक्ति होती है उसके ङिओस् और सुप् प्रत्यय हैं जिनको पूर्व सूत्रों से ही धर्मे धर्मयोः धर्मेषु प्रयोग बनाये जाते हैं॥

सो इसीप्रकार वृक्ष घटपट कुभादि शब्दों को भी जानना चाहिये इस प्रकार नाम शब्दको विभक्तयन्त करना चाहिय सो यही नाम शब्द हैं और आख्यात प्रकरण में सर्व धातुः प्रक्रियागणादि का समावेश है और धातुएँ भी परस्मैपदी आत्मनेपदी और उभयपदी आख्यात प्रकरण में ही कथन की गई है और धातुओं को क्रिया पद भी कहते हैं और दश ही लकारों में अन्य पुरुष मध्यम पुरुष उत्तम पुरुष गिने जाते हैं इसलिये आख्यात प्रकरण का ठीक २ बोध होना चाहिये और निपात उसे कहते हैं जो अप्राप्ति की करे और प्राप्ति का निषेध करे वही निपात होता है जैसेकि खल्वादि शब्द हैं और विंशति उपसर्ग गण है प्र परादि उपसर्ग के बल से धातु के अर्थ में भी परिवर्तनता होजाती है जैसेकि—आहार विहारादि शब्द हैं तद्धित प्रकरण में अनेक प्रकार के प्रत्ययों का विवर्ण है जैन नाभेयः वैयाकरण सौगतः शैव. वैष्णवः अकार' इत्यादि शब्द सर्व तद्धित प्रत्ययान्त हैं और पट् प्रकार के समास होते हैं॥ जिनके बोध से समासान्त पदोंका ज्ञान भली प्रकार होजाता है और संधि प्रकरण से संधि ज्ञान होता है किन्तु संधियें पांच प्रकार से प्रतिपादन की गई हैं जैसे कि—अच्संधि—

अचों के साथ अचों का मिलजाना उसे अच्संधि कहते हैं जैसे कि नयनं, लवनं, रायौ, नावौ, दध्यत्र, शम्पत्र, मध्वपनय, वध्वासेन, पित्रर्थः लाकृति, महर्द्धिपि दडाग्रमुनीन्द्र, मधुदकम् पितृषभः देवेन्द्र, एहि गपोदकम् मालोढा, महर्षि, तवैषा, नवौदन, मौद मैषः स्वैरिणी प्रक्षौहिणी तवोंकार. बिम्बौष्ठी सुखार्तः प्रार्णम्

माप्नोति, मेपयति, तेऽग्र, पटोऽग्र, गवाग्र, गवेश्वरः गवेन्द्र, गवाक्ष इत्यादि सर्व अर्चसंधि क हैं

निषेधसंधि–

प्लुत शब्द के पर होनपर सधि कार्य नही किया जाता किन्तु यह नियम इति शब्द के परे होनेपर नही है जैसेकि–सुरलोका ३ इति तत्र सुरलोकेति भी बन जायगा । और मुनीइमौ, साधूएतौ अमीअत्र, अमूआसाते । खट्वेअत्र कुलेइमे । पचेतेअत्र पचेथेअत्र पचावहेअत्र, अ अपेहि । इ इन्द्रंपश्य । उ उत्तिष्ठ आएव मन्यसे । आएवंकिलतत् । आउष्णम् ओष्णम् अथो अस्मै नो इन्द्रियम् ॥ इत्यादि प्रयोग प्रकृति भाव के हैं

द्वित्वसंधि–

तीर्त्थं अर्हन् मरुत् निध्ध्यान्त मच्च्युत देवदत्ता ३ दध्ध्यत्र इन्द्र दर्शन हर्ष, तर्प अरर्यात् कुड्डास्ते कन्याच्छत्रम् देवच्छत्रम् म्लेच्छति आच्छिनत्ति आच्छिदत्त इत्यादि प्रयोग द्वित्वसधि के होते हैं ॥

हलसधि–

अप्पात्रम्, अजमात्रम्, ककुम्मण्डल, ककुप्मण्डल, वाङ्मधुरा वाग्मधुरा षण्नया षड्नया तत्रयनतद्नयनम्, वाङ्मय, गन्ता, चङ्क्रम्यते अभूल्लिहः त्व[illegible] स्वयमि त्वल्लुनासि, सम्राट, गूढस्वाराद् उत्थितः फरशुभ, मज्जति [illegible] कण्पण्ड कट्टीक्त चेष्टा तट्टकारेण । मधुलिट्सीदति । महानपण्ड, [illegible] वाङ्क्षिवति अज्फलौ त्रिष्टुब्भुत वाग्घसति, तद्धितम् अच्छपम् भवाञ्छूर भाञ्शूर नृःपानि कारकार्न भवांश्छादयति भवांष्टीकते । भवांष्ठका-रादति, भवान्त्सरति, प्राङ्छिनोति पुंश्चली पुस्कोकिल वृक्षहसति, देवाया न्ति, अयोदेहि, भगोदेहि, असाइन्दु असाविन्दु । असाविन्दु । तस्मा आस नम् । तस्या यासन । देवायासते । श्रेयणोऽरिप, धर्मोजयति, एषकरोति, सयाति,

१ पांचा सधियों का पूर्ण विवरण शाकटायन व्याकरण से दखें और इन शब्दों की साधनि का भी प्रक्रिया समुह नामक वृत्ति से देखियें ।

अनेपोगच्छति । अहरत्र, अहोभ्याम्, अहोरूपम्, अहोरात्रि अहोरूपम् । इत्यादि प्रयोग हलसंधि के हैं

विसर्जनीय सन्धि ।

मुनिरस्मि। साधुर्वयते, कश्छादयति, कष्टीकते। कश्शुभः कःशुभः । कः ष्षण्डे क षण्डे । कस्साधु, कःसाधु। कस्स्खलति। कः+खनति कः≍पचति कः≍फलति तिरस्कृत्य तिरःकृत्यतिरः+कृत्य, । नमस्कृत्य पुरस्कृत्य । चतुष्कटक दुष्कृत द्विष्करोति धनुष्खण्डयति। अयस्कारः यशस्कामः यशस्काम्यति गीष्पासा, गी+काम्यति चतुष्टयम् निष्टपति । निस्तपति कस्कः । कौतस्कुतः सर्पिष्कुण्डिका भ्रातुष्पुत्र, इत्यादि प्रयोग विसर्जनीय सधिके हैं सो इनकी शब्द साधिनिका शब्दागम जाननी चाहिये किन्तु किसी २ आचार्य ने तीनही सधियें स्वीकार की हैं जैसेकि-.सञ्ज्ञास्वर प्रकृति हलज विसर्ग जन्मा सन्धिस्तु पञ्चकमितीरथ मिहाहुरन्ये तत्रस्वरप्रकृति हलजविकल्पितोऽस्मिन् सन्धित्रिधा कथितवान् गुणकीर्ति सूरिः ॥ १ ॥

भावार्थ —सज्ञा, स्वर, प्रकृतिभाव, हल और विसर्ग सधियों के स्थान पर गुणकीर्तिसूरि ने स्वर, प्रकृति, और हल् यह तीनही सधियें स्वीकार की हैं वास्तव में तीनों सधियों में पांचों सधियों का समावेश होजाता है इसलिये सधि पदका भी पूर्ण बोध होना चाहिये फिर सुबन्त और तिङन्त प्रत्ययों क लगने से पद् सज्ञा होती है इसलिये पदज्ञान होने पर हेतु ज्ञानभी होना चाहिए हेतु दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि अन्वय व्यतिरेक जो वस्तु विद्यमान होने पर विद्यमानभाव रहता है उस अन्वय हेतु कहते हैं जैसे कि धूमके होने पर अग्निका अस्तित्व है। और व्यतिरेक हेतु वह होता है जो एकके अभाव होने पर द्वितीय का भी अभाव होजाए उस व्यतिरेक हेतु कहते हैं जैसे कि अग्नि क अभाव में धूमका अभाव रहता है सो यही व्यतिरेक हेतु होता है तथा श्रीस्थानाङ्ग सूत्र के चतुर्थस्थान के तृतीय उद्देश में लिखा है कि अहवा देऊ चउव्विहे पन्नत्ते तजहा

पच्चक्खे अणुमाणे उवमे आगमे अहवाहेऊ चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा, अत्थित्तं अ-त्थिसोहेऊ अत्थितणत्थि सोहे ऊणत्थित अत्थिसोहे ऊ णत्थित णत्थिसोहेऊ॥

वृत्ति–अहवत्ति । हेतोः प्रकारान्तरता द्योतके विकल्पार्थे हिनोति गमयति प्रमेयमर्थं सवाहीयते अधिगम्यतेऽनेनेतिहेतु. प्रमेयस्य प्रमितौ कारणं प्रमाण मित्यर्थ सचतुर्विधः स्वरूपादि भेदाच्च ॥ पच्चक्खेत्ति अश्नात्यश्नुते व्याप्नाति अर्थानित्यक्ष आत्मतम्मति यद्वर्त्तते ज्ञानं तत्प्रत्यक्ष निश्चयतोऽवधिमनः पर्याय केवलानि अप्राणि चेन्द्रियाणि मति यत्प्रत्यक्षं व्यवहार तस्तच्च चक्षुरादि प्रभवमिति लक्षणमिदमस्य अपरोक्षतयार्थस्य ग्राहकं ज्ञानमीदृश प्रत्यक्ष मितरज्ज्ञेय परोक्ष ग्रहणे क्षया १ ग्रहणापेक्षयति भाव. अन्विति लिङ्गदर्शन सम्बन्धानुस्म रणयोः पश्चादात्मान ज्ञानमनुमान एवलक्षणमिद साध्याविना भूतलिङ्गात् साध्यनिश्चायक स्मृत अनुमान तदभ्रान्त प्रमाणत्वात्समक्ष वदिति ॥ १ ॥ ए-तच्चसाध्या विना भूतहेतु जन्यत्वेवा ऽभ्युपचाराद्धेतुरिति तथा उपमान उपमां सैवोपम्य अनेन गवये न सदृशो गौरिति सादृश्य प्रतिपत्ति रूप उक्तञ्च गान्हएवाय मरण्यन्य गवयवीक्षते यदा भूयोव पवसा मान्य भाजवर्त्तुल कएठक ॥ १ ॥ तस्यामेव त्वस्यायां यद्विज्ञान मवर्त्तते पशुनैतेन तुल्योसौ गोपिण्ड इतिसोपमति २ अथव श्रुतातिदेशवाक्य सामानार्थो पलम्भनं मज्ञासज्ञि सम्बन्ध ज्ञान मुपमान मुच्यत इति आगम्यन्ते परिच्छिद्यते अर्थो अनेनेत्यागम आप्तवचन सम्पाद्यो विप्रकृष्टार्थ प्रत्यय उक्तञ्च–दृष्टेष्टा व्याहता द्वाक्यात्परमार्थाभि धायिनः तत्वग्राहि तयोत्पन्न मानशाब्दं प्रकीर्तित ॥ १ ॥ आप्तोपज्ञमनुलङ्घ्य मदृष्टे ष्टविरोधकं तत्वो-पदेश कृत्सार्वं शास्त्रका पथ घट्टनमिति ॥ २ ॥ इहान्यथा नुपपन्नत्व लक्षण हेतुजन्यत्वा दनुमानमेव कार्ये कारणो पचाराद्धेतु सच चतुर्विध. चतुर्भंगी रूपत्वात् तत्रअस्ति विद्यतेतदितिलिंगभूत धूमादिवस्तु इतिकृत्वा अस्तिसोऽग्न्या दि साध्योर्थ इत्येव । हेतुरिति अनुमान तथा तदग्न्यादिक वस्त्वतोनास्तिअसौ तद्विरुद्ध. शीतादिरर्थ इत्येवमपि हेतुरनुमानमिति तथानास्ति तदग्न्यादिक मत. शीतकालास्ति सशीतादिरर्थ इत्येवमपि हेतुमानमिति । तथानास्तितत्वृक्ष त्वा दिकमिति तथा नास्ति सशिंशपात्वादिकोर्थ इत्यपि हेतुरनुमानमिति इहचशब्दे

छन त्वंस्यास्ति त्वादस्सानिरयत्व पटवत् तथा धूमस्यास्तित्वा दिहास्त्यग्नि र्म-
हानस इत्येत्यादिक स्वभावानुमान कार्यानुमानञ्च प्रथम भङ्ग के न सूचित तथा
अग्नेरस्तित्वात् धूमास्तित्वाद्वा नास्तिशीत स्पर्श इत्यादि विरुद्धोपलम्भानुमान
विरुद्धकार्यो पलम्भानुमान च तथा अग्नेर्धूमस्य वास्तित्वान्नास्ति शीतस्पर्श जं-
नितदंत वीणारोम हर्षादि पुरुषविकारो महानसवदिति कारण विरुद्धो पलम्भा-
नुमान कारणविरुद्धकार्यो पलम्भानुमानच द्वितीय भंग के नाभिहित तथा अत्रा
देरग्नेवानास्ति त्वादस्ति क्वचित् कालादिविशेषे आतपः शीतस्पर्शोवापूर्वोप-
लब्धप्रदेश इत्येत्यादि विरुद्धकारणपलम्भानुमान विरुद्धानुपलम्भानुमान च तृती-
य भङ्गकेनोक्त तथा दर्शनसामग्या सत्यां घटोपलम्भस्य नास्तित्वा न्नास्तीह घटो
विवक्षितप्रदेशवदित्यादि स्वभावानुपलब्ध्यानुमान तथा धूमस्य नास्तित्वा न्ना-
स्त्य विकलो धूमकारणकलापः प्रदेशान्तरम दित्यादिकार्यानुपलब्ध्यमान तथा
वृक्षनास्तित्वात् शिंशपा नास्तीत्यादि व्यापकानु पलम्भानुमान तथा अग्नेर्ना-
स्तित्वात् धूमो नास्तीत्यादि कारणनुपलम्भानुमान च चतुर्थभगकेना विरुद्धमिति
न च वाच्यन जैनप्रक्रियेय सर्वत्र जैनाभिमतान्यथा नुपपन्नत्वरूपस्य हेतुलक्ष-
णस्य विद्यमानत्वादिति,

सारांश—हेतु चार प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसकि—प्रत्यक्ष,
अनुमान, उपमान, और आगम, अथवा अस्तिमें अस्ति १ अस्तिमें नास्ति १
नास्ति में अस्ति ३ नास्ति में नास्ति ४ सो यह सर्व हेतु तत्वों के निर्णय के
लिये ही प्रतिपादन किये गये हैं इनका कुछ विवर्ण तो टीका में ही किया जा
चुका है किन्तु विस्तार पूर्वक कथन इसी सूत्र के गुणा प्रमाण के अधिकार में
किया गया है और अन्वय व्यतिरेक आदि हेतुओं का भी विवर्ण उसी
स्थल पर किया है जो अस्तिमें अस्ति पद है उसमें अति व्याप्ति अव्याप्ति
असंभव आदि दोषों को दूर करके केवल शुद्ध व्याप्य का ही विवर्ण है जैसे
कि धूम की अस्ति होने से अग्नि का अस्तित्वस्वत. सिद्ध है इसी प्रकार शेष
भंगों का स्वरूप भी वृत्ति में लिखा गया है इसी लिये यहां पर इसका विस्तार

नहीं किया इसलिये हेतु ज्ञान में निष्णात होकर फिर यौगिक भेदों में विज्ञ होना चाहिये तथा लिंग ज्ञानका पूर्ण बोध होना चाहिये जैसे कि पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुसक, जिनके निम्न लिखितानुसार नियम हैं यथा पुलिङ्ग कटणथप भमयरषसन्त्वन्त मियनस्त्री कि रितम् ॥ ननकी घघभी द्वः किर्माव स्त्रोऽकर्तरि च कः स्यात् ॥

ॐ नमः सर्वज्ञाय । लिङ्गानुशासन मन्तरेण शब्दानुशासन नार्थीफलमिति सामान्य विशेषलक्षणाभ्यां लिङ्ग मनुशिष्यते ॥ नामेति वक्ष्यमाणमिह सर्वत्र। कटणथपभ मयरषसान्त स्त्वन्त च नाम पुलिङ्ग स्यात् । कादयाऽकारान्ता गृह्यन्ते पृथक्सन्त निर्देशात् । द्विस्वरसन्तानां नपुसकत्वस्य वक्ष्यमाणत्वेन एकत्रिस्वरादिसन्ता गृह्यन्ते । । कान्त आनक पटहो दुन्दुभिश्च । इत्यादि ॥ टान्त कर्पटः सार संग्रह ग्र थ इत्यादि ॥ णान्त गुण.शुम्भेऽप्रधानादौ । इत्यादि ॥ थान्तः निशीथ. अर्धरात्र । शपथः समयः । इत्यादि ॥ पान्त., क्षुपो लता समुदायः । इत्यादि ॥ भान्त. दर्भो बर्हि । इत्यादि ॥ मा न्त गोधूमो नागरङ्ग स्यादित्यादि ॥ यान्त भागधेयो दायादः । राजदेय तु पुल्लिपीवर्चयेत । शुभे तु तथामत्वादेव क्लीवत्वम् । तन्दुलीय शाकविशेष । इत्यादि ॥ रान्त निर्दर कन्दरा, । इत्यादि ॥ मान्त गवाक्ष. । गवाक्षी शुक्लवारुण्यां गवाक्षो जालके कपौ इत्यादि ॥ सन्त. ,माश्चन्द्रमासयो शुसि । अनड्वा. काल, । इत्यादि ॥ न त ग्रावा पाषाणा गिरिश्च । इत्यादि वकारान्त. तर्कु सुभवद्र नपरपा पारमाएद च मन्तु अपराधः इत्यादि; क्तान्त नाम पुलिङ्गम् । पर्यन्तोऽवसानम् । त्विष्यन्त. मरणम् । मत्यन्तस्य बाहुलकत्वान्नपुसकत्वमेव ॥ इमन्मत्ययान्तम् अन्मत्ययान्त च नाम पुलिङ्गम्॥ इमन्, मथिमा । महिमा । द्रढिमा । इत्यादि । नन्तत्वेनैव सिद्धे इमन्ग्रहणम् 'आत्वात्त्वादिः" इति नपुसक बाधनार्थम् । यस्त्वौणादिक स्तस्याश्रयालिङ्गता । भरिमा पृथ्वी, वरिमा तपस्वी । इत्यादि ॥ अल, प्रभव । "प्रभवस्तु पराक्रमे । योच्छेपवर्गः" इत्यादि ॥ तथा यपम द्विवन्त च नाम पुल्लिङ्गम्॥

किः, अथ घृति' घृतुङ् धातुस्तदर्थश्च ॥ श्तिप्, अथ पचति डुपचींष् धातुस्तदर्थश्च ॥ श्तिप् साहचर्यात् ' इकिश्तिपूस्वरूपार्थे " इति विहितस्यैवके ग्रहणम् ॥ तथा नप्रत्ययान्त च नाम पुलिङ्गम् 'स्वप्नः स्वापे मस्तुप्तस्य विज्ञाने दर्शनेऽपि च ' ॥ प्रश्नपृच्छा । नङ् विश्नो गमनम् ॥ तथा घप्रत्ययान्त घञ्प्रत्ययान्त च नाम पुलिङ्गम् घ करः । ' करो वर्षोपले रश्मौ पाणौ प्रत्यायशुण्डयोः ' ॥ परिसरो मृत्यौ देवोपान्तप्रदेशयोः ॥ उरश्छदः कवच । प्रच्छदश्चोत्तरपटः । छदस्य तु नपुंसकता वक्ष्यते । इत्यादि ॥ घमन्तम्, पादः । पादो बुध्नांघ्रि तुर्यांशरश्मिप्रत्यन्तपर्वतादिषु ॥ आप्लावः स्नानम् ॥ भावः । ' भावःसत्तास्वभावाभि प्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ क्रियालीलापदार्थेषु विभूतिबन्धजन्तुषु ' ॥ अनुबन्ध प्रकृत्यादेरनुपयोगी ॥ दामझकाद्धातोर्यः किः प्रत्ययोविहितस्तदन्त नाम पुलिङ्गम् ॥ आदिः प्राथम्यम् । व्याधिः रोगः । उपाधि धर्मचिन्ता । कैतव कुटम्बव्यापृता विशेषणाच । उपधिः कपटम् । उपनिधिः न्यासः प्रतिनिधिः प्रतिनिधि' प्रतिबिम्बम् । सधिः पुमान् सुरङ्गादौ । परिधिः परिवेषः । अवधिस्त्व व धानादो । प्रणिधिः प्रार्थनमवधान चरश्च । समाधिः प्रति समाधान नियमे मौन चित्तकाग्र्ये च । विधिः कालः कल्प। प्रज्ञा विधिवाक्य विधान दैव प्रकारश्च । वालधि' पुच्छम् । शब्दधिः कर्णः । जलधिः समुद्रः । अन्तर्द्धिर्व्यवधा । प्रधेस्तु नेमौ स्त्रीपुंसत्व रोग विशेषे स्त्रीत्वम् इषुधेस्तु स्त्रीपुंसत्व वक्ष्यते । इत्यादि ॥ भावेतः, भावेऽर्थेय. स्त्रो विहितस्तदन्तं नाम पुलिङ्गम् । आशितस्य भवनम् आशितभवो वर्तते, तृप्तिरित्यर्थः ॥ भाव इति किम् । आशितो भवत्यनया आशितभवापश्चपूली । अकर्त्तरि च कः स्यात् । भावे कर्तृवर्जिते च कारके य. कः प्रत्ययस्तदन्त नाम पुलिङ्गम् ॥ आप्लुना प्रुत्था नमाप्लुत्य. विहन्यतेऽनेनास्मिन्वा विघ्न अन्तरायः । इत्यादि । अकर्तरि चेतिकिम् । जानातीति ज्ञा परिषद् ॥

हस्त स्तनौष्ठ नख दन्त कपोल गुल्फ, केशाम्बु गुच्छ दिनसर्तु पतद्ग्रहाणाम् । निर्यासना करस कण्ठ कुठार कोष्ठ, हैमारि वर्ष विष बोल रथाशनीनाम् ॥

हस्तादीनां नाम जलव्यादीना तु सभिदा समभेदानामपि पुलिंगं भवति। हस्त नाम पञ्चशाख'। कर । शय । अय शय्या यामपि यान्तत्वात्पुसि। हस्तस्य तु पुनपुसकत्वम् ॥ स्तननाम, स्तन । पयोधर । कुचः। वक्षोज.। इत्यादि ॥ ओष्ठनाम, ओष्ठः। अधर'। दन्तच्छद. इत्यादि ॥ नखनाम करज.। कररुहः। मदनांकुश'। इत्यादि ॥ नखः पुक्लीव ॥ नखरस्तु त्रिलिंग'॥ दन्तनाम दन्त । दशन'। अय रुद्रेन क्लीबेऽपि निबद्ध' दशनानि च कुन्दकालिका' स्यु इति। तथि त्यम्। द्विज रद' रदन । इत्यादि॥ कपोलनाम, कपोल गण्ड । गल्ल'। इत्यादि ॥ गुल्फनाम, गुल्फ । गुड्ड । भपद । आमपद । खुरकः निस्तोद पादशीर्ष' इत्यादि ॥ हस्ति गुल्फस्तु मौह'। घुटिकघुण्टिघुण्टगुल्फास्तु स्त्री पुसलिंगा वल्य न्ते ॥ केशनाम, केश.। शिरोजः। शिरोरुह चिकुर.। चिहुर'। कच । अय बाहुलकत्वूनणेऽपि पुसि। गुरो पुत्रे तु देहि नामत्वत्सिद्धम्। इभ्यां तु योनिम- त्त्वात्स्त्रीत्वम्। अस । वेल्लिताग्र । इत्यादि॥'वृजिनश्च। यद्गौड । वृजिन क्लम पे क्लीव केशेना कुटिले त्रिपु" कुन्तल'श्च। 'कुन्तला स्युर्जनपदो हलो वालश्च कुन्तलः'। हले बाहुलकात्पुसि। वाल' पुनपुसको वक्ष्यते। तद्विशेषोऽपि केश । कुरल अलक'॥ अन्धु कूपस्तनाम, अन्धुः। कूहि । महि'। इत्यादि। कूपस्तु स्त्रीपुसलिंग'॥ गुच्छनाम, गुच्छ । गुत्स' गुलुञ्छः। स्तवकस्तु पुक्लीव । दिननाम, घस्र सूर्याद्रक' । दग्डयाम । दिनादिवसवासराणां पुनपुसकत्वम्। दिवाह्नोस्तुनपुसकत्वम् ॥ स इति समास- स्याख्या पूर्वाचार्याणाम्। सनाम, बहुव्रीहि । अव्ययीभाव.। द्वन्द्व'। इत्यादि॥ ऋतुनाम, हेमन्त'। वसन्तशिशिरानिदाघा पुनपुसका.। शरत्प्रावृट्वर्षाश्च स्त्री- लिङ्गा । ऋतुस्तु उदन्त त्वात्पुसि। पतद्ग्रह आचेलका धारस्तनाम, प्रतिग्रह'। प्रतिग्राह । इत्यादि। निर्यासनाम, वृक्षादीनारस । गुग्गुल'। श्रीपृष्ट'। श्रीवे ष्ट । सर्जरस । उप । उलूखलनपुसकम् निर्यासस्तुपुनपुसकः। कुम्भकुन्दो त्पले तु बाहुलकान्नपुसके ॥ नाकनाम, स्वर्ग । स्वःअव्ययम्। नाकत्रिदिवौपु नपुसकौ। दिवत्रिविष्टपक्लीबे। द्योदिवौस्त्री ॥ रसा शृङ्गारादयः स्तन्नाम, शृङ्गा

रहास्यकरुण रौद्रवीरभयानक शान्तवीभत्साद्भुता इति । वत्सलस्तुपुत्रादि स्ने-
हात्मारतिभेद एव । शृङ्गार'पुंक्लीयः । गोडस्तुशृङ्गारवीरौ वीभत्सरौद्र हा-
स्यभयानकम् । करुणाचाद्भुत शान्तवात्सल्य च रसादश ' १ इति नण्डनाम,
गलः नाल. ॥ कुठारनाम, परशुः । पर्शुः । स्वधिति । इत्यादि । कुठारःपुंस्त्री॥
कोष्ठनाम, कुशूल. । इत्यादि । हैमनाम, हैमो भेषजभेदः । किराततिक्त किरातः
कमञ्ज' ॥ अरिनाम, द्विषन । प्रत्यर्थी । रिपु इत्यादि ॥ वर्षनाम, वरस । सव-
त्सरः । सवदित्ययमव्ययम पीतिकाथित् । वर्षहायनाब्दास्तुपुंक्लीवाः । शरत्समे-
तुस्त्रीलिङ्गे ॥ विषनाम, गर । वृक्षसुतः । च्वेडः । वत्सनाभ' । इत्यादि ॥
विषकालकूटगरलहालाहलकाकोलाःपुनपुसका. । मधुरस्यबाहुलकात्क्लीवत्वम् ॥
बोलश्चौषध विशेषस्तन्नाम, गन्धरस. । माग्र । इत्यादि ॥ रथनाम पताकी ।
स्यन्दनः । पुनपुसकोऽयमितिगौडशेषः । रथ'पुंस्त्री ॥ अशनिनाम, पविः । इत्या-
दि ॥ अशनि'पुंस्त्री । वज्रकुलिशौपुंक्लीवौ । भिदुरबाहुलकात्क्लीवम् ॥ स्त्रीलिङ्ग
योनिमद्वम्रीसेनावल्लिनडिन्निशाम् ।।वीचितन्द्राऽवटुग्रीवाजिह्वाशस्त्रीदयादिशाम्।।१॥

नामेति स्मर्यते । यो निमदादीना नाम स्त्रीलिङ्ग भवति । पुरुषी । स्त्री ।
रामा । वामा । हस्तिनी । वशा इपी ।अश्वा । मकरी मत्सी । मयुरी । इत्यादि
वम्रीनाम उपदेहिका इत्यादि । सेनानाम । चमू' पृतना । वाहिनी । इत्यादि ।
वल्ली । अजमोदाया तुअस्प बाहुलस्यात् स्त्रीत्वम् ॥ तडिन्नाम । शम्पा ।
चपला चरा । इत्यादि । निशानाम । तुङ्गी । तमी । निट्शब्दोऽप्यस्ति
निशावाची ॥ वीचिनाम । वीचि । उत्कलिका । लहरी । भङ्गि' । इत्यादि ।
तरङ्गोल्लोलकल्लोलानां । पुंस्त्वमुक्तम् ॥तन्द्राशब्देनालस्यनिद्रे गृह्येते ॥ अवटुनाम्
घाटा । कृकाटिका इत्यादि । अवटोस्तु स्त्रीपुंसत्वम् ॥ ग्रीवानाम । ग्रीवा ।
अय तच्छिरायामपि ॥ जिह्वानाम । रसज्ञेत्यादि ॥शस्त्रीनाम। शस्त्री। असिपुत्री ।
इत्यादि ॥ दयानाम । दया । करुणा । इत्यादि । दिग्नाम । आशा । ककुप् ।
इत्यादि ॥

अथ नपुसक लिङ्ग

नलस्तुतत्तसयुक्तररूपान्त नपुसकम् ॥ वेधआदीन् विना सन्त द्विस्वरमकर्तरि ।

नान्त लान्त स्त्वन्न तान्त चान्त सयुश्र येररु यास्तदन्त च नपुसकलिङ्ग स्यात् । नान्तमजिनचर्मेत्यादि ॥ लान्त, चक्रवाल समूह । दल शकलम् । स्तन्तम् । वस्तुतत्त्व पदार्थश्च । मस्तु दधिनिस्यन्दः ॥ तान्त शीतमनुष्णम् अद्भुतमाश्चर्यमित्यादि । चान्त भित्त शकलम्, निमित्त हेतुरित्यादि ॥ चस्य संयुक्तग् पृथगुप चासत्पूर्वेऽसयुक्ता गृह्यन्ते ॥ सयुक्तरान्तम् अग्र पुर, अधिक च गोत्र नाम कुल क्षेत्रच ॥ शुक्र सप्तमो धातुः । इत्यादि ॥ सयुक्तरुशब्दान्तम् श्मश्रु कूर्चम् इत्यादि ॥ सयुक्तयान्त शल्य लक्ष्य वेध्य च । साम्राज्य इव्यमित्यादि वेधस्प्रभृतीन् वर्जयित्वा सकारान्त द्विस्वर च नपुसकम् । इद रक्षः निशाचर ॥ उप प्रभात सन्ध्यायां तु पुंसी ॥ तप कृच्छ्राचरणम् ॥ माघे पुनपुसकम् ॥ रजो रेणु । पुसीति गौड ॥ जोपान्त्योऽप्यम् ॥ यादोजलचर ॥ रोचि शोचिश्च दीप्ती ॥ वेध आदीनिति किम् । वेधा बुधो विष्णुर्विधिश्च ॥ सहा हेमन्त ॥ नभा मेघादि' ॥ ओका आश्रय ॥ ओकस्य तु कान्तत्वात्पुस्त्वम् । पूर्वापि वादो योग' । तेनाम्भः स्रोतो याद इत्यादीना नद्यादिनामत्वेऽपि क्लीवत्वमेव ॥ गुणवृत्तेस्त्वाश्रय लिङ्गता परत्वात् ॥ द्विस्वरमिति अनुवर्तते, अकर्तरि विहितो यो मन्तदन्त नाम नपुसकम् '॥ धाम तेज वर्म्म प्रमाण शरीर च ॥ तर्म यूपाग्रम् । वर्त्म मार्ग. ॥ अकर्त्तरीति किम् ॥ ददातीति दामा ॥ करोतीति कर्मा ॥

साराश–लिंगानुशासन विना शब्दानु शासन का सम्पूर्ण बोध नही हो सक्ता इसलिये लिङ्ग ज्ञानकी अत्यन्त आवश्यक्ता है सो इस कारिका में पुल्लिंग के निम्न प्रकार नियम वतलाये गए हैं जैसाकि–क–ट–ण–थ–प–भ–म–य–र–प–सान्त–स्व त–नाम पुल्लिंग होते हैं

ककारान्त–यान्तःआनकः । पटहोदुन्दुभिश्च ।

टकारान्त–कचापुत्रःसारसग्रहग्रन्थ ।

णान्त -गुणः शब्द है

थान्तः-निशीथ शब्द है जो अर्द्ध रात्रीका वाचक है

पान्तः-क्षुप शब्द है जो लताओं के समुदाय में व्यवहृत होता है

भान्त'-दर्भ शब्द है

मान्तः-गोधूम शब्द है

यान्तः-भागधेया शब्द है

रान्तः-निर्दर.

पान्तः-गवाक्ष.

सान्त.-मास् (माथन्द्रमासयो)

नन्तः-गीवा वकारान्तः तर्कु'-अन्तान्त नाम । पर्यन्तो । इमन्प्रत्ययान्तम् प्रथिमा । अलन्तः प्रभवः । वयन्त । दृति । रितवन्त : पचति । नप्रत्ययान्तः स्वप्न । घप्रत्ययान्त और घञ्प्रत्ययान्त शब्द भी पुल्लिग होते हैं जैसाकि-कर घमन्त पाद भाव । किप्रत्ययान्त आदि व्यादि शब्द हैं भाव में जो " ख " प्रत्यय आता है वह भी पुल्लिंग ही होजाता है जैसे कि आक्षितभवो और भाव कर्तृ को वर्जके जो अकर्तामें क प्रत्यय है वहभी पुल्लिग ही होजाता है यथा विघ्न । शब्द है ॥ फिर हस्त के वाचक शब्द भी पुलिंग होते हैं जैसाकि-पंचशाख-इसीप्रकार स्तना-ओष्ट-करज -दन्त -कपोल -गुल्फ शिरोज गौड -कुतल बाल कुरल -अन्धु गुच्छ घस्र दडयाम हेमन्त गुग्गुल स्वर्ग गल पर्शु रिपु -वत्स इत्यादि यह सर्व शब्द पुलिंग में ग्रहण किये जाते है इसीप्रकार अन्य शब्दों को भी जानना चाहिये ।

योनि और मद्यादि शब्द स्त्रीलिंगीय होते हैं जैसे कि-स्त्री पुरुषी-रामा अम्बा इत्यादि और वस्त्रीनाम चपेटिकादि है चमू वल्ली अजमोदा शम्बा तुगी तमी वी-चिनाम लहरी-घाटा-ग्रीवा-रसज्ञा शास्त्री दया-आशा ककुप इत्यादिशब्द स्त्रीलिंगीय होते हैं और नान्त लान्त-स्नन्त तान्त थान्त-सयुक्त येरु इत्यादि यह शब्द नपुसक लिंगीय होते हैं इनके प्रयोग निम्नलिखितनुसार है जैसेकि अजिन-पक्वाल ।

नियामे। एभ्योऽप्युण् भवति॥ गृहीत्वा रहति त्यजति चन्द्रमिति राहु स्वर्भानु। स्नात्पङ्गमिति स्नायु शरीरबन्ध। स्नायु स्त्री वस्नसा स्मृतेत्यमर॥ कव्यते नेनेति काकुः स्त्रिया विकारो ध्वः शोकभीत्यादि भिर्ध्वने रित्यमरः॥ हलयतेऽनेनेति हालुर्दन्तः॥ सर्वोऽत्रवसति सर्वत्रासौ वसति। अत्रार्थे वासु। वासुश्चासौ देवश्चेति वासुदेवः। तथा च स्मृति। सर्वत्रासौ समस्ते च वासत्यत्रेति वै यतः। ततोसौ वासुदेवेति विद्वद्भि परिगीयते॥ १॥ सर्वत्रासौ वसत्यात्मरूपेण विश्वम्भरत्वादिति वासु॥ वासुर्नारायण पुनर्वसु विश्वरूपाः। १ १ २६। इति त्रिकाण्डशेषे। वसुदेवस्यापत्य मित्य स्मिन्नर्थे ऋष्य न्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च। पा० ४, १-११४ इत्यणि कृते वासुदेव इत्यपि व्युत्पत्त्यन्तरम्॥

दृसनिजानिचारिचाटिभ्यो ञुण्॥ ३॥

दृ विदारणे। षण दाने। जन जनने। चर गतौ। चट भेदने॥ एभ्यो ञुण् स्यात। दीर्यत इति दारु क्लीवे काष्ठम। अर्धर्चादि देवदारु पुंसि। अमु पुरः पश्यसि देवदारुम्। २ ३६ इति रघु। नपुंसके दारु। दारुणी। दारूणि। काष्ठ दार्विन्धन त्वेध इत्यमर॥ सनोति सनुते वा। सानु पर्वतैकदेश। सानु श्रृङ्गेबुधे मार्गे वात्यायां पल्लवे वने। नान्त० १६, इति विश्व। पर्वतैकदेशे स्नु मस्य सानुरस्त्रियामिति क्वचित॥ जायन्ते जनयन्तिवा। जानुर्जङ्घोपरिभाग। क्लीवे जानु। जानुनी। जानूनि। जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रिया मित्यमर। प्रसम्भ्यां जानुनार्ज्ञु। पा० ५, ४, १२६। प्रज्ञु प्रगतजानुक संज्ञु संहतजानुक इत्यमर। ऊर्ध्वाद्विभाषा। पा० ५ ४, १३०। ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्। ञानुबन्धक ग्रहण जान्वित्यत्र जनिवध्योश्च। पा० ७, ३, ३५। इत्यनेन वृद्धिप्रतिषेधो माभूत्॥ चरति चक्षुरादिष्विति चारु शोभनम्॥ चाटु प्रिय वाक्यम्। चाटुर्नारि प्रियोक्ति स्यादीति रत्नमालाकोश। चकर च पटुचाटून्यौ-ड्र योपिद्विटस्य। ११, ३६। इति माघः। माघे नपुंसकमपि दर्शितम्। चाटु चाकृतकसम्भ्रममासां कार्मणत्वमगमन्मणेषु। १०, ३७। चाटु पिचिरेंदं च नुर्ता चाटुरालापे तत्समममित्युत्पालिनीकोश। मृगय्वादित्वात्कुप्रत्यये चटु वित्यपि

दलावस्तुतक्र-मस्तु-शीत भिन्त-निमित्तअग्र गोत्र चेत्र शुक्र श्मश्रु शल्य ,साम्राज्य मभात,धाम,शरीर, इत्यादि यह सर्व शब्द नपुंसकलिंगीय हैं इस मकार लिंगा नुशासन से लिंग बोध करके योग पदका अनुयोग करना चाहिये फिर उणा- दि प्रत्ययों को भी अभिगम करके श्रुत ज्ञान में निष्णातहो उणादि प्रत्यय निम्न मकार से है तथा च पाठः-

कृवापा जिमिस्वादिसा ध्यशूभ्य उण् ॥ १ ॥

डुकृञ् करणे । वागतिगन्धनयो ॥पा पाने (जि अभि भवे (डुमिञ् प्रक्षेपणे । स्वद आस्वादने साध ससिद्धौ अशू व्याप्तौ । एभ्योऽष्टधातुभ्य उ- णप्रत्यय' स्यात् । करोतीति कारुः । मसिद्धोऽसौ क्रियाशब्द शिल्पिन्यपि च वर्त्तते । तथा च धरणिकोश. कारः शिल्पिनि कारके । राघवस्य तत कार्य कारुर्वानरपुङ्गव । सर्ववानरसेनानाबाश्वागमनमादिशत् । ७, २८, । इति भट्टि । क्षिपाद्युद्त कारु स्त्री ॥ वातीति वायुर्वात आतो युक् चिणकृतो पा, ७, ३, ३३ । इति युक् उभयत्र वायो प्रतिषेधो वक्तव्य पा ६, ३, २६, १, । इति देवताद्वन्द्वच । पा ६, ३, २६ इत्यानङ् न भवति ।' वायूग्नी । अग्निवायू ॥ पिवत्यने नीपधमिति पायुर्गुदस्यानम् । गुदत्वपानं पायुर्नेत्यमरः ॥ जयत्यभि- भवति रोगानिति जायुरौषध वैद्योऽपि ॥ मिनोति प्रक्षिपति देह उष्माणमिति मायु पित्तम् । मायु पित्त कफ श्लेष्मेत्यमर । गोपूर्वात् गा वाचं विकृतां मिनोति प्रक्षिपतीति गोमायु शृगाल ॥ स्वद्यत इति स्वादु मिष्टम । त्रिलिंग । शीघ्रद्रव्ये ऽसत्त्वे क्लीवम् । क्लीवे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात् । १, १, १, ६३, । इत्यमरस्त्रिलिं गे । पृथ्वादिभ्य इमनिच् । पा० ५, १, १२२, । स्वादिमा । स्त्रियां ङीप् । स्वाद्वीत्यपि ॥ साध्नोति परकार्यमिति साधु सज्जन । स्त्रियां वोतो गुणवचनात् । पा० ४,१,४४, । इति ङीप् । साध्वी सती पतिव्रता । अम० २ ६, १, ६ । पृथ्वादित्वात्साधिमा ॥ अश्नुत इत्याशु शीघ्र धान्यस्य च नाम । पृथ्वादित्वा दाशिमा धान्यवाचिरेव पुंसि । आशुर्व्रीहि. पाटलः । अम० २,६, १५ ॥ बहुलवचनात् रह त्यागे । ष्णा शौचे । कक लौल्य हल विलेखन । वस

निवासे। एभ्योऽप्युण् भवति॥ गृहीत्वा रहति त्यजति चन्द्रमिति राहु स्वर्भानु। स्नात्यङ्गमिति स्नायु शरीरबन्ध। स्नायु स्त्री वस्नसा स्मृतेत्यमर॥ कथ्यते नेनेति काकुः स्त्रिया विकारो यः शोकभीत्यादि भिर्ध्वनेरित्यमरः॥ ह्लयतेऽनेनेति ह्लादुर्दन्तः॥ सर्वोऽत्रवसति सर्वात्रासौ वसति। अत्रार्थे वासु। वासुश्चासौ देवश्चेति वासुदेव। तथा च स्मृति। सर्वत्रासौ समस्ते च वासत्वेनेति वै यतः। ततोसौ वासुदेवेति विद्वद्भिः परिगीयते॥ १॥ सर्वत्रासौ वसत्यात्मरूपेण विश्वम्भरत्वादिति वासुः॥ वासुर्नारायणे पुनर्वसु विश्वरूपाः। १ १ २६। इति त्रिकाण्डशेष। वसुदेवस्यापत्य मित्य स्मिन्नर्थे ऋष्य न्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च। पा० ४, १-११४ इत्यणि कृते वासुदेव इत्यपि व्युत्पत्त्यन्तरम्॥

दृसनिजानिचारिचाटिभ्यो ञुण्॥ ३॥

दृ विदारणे। षण दाने। जन जनने। चर गतौ। चट भेदने॥ एभ्यो ञुण् स्यात। दीर्यत इति दारु क्लीबे काष्ठम। अर्धर्चादिः देवदारु पुंसि। अमु पुरः पश्यसि देवदारुम्। २ ३६ इति रघु। नपुंसके दारु। दारुणी। दारूणि। काष्ठे दार्विन्धन त्वेध इत्यमर॥ सनोति सुनुते वा। सानु पर्वतैकदेश। सानु शृङ्गेबुधे मार्गे वात्याया पल्लवे वने। नान्त० १६,। इति विश्व। पर्वतैकदेशे स्नु मस्य सानुरस्त्रियामिति क्वचित॥ जायन्ते जनयन्तिवा। जानुर्जङ्घोपरिभाग। क्लीबे जानु। जानुनी। जानूनि। जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियामित्यमर। प्रसंभ्यां जानुनार्ज्ञुः। पा० ५, ४, १२९। प्रज्ञु प्रगतजानुक सज्ञु संहतजानुक इत्यमर। ऊर्ध्वाद्विभाषा। पा० ५ ४, १३०। ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानु स्यात्। द्वानुबन्धक ग्रहण जान्वित्यत्र जनिवध्योश्च। पा० ७, ३, ३५। इत्यनेन वृद्धिप्रतिषेधो माभूत्॥ चरति चक्षुरादीन्द्रियतिचारु शोभनम्॥ चाटु प्रियवाक्यम्। चाटूनेरि प्रियोक्ति स्यादीति रत्नमालाकोश। चकार च बहुचाटून्यौ-ढ्र योषिद्वटस्य। ११, २६। इति माघ। माघे नपुंसकमपि दर्शितम्। चाटु चाकृतकसम्भ्रममासां कार्मणत्वमगमन्रमणेषु। १०, ३७। चाटु पिचिण्डे च नु तो चाटुरालापे तत्समम्इत्युत्पलिनीकोश। मृगय्वादिरत्कुमत्यये चद् विन्यपि

भवति । चट्ट चाटु प्रियं वाक्यमिति हट्टचन्द्रः । वत्सेनोदस्य मानोरचितचटुशते मोचित स्वर्गिनर्गेरिति बालरामायणञ्च् ॥

इण्पिञ्जिदोङ, ष्यविभ्यो नक्

इण् गतौ । पिञ् बन्धने । जि जिये । दीङ् क्षये । उप दाहे । अव रक्षणे । एभ्यो नक् स्यात् । इनो राज्ञि प्रभौ सूर्ये । नृपे पत्यौ । नान्ते १, । इति विश्व सह इनेन वर्तत इति सेना । सेनयाभियात्य भिषेणयति ॥ सिन काण ॥ जिनो बुद्ध । जिन स्यादतिवृद्धेऽपि बुद्धे चार्हति जित्वरे । विश्वे नान्त० १, ॥ दीनो दुर्गत ॥ उष्णभीपतत्तम् । ज्वरत्वरैत्यूह । जनमसम्पूर्णम् । सर्वस्वे तु ऊनयतेरूनमिति साधितम् ॥

सारांश—कृ-वा पा जि मि-स्वदि साध इन धातुओं को उण्प्रत्यय होजाता हैं तब इनके प्रयोग निम्नलिखितानुसार बनजाते हैं जैसेकि करोतीतिकारु । वातीतिवायुर्वात ॥ पिबत्यनेन नीपथमिति पायुर्गुदस्थानम् । जयत्यभि भवति रोगानितिजायुरौषध वैद्योपि । मिनोति प्रक्षिपति देह उष्माणमिति मायु पित्तम् । स्वद्यत इति स्वादुमिष्टम् । साध्नोति परकार्यमिति वा स्वकार्यमिति साधु सज्जन । इस प्रकार उण प्रत्ययान्त प्रयोग बनते है तथा सूत्र में बहुवचन होने से-रह त्यागे । ष्णशौचे । ककलौल्ये । हल विलेखने । वसनिवासे । इन धातुओं को भी उण् प्रत्ययान्त करने से इस प्रकार प्रयोग बनते हैं जैसाकि गृहीत्वा रहति त्यजति च द्रमिति राहु स्वर्भानु । स्नात्यङ्ग मिति स्नायु शरीरबन्ध । कक्यतेऽनेनेति काकु । हल्यतेऽनेनेति हालुर्दन्त । सर्वोऽत्रवसति सर्वत्रासौ वसति अत्रार्थेवासु ॥ १ ॥

द्र—पणु जन चर चट इनधातुओं को ञुण् प्रत्यय होजाता है तब इनके प्रयोग इस प्रकार से बनते हैं जैसाकि दीर्य्यत इति दारु । सनोति सनुत वा सानु पर्वतैकदेशः । जायन्ते जनयन्ति वा । जानु जङ्घो परिभाग । चरति चक्षुरादिष्विति चारुशोभनम् । चाटु प्रियवाक्यम् । २ और इक्गतौ पिञ् बधने

जिजये दीङ् क्षये उपदाहे-अवरक्षणे इन धातुओं को नक् प्रत्यय होजाता है तब इनके प्रयोग इस प्रकारसे बनते हैं जैसाकि इन तथा सह इनेन वर्तत इति सेना सिन काण । जिनो जिनेन्द्रदेव बुद्धो वा । जिन अतिवृद्धेऽपि वृद्धे अर्हतिच । दीनो दुर्गत । उष्ण भीपचक्षम् । इत्यादि अनेक प्रकार से उणादि प्रत्ययों का उणादि वृत्तिमें विवर्ण किया गया है सो जो शब्द उणादि प्रत्ययान्त हो उन्हें उणादि प्रत्ययान्त कहते हैं तथा जिस शब्द की व्युत्पत्ति किसी प्रकार से भी सिद्ध न होती हो वह उणादि प्रत्ययों से सिद्ध की जाती है इसलिये उणादि प्रत्ययों का अवश्य ही बोध होना चाहिये फिर क्रियापद जैसे कि करोति, पचति, इत्यादि हैं धातु भ्वादि हैं स्वर अकारादि हैं तथा स्वरपड्जादि इनका वेत्ता होकर फिर विभक्ति प्रकरण को भी जानना चाहिये तथा कारक विधि को ठीक २ जानकर फिर उसके अनुसार वचनानुयोग करना चाहिये जैसे कि ।

तत्र पञ्चविध कर्ता, कर्म सप्तविध भवेत् ।
करण द्विविध चैव समदान त्रिधा मतम् ॥ १ ॥
अपादान द्विधा चैव तथा धारश्चतुर्विध ।

तत्रेति ॥ तत्र तस्मिन् त्रयोविंशतिधेति दर्शिते कारक चक्रे पञ्चविध कर्ता, सप्तविध कर्म, द्विविध करणम्, त्रिविध समदानम्, द्विविधमपादानम्, चतुर्विधमधिकरण चेति ।

तत्र पञ्चविध कर्ता यथा—स्वतन्त्रकर्ता, हेतुकर्ता, कर्मकर्ता, अभिहितकर्ता, अनभिहितकर्ता चेति । तत्राद्योयथा पुण्य करोति श्राद्ध , मैत्रीं भजन्ते सन्त । हेतुकर्ता यथा—हित लभयन्ति विनीता धीरा । क्लेशादेव लोक नियमयन्ति । ' तत्प्रयोजको हेतुश्च ' इति हेतुसञ्ज्ञा ॥ कर्मकर्ता यथा—स्वयमेव मुच्यन्ते कुशलबुद्धय । स्वयमेव हरयन्ते दुष्टजनदोषा । स्वयमेव छिद्यन्ते प्राकृतजनस्नेहा । कर्मवत्कर्मण तुल्यक्रिय ' इति हि कर्मवद्भाव ॥ अभिहितकर्ता यथा—साधव परार्थमापादयन्ति 'अभिहिते प्रथमा' इति प्रथमा ॥ अनभिहितकर्ता यथा—साधुभिरापाद्यन्ते परार्था । ' अनभिहित कर्तरि ' इति तृतीया ॥

कर्म सप्तविध कथम् । इप्सित कर्म, अनीप्सित कर्म, ईप्सितानीप्सित कर्म, अकथित कर्म, कर्तृकर्म, अभिहित कर्म, अनभिहित कर्म चेति ॥ तत्रेप्सित कर्म यथा-दुर्विज्ञानमपि धर्मं निशातु श्रद्धयात्युदारधी । कर्तुरीप्सिततमं कर्म इति कर्म संज्ञा ॥ (अनभिहिते कर्मणि द्वितीया अनीप्सित यथा-कल्याणमपि धर्मं माक्षिपन्ति पापबुद्धय विषं भक्षयन्ति क्षुद्रा । तथायुक्तं चानीप्सितम् इति कर्मसंज्ञा ॥ ईप्सितानीप्सित यथा-पायसं भक्षयस्तां पतितं रजोऽपि भक्षयति बालक ॥ अकथित यथा-गां दोग्धि पयो गोपालक । यज्ञदत्त याचते कम्बलं ब्राह्मण । ईशितारं भिक्षते सुवर्णमाकिञ्चन । अजमवरुणद्धि गां गोपाल । उपाध्याय पृच्छति शास्त्रं शिष्य । वृक्षमवचिनोति फलानि दारक । शिष्यं ब्रवीति धर्मं गुरु । 'गतिबुद्धि' इत्यादिना कर्मसंज्ञा ॥ अभिहित कर्म यथा कटः क्रियते देवदत्तेन ॥ अनभिहित कर्म यथा-कटं करोति देवदत्त ॥

कतमद्द्विविध करणम् । बाह्यमाभ्यन्तरं चेति ॥ शरीरावयवादन्यत्र तद्बाह्यं यत्तदाभ्यन्तरम् । यथा मनसा पाटलिपुत्रं गच्छति देवदत्त । चक्षुषा रूपं गृह्णाति नर । साधकतमं करणम् इत्यनेन करणसंज्ञायां कर्तृकरणयोस्तृतीया इति तृतीया ॥

कतमत्त्रिविध सम्प्रदानम् । प्रेरकमनुमन्तृकमनिराकर्तृकं चेति ॥ तत्र प्रेरकं यथा ब्राह्मणाय गां ददाति धार्मिकः । स हि ब्राह्मणो मनसाद्य गां मह्यं देहि इति प्रेरयति तस्मात्प्रेरक मित्युच्यते ॥ अनुमन्तृक यथा सूर्यायार्घ्यं ददाति पुरुष । स सूर्यो न प्रेरयति न निराकरोति तस्मादनुमन्तृक ॥ अनिराकर्तृक यथा पुरुषोत्तमाय पुष्पं ददाति पुरुष स पुरुषोत्तमो मह्यं पुष्पं न ददातीति न प्रार्थयते नानुमन्यते न निराकरोति तस्मादनिराकर्तृकमित्युच्यते । कर्मणायमभिप्रैति इ। सम्प्रदानसंज्ञायाम् चतुर्थी सम्प्रदाने इति चतुर्थी ॥

कतमद्द्विविधमपादानम् । चलमचलं चेति ॥ तत्र चलं यथा धावतो रथात्पतति सारथि । परिधावतो हस्तिनोऽङ्कुशं धारयन्पतत्यां धारण ॥

अचल यथा गामा दागच्छति देवदत ।। पर्वतादवतरान्ति महर्षय । ध्रुवमपाये ऽपादानम् इत्यपादानसज्ञायाम् अपादाने पञ्चमी' इति पञ्चमी ॥

कतमचतुर्विधमधिकरणम् । व्यापकमौपश्लेषिक वैषयिक सामीपिक चेति ॥ तत्र व्यापक यथा–तिलेषु तैल व्याप्तम् । औपश्लेषिक यथा–कट आस्ते पुरुष । शकट आस्ते ब्राह्मण. । वैषयिक यथा–वनेषु शार्दूला वसन्ति ॥ सामीपिक यथा नद्यां वसति घोष । आधारो धिकरण " इत्यधिकरण सज्ञाया " सप्तम्यधिकरणे च इति सप्तमी ॥

करोति कारक सर्वं तत्स्वातन्त्र्य विवक्षया ॥ ३ ॥

करोतीति कारकमित्यन्वर्थसज्ञा तर्हि कर्तैव कारकसज्ञो भवति नतरे । अत्रोच्यते । तान्यपि कारकाण्येव,कुत , तद्व्यापारेपि स्वातन्त्र्यविवक्षाया प्रतिकारक स्वातन्त्र्य विवक्ष्यते । अत कर्मकरणसम्प्रदानापादाना धिकरणानामपि कारकत्व सिद्धम् ॥ ३ ॥

तत्र कर्त्तर्यभिहित प्रथमैव विधीयते ।

तृतीया वाऽथ वा षष्ठी स्मृताऽनाभिहिते द्विधा ॥ ४ ॥ तत्रेति ॥ तत्र कर्तृकर्मकरणसम्प्रदानापादानाधिकरणेषु मध्ये अभिहिते कर्तरि प्रथमैव भवति । यथा । पचत्यो दन देवदत्त ॥ अनभिहिते कर्तरि द्वे विभक्ती भवत । तृतीया वा अथवा षष्ठीति । तत्र तृतीया यथा । ओदन पच्यते देवदत्तेन । ' कर्तृकरणयोस्तृतीया " इति तृतीया " । षष्ठी यथा परलोकहितस्य सेवितव्यो धर्म । परलोकहितेन वा सेवितव्यो धर्म । ' कृत्यानां कर्तरि वा इति षष्ठी ॥

तथा कर्मण्यभिहिते, विभक्तिं विद्धि पूर्विकाम्
अनुक्ते प्रथमा हित्वा पचमीं सप्तमीं तथा ॥ ५ ॥

तथेति ॥ यथाभिहिते कर्तरि प्रथमा तथा कर्मण्यभिहिते प्रथमैव भवति । यथा ओदनः पच्यते देवदत्तेन । आहारो दीयते देवदत्तेन ॥ अनुक्त इति ॥ अनुक्ते कर्मणि प्रथमा पचमीं सप्तमीं वर्जयित्वा शेषाश्चतस्रो विभक्तयो भवन्ति । काः

शेषा । द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, षष्ठी चेति ॥ तत्र द्वितीया यथा-ग्राममगच्छति पुरुष' कर्मणि द्वितीया ' तृतीया यथा-पुत्रेण सञ्जानीते पिता । पुत्रसञ्जानीत इत्यर्थ. । सज्ञोन्यतरस्या कर्मणि " इति तृतीया ॥ चतुर्थी यथा-ग्रामाय व्रजति पुरुष । ' गत्यर्थ कर्मणि इति चतुर्थी षष्ठी यथा-कटस्यकारको-.

देवदत्त । कर्तृकर्मणो कृति ' इति षष्ठी ॥ ५ ॥

तृतीया पञ्चमी चैव षष्ठी च करणे त्रिधा ।

तृतीयेति ॥ तृतीया यथा-परशुना वृक्ष छिनत्ति देवदत्त ' कर्तृकरणयो स्तृतीया ॥ पञ्चमी यथा-स्तोकान्मुक्त स्तोकेन मुक्त । इति तृतीया । ' करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य इति पञ्चमी ॥ षष्ठी यथा-घृतस्य सजानीते मित्र घृतेन मित्र मेक्षत इत्यर्थः ' ज्ञाविदर्थस्य करणे ' इति षष्ठी ॥५॥

षष्ठी चतुर्थी तृतीया सम्प्रदाने तथा त्रिधा ॥ ६ ॥

षष्ठीति । षष्ठी यथा-पुनपशु मृगश्चन्द्रमसो दातव्य' । चद्रमसे दातव्य इत्यर्थ । चतुर्थ्यर्थे बहुल छन्दसि ' इति सम्प्रदाने षष्ठी ॥ चतुर्थी यथा-क्षुधिता यौदन ददाति देवदत्त । चतुर्थी सम्प्रदाने इति चतुर्थी ॥ तृतीया यथा दास्या माला सम्प्रयच्छते । युवा दास्यै माला ददातीत्यर्थ । समस्तृतीया इति सूत्रे दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे इति तृतीया उभयमनेसभाव्यते । तृतीयाविभक्ति रात्मनेपदविधान च यदप्रयोगस्तृतीयायुक्तादाण । दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे इत्यात्मनेपद मनुशास्ति अशिष्टव्यवहार तृतीया चतुर्थ्यर्थे भवतीति वक्तव्यम् । अशिष्ट व्यवहारो धूर्तव्यवहार ॥ ६ ॥

पञ्चमी खल्वपादाने वर्तते न ततोऽन्यथा

सप्तम्येवाधिकरणे कारकस्यैव सग्रह ॥ ७ ॥

पञ्चमी इति ॥ पञ्चमी यथा-पर्वतादवतरन्ति महर्षय । अपादाने पञ्चमी ॥ सप्तम्येवेति । सप्तमी यथा-ग्रामे वसति । सप्तम्यधिकरणे च ' इति सप्तमी ॥

कारकस्येति । दिङ्मात्र प्रदर्शितम ॥ कारक सग्रहो विस्तरेण द्दत्त्यादिषु द्रष्टव्य इति ॥

सारांश-पांच प्रकार का कर्ता, और सात प्रकार से कर्म, दो प्रकार से करण और तीन प्रकार से सम्प्रदान होता है दो प्रकार से अपादान और चार प्रकार से आधार होता है पष्ठी को कारक सज्ञा नहीं है क्योंकि-पष्ठी के केवल सम्बन्ध में ही होती है इसलिये कारक छै ही हैं क्योंकि कारण उसे कहते हैं जिसको क्रिया स्पर्श मानहो इनका पूर्ण विवर्ण ऊपर सस्कृत में किया जा चुका है हिंदी में इसलिये विस्तार नहीं किया है इसका सस्कृत बहुत ही सुगम है सो इसी का नाम विभक्ति प्रकरण है ॥

फिर अकारादि वर्ण त्रिकाल (भूत भविष्यत वर्तमान) दश प्रकार का सत्यवचन सस्कृत १ प्राकृत २ मागधी ३ पेशाची ४ शौरसेनी ५ अपभ्रंश ६गद्य और पद्य के करने से द्वादश प्र ार की भाषायें और षोडश प्रकार प्रत्यक्षादिवचन इनके सीखने की भगवान की आज्ञा है क्योंकि सत्यवचनानुयोग के लिये ही शब्द नय का उक्त कथन है इसलिये ही श्री स्थानाङ्ग सूत्र के दशवें स्थान में दश प्रकार से शुद्धवचनानुयोग कथन किया गया है जैसे कि- ।

दसविह सुद्धावायाणु जोगे पणत्ते तजहा चकारे मकारे पिंकारे सेयकारे सायकारे एगत्ते पुडत्ते सजूहे सकामिए भिन्ने ॥ दसेत्यादि ॥ शुद्धा अनपेक्षित वाक्यार्था यावाक् वचन सूत्र मित्यर्थ स्तस्या अनुयोगो विचारः शुद्धवागनुयोगः सूत्रेचाऽऽनुवद्भावः प्राकृतत्वा त्त्र चकारा दिकायाः शुद्धवाचो यो नुयोगः स चकारा दिरेव व्यपदेश्य स्तत्र ॥ चकारेत्ति ॥ अत्रा नुस्वारो लाक्षीण को यथा ॥ सुकेसाणिचरे इत्यादौ ॥ ततश्चकार इत्यर्थ स्तस्यचानुयोगो यथा च शब्द' समाहारेत रेत रयोगसमुच्चयान्वा चया वधारण पाद पूरणाधिक वचनादिष्वत्रि तत्र ॥ इत्थो औस यणाणियात्ते ॥ इह सूत्रे चकारः समुच्चयार्थः स्त्रीणा शय नाना चापरि भोग्यता तुल्य त्व प्रतिपादनार्थः ॥ मकारेत्ति ॥ मकारानुयोगो यथा ॥ स-

मणवामाहणवाचि॥ सूत्रे मा शब्दो निषेध अथवा॥ जेणमेव समणे भगव महावीरे तेणामेवेति॥ अत्र सूत्रे आगमिक एव येनैने त्यनेनैव विवक्षित मतातेरिति २॥ पिकारोत्ति॥ अकार लोप दर्शनेना नुस्वाराग मेनचा पि शब्द उक्त स्तुदनुयोगो यथा अपि सम्भावनानिवृत्य पेक्षा समुचय गर्हाशिक्षाम र्पणभूषण मक्षाश्चिति तत्र॥ एव पिएगेआसासे॥ इत्यत्र सूत्रे एवमपि अन्यथा योति मकारान्तर समुचयार्थोऽपि शब्द इति ३॥ सेयकारोत्ति॥ इहा य्याकारोऽलाक्षणिकस्तेन सेकार इति तदनुयोगो यथा॥ सेभिक्खेवे॥ त्यत्र से शब्दोऽथार्थोऽथ शब्दश्च मक्रिया मश्नानन्तय मगलोप न्यास मतिवचन समुचयेष्ठि त्यान तर्यार्थं से शब्द इति क्वचित् तस्येत्यर्थो॥ ऽथवा सेयकार इति॥ श्रेय इत्येतस्य करण श्रेयस्कार, श्रेयस उच्चारण मित्यर्थ स्तदनुयागो यथा॥ सेयमे अहिज्जिओ अज्झयण॥ मित्यत्र सूत्रे श्रेयोऽतिशयन मशस्य कल्याण मित्यर्थोऽथवा॥ सेयकाले अकम्मवा विभघइ॥ इत्यत्र सेय शब्दो भविष्यदर्थः ४॥ सायकारोत्ति सायमिति निपातः स त्यार्थ स्तस्मा दूर्णाकिार इत्यनेन छान्दसत्वा दकार मत्ययः करण वा कार स्तत सायकार इति तदनुयोगो यथा सत्य तथा वचन सद्भाव मश्नश्विवीत एतेच चकारादयो निपाता स्तेषा मनुयोगमभणन शेषनि पातादिशब्दानुयोगो पलक्षणार्थ मिति॥ एगत्तेत्ति॥ एकत्व मेकवचन तदनुयोगा यथा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग इत्यत्रैकवचन सम्यग्दर्शनादीनां, समुदितानामेवै क मोक्षमार्ग त्वख्यापनार्थ मसमुदितत्वेत्व मोक्षमार्गतति मतिपादनार्थ मिति ६॥ पुहचति॥ पृथक्त भेदा द्विवचन बहुवचने इत्यर्थ स्तदनुयोगो, यथा॥ धम्मत्थिकाए धम्मत्थि कायदे से धम्मत्थिकायप्पदेसा॥ इह सूत्रे, धर्मास्तिकाय मदेशा इत्येव द्वहुवचन तेषा मसख्या तत्वख्यापनार्थ मिति ७॥ सजूहेत्ति॥ सगत युक्तार्थ युथ पदानां पदगो वी समूह' सयूथ समास इत्यर्थ स्तदनुयोगो यथा सम्यग्दर्शन शुद्ध सम्यग्दर्शनेन सम्यग्दर्शनाय सम्यग्दर्शनाद्वा शुद्धंसम्यग्दर्शन शुद्ध मित्यादि रनेकधेति ८॥ सकामियत्ति॥ सकामित विभाक्ति वचनाद्य तर तथा परिणामिन तदनुयोगो यथा माहूणनन्दणेण, नासइपाव अस न्नियाभावा॥ इह साधूना मित्ये

तस्याः पष्टया, साधुभ्यः सकाशादित्येत्र लक्षण पञ्चमीत्वन विपरिणाम कृत्वा अशंकिताभावा भवतीत्ये तत्पद सम्बन्धनीय तथा अच्छदाजेन भुजति न से चाइत्ति वुचइ ॥

इत्यत्र सूत्रेन सत्यागी त्युच्यत इत्येक वचनस्य बहुवचनतया परिणाम कृत्वा नते त्यागिन उच्यते इत्यथ पद घटना कार्येति ॥ ६ ॥ भिन्न मिति क्रमकाल भेदादिभिभिन्न विसदृश तदनुयोगो यथा तिविहति विहेण मिति ॥ सग्रह सुक्का पुंन मंणेण मित्यादिना तिविहेणति विहत मिति क्रम भिन्न क्रमेणहि तिविहं मित्ये तत्र करोमी त्यादिना विवृत्य तत स्त्रिविधेनेति विवरणीय भवतीति अस्यच क्रम भिन्नरथा नुयोगोय यथा क्रम विवरेणहि यथा सख्यदोषः स्यादिति तत्परिहारार्थ क्रमो भेद स्तथाहि नकरोमि मनसा नकारयामि वाचा कुर्व्वंत नानुजानामि कायेनेति प्रसज्येत अनिष्टश्चै तत्प्रत्येक पक्षस्यै वेष्टत्वा त्तथाहि मन प्रभृतिभिर्न करोमि तैरेव न तुजानामीति तथा कालतो भेदो तीतादिनिर्देशे प्राप्ते वर्त्तमाना दिनिर्देशो यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्यादिषु ऋषभ स्वामिन माश्रित्य ॥ सक्केद विदेदेवराया वदइ नमसइत्ति ॥ सूत्रे तदनुयोगश्चाय वर्त्तमान निर्देश स्त्रिका लभाविष्वपि तीर्थ करेष्वे तन्न्याय प्रदर्शनार्थ इति इदच दोषादि सू वत्रय मन्य यापि विमर्ष नीय गभीरत्वा दस्येति नाग नुयोगत स्त्वर्थानुयोग प्रवर्त्तत इति ।

भावार्थ-दश प्रकार शुद्ध वचनानुयोग प्रतिपादन किया गया है जैसे कि चकारानुयोग १ चाव्य यकिनन २ अर्थो में व्यवहृत होता है इस प्रकार बोध होने पर फिर यथा स्थान च अव्यय का अनुयोग करना चाहिये, अनुस्वार केवल प्राकृत के लाक्षणिक के लिये ही है मकारे २ मा शब्द किन २ अर्थो में सघटित है जैसेकि " समणवा माहणवा " इस सूत्र में " मा " शब्द निषेध के लिये विद्यमान है तथा " जेणा मेव समणे भगव महावीरे तेणा मेव " इस सूत्र में मकार वप्मिा अर्थ में व्यवहृत है इसलिये मकार के अर्थो को ज्ञाता होकर फिर मकारानुयोग करना चाहिये पिंकारे ३ अपिशब्द किन २ अर्थो में प्रयुक्त किया जाता है, जैसेकि—अपिसभावनायाम् समुच्चय गर्हा शिष्या

मर्पण भूषण मश्नादि में अपिशब्द आता है इसलिये इस का ठीक २ बोध होने पर फिर इसका अनुयोग करना चाहिये ।

सेयकारे ४ से शब्द मागधी भाषा में अथ शब्द का वाची है जैसेकि "सेंकित" अथ कितत् तथा अन्य अर्थों में भी व्यवहृत हो जाता है इस लिये से शब्द के अर्थों को जान कर फिर इसका मयोग करना चाहिये ।

सायकारे ५ सात् निपात का मयोग भी यथा स्थान करना चाहिये क्यों कि यह निपात बहुत से अर्थों व्यवहृत होता है।

एगत्ते ६ एकवचन का अनुयोग करना चाहिये जैसेकि सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्ग' इस सूत्र में एकवचन का अनुयोग किया गया है इस लिये यथा स्थान एक वचन का जो अनुयोग किया जाता है उसे एक वचनानुयोग कहते हैं पुहुत्ते ७। पृथक् २ वचनों का अनुयोग करना जैसे कि धम्मत्थिकाय धम्मत्थि कायदेसे धम्मत्थि प्पएसा" जहाँ पर प्रदेश शब्द को बहुवचन इस लिये दिया गया है कि–प्रदेश असंख्ये हैं इसलिये यथा स्थान पुहुत्त शब्द के अर्थों को जानकर इसका मयोग करना चाहिये।

सजूहे ८–जो पद विग्रह किया जाता है उसे सयूप पद कहते हैं अर्थात् समासान्त जो पद है उनको समासान्त करके दिखलाना उसे ही सयूथ पद कहते हैं ॥

सकामिए ९–विभाक्तियों का जो संक्रमण किया जाता है उसे संक्रमण कहते हैं इस लिये संक्रमण के साथ जो पद बनते हैं उन्हे संक्रमनानुयोग कहते हैं ।

भिन्ने १०–काल भिन्नानुयोग जैसे कि–भूत भविष्यत वर्तमान काल के वचनों को यथा योग्य परिवर्तन करना उसे भिन्नानुयोग कहते हैं

इन दश सूत्रों का विस्तार पूर्वक विवर्ण वृति में लिखा जा चुका है

इसलिये इनका सत्य से विवर्ण किया है अतएव दश सूत्रों के जब पूर्ण अर्थों को जाना जाए फिर उन्हीं के अनुसार भाषण किया जाय तब शुद्ध वचना नुयोग होता है इस लिये सदैवकाल इनका अभ्यास करके वचन शुद्धि करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है शेष व्याकरण के प्रकरणों का आगे विवर्ण किया जायगा। अब पांच नाम के पश्चात् षट् नाम का विवर्ण किया जाता है किन्तु छ नाम में षट भावों का अधिकार है इसलिये भावों का विवचन करते हैं।

अथ षट् भाव विषय ।

सेकिंत छनामे २ छव्विहे पं० तं० उदइए १ उवसमिए २ खइए ३ खउवसमिए ४ पारिणामिए ५ सन्निवाइए ६ सेकिंत उदइए २ दुविहे पं० तं० उदइएय उदय निप्फन्नेय सेकिंत उदय २ अट्ठएहं कम्म पगडीणं उदयएणं सेत्तं उदय। सेकिंत उदय निप्फन्ने २ दुविहे पं० तं० जीवोदय निप्फन्नेय अजीवोदय निप्फन्नेय सेकिंत जीवोदय निप्फन्ने २ अणेग विहे प० त० (नेरइए) १ तिरिक्खजोणिए २ मणुस्से ३ देवे ४ पुढविकाइए ५ आऊकाइए ६ तेऊकाइए ७ वाऊकाइए ८ वणस्सइकाइए ९ तस्सकाइए १० कोहकसाय ११ माणकसाए १२ मायाकसाए १३ लोभकसाए १४ कण्हलेसा १५ नीललेसा १६ काउलेसे १७ तेऊलेसे १८ पम्हलेसे १९ सुक्कलेसे २० इत्थिवेदए २१ पुरिसवेदए २२ नपुसकवेदए २३ मिच्छदिट्ठी २४ असन्नी २५ अन्नाणी २६ आहारए २७ अवि-

१ नेरइया। मा० स्था० अ० ८ पा० १ सूत्र ७१ ॥
प्राप्त है मात्मा नारकी कपमेरइयो नारइया ॥

रए २८ सजोगी २९ समारत्थे ३० छउमत्थे ३१ असिद्धे ३२ अकेवली ३३ सेत्तं जीवोदय निप्फन्ने सेकिंत अजीवोदय निप्फन्ने २ अणेग विहे प० तं० उरालिय वासरीर १ उरालिय सरीरप्पउगपरिणामियादव्व वेउव्विय वासरीर २ वेउव्विय-सरीरप्पउगपरिणामियादव्व ४ आहारगवासरीर ५ आहारग सरीरप्पउगपरिणामिय वादव्व ६ तेयगवासरीर ७ तेयगस रीरपओगपरिणामिआ वादव्व ८ आहारगसरीर ९ आहा-रगसरीरप्पउगपरिणामियवादव्व पओगपरिणामिए वण्णे गंधे १२ रसे १३ फासे १४ सेत्त अजीवोदय निप्फन्ने सेत्त उदय-निप्फन्ने सेत्त उदइए नाम ॥

पदार्थः-(सेकिंत छनामे २ छव्विहे प त) वह षट् नाम कौनसे हैं (उत्तर) षट् नाम छै प्रकार से प्रतिपादन किये गये है जैसेकि (उदइए १ उवसमिए २ खइए ३ खउवसमिए ४ पारिणामिए ५ सन्निवाइये ६) उदय शब्द से ठण प्रत्यय करने से औदयिक भाव होजाता है क्योंकि उदये भव औदयिक। अर्थात् जो उदय करके भोगा जाय उसे औदयिक कहते हैं अत नाम में जो भाव शब्द ग्रहण किया गया है वह केवल नाम और भाव अभेदो पचार के ही मत से है क्योंकि नाम और भाव मे परस्पर अभेद भी होता है इसी लिये औदयिक भाव शब्द ग्रहण किया गया है अथवा यथार्थ उदय करके जो भाव उत्पन्न होता है उसे औदयिक भाव कहते है १ द्वितीय औपशमिक भाव है वह भी ठण् प्रत्ययान्त है क्योंकि औपशमिक भाव उसे कहते हैं जो प्रकृतियों न तो क्षय हुई है और नहीं औदयिक भाव में है उन्हें औपशमिक भाव कहते हैं भस्माच्छादित अग्निराशिवत् २ क्षायिक भाव भी ठण् प्रत्यया न्त है जो कर्मोंकी सर्व प्रकृतियें क्षय होगई हो उसे क्षायिक भाव कहते है ३

यदि कुछ प्रकृतियें क्षय होगई हों और कुछ उपशम हुई हों तो उसे क्षयोपशम भाव कहते हैं ४ जो परिवर्त्तन शील हो उस परिणामिक भाव कहते हैं ५ जो औदयिकादि भावों से मिलकर भंग बनाए जाते हैं उसे सन्निपात भाव कहते हैं। अथ उदय भावका सविस्तर स्वरूप लिखा जाता है (सेकिंत उदइय २ दुविहे प० तं० उदयए उदयनिप्फन्नेय) (प्रश्न) अब वह औदयिक भाव कौनसा है (उत्तर) औदयिक भाव द्विप्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसेकि-एकतो औदयिक भाव द्वितीय औदयिक निष्पन्न भाव अर्थात् एकता उदय में रहने वाली प्रकृतियें द्वितीय उनके जो फल भोगने में आते हैं उन्हें औदयिक निष्फन्नभाव कहते हैं इस प्रकार से गुरुके कहने पर शिष्यने फिर प्रश्न किया कि-(सेकिंत उदइय २ अट्ठण्हं कम्मपगडीणं उदयणं सेत्त उदइय) हे भगवन्! औदयिक भाव किसे कहते हैं गुरुने उत्तर दिया कि हे शिष्य! जो आठ कर्मों की प्रकृतियें हैं वह औदयिक भाव में है और उन्हें ही औदयिक भाव कहते है (सेकित उदइय निप्फन्ने २ दुविहे प० तं०) (प्रश्न) औदयिक निष्पन्न भाव किस प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) औदयिक निष्पन्न भाव द्विप्रकार से वर्णन किया गया है जैसेकि (जीवोदय निप्फन्नेय अजीवोदय निप्फन्नेय) जीवके उदय से निष्पन्न और अजीव के उदय से निष्पन्न अर्थात् जो कर्मों के प्रभाव से जीवके भावों से निष्पन्न होता है उसे जीवोदय निष्पन्न कहते हैं जो अजीव से फल निष्पन्न हों उन्हें अजीवोदय निष्पन्न कहते हैं अब प्रथम जीवोदय निष्पन्न का विवेचन करते हैं यथा (सेकिंत जीवोदय निप्फन्नेय २ अणेगविहे प० तं० (प्रश्न) जीवोदय निष्पन्न भाव कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) जो मूल कर्मों की प्रकृतियों के प्रभाव से जो जीवोदय भाव है वह अनेक प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसेकि (नेरइय १ तिरिक्ख जोणिए २ मणुस्से ३ देवे ४) नैरयिक भाव १ तिर्यग् योनिक्भाव २ मनुष्य भाव ३ और देवभाव ४ इसी प्रकार (पुढविकाइए ५ आउकाइए ६ तउकाइए ७ वाउकाइए ८ वणस्सइकाइए

६ तसकाइए १०) पृथ्वीकायिक १ जलकायिक २ अग्निकायिक ३ वायुकायिक ४ वनस्पतिकायिक ५ त्रसकायिक १० और (कोह कसाए ११ माण कसाए १२ माया कसाए १३ लोभे कसाए १४) क्रोध कषाय, मान कषाय, माया (छल) कषाय, लोभ कषाय १४ (कण्ह लेसा १५ नील लेसा १६ काउ लेसे १७ तेउ लेसे १८ पम्ह लेसे १६ सुक्क लेसे २०) कृष्ण लेश्या १५ नील लेश्या १६ कापोत लेश्या १७ तेजु लेश्या १८ पद्म लेश्या १६ शुक्ल लेश्या २०, और (इत्थिवेदए २१ पुरिसवेदए २२ नपुंसगवेदए २३) स्त्री वेद २१ पुरुष वेद २२ नपुंसकवेद २३ (मिच्छदिट्ठि २४) मिथ्या दृष्टि २४ (असण्णि २५) असंज्ञी भाव २५ (अण्णाणी २६) अज्ञानता २६ (आहारए २७) आहारक भाव २७ (अविरए २८) अव्रतभाव २८ (सजोगी २६) योगयुक्त होना २६ (ससारत्थे ३०) सांसारिकभाव ३० (छउमत्थे ३१) छद्मस्थभाव ३१ (असिद्धे ३१) असिद्ध भाव और (अकेवली ३२) अकेवली भाव ३३ (सेत्त जीवोदयनिप्फन्ने) सो यही जीवोदय निष्पन्न भाव है अब जीवोदय के पश्चात् अजीवोदय के फल वर्णन करते हैं (सेकिंत अजीवोदय निप्फन्ने २ अणेगविहे प० तं० (अथ शब्द प्राग्वत् है (प्रश्न) यह अजीवोदय निष्पन्न भाव कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) अजीवोदय भाव अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है क्योंकि-जो शरीरादिक का द्रव्य है वह अजीव द्रव्य का ही समूह है इसलिये उसको अजीवोदय निष्पन्न कहा गया है वास्तव में तो वह भी जीवोदय भाव में है किन्तु विशेष पर्यायों की अपेक्षा प्रयोग द्रव्य अजीवोदय निष्पन्न माना गया है अब इसी बात को सूत्रकार दिखलाते हैं (उरालिय वासरीर १) वा शब्द परस्परापेक्षा के वास्ते है मनुष्य और तिर्यग् का सब से प्रधान औदारिक शरीर १ और (उरालिय सरीरप्पओगपरिणामिय दव्व २) औदारिक शरीर के योग्य पारिणामिक प्रयोग द्रव्य अर्थात् औदारिक शरीर के योग्य ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श और

श्वासोच्छ्वासादि के योग्य द्रव्य हैं उन्हें औदारिक शरीर प्रयोग पारिणामिक द्रव्य कहते हैं इसीप्रकार आगे भी समझना चाहिये (वेउव्विय सरीर ३) वैक्रिय शरीर ३ और (वेउव्विय सरीर पओग परिणामियदव्व ४) वैक्रिय शरीर प्रयोगिक पारिणामिक द्रव्य ४ (आहारग या सरीरं ५) आहारिक शरीर ५ ५ और (आहारग सरीर पयोग परिणामियवादव्वं ६) आहारिक शरीर के पारिणामिक द्रव्य ६ (तेयग या शरीर ७) तेजस शरीर ७ (तेजस् सरीर पओग परिणामिय वादव्वं ८) तेजस शरीर प्रयोगिक पारिणामिक द्रव्य ८ (कम्मय सरीर ९) कार्मण सरीर ९ और (कम्म सरीर पओग परिणामियं वादव्व १०) कार्मण शरीर प्रायोगिक पारिणामिक द्रव्य १०) शिष्यने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन ! प्रयोग परिणाम क्या है गुरूने प्रति वचन में कहा कि भो शिष्य ! (पउग परिणामिय) प्रयोग परिणामिक द्रव्य उसे कहते हैं जो जीव ने ग्रहण किया हुआ द्रव्य है क्यों कि प्रयोग १ मिस्सा २ विमिसा ३ यह तीनो प्रकार से द्रव्य है प्रयोग वह होता है जो जीवने ग्रहण किया है मिस्सा वह होता है जो जीवने छोड़ दिया हो (विसेसा उसे कहते है जो अपने आप परिणमनशील हो जैसे बादलादि सो प्रयोग परिणामिक द्रव्यसे परिणमन हुए हैं (वण्णे ५) पांच वर्ण (गध २) दो गंध (रसे ५) ५ रस (फासे ८) ८ स्पर्श (सेत्त अजीवोदयनिप्फन्ने) सो यही अजीवोदय निष्पन्नभाव है क्योंकि यह सर्व ५ शरीर और पांचों के परिणामिक द्रव्य अजीवोदय निष्पन्न हैं (सेत्तं उदय निप्फन्न सेत्त उदयनामो) सो यही उदय निष्पन्न और इसे ही औदयिक नाम कहते हैं ॥

नोट—१ औदयिक, २ औपशमिक, ३ क्षायिक, ४ क्षायोपशमिक व ५ पारिणामिक इन पांच भाव के उत्तर भेद ५३ होते हैं सो इस प्रकार हैं ।

औदयिक के उत्तर भेद २१, औपशमिक के २, क्षायिक के ९, क्षायोपशमिक के १८, पारिणामिक के ३ सब मिलकर ५३ उत्तरभाव हुए

औदयिक भाव के २१ भेद इस प्रकार हैं-४ गति, ६, लेश्या, ४ कषाय ३ वेद, १ अज्ञान, १ असिद्धपन, १ मिथ्यात्वपन, १ अविरतिपन

औपशमिक भाव के २ भेद-१ उपशम समकित, २ उपशम चारित्र

क्षायिक भाव के ६ भेद-१ दानलब्धि, २ लाभलब्धि, ३ भोगलब्धि, ४ उपभोगलब्धि, ५ वीर्यलब्धि, ६ केवलज्ञान, ७ केवलदर्शन, ८ क्षायिक समकित ९ क्षायिक चारित्र

क्षायोपशम के १८ भेद-दानादिक, ५ अंतराय, १० उपयोग, १ क्षयोपशमसमकित, १ क्षयोपशमचारित्र, १ देशविरतिचारित्र

पारिणामिक के ३ भेद-१ जीव पारिणामिक, २ भव पारिणामिक, ३ अभवपारिणामिक

उपर्युक्त ५३ उत्तरभाव का बासठिया लिखते हैं।

गाथा-४ गइ, ५ इंदिय, ६ काए, ३ जोग, ३ वेय, ४ कसाय, ८ नाणेसु ७ संजम, ४ दंसण, ६ लेश्या, २ भव, ६ समे, २ सन्नी, २ आहारे।

अर्थ.—४गति, ५ इंद्रिय, ६ काय, ३ योग, ३ वेद ४ कषाय, ८ ज्ञान (५ ज्ञान और ३ अज्ञान) ७ संयम, ४ दर्शन, ६ लेश्या, २ भव्य तथा अभव्य ६ शम, २ संज्ञी तथा असंज्ञी, २ आहारक व अणाहारक इन ६२ मार्गणा के ऊपर ५ मूल भाव व ५३ उत्तर भाव बतलाते हैं।

५३ उत्तर भाव के ऊपर मार्गणा के ६२ द्वार कहते हैं।		मूल भाव ५	उत्तर भाव ५३	उदय भाव २१	उपशम भाव २	क्षायिक भाव ६	क्षयोपशम भाव १८	पारिणामिक भाव २
१	नरकगति १	५	३३	१३	१	१	१५	३
२	तिर्यंचगति २	५	३६	१८	१	१	१६	३
३	मनुष्यगति ३	५	५०	१८	२	६	१८	३
४	देवगति ४	५	३७	१७	१	१	१५	३
५	एकेंद्रिय १	३	२५	१४	०	०	८	३
६	बेंद्रिय २	३	२६	१३	०	०	१०	३
७	तेंद्रिय ३	३	२६	१३	०	०	१०	३
८	चौरिंद्रिय ४	३	२७	१३	०	०	११	३
९	पचेंद्रिय ५	५	५३	२१	२	६	१८	३
१०	पृथ्वी १	३	२५	१४	०	०	८	३
११	अप २	३	२५	१४	०	०	८	३
१२	तेउ ३	३	२४	१३	०	०	८	३
१३	वाउ ४	३	२४	१३	०	०	८	३
१४	वनस्पति ५	३	२५	१४	०	०	८	३
१५	त्रस ६	५	५३	२१	२	६	१८	३
१६	मनजोग १	५	५३	२१	२	६	१८	३
१७	वचन जोग २	५	५३	२१	२	६	१८	३
१८	काया जोग ३	५	५३	२१	२	९	१८	३
१९	स्त्रीवेद १	५	४१	१८	२	१	१८	३
२०	पुरुष वेद २	५	४१	१८	२	१	१८	३
२१	नपुसक वेद ३	५	४१	१८	२	१	१८	३
२२	क्रोध १	५	४५	२१	२	१	१८	३
२३	मान २	५	४५	२१	२	१	१८	३
२४	माया ३	५	४५	२१	२	१	१८	३
२५	लोभ ४	५	४५	२१	२	१	१८	३
२६	मतिज्ञान १	५	४५	१९	२	२	१५	२
२७	श्रुत० २	५	४०	१९	२	२	१५	२
२८	अवधि ३	५	४८	१९	२	२	१५	२
२९	मन पर्यव ४	५	३४	१५	२	२	१४	२
३०	केवल ५	३	१४	३	०	९	०	२
३१	मति अ० ६	३	३५	२१	०	०	११	३
३२	श्रुत अ० ७	३	३५	२१	०	०	११	३

	५६ उत्तर भाव के उपर मार्गणा के ६२ द्वार कहते हैं।	मूल भाव ५	उत्तर भाव ५३	उदय भाव २१	उपशम भाव २	क्षायिक भाव ९	क्षयोपशम भाव १८	पारिणामिक भाव ३
३३	विभग ८	३	३५	२१	०	०	११	३
३४	सामायिक १	५	३३	१५	१	१	१४	२
३५	छेदोपस्थापनीय२	५	३३	१५	१	१	१४	२
३६	परिहारविशुद्ध ३	५	२९	११	१	१	१४	२
३७	सूक्ष्मसंपराय ४	५	२१	४	१	१	१३	२
३८	यथाख्यात ५	५	२८	३	२	९	१२	२
३९	देश विरति ६	५	३३	१६	१	१	१३	२
४०	असंयम ७	५	४१	२१	१	१	१५	३
४१	चक्षुद०१	५	४२	२१	२	२	१८	३
४२	अचक्षु० २	५	४२	२१	२	२	१८	३
४३	अवधि ३	५	४१	२१	२	२	१८	३
४४	केवल ४	३	१४	३	०	९	०	२
४५	कृष्ण १	५	३९	१६	१	१	१८	३
४६	नील २	५	३९	१६	१	१	१८	३
४७	कापोत ३	५	३९	१६	१	१	१८	३
४८	तेजु ४	५	३८	१५	१	१	१८	३
४९	पद्म ५	५	३८	१५	१	१	१८	३
५०	शुक्ल ६	५	४७	१५	२	९	१८	३
५१	भव्य १	५	५२	२१	२	९	१८	२
५२	अभव्य २	३	३४	२१	०	०	११	२
५३	उपशम १	५	३८	१९	२	१	१४	२
५४	क्षयोपशम २	३	३६	१९	०	०	१५	२
५५	क्षायक ३	५	४५	१९	२	९	१४	२
५६	मिश्र ४	३	३३	२०	०	०	११	२
५७	सास्वादन ५	३	३२	१९	०	०	११	२
५८	मिथ्या त्व ६	३	३५	२१	०	०	११	३
५९	सज्ञी १	५	५३	२१	२	९	१८	३
६०	असज्ञी २	३	२९	१५	०	०	११	३
६१	आहारक १	५	५३	२१	२	२	१८	३
६२	अणाहारक २	५	५०	२१	२	९	१५	३
	मार्गणा	६२	६२	६२	४२	४४	६०	६२

भावार्थः—पद्नाम में पद् भावों का विवरण किया गया है अत भाव और नाम में अभेद माना है इसी लिये नाम पद में भावों का विवर्ण है जैसे कि—औदयिक भाव १ औपशमिक भाव २ क्षायिक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ पारिणामिक भाव ५ सन्निपातिक भाव ६ औदयिक भाव उसे कहते है जिससे कर्मों की प्रकृतियें उदय होकर कर्मों का फल दें १ औपशमिक भाव उसका नाम है जो कर्म न तो क्षय हुए है और न उदय भाव में है इस लिये उन्हें उपशम भाव कहते हैं २ यदि कर्म क्षय हुए हों तो उसे क्षायिकभाव कहते है ३ यदि कुछ क्षय हुए है और कुछ उपशमभाव में है उन्हें क्षयोपशम भाव कहते हैं ४ जो द्रव्य परिणामनशील हो उन्हें पारिणामिक भाव कहते हैं ५ अपितु जो इन के संयोग होने से नाम उत्पन्न होता है उसे सन्निपातिक भाव माना गया है फिर उदय भाव दो प्रकार से माना है जैसे कि—एकतो औदयिक भाव-द्वितीय औदयिक निष्पन्न भाव-औदयिक भाव में आठों कर्मों की सर्व प्रकृतियें है और औदयिक निष्पन्न भाव दो प्रकार से माना गया है क्योंकि जो वस्तु उदय होती है उसका फल अवश्य होता है उसे उदयनिष्पन्न भाव कहते है वह भी दो प्रकार से है एक तो जीवोदय-द्वितीय अजीवोदय-जीवोदय उसे कहते हैं जो जीव की शक्ति से पर्यायें उत्पन्न हों जैसे कि ४ चार गतियें पट्कायें चतुर कषायें तीनों वेद षट् लेश्यायें मिथ्यादृष्टिभाव अव्रतभाव असंज्ञिभाव अज्ञानभाव आहारिकभाव छद्मस्थ भाव सयोगभाव संसारभाव असिद्ध और अकेवलीभाव यह सर्व आठों कर्मों की प्रकृतियों के ही फल हैं और इनके सहचारी ५ निद्रा हास्यादि सर्व और प्रकृतियें भी जान लेनी चाहिये । लेश्यायें इस लिये औदयिक भाव में हैं कि योगों के सबब होने से ही लेश्याओं की उत्पत्ति है इस लिये अन्य सर्व प्रकृतियें भी ग्रहण करनी चाहिये यह सर्व जीवोदय निष्पन्नभाव है और अजीवोदय निष्पन्नभाव उसका नाम है जिसमें प्रयुक्त द्रव्य परिणाम को प्राप्त हों उसको अजीवोदय निष्पन्न भाव कहते हैं जैसे कि पांच शरीर पांच शरीरों का परिणामनशील द्रव्य और वर्ण ५ गंध २ रस ५ स्पर्श ८ पूर्वोक्त यह सर्व द्रव्यों के कारण से ही परिणत होते हैं इस लिये उन्हें अजीवोदय निष्पन्न भाव माना गया है साथ ही अन्य द्रव्य शरीरों के सहचारी भी जान लेने चाहिये और यह भी जीव के कर्मोदय से ही प्राप्त होते है किन्तु विशेष पुद्गलद्रव्यक सम्बन्ध होने से इनको अजीवोदयनिष्पन्न

भाव माना गया है अत इसी स्थान पर औदयिकभाव का समास सम्पूर्ण हो गया है अब इसके पश्चात् औपशमिकभाव का विवरण किया जाता है ॥

॥ अथ औपशमिकभाव विषय ॥

मूल–सेकिंत उवसमिए ? २ दुविहे प त उवसमेय उवसमनिप्पन्ने य सेकिंत उवसमे २ मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेण सेकिंत उवसम निप्पन्ने ? २ अणेगविहे प त उवसतकोहे उवसत माणे उवसत माया उवसतलोभे उवसतपेज्जे उवसत दोसे उवसतदंसणमोहणिज्जे ७ उवसत चरित्तमोहणिज्जे ८ उवसतियासम्मत्तलद्धि उवसमिया चरित्तलद्धि १० उवसत कसाय छउमत्थे वीयरागे ११ से त उवसम निप्पन्ने सेत उवसमिए नामे ॥

पदार्थ –(सेकिंत उवसमिए ? २ दुविहे प० त०) अब वह कौनसा है औपशमिक भाव ? (उत्तर) औपशमिक भाव दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (उवसमेय उवसमनिप्पन्नेय) उपशमभाव और उपशमनिष्पन्न भाव च पाद पूरणार्थ है (सेकिंत उवसमे २) वह उपशमभाव कौनसा है ? (मोहणिज्जस्सकम्मस्स उवसमेण) (उत्तर) मोहनीय कर्म की अष्टाविंशति प्रकृतियों का उपशम श्रेणी म उपशम होजाना उसे उपशम भाव कहते हैं ण इति वाक्या लकारार्थ में है (सेकिंत उवसमनिप्पन्ने २) (प्रश्न) वह उपशम निष्पन्न भाव कौनसा है ? (उत्तर) उपशमनिष्पन्न भाव (अणेगविहे प० त०) अनेक प्रकार से प्रतिपादन किया गया है क्योंकि मोहनीय कर्म की प्रकृतियों के उपशम होने से जो फल उपलब्ध होते हैं उन्हें उपशमनिष्पन्न भाव कहते हैं सो वह फल निम्नलिखितानुसार हैं (उवसतकोहे १ उवसतमाणे २ उवसतमाया ३ उवसतलोभे ४) क्रोध का उपशान्त होजाना जैसे भस्माच्छा

---

१ पञ्च कुम्भ्यूर्ने द्वार वा । प्रा० व्या० अ० ८ पा० २ सू० ११२ ॥
ण] सयुक्तस्यान्त्य व्यञ्जनात् पूर्व उद्वा भवति ॥

दित अग्नि होती है तद्वत् क्रोध होना इसी प्रकार मान माया लोभ और (पेज्जे ५ उवसतदोसे ६ उवसतदसणमोहणिज्जे ७ उवसत चरित्तमोहणिज्जे ८) उपशान्त राग ५ उपशान्त द्वेष ६ उपशान्तदर्शनमोहनीय कर्म ७ उपशान्त चारित्र मोहनीय कर्म ८ (उवसमिया सम्मत्तलद्धी ९ उवसमिया चरित्तलद्धी १०) उपशान्त सम्यक्त्वलब्धि ६ उपशमचारित्रलब्धि १० (उवसतकसायछउमत्थवीयरागे ११) उपशान्तकषायछद्मस्थवीतराग जो एकादशवें गुणस्थानवर्ती जीव हैं (सेत उवसमनिप्पन्ने सेत उवसामिये नामे) सो यही उपशमनिष्पन्नभाव है और इसे ही उपशम नाम कहते हैं॥

भावार्थ —औपशमिक भाव भी दो प्रकार से वर्णन किया गया है एक तो उपशम द्वितीय उपशमनिष्पन्न । उपशम उसे कहते हैं जिस के द्वारा मोहनीय कर्म की अष्टाविंशति प्रकृतियें भस्माच्छादित अग्निवत् उपशम हों द्वितीय उपशम निष्पन्न उसका नाम है जो मोहनीय कर्म के उपशम होने से फलों की-प्राप्ति हो जैसे कि चारों कषायों का उपशम होना राग और द्वेष का उपशम होना और दर्शनमोहनीय कर्म का उपशम होना चारित्रमोहनीय कर्म का उपशम होना और इन दोनों के फल उपशम सम्यक्त्वलब्धि और उपशमचारित्रलब्धि का प्राप्त होजाना अर्थात् शक्रादि का उपशम होना और उपशान्त कषाय छद्मस्थ वीतराग पद का प्राप्त होना यह सर्व उपशम भाव के फल हैं इन्हें उपशम निष्पन्न भाव कहते हैं॥ उपशम भाव का प्रतिपक्ष क्षायिक भाव है इसलिये अब क्षायिक भाव का विवर्ण किया जाता है॥

॥ अथ क्षायिक भाव विषय ॥

मूल —सेकित क्खइए ? २ दुविहे प० त० खइएय खइय निप्पन्नेय सेकित क्खइए? २ अट्ठण्ह कम्मपगडीण क्खएण सेत क्खइए सेकित क्खइय निप्पन्ने २ उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिण केवली खीणाभिणीबोहियनाणावरणे १ खीणसुय-नाणावरणे २ खीण उहीनाणावरणे ३ खीण मणपज्जवना-णावरणे ४ खीण केवलनाणावरणे ५ अणावरणे निरावरणे

खीणावरणे नाणावरणिज्जेकम्मविप्पमुक्के केवलदंसी सव्वदसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धी १० खीणचक्खुदसणावरणे ११ खीण अचक्खुदसणावरणे १२ खीण उहीदसणावरणे १३ खीण केवलदसणावरणे १४ अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स विप्पमुक्के खीण सायावेयणिज्जे १५ खीण असायावेयणिज्जे १६ अवेयणे निव्वेयणे खीणवेयणे सुभासुभवेयणिज्जे विप्पमुक्के खीणकोहे खीणमाणे खीणमाया खीण लोभे २० खीणपेज्जे २१ खीणदोसे २२ खीणदसण मोहणिज्जे २३ खीणचरित्त मोहणिज्जे २४ अमोहे निमोहे खीणमोहे मोहणिज्जे कम्म विप्पमुक्के खीण नेरइयाउए २५ खीण तिरियाउय २६ खीणमणुयाउय २७ खीण देवाऊय २८ अणाउए निराउए खीणाउय आउयकम्मविप्पमुक्के गइ जाइ सरीर गोवग वघण सघायण सघयण सठाण अणेग बोंदिविद सघाय विप्पमुक्के खीण सुभनामे २९ खीण असुभनामे ३० अनामेनिन्नामे ३० खीणनामे सुभासुभनामकम्म विप्पमुक्के खीण उच्चा गोए ३१ खीण नीयागोए ३२ अगोए निगोए खीणगोए सुभा सुभ गोत्तकम्म विप्पमुक्के खीणदाणतराय,३३ खीण लाभ अतराय ३४ खीण भोगान्तराय ३५ खीण उवभोगान्तराय ३६ खीणवीरियांतराय ३७ अणन्तराय खीण अतराय कम्मस्स विप्पमुक्के सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिवुडे अतगड सव्वदुख पहीणे मेत्त खइय निप्पन्ने मेत्त खइय नामे

पदार्थ-(सेकिंत खइए? २ दुविहे प०त०) (प्रश्न) वह क्षायिकभाव कौनसा है? (उत्तर) क्षायिकभाव दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि (खइए य

खइय निप्फन्नेय) एक क्षायिकभाव द्वितीय क्षायिकनिष्पन्न भाव (से किंत खइए? २ (प्रश्न) क्षायिक भाव किसे कहते हैं? (उत्तर) अट्ठएह कम्म पगडीण खइयणं सेत्त खइए) आठ कर्मों की प्रकृतियोंका क्षय होजाना उसे क्षायिक भाव कहते हैं क्योंकि क्षायिक भाव उसी का नाम है जो सर्व कर्म प्रकृतियों से रहित हो ॥ अब क्षायिक निष्पन्नका वर्णन करते हैं (सेकिंत खइय निप्फन्ने २) (प्रश्न) क्षायिक निष्पन्नभाव किसे कहते है? (उत्तर) क्षायिकनिष्पन्नभाव के निम्न लिखित लक्षण है? (उप्पन्न नाणदंसणधरे) जिनको ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय के क्षय होने के कारण से ज्ञान और दर्शन उत्पन्न हुआ है इसलिये उत्पन्नज्ञानदर्शन के धरने वाले (अरहाजिण केवली) सर्व के पूजनीय अर्हन फिर राग द्वेष के जीतने से जो जिन कहलाए है और सम्पूर्ण ज्ञान के कारण से जिन को केवली कहा जाता है और जो आठों कर्मों की प्रकृतियो को क्षय कर के फिर उनके फल को प्राप्त हुए है वह सिद्ध हैं अब प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म की प्रकृतियों का विवर्ण करते हैं यथा (खीणाभिणि बोहियनाणावरणे) क्षीण किया है आभिनिबोधिक ज्ञान का आवरण और (खीण सुय नाणा वरणे) क्षीण है जिन के श्रुतज्ञानावरणे (खीण ओहिनाणावरणे) क्षीण है जिन के अवधिज्ञानावरण ३ खीणमणपज्जवनाणावरणे) क्षीण है मन पर्यय ज्ञानावरण ४ (खीण केवलनाणावरणे) क्षीण है केवलज्ञानावरणे ५ (अणाज्ञानावरणे) आवरण से रहित हैं (निरावरणे) निरावरण हैं (खीणावरणे) जिनका आवरण क्षीणता को प्राप्त होगया है जब कि आवरण सर्वथा क्षीण है तब (नाणावरणिज्ज कम्मविप्पमुक्के) ज्ञानावरणीय कर्म से विप्रमुक्त हुए अर्थात् ज्ञानावरणीय कर्म की पांचों प्रकृतियों के आवरण क्षय करके केवल ज्ञान के धारक हुए फिर सर्वथा आवरण क्षीण करके केवल दर्शन भी प्राप्त इस लिये दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृतियों का विवर्ण करते हैं (केवलदंसी-सव्वदंसी) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने से केवल ज्ञानी होकर फिर दर्शनावरणीय कर्म के क्षय होने से केवलदर्शी और सर्वदर्शी हुए है अब इन की प्रकृतियों का स्वरूप कहते है (खीणनिद्दे ६) जिन्हों ने निद्रा क्षीण की है निद्रा उसका नाम है - जिसमें सुखपूर्वक सो कर अपनी इच्छानुसार उठे ६ और (खीणनिद्दानिद्दा,) जिन्हों ने क्षीण की है निद्रानिद्रा क्योंकि-निद्रा

निद्रा उसे कहते है जिसमे सुखपूर्वक सोकर दुखपूर्वक जागृत अवस्था को प्राप्त होवे (खीण पयले ८) और जिसने क्षीण की है मचला नामक निद्रा जो बैठेहुए को भी आजाती है ८ (फिर खीणपयलापयला ९) क्षीण की है मचलामचला-जो निद्रा चलते समय भी प्राप्त हो जाती है और (खीण त्थीण निद्धि १०) क्षीण है जिनके स्त्यानगिर्द्धि जो महा अशुभ कर्मों के उदय से जीव को होती है (खीणचक्खुदसणावरणे) क्षीण हो गया है चक्षुओं का आवरण ११ (खीण अचक्खुदसणावरणे) क्षीण है चक्षुभिन्न इन्द्रियों का आवरण अर्थात् चार इन्द्रियों के आवरण भी क्षीण हो गये हैं १२ (खीण ओहीदसणावरणे १३) क्षीण है जिनके अवधि दर्शना वरण १३ और (खीण केवलदसणावरण १४) केवलदर्शनावरण भी क्षय होगया है इसलिये (अणावरणे) अनावरण है (निरावरणे) निरावरण है (खीणावरणे) क्षीण आवरण है (दरिसणावरणनिज्जकम्मस्सविप्पमुक्के) इसलिये दर्शनावरणीय कर्म से विमुक्त है अर्थात् जो दर्शनावरण कर्म के आवरण है उन्हों से रहित होगया है इस वास्ते सर्वदर्शी शब्द ग्रहण किया है अब वेदनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं ॥ (खीण साया वेयणिज्जे १५ खीण असाया वेयणिज्जे १६) क्षीण है शाता वेदनीय कर्म १५ और क्षीण है अशाता वेदनीय कर्म १६ क्योंकि वेदनीय कर्म के क्षय होने से शाता वेदनीय और अशाता वेदनीय यह दोनों प्रकृतियें क्षय होगई हैं। फिर आत्मिक सुख प्रगट होगया है क्योंकि यह दोनों प्रकृतियें विनाशवती हैं सो वेदनीय कर्म के क्षय होने से (अवेयणे निवेयणे खीणवेयणे) वेदना से रहित हुए। जिनकी वेदना चली गई है अपितु क्षीण वेदना होगई है फिर (सुभासुभवेयणिज्जे कम्मविप्पमुक्के) शुभाशुभ वेदनीय कर्म से रहित हुए अतः वेदनीय कर्म से पीछे अब मोहनीय कर्म का स्वरुप लिखा जाता है. (खीण कोहे खीण माणे खीण माया खीण लोभे २०) क्षय हो गया है क्रोध मान माया लोभ २० (खीण पेज्जे २१ खीण दोसे २२) क्षीण होगये हैं राग और द्वेष फिर (खीण दसणमोहणिज्जे २३) जिनके दर्शनमोहनीय कर्म की तीनों प्रकृतियें क्षय हो गई हैं जैसे कि सम्यक्त्व मोहनीय १ मिश्र मोहनीय २ मिथ्यात्व मोहनीय तथा (खीण चरित्तमोहणिज्ज २४) चारित्र मोहनीय कर्म की भी दोनों प्रकृतियें क्षय हो गई हैं जैसे कि कषाय और नो कषायों के १६ भेद हैं नो

कषायों के हास्यादि नव भेद हैं २४ इसलिये (अमोहे निमोहे खीणमोहे) मोहनीय कर्म के क्षय होने से अमोह निर्मोह और क्षीणमोह हो गये हैं अतः (मोहणिज्जे कम्मविप्पमुक्के) मोहनीय कर्म से विप्रमुक्त हो गये अर्थात् मोहनीय कर्म से सर्वथा रहित होकर फिर आयुष कर्म से रहित हुए इसलिये अब आयुकर्म की प्रकृतियों का विवर्ण करते हैं (खीण नेरईयाउए २५ खीण तिरियाउए २६ खीण मणुयाउए २७ खीण देवाउए २८) क्षीण करदी हैं नरकायु तिर्यक् आयु मनुष्य आयु और देवायु जब चारों प्रकार से आयु क्षय करदी तब (अणाउए निराउए खीणाउए) अनायु हुए निरायु हुए अपितु क्षीणायु हुए फिर (आउए कम्मस्स विप्पमुक्के) आयुकर्म से सर्वथा विप्र मुक्त हुए अर्थात् आयु कर्मों के बंधनो से छूट गये फिर नाम कर्म की प्रकृतियों से भी रहित हुए जिन का विवर्ण निम्न लिखितानुसार है (गइ जाइ शरीर गोवगर बंधण सघायण संघयण सठाण अणेगवोधि विंद सघाय विप्पमुक्के) नामकर्म के उदय से ही शरीर की रचना है इसलिये इनकी सर्व प्रकृतियों का विवर्ण किया गया है जैसे कि चार गतियें पाच जातियें पाच शरीर तीनों के अगोपाग ५ बंधन ५ संघातन ६ सहनन ६ संस्थान अनेक प्रकार के शरीरों का वृन्द और उनके सघात सर्व प्रकार से विप्रमुक्त हुए अर्थात् नामकर्म की प्रकृतियें क्षय करी फिर (खीण सुभनामे २८) क्षीण किया शुभ नाम २८ और (खीण असुभनामे ३०) क्षीण कर दिया है अशुभ नाम जैसे अनादेज्ञ नामादि (अनामे निन्नामे खीणनामे) इसलिये अनाम निर्नाम और क्षीणनाम हुए अत (खीण सुभासुभनामकम्मविप्पमुक्के) क्षीण कर दिया है शुभाशुभ नाम इसी वास्ते नाम कर्म से रहित हुए फिर (खीण उच्चागोए ३१ (खीण नीयागोए ३२) गोत्रकर्म के क्षय होने से ऊंचगोत्र और नीचगोत्र भी क्षीण कर दिया है इस लिये (अगोए निगोए खीणगोए सुभासुभगोत्तकम्मविप्पमुक्के) गोत्रकर्म के क्षय होने से अगोत्र निगोत्र क्षीणगोत्र हो गये अत शुभाशुभ गोत्र कर्म के बंधन से मुक्त हुए फिर (खीण दाणतराय ३३) अतराय कर्म के क्षय होने से दानांतराय भी क्षय कर दी (खीण लाभातराय ३४) क्षीण की है लाभातराय ३४ खीण भोगानराय ३५) क्षय करदी है भोगातराय ३५ फिर (खीण उव भोगातराय ३६) क्षीण करदी है उपभोगातराय जो वस्तु पुनः पुन आ-

सेवन करने में आती है उन्हें उपभोग कहते हैं (खीण वीरियतराय ३७) क्षीण की है बल वीर्य की अंतराय जब अंतराय कर्म की पाचों प्रकृतियें क्षय हो गइ तब (अणंतराय) अंतराय रहित हुए (नाणंतराय) नहीं रही है जिन के अंतराय (खीणंतराय अंत क्षय हो गई है सर्वथा अंतराय पुनः (अंतराय कम्मसविप्पमुक्के) अंतराय कर्म के बंधनों से मुक्त हुए इस लिए (सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनीवुडे अंतग) जो आत्मा क्षायिक भाव वाले ह उनको सिद्ध, बुद्ध, मुक्त शीतलीभूत दुःखा के अंतकर्त्ता (सव्वदुक्खप्पहीण) सर्व दुखों से रहित ऐसे कहते है अर्थात् उनको उक्त नामों से कहाजाता है (सेत खइय निप्पन्ने सेत खइय नामे) अथ शब्द आगतत है यही क्षायिक निष्पन भाव है और इसे ही क्षायिक नाम कहते हैं सो इसी स्थानोपरि क्षायिक भाव का समाम पूर्ण हो गया है इस के आगे क्षयोपशम भाव का विवर्ण किया जाता है ॥

भावार्थ—क्षायिक भाव दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि एकतो क्षायिक भाव द्वितीय क्षायिक निष्पन्न भाव है क्षायिक भाव उसे कहते हैं जिससे आठों कर्मो की प्रकृतियों का क्षय हो और क्षायिकनिष्पन्न भाव उस का नाम है जो आठों कर्म की प्रकृतिया के क्षय होने से सुख का अनुभव किया जाता है जैसे कि—मतिज्ञानावरणीय १ श्रुतज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञानावरणीय ३ मनःपर्यवज्ञानावरणीय ४ केवलज्ञानावरणीय ५ इन पाचों के क्षय होने से जीव सर्वज्ञ हो जाता है फिर निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ स्थानगिद्धि निद्रा ५ चक्षुदर्शनावरणीय ६ अचक्षुदर्शनावरणीय ७ अवधिदर्शनावरणीय ८ केवलदर्शनावरणीय ९ इन प्रकृतियों के क्षय होने से जीव सर्वदर्शी होजाता है और शातावेदनीय और अशातावेदनीय के क्षय होने से जीव वेदनीय कर्म से रहित होता है फिर क्रोध मान माया लोभ राग और द्वेष सम्यक्त्व मोहनीय मिथ्यात्व मोहनीय मिश्र मोहनीय १६ कषायों नव नोकषायों के क्षय करने से जीव क्षीणमोहणीय कहा जाता है पुनः नरकायु तिर्यग् आयु मनुष्य आयु देवायु के क्षय करने से जीव निरायु हो जाता है अतः चारों गतिया पाचजातिया ५ शरीर तीनों के अंगोपांग ५ बंधन ५ संघातन श्लेष रूप ६ संहनन ६ संस्थान अनेक प्रकार की शरीरों की आकृतिया और शुभनाम अशुभनाम को क्षय करके जीव क्षीण नाम वाला हो जाता है अर्थात् अपने निज स्वभाव अमूर्ति भाव में आ जाता है क्योंकि नाम कर्म

सूत्रधार (बढ़ई) के समान शरीर की रचना करता है फिर ऊंच गोत्र और नीच गोत्र की प्रकृतियों को क्षय करने से जीव अगौत्रिक हो जाता है फिर दानांतराय लाभान्तराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय बलवीर्यान्तराय इन पांचों प्रकृतियों के क्षय होने से अनंत शक्ति सम्पन्न जीव हो जाता है फिर इस जीव को सिद्ध बुद्ध मुक्त शीतलीभूत सर्व दुखों का अंतकर्ता इत्यादि नाम हो जाते हैं इस लिये इसको क्षायिकभाव कहते हैं और यही क्षायिक भाव का स्वरूप है अब क्षायिक भाव के पीछे क्षायोपशम भाव का विवर्ण किया जाता है।

॥ अथ क्षयोपशम भाव विषय ॥

मूल—सेकिंतं खओवसमिए? १ दुविहे प० त० खओवसमिए य खओवसम निप्फन्नेय सेकिंत खओवसमे?२ चउण्हंघाइकम्माणं खओवसमेणं तंजहा नाणावरणिज्जस्स दसणा वरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतराइस्स ४ खओवसमेणं सेतं खओवसमेणं सेकिंत खओवसमेनिप्फन्ने?२ अणेगविहे प त खओवसमिया आभिणिवोहियनाणलद्धी१ खओवसमिया सुयनाणलद्धी२ खओवसमियाओहिनाणलद्धी ३ खओवसमिया मणपज्जवनाणलद्धी४ खओवसमियामइअणाणलद्धी५ खओवसमियासुयअणाणलद्धी ६ खओवसमियाविभगणाणलद्धी ७ खओवसमिया चक्खुदसणलद्धी ८ एवं अचक्खुदसणलद्धी ९ ओहिदसणलद्धी १० एवं सम्मदसणलद्धी ११ मिच्छादसणलद्धी १२ सम्मामिच्छादसण लद्धी १३ खओवसमिया सामाइयचरित्तलद्धी १४ एवंछेदोवट्ठावण लद्धी१५ परिहार विसुद्धिगलद्धि १६ सुहुमसपरायलद्धी१७ खओवसमयाचरित्ताचरित्तलद्धि १८ खओवसमियादाणलद्धि १९ एवं लाभ२०भोग२१ उवभोग२२ खओवसमियावीरियलद्धि२३ खओवसमियाबालवीरियलद्धी २४ खओवसमियापंडियवीरियलद्धि २५

खओवसमियवालपंडियलद्धी२६ खओवसमियसोइंदियलद्धि२७ खओवसमियाचक्खुइंदियलद्धी२८ खओवसमियाघणिंदियलद्धि २९ खओवसमिया जिभिंदियलद्धि ३० खओवसमिय फासिंदिय लद्धी ३१ खओवसमिया आयारधरे ३२ एव सुयगडधरे ३३ ठाणगधरे ३४ समवायधरे ३५ विवाह पाएणत्तिधरे ३६ एव नायाधम्मकहा ३७ आवासगदसा अतगओदसा ३८ अणुतरो ववाइयदसा ४० पाराहावागरे ४१ खओवसमिया विवागसुयधरे ४२ खओवसमिया दिट्ठिवायधरे ४३ खओवसमिया नवपुव्वधरे ४५ जो चौद्दसपुव्वधरे ४५ खओवसमियागणीवायए ४६ सेत खओवसमेनिप्फन्ने सेत खओवसमिये नामे ॥

पदार्थ-(सेकित खओवसमिय२ दुविहे प० त०) अब वह क्षयोपशमभाव कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) क्षयोपशम भाव दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (खओवसमेय १ खओवसम निप्फन्नेय) एक क्षयोपशम भाव द्वितीय क्षयोपशम निष्पन्न भाव (सेकित खओवसमे २ चउण्हंण कम्माण खओवसमेण तजहा) (प्रश्न) क्षयोपशम किसे कहते हैं (उत्तर) क्षयोपशम भाव उसका नाम है चारो घातिक कर्मों के क्षयोपशम होने से निष्पन्न होता है जैसे कि- (नाणावरिणज्जस) ज्ञानावरणीय के (दसण वरणिज्जस्स २) दर्शना वरणीय के २ (मोहणीज्जस्सइ) मोहनीय कर्म के (अतराइमस्स ४) अतराय के ४ (खओवसमेण) क्षयोपशम होने से जो भाव उत्पन्न होते हैं उसे क्षयो पशम भाव कहते हैं अर्थात जब चारों कर्म क्षयोपशम भाव में होते हैं तब क्षयोपशम भाव कहा जाता है (सेत खओवसमे) सो वही क्षयोपशम भाव है अर्थात कुछ उक्त कर्म क्षय हो गय हों और कुछ उपशम हुए हों तब उसको क्षयोपशम भाव कहते हैं।

॥ अथ क्षयोपशम निष्पन्न का विवर्ण करते है ॥

(सेकिंत खओवसमे निप्फन्ने २ अणेग विहे प० त०) (प्रश्न) क्षयोपशम निष्पन्न भाव कितने प्रकार से विवर्ण किया गया है (उत्तर) क्षयोपशम

निष्पन्न भाव अनेक प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि- (खओव-समिया भिणिबोहिय नाणलद्धी १) नाना वरणीय कर्म के क्षयोपशम होने मति ज्ञान की लब्धि उत्पन्न होती है अत पूर्णतया मति ज्ञान का उत्पन्न होना यह क्षयोपशम भाव का मूल कारण है क्योंकि केवल ज्ञान के बिना ही शेष यावन्मात्र सूत्र दिये गये हैं वे सर्व क्षयोपशम भाव से ही उत्पन्न होते हैं इसलिये आगे सर्व अंकों की सम्भावना इसी प्रकार कर लेनी चाहिये (खओवसमिया सुयनाणलद्धी १२) क्षयोपशम भाव से श्रुत ज्ञान की लब्धि उत्पन्न होती है (खओवसमिया ओहि नाण लद्धी १३) क्षयोपशम से अवधि ज्ञान की लब्धि उत्पन्न होती है ३ (खओवसमिया मणपज्जव नाणलद्धी ४) क्षयोपशम से मन पर्यव ज्ञान की लब्धि होती है ४ (खओव समिया मइअणाणलद्धी ५) क्षयोपशम से मति अज्ञान की लब्धि उत्पन्न होती है अत यह नञ् समासान्त पद है जो कुत्सित ज्ञान है वही मति अज्ञान है क्यों कि न ज्ञान इति अज्ञान—जो ज्ञान का प्रति पक्ष हो उसी का नाम अज्ञान है अत व्यवहारिक वस्तुओं को छोड कर षट् द्रव्यों के विचार में ज्ञान अज्ञान की भली प्रकार से परीक्षा हो जाती है इसी प्रकार (खओवसमिया सुय-अणाण लद्धीई) क्षयोपशम से श्रुत अज्ञान की लब्धि है (खओवसमिया विभग नाणलद्धी ७ क्षयोपशम से विभग ज्ञान की लब्धि ८ अर्थात् अवधि ज्ञान के जो विपरीत हो उसे विभग ज्ञान कहते है और (खओवसमिया चक्खु दसण लद्धी ८) क्षयोपशम भाव से चक्षु दर्शन की लब्धि उत्पन्न होती है (खओवसमिया अचक्खु दसणलद्धी) क्षयोपशम से अचक्षु चारों इन्द्रियों के दर्शन की लब्धि है (खओवसमिया ओहि दसणलद्धी १०) क्षयोपशम से अवधिदर्शन की लब्धि है १० अब दर्शन विषय में कहते हैं (खओवसमिया सम्मदसणलद्धी ११) क्षयोपशम से सम्यक् दर्शन की लब्धि उत्पन्न होती है अर्थात् जब मोहनीयकर्म की प्रकृतियें क्षयोपशम होती हैं तब सम्यक् दर्शन उत्पन्न होजाता है इसलिये क्षयोपशम भाव में सम्यक् दर्शन प्राप्त है। (खओवसमिया मिच्छा दसणलद्धी १२) क्षयोपशम से मिथ्या दर्शन की लब्धि उत्पन्न होती है अत. मिथ्यात्व में रुचि का होना यह भी क्षयोपशम भाव में है (खओवसमिया सम्मा मिच्छा दसणलद्धी १३) क्षयोपशम भाव से मिश्र दर्शन की लब्धि उत्पन्न होती है १३ और (खओवसम समाइय चरित लद्धी १४)

क्षयोपशम भाव से समायिक चरित्र की लब्धि उत्पन्न होती है १४) (खओव समछेदोवठा वाणियाचरितलद्धी १५) क्षयोपशम भाव से छेदोपस्थापनीय चरित्र की लब्धि उत्पन्न होती है १५ और (खओवसमिया परिहार विसुद्धि चरित लद्धी १६) क्षयोपशम भाव से परिहार विशुद्ध की चरित्र लब्धि है १६ इसी प्रकार (सुहुम सपरागलद्धी १७) सूक्ष्म सम्पराग चरित्र की लब्धि है और (खओवसमिया चरिता चरितलद्धी १८) क्षयोपशम भावसे ही चारित्रा चरित्र की लब्धि प्राप्त होती है अर्थात् श्रावक व्रति का प्राप्त होना यह क्षयोपशम भाव का महात्म्य है १८ और (खओवसमिया दाणलद्धी १६) क्षयोपशम से दान लब्धि होती है १६ (एव लाभ) इसी प्रकार क्षयोपशम भाव से लाभ लब्धि होती है २० (भोगलद्धी २१) भोग लब्धि होती है २१ (उव भोग २२) जो वस्तु पुन असेवन करने में आती है उसकी लब्धि भी क्षयोपशम भाव से होती है २२ (खओवसमिया वीरियलद्धी २३) क्षयोपशम भाव से वीर्य की लब्धि उत्पन्न होती है यह सर्व अतराय कर्म के क्षयोपशम होने का फल है तथा भेदान्तर विषय मे कहते हैं (खओवसमिय वालवीरिय लद्धी २४) क्षयोपशम मे वाल वीर्य की लब्धि उत्पन्न होती है २४ और (खओवसमिया पडियवीरियलद्धी २५) क्षयोपशम मे पडित वीर्य की लब्धि होती है फिर (खओव समिया वाल प० वीरिय लद्धी) २६ क्षयोपशम भाव से वाल पडित की वीर्य की लब्धि होतीहै २६ अर्थात् जो अज्ञानता से मिथ्यात्व में परिश्रम किया जाता है उसे वाल वीर्य कहते है जो ज्ञान से सम्यग् दर्शन में परिश्रम किया जाताहै वे पडित वीर्यहोता है २ जो दश व्रति जन परिश्रम करतेहै उन्हें वाल वीर्य कहते हैं ३ । और (खओवसमिया सोइंदियलद्धी २७) क्षयोपशम से श्रोतेंद्रिय की लब्धि प्राप्त होती है और अर्थात जो श्रुत इद्रिय में सुनने की शक्ति है वह भी क्षयोपशम भाव से होती है इसी प्रकार-(खओवसमिया चक्खिंदियलद्धी २८) क्षयोपशम स चक्षुरिंद्रिय की लब्धि होती है २८ (खओवसमिया घाणिंदिय लद्धी २६) क्षयोपशम से घ्राणेंद्रिय की लब्धि होती है २६ (खओवसमिया जिब्भिदिय लद्धी ३०)क्षयोपशम से रसेनद्रिय की लब्धि होती है ३० (खओव समियाफास सिंदियलद्धी ३१) क्षयोपशम से स्पर्शेन्द्रिय लब्धि होती है ३१ (खओवसमिया आयारधरे ३२) क्षयोपशम से अचारांग सूत्र के धरने की लब्धि होती है अर्थात् आचारांग के पठन करने की शक्ति भी क्षयोपशम भाव पर

निर्भर है इसी प्रकार (एव सुयगडे ३३) सूत्र कृताग की लब्धि ३३ (ठाणा गधरे ३४) स्थानाग की लब्धि ३४) (समवांग धरे ३५) समवायांग सूत्र के धारने की शक्ति ३५ (विवाह पएणतिधरे ३६) विवाह प्रज्ञप्ति के धारने की लब्धि ३६ (एव नामा धम्म कहा ३७) इसी प्रकार ज्ञाता धर्म कथांग की धारने की लब्धि ३७ (उवासगदसा ३८) उपासक दशाग के धारने की लब्धि ३८ (अत गडदसाउ ३९) अतगड दशाग के धारने की लब्धि ३९ (अणुत्तरो वावा इयदसाउ ४०) अनुतरो ववाइ दशाग सूत्र ४० (पराह वागरे ४१ प्रश्न व्याकरणाग सूत्र ४१ (खओवसमिया विवागधरे ४२) क्षयोपशम से ही विपाक सूत्र के धारने की लब्धि और (खओवसमिया दिट्ठीवायधरे ४३) क्षयोपशम से दृष्टि वादाग के धारने की लब्धि उत्पन्न होती है और (खओव समिया नवपुव्वधरे ४४) क्षयोपशम से नव पूर्व धारने की लब्धि (जाव दस चउपुव्वी ४९) यावत चर्दश पूर्व पर्यंत क्षयोपशम से ही धारने की लब्धि होती है अर्थात ११ १२-१३ १४ इन पूर्वों के धारने की लब्धि भी क्षयोपशम भाव मे होती है और (खओवसमिया गणी वायतए ५०) क्षयोपशम भाव से गणिपद वा वाचकपद की प्राप्ति होती है क्योंकि पावन्मात्र उपाधियें है वे सर्व क्षयोपशम भाव से ही प्राप्त होती हैं ५० (सेत खओवसमे निप्फन्ने सेत खओवसमिए नामे) सो यही क्षयोपशम निष्पन्न भाव है और इसी स्थान पर क्षयोपशम भाव की समाप्ति है क्योंकि कर्मों क क्षयोपशम भाव से ही उक्त वस्तुओं की प्राप्ति होती है ।

भावार्थ—क्षयोपशम भाव भी दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि एकतो क्षयोपशम भाव द्वितीय क्षयोपशम निष्पन्न भाव अत क्षयोपशम भाव उसे कहते हैं जो चारों घातिओं कर्म क्षयोपशम भाव को प्राप्त हो जाव तब क्षयोपशम भाव होता है जैसे कि—ज्ञानावरणीय कर्म १ दर्शनावरणीय कर्म मोहनीय कर्म ३ अतराय कर्म अपितु क्षयोपशम निष्पन्न भाव उसका नाम है जो क्षयोपशम भाव होने पर फलों की प्राप्ति होती है उसको क्षयोपशम निष्पन्न भाव कहते हैं सो क्षयोपशम भाव के निम्न लिखित फल है चार ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन तथा सम्यक् दर्शन मिथ्या दर्शन सममिथ्या दर्शन सामा यिक चरित्रच्छेदोपस्थानीय चारित्र परिहार विसुद्धि चारित्र सूक्ष्म सपराय चारित्र और क्षयोपशम भाव से चारित्रा चरित्र (देश वृति) की लब्धि पुन

पाचों अतरायों का क्षयोपशम होना इसी प्रकार बाल वीर्य पडित वीर्य बाल पडित वीर्य पाचों इद्रियों की पूर्ण शक्ति का होना द्वादशाग वाणी का अध्ययन करना और क्षयोपशम भाव से नव पूर्व से चतुर्दश पूर्व के पठन की शक्ति का होना और गणि आदि उपाधियों का मिलना यह सर्व क्षयोपशम भाव से फल उत्पन्न होते हैं और इन्हीं को क्षयोपशम निष्पन्न भाव कहते है अतः विचारणीय इतना ही कथन है कि सम्यग् दृष्टि जीवों को तो ज्ञानादि की लब्धियें उत्पन्न होती है मिथ्या दृष्टि जीवों को तीन अज्ञान मिथ्या दर्शन आदि उत्पन्न होते हैं और यह भाव ससारी सर्व जीवों को होता है इसका लक्षण यह है कि कुछ प्रकृतियें क्षय हुई हों और कुछ उपशम हुई हों अब इसके पीछे पारिणामिक भाव का विवर्ण किया जाता है ॥

॥ अथ पारिणामिक भाव विषय ॥

मूल-सेकित पारिणामिए भावे २ दुविहे प० त० साइय पारिणामिय अणादिय पारिणामिण्य सेकित्त सादि पारिणामिय २ अणेगविहे प० त० जुन्नासुरा जुन्नधय जुन्नत दुल्लाचेव-अम्भाय अब्भरुक्खा जुन्नगुलाम्भागधव्व नगराय १ उकावाया ढिमादाहा विज्जुयागज्जिया निग्धाया जूवाजक्खा लिता धूमिया महियारओग्घाया चन्दोवरागा सूरो वरागा चदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचदा पडिसूरा इन्द्रधणु उदगमच्छाकविहसिया अमोहा वासावास धरागामो नगरो घडो पव्वंडपापालो भवणो निरयापासा उरपणप्प भामक्करप्पभा वालुपप्पहा पकप्पभा धूमप्पभा तमातम तमा सोहम्मे कप्पे ईसाणोजाव आणपपाणप आरणाप अच्चुरागेवेज्जए अणुत्तरे इसाप्पभाए परमाणुपोग्गलेय दुप्पएसिये जावदस पएसिये सखेज्ज पएसिये असखेज्ज पएसिये अणत पएसिये सेतसादिये पारिणामिए सेकित्त अणादिय पारिणामिए अणेग विहे प० त० धम्मत्थि

काय १ अधम्मत्थिकाय २ आगासत्थिकाय ३ जीवात्थिकाय ४ पुग्गलत्थिकाय ५ अद्धासमए ६ लोए ७ अलोय ८ भवसिद्धिया ९ अभव सिद्धिया १० सेत अणादिय पारिणामिय सेत पारिणामिए भावे ॥

पदार्थ-(सेकिंत पारिणामिय भावे २ दुविहे प० तं०) अब क्षयोपशम भाव के पश्चात् पारिणामिक भाव का विवर्ण करते हैं शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् पारिणामिक भाव कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है गुरु कहते हैं पारिणामिक भाव दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि (साइय पारिणामिए य अणाइय पारिणामिए य) एक सादि पारिणामिक भाव है द्वितीय अनादि पारिणामिक भाव है सादि पारिणामिक भाव उसे कहते हैं जो पुद्गल सादि सान्त भाव में ठहरते हैं उनको सादि पारिणामिक भाव कहते हैं अत जो अनादि अनादि काल से परिणत हो रहे हैं और द्रव्यार्थिक नयापेक्षया तद्वत् रहते हों उन्हें अणादि पारिणामिक भाव कहते हैं अब प्रथम सादि पारिणामिक भाव का स्वरूप दिखाया जाता है (सेकिंत सादि पारिणामि २ अणेग विहे प० तं०) (प्रश्न) सादि पारिणामिक भाव कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) सादि पारिणामिक भाव अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे-(जुन्नसुरा *जुन्नगुला) जीर्ण सुरा जीर्ण गुड क्योंकि सादि पारिणामिक उसे कहते हैं जो द्रव्य परिणमन शील होते हैं उन्हें सादि पारिणामिक भाव कहते हैं जैसे कि जवसुरा के परिणमन की भी आदि है और जीर्ण भाव की भी आदि है अर्थात् जब नूतनसुरा उत्पन्न की गई है तब उसमें जीर्ण भाव भी अवश्य है क्योंकि परमाणु परिणमन शील होते हैं जीर्ण शब्द इस लिये सूत्र में दिया गया है कि जिज्ञासुओं को शीघ्र बोध होजावे इसी प्रकार गुड के भी स्वरूप को भी जानना चाहिये अपितु जिसका आदि है उस पर्याय का अंत भी साथ है इसीलिये (जुण्णत दुलाचेव) जीर्ण तण्डुल आदि को भी निश्चय ही प्राग्वत् जानना चाहिये अब इसी प्रकार के उदाहरण और भी दिखलाए जाते हैं ॥

* नोट—उन्नीय ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० १०२ । जीर्ण शब्दे इत उद् भवति ॥

(अभ्भाग अम्भ रुक्खा) बादलों का परिणमन होना तथा वृक्षों के आकार पर बादलों का होजाना (सज्झा) सध्या के समय बादलों का नाना प्रकार से रगों में परिणमन होना (गंधर्व नगराय) गंधर्व नगर के समान आकाश में बादलों का तथा अन्य प्रकार के परमाणुओं का परिणमन होना ! (उक्का वाया) उल्कापात आकाश से अग्नि का पतित होना (दिसा दाहा] दिग्दाह होना (विज्जुआ) विद्युत् का होना (गज्जिया) गर्जित शब्द होना (निग्घाया) निर्घात होना तथा (जुवा) शुक्ल पक्ष के तीन दिन पर्यन्त बाल चन्द्र का रहना अर्थात शुक्ल पक्ष के तीन दिन पर्यन्त चद्र को बालचद्र कहते हैं (जक्खा लितए) आकाश में यक्षकृत कार्य होने (धूमिया) धूम का होना (महिया) स्नेहका पतित होना तथा श्वेतरजादिका होना तथा ओसका गिरना (रओग्घाया) रजघात का होजाना (चदोवरागा सूरोवरागा) चद्र सूर्यों को ग्रहण लगजाना बहुवचन इसलिये ग्रहण किया गया है कि सार्द्धद्वीपवर्ती द्वीपों में सर्व चद्र सूर्यों को सम काल में ग्रहण होता है (चदपरिवेसा सूरपरिवेसा) चद्र सूर्य का परिवेष होना अर्थात परिवारका होना (कुडल होजाना) (पडिचदा पाडिसरा) दो चद्र दो सूर्यों का आकाश में दृष्टि गोचर होना (इद्र धनु) इद्र धनुष का होना (उदगमच्छा) उदकमत्स्य उसे कहते हैं जो इद्र धनुप का खड होता है (कवि हसिया) आकाश म भयानक शब्दों का होना तथा बादलों के विना विद्युत् सपतन होना (अमोहा) आकाश में नाना प्रकार के चिन्हों का दीखना (वासावासधरा) भरतादि क्षेत्र और हेमवतादि वर्षधर पर्वत यह सादिपारिणामिक इसलिये है कि परमाणुओं की उत्कृष्ट स्थिति असख्यात काल पर्यन्त होती है फिर वे अवश्यही चलनशील होजाते हैं इसी अपेक्षा से इन को सादि परिणाम में रक्खा गया है किन्तु द्रव्यार्थिक नायापेक्षा वे भर तादि क्षेत्र और चून है मतादि पर्वत शाश्वत है नित्य हैं अत. पर्यायार्थिक नया पेक्षा से वेसादि पारिणामिक भाव में हैं इसी प्रकार आगे भी सयोजना करनी चाहिये (गामो) शुल्क से (अगात) सहित होता है (नगरो) जो शुल्क से युक्त होता है घर (घर) गृह पव्वड (पर्वत (पयालो) पाताल कलश (भवण) भवनपत्यादि देवों के भवन (निरय नरक और नरकों के आवास (पासाउ) प्रासाद-(रयणप्प भासक्करपभा) रत्न प्रभाशर्कर प्रभा (वालुप्पहा पकप्पहा) वालुप्रभा पकप्रभा, धूमप्पभा तमप्पभा तमतमाप्पभा

धूम प्रभातम प्रभातम तमप्रभा अब देवों का स्वरूप लिखते है (सोहम्मे कप्पे) सुधर्म कल्प (ईसाणे) ईशान कल्प (जाव आणए पाणए आरणए अच्चुए) यावत् आनत देवलोक, प्राणत देवलोक, आरणय देवलोक, अच्युत देवलोक (गेवेज्जए नव ग्रैवेयक देवलोक (अणुत्तर) पाच अनुत्तर विमान और (इसीप्पभाए) ईषत् प्रभा पृथिवी परमाणु पोग्गले (परमाणुपुद्‌गल वा (दुप्पए सिए) द्विप्रदेशिक स्कध (जाव दस पएसिए) यावत् दश प्रदेशिक स्कध (सखेज्ज पएसिए) सख्यात प्रदेशिक स्कध (असखेज्ज-पएसिए) असख्यात प्रदेशिक स्कध (अणतप्पएसिए) अनत प्रदेशिक स्कध यह सर्व (सेत सादि पारिणामिए) सादि पारिणामिक भाव में हैं क्यों कि यह सर्व कथन पर्यायार्थिक नयापेक्षा से है अपितु द्रव्यार्थिक नया पेक्षा उक्त सर्व कथन शाश्वत और नित्य है अत पुद्‌गल द्रव्य की उत्कृष्ट स्थिति असख्यात काल पर्यन्त होती है फिर यह परिवर्तन शील हो जाता है इसी लिये उक्त कथन सादि पारिणामिक भाव में रक्खा गया है। अब अनादि पारिणामिक भाव का कथन किया जाता है क्योंकि अनादि पारिणामिक भाव उसे कहते हैं जो अनादि काल से उसी भाव में परिणमन हो रहे है कभी भी अन्य भाव में परिणत नहीं होते उस अनादि पारिणामिक भाव कहते हैं जैसे कि (सेकिंत अणादि पारिणामिए) अथ सादि पारिणामिक मिक भाव के पीछे शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! अनादि पारिणामिक भाव किसे कहते है गुरु ने उत्तर दिया कि भो शिष्य ! (अणेग विहे पएणत्ते-तजहा) अनादि पारिणामिक भाव अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि-(धम्मत्थिकाय) धर्मास्तिकाय १ (अहमत्थिकाय) अधर्मास्तिकाय २ (आगासत्थिकाय ३) आकाशास्तिकाय ३ (जीवत्थिकाय) जीवास्तिकाय ४ (पुग्गलत्थिकाय) पुद्‌गलास्तिकाय ५ (अद्धा समय) काल (लोए) लोक (अलोए) अलोक ८ (भवसिद्धिया ९ अभवसिद्धिया १०) भव्य सिद्ध भाव ९ और अभव्य सिद्ध भाव १० अर्थात् भव्य भाव अभव्य भाव अत मोक्ष के योग्य और अयोग्य यह सर्व सादि पारिणामिक भाव नहीं है अत एव यह सर्व (सेत अणादिय पारिणामिए सेत परिणामिए नामे) अनादि पारिणामिक भाव हैं क्योंकि यह सर्व पदार्थ अनादि काल से स्वगुण में ही स्थित हैं किन्तु पुद्‌गल द्रव्य के समान परिवर्तन शील नहीं हैं यदि यह शका

उत्पन्न हो कि सादि पारिणामिक भाव में भी सर्व पुद्गल द्रव्य की पर्यायों का विवर्ण किया गया है और अनादि पारिणामिक भाव में पुद्गल द्रव्य को अनादि पारिणामिक भाव में दिखलाया गया है इसका कारण क्या है इस बात का समाधान यह है कि जो सादि पारिणामिक भाव में विवर्ण हैं वह सर्व पर्यायार्थिक नयापेक्षा से सिद्ध है अतः जो अनादि पारिणामिक भाव में पुद्गल द्रव्य को सम्मिलित किया गया है इसका कारण यह है कि अनादिकाल से पुद्गल द्रव्य परिवर्तन शील है और यह अपना गुण किसी और द्रव्य को नहीं देता इसीलिये इस द्रव्य को दोनों भावों में माना गया है सो इसी स्थान पर पारिणामिक नाम का समास पूर्ण हो गया है और इसी को पारिणामिक भाव कहते हैं ॥

भावार्थ-पारिणामिक भाव दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है सादि पारिणामिक भाव और अनादि पारिणामिक भाव सादि पारिणामिक भाव उसका नाम है जो द्रव्य परिवर्तन शील हैं उनकी नाना प्रकार की आकृतियों का हो जाना उसे सादि पारिणामिक भाव कहते हैं तथा जो पदार्थ द्रव्यार्थिक नया पेक्षा नित्य और ध्रुव है परंतु पर्यायार्थिक नया पेक्षा से अनित्यता भी दिखला रहे हैं उस अनित्यता की अपेक्षा से उन्हें भी सादि पारिणामिक भाव वाले कह सकते हैं अतः अनादि पारिणामिक भाव उसका नाम है जो पदार्थ अनादि काल से अपने गुण में ही स्थित हैं पर गुण में परिवर्तनता नहीं करते सदैव काल अपनी २ पर्यायों में ही रहते हैं उन्हें अनादि पारिणामिक भाव कहते हैं अब इनके पृथक् पृथक् उदाहरण कहते है। जीर्ण सुरा जीर्ण गुड़, जीर्ण घृत, और चावल, बादल, आकाश में बादलों की वृक्षों की आकृति का होना, सध्या गांधर्वनगर उल्कापात दिग्दाह विद्युत् स्तनित शब्द निर्घात (रजधूलि) युव, यक्षाकार, धूममही, रजघात चन्द्रग्रहण सूर्यग्रहण चन्द्र परिवेप सूर्य परिवेष, प्रतिचन्द्र और प्रतिसूर्य, इन्द्र धनुष और उसका खंड आकाश में भयानक शब्द आमोघ और भरतादिवास वर्ष धर पर्वत ग्राम, नगर घर पाताल भूमि भवन नरक प्रासाद ७ सातों नरक स्थान २६ देवलोक सिद्ध शिला परमाणु पुद्गल यावत् अनन्त प्रदेशिक स्कंध यह सर्व सादि पारिणामिक भाव में है क्योंकि पर्याय परिवर्तन शील है इसी लिये इनको सादि पारिणामिक माना गया है और अनादि पारिणामिक भाव निम्न लिखितानुसार है।

षट् द्रव्य लोक अलोक भव्य, अभव्य यह दश अक अनादि पारिणामिक है अत यह परिवर्तन शील नहीं है अब इसके आगे सन्निपातिक नाम का विवर्ण किया जाएगा क्योंकि पारिणामिक भाव का स्वरूप सम्पूर्ण हो गया है ॥

॥ अथ सन्निपातिक भाव (नाम) विषय ॥

मूल-सेकिंत सन्निवाइय नामे २ जन्न एएसि चेव उदइय उवसमिएखइयखओवसमिएपारिणामियाणं भावाण दुग संजोएण तियसजोएणं चउक्कसजोएण पचकसजोएणं जेण निप्फज्जइ सव्वे से सन्निवाइए नामे २ तत्थण दसदुग संजोगा दस तिगसजोगा पंच चउकसजोगाए कंयपच संजोगा तत्थण जे ते दसदुग सजोगा तेण इमे अत्थि नामे उदइएउवसमनिप्फन्ने १ अत्थि नामे उदइयखइगनिप्फन्ने २ अत्थि नामे उदइय खओवसमनिप्फन्ने ३ अत्थि नामे उदइय पारिणामिएनिप्फन्ने ४ अत्थि नामे उवसमिएखइयनिप्फन्ने ५ अत्थि नामे उवसमिएखओवसमनिप्फन्ने ६ अत्थि नामे उवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ७ अत्थि नामे खइयखओवसमनिप्फन्ने ८ अत्थि नामे खइयपारिणामिएनिप्फन्ने ९ अत्थि नामे खओवसमिएपारिणामिए निप्फन्ने १० कयरे से नामे उदइयउवसमनिप्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया एस ण से नामे उदइयउवसमनिप्फन्ने १ कयरे से नामे उदइयखइयनिप्फन्ने उदइयत्ति मणुसे खइयं सम्मत्त एस ण सेना मे उदइयखइयनिप्फन्ने २ कयरे से नामे उदइय खओवसमनिप्फन्ने उदइयत्ति मणुस्से खओवसमियाइ इन्दियाइं एस ण से नामे उदइयखओवसमिएनिप्फन्ने ३ कयरेसे नामे उदइय

पारिणामिए निप्फन्ने उदइयत्तिमणुस्सेपारिणामिएजीवे एस णं से नामे उदइयपारिणामिएनिप्फन्ने ४ कयरे से नामे उवसमिएखइय निप्फन्ने उवसता कसाया खइय सम्मत्त एस ण से नामे उवस मिये खइयनिप्फन्ने ५ कयरे से नामे उवसमिएखओवसामिएनि प्फन्ने वउसान्त कसाया खओवसमियाइ इन्दियाइ एस ण से नामे उवसमिए खओवसमानिप्फन्ने कयरे से नामे उवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने उवसन्त कसाया पारिणामिए जीवे एस णं से नामे उवसमपारिणामिणनिप्फन्ने ७ कयरे से नामे खइय खओवसमनिप्फन्ने खइय सम्मत्तं खओवसमियाइ इन्दियाइ एस ण से नामे खइय खओवसमनिप्फन्ने ८ कयरे से नामे खइय पारिणामिएनिप्फन्ने ? खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे एस ण से नामे खइयपारिणामिएनिप्फन्ने ९ कयरे से नामे खओवसमियपारिणामिएनिप्फन्ने खओवसमियाइ इन्दियाइ पारिणामिए जीवे एस णं से नामे खओवसमिएपारिणामिए निप्फन्ने ॥ १० ॥

पदार्थ-(सेकिंत सन्निवाइए नामे २) अब पारिणामिक भाव के पश्चात् सान्निपातिक भाव का विवर्ण किया जाता है क्योंकि सान्निपातिक भाव उसे कहते हैं जो औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम पारिणामिक भावों के मिलने से भग बनते हैं उन्हें सन्निपातिक भाव कहते हैं इसी बात को सूत्र में स्पष्ट किया है जैसे कि शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! सान्निपातिक किसे कहते हैं (उत्तर) (जन्न एएसिं चेव उदइय उवसमिय खइय खओवसामिए पारिणामियाए भावाण दुग सजोएण, तिय सजोएण, चउक्क सजोएण, पचक्क सजोएण जेण निप्पज्जइ सव्व से सन्निवाइए नामे) इन औदयिक २ औपशमिक क्षायिक ३ क्षयोपशमिक ४ और पारिणामिक भावों के मिलने से जो द्विक् सयोगी, तीन सयोगी, चार सयोगी, पाच सयोगी भग बनते है उन सबका सन्नि-

पातिक नाम होता है परन्तु उनमें से (दस दुग सजोगा) दश भग द्विसयोगी (दसतिग् सजोगा) दश भंग तीन सयोगी होते हैं और (पच चउक्क सजोगा) पाच भग चार सयोगी होते है अपितु (एक्के पचसंजोगा) पाच सयोगी एकही भग होता है (तत्थण जे ते दस दुग सजोगा ते ण इमे) उन सर्व भगों में से जो दश भग द्विक् सयोगी हैं वह इस प्रकार से है जो आगे कहे जाते हैं-- (अत्थि नामे उदयिय उवसमनिप्फन्ने) जो औदयिक और औपशमिक भाव के मिलने से नाम उत्पन्न होता है उसको अस्ति औदयिक औपशमिक सान्निपातिक भाव कहते हैं इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये (अत्थि नामे उदइय,खइय निप्फन्ने २) अस्तिनामे औदयिक क्षायिक निष्पन्न है (अत्थि नामे उदइय खओवसमनिप्फन्ने ३) अस्ति औदयिक क्षयोपशम नाम है ३ (अत्थि-नामे उदइय पारिणामिए निप्फन्ने ४) अस्ति औदयिक पारिणामिक निष्पन्न नामे है ४ (अत्थि नामे उवसमिएखइयनिप्फन्ने ५) अस्ति औपशमिक क्षायिक निष्पन्न नाम है ५ (अत्थि नामे उव समिए खओवसमनिप्फन्ने ६) अस्ति औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ७ (अत्थि नामे खइयखओव समनिप्फन्ने ८) अस्ति क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ८ (अत्थि नामे खइय पारिणामिए निप्फन्ने ९) अस्ति क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न नाम है सो यह भग सिद्ध भगवतों में होता है क्योंकि क्षायिक सम्यक्त पारिणामिक भाव में जीव है सो यह भग सिद्ध में ही होता है आपितु शेष भग केवल दिग् दर्शन मात्र ही कथन किये गये हैं इस लिये दो सयोगी केवल नवमा भग वियमान रूप है शेष भग अविद्यमान रूप हैं तथा उदय मनुष्य गति १ क्षयोपशमिक इन्द्रिय २ पारिणामिक जीव ३ जघन्यता से यह भग सर्वत्र विद्यमान है किन्तु सयोगी केवल नवमें भग की अस्ति है शेष नव भग कथन मात्र ही है जैसे कि (अत्थि नामे खओवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने १०) अस्ति क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम है १० यह दश भग दो सयोगी दिखलाए गये हैं अब शिष्य ने पुन: इस स्वरूप को पूछ कर निर्णय किया है जैसे कि-कयरे से नाम उदइय उवसम निप्फन्ने उदयइयत्ति मणुस्से उवसत कसाया एस ण से नामे उदइयउवसमनिप्फन्ने १) हे भगवन् ! जो औदयिक और औपशमिक निष्पन्न है वह कौनसा नाम है गुरु कहते हैं कि भो शिष्य औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशम भाव में उपशात कषाय है इसलिये

यही नाम औदयिक उपशम निष्पन्न कहा जाता है १ किन्तु यह भग दिग दर्शन मात्र ही है क्योंकि दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृतियें उपशम भाव में सम्भव हो सकती है किन्तु पारिणामिक भाव इस में नहीं है इसलिये यह भग केवल दिग्दर्शन मात्र ही है इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये १ ॥ (कयरे से नामे उदइयखइय निप्फन्ने उदइयएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त एस ण सेनामे उदइयखइयनिप्फन्न १) (प्रश्न) औदयिक और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) औदयिक भाव में मनुष्य गति है और क्षायिकभाव समम्यक्त्व है इसलिये इन स उत्पन्न हुए औदयिक क्षायिक निष्पन्न नाम होता है २ (कयरे से नामे उदइए खउवसमनिप्फन्ने उदइयत्तिमणुस्से खओवसमियाइ इंदियाइ एस ण से नामे उदइय खओवसमिए निप्फन्ने ३) (प्रश्न) औदयिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) उदय भाव में मनुष्य गति है क्षयोपशम भाव में इंद्रिय हैं सो यही औदयिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ३) (कयरेसे नाम उदइय पारिणामिएनिप्फन्ने) औदयिक पारिणामिक निष्पन्ने नाम कौनसा है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइय पारिणामिए निप्फन्ने ४) औदयिक भाव में मनुष्य भाव है पारिणामिक भाव में जीव है सो इसी का औदयिक पारिणामिक निष्पन्न नाम है ४ (कयरे स नामे उवसमिएखइयनिप्फन्ने] उपशम और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) उवसात कसाया खइय सम्मत्त एस ण से नामे उवसमिए खइयनिप्फन्ने ५) उपशान्त कषाय क्षायिक सम्यक्त्व इन्हीं का नाम औपशमिक क्षायिक निष्पन्न नाम है ५ (कयरे से नामे उवसमिएखओवसमनिप्फन्ने उवसंता कसाया खओवसमियाइ इन्दियाइ एस ण स नाम उवसमिएखओव समिएनिप्फन्न ६) (प्रश्न) औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर जैसे उपशमक कषाय हैं क्षयोपशमिक भाव में इन्द्रिय हैं सो यही औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ६ । (कयरे स नाम उवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने) (प्रश्न) औपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं (उवसान्त कसाया पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने ७) (उत्तर) उपशम कषाय हैं पारिणामिक जीव है सो इसी का नाम उपशम पारिणामिक निष्पन्न भाव है ७ (कयरे से नामे खइयख ओवसमिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) क्षायिक और क्षयोपशमिक निष्पन्न

नाम किसे कहते हैं (खइय सम्मत्त खओव समिआइ इन्दिय इ एस ण से नामे खइय खओव समनिष्फन्न) ८ (उत्तर) क्षायिक सम्यक्त्व क्षयोपशमिक इन्द्रिय सो इसी का नाम क्षायिक क्षयोपशमिक भाव है ८ (कयरेसे नामे खइय पारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) क्षायिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं (उत्तर) (खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे एस णसे नामे खइय पारिणामिएनिप्फन्ने ९) क्षायिक सम्यक्त्व पारिणामिक जीव है इन दोनों के निष्पन्न हुए नाम को क्षायिक पारिणामिक भाव कहते हैं सो यह द्विसयोगी नवमा भग सिद्ध भगवन्तों में होता है शेष भग केवल दर्शन मात्र हैं (कयरे से नामे खओवसमिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) कौनसा क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम है (उत्तर) खओवसमियाइ इंदिया पारिणामिए जीव एस णसे नामे खओवसामिएपारिणामिएनिप्फन्ने १०) क्षयोपशमिक भाव में इन्द्रिय हैं पारिणामिक जीव है सो इनके निष्पन्न हुए नाम को क्षयो-पशमिक पारिणामिक भाव कहते हे १० इन सर्व द्विसयोगी भगों में केवल नवमा भग सिद्ध है शेप भग दर्शन मात्र हैं अब तीन सयोगी दश भगो का विवेचन किया जाता है ॥

भावार्थ सान्निपातिक भाव उसे कहते हैं जो औदयिक १ औपशमिक २ क्षायिक ३ क्षयोपशमिक ४ पारिणामिक ५ इनके सयोग से द्वि सयोगी, तीन सयोगी, चार सयोगी पाच सयोगी भग उत्पन्न होते हैं जिसमें दश भग सयोग वाले हैं दश भग तीन सयोग वाल हैं ५ पाच भग चार सयोगी हैं अपितु एक भग पाच सयोगी है यह षड् विंशति भग सान्निपातिक भाव में कहे जाते हैं अब प्रथम दो सयोगी दश भगो का नाम लिखा जाता है । १ औद-यिक औपशमिक २ औदयिक क्षायिक ३ औदयिक क्षयोपशमिक ४ औदयिक पारिणामिक ५ औपशमिक क्षायिक ६ औपशमिक क्षायोपशमिक ७ औपशमिक पारिणामिक ८ क्षायिक क्षयोपशमिक ९ क्षायिक पारिणामिक यह भग सिद्ध भगवन्तों मे होता है १० क्षयोपशमिक पारिणामिक यह दश भग दो सयोगी जिसमें नवमा भग सिद्धों में है शेप भग दिग्दर्शन मात्र ही है और सर्व भगों के उदाहरण पदार्थ में दिये गये हैं अब तीन सयोगी भगों का विवरण किया जाता है क्योंकि दो भाव एकत्र करने से दो सयोगी भग बन जाते हैं तीन

यही नाम औदयिक उपशम निष्पन्न कहा जाता है १ किन्तु यह भग दिग् दर्शन मात्र ही है क्योंकि दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृतिय उपशम भाव में सम्भव हो सकती है किन्तु पारिणामिक भाव इस में नहीं है इसलिये यह भग केवल दिग्दर्शन मात्र ही है इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये १ ॥ (कयरे से नामे उन्दइयसइय निप्फन्ने उदइयएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त एस ण सेनामे उदइयखइयनिप्फन्न १) (प्रश्न) औदयिक और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) औदयिक भाव में मनुष्य गति है और क्षायिकभाव सम्म्यकृत्व है इसलिये इन स उत्पन्न हुए औदयिक क्षायिक निष्पन्न नाम होता है २ (कयरे से नामे उदइए खउवसमनिप्फन्ने उदइयत्तिमणुस्से खओवसमियाइ इदियाइ एस ण से नामे उदइय खओवसमिए निप्फन्ने ३) (प्रश्न) औदयिक क्षयोपशम निप्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) उदय भाव में मनुष्य गति है क्षयोपशम भाव में इंद्रिय हैं सो यही औदयिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ३) (कयरे से नाम उदइय पारिणामिएनिप्फन्ने) औदयिक पारिणामिक निष्पन्ने नाम कौनसा है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइय पारिणामिए निप्फन्ने ४) औदयिक भाव में मनुष्य भाव है पारिणामिक भाव में जीव है सो इसी का औदयिक पारिणामिक निष्पन्न नाम है ४ (कयरे से नामे उवसमिएखइयनिप्फन्ने] उपशम और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) उवसात कसाया खइय सम्मत्त एस ण से नामे उवसमिए खइयनिप्फन्ने ५) उपशान्त कषाय क्षायिक सम्यकृत्व इन्हीं का नाम औपशमिक क्षायिक निष्पन्न नाम है ५ (कयरे से नामे उवसमिएखओवसमनिप्फन्ने उवसंता कसाया खओवसमियाई इन्दियाइ एस ण स नामे उवसमिएखओव समिएनिप्फन्न ६) (प्रश्न) औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर जैसे उपशमक कषाय हैं क्षयोपशमिक भाव में इन्द्रिय हैं सो यही औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम है ६ । (कयरे से नामे उवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने) (प्रश्न) औपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं (उवसान्त कसाया पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने ७) (उत्तर) उपशम कषाय हैं पारिणामिक जीव हैं सो इसी का नाम उपशम पारिणामिक निष्पन्न भाव है ७ (कयरे से नामे खइयख ओवसमिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) क्षायिक और क्षयोपशमिक निष्पन्न

नाम किसे कहते हैं (खइय सम्मत्त खओव समियाइ इन्दिय इ एस ण से नामे खइय खओव समनिप्फन्न) ८ (उत्तर) क्षायिक सम्यक्त्व क्षयोपशमिक इन्द्रिय सो इसी का नाम क्षायिक क्षयोपशमिक भाव है ८ (कयरेसे नामे खइय पारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) क्षायिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते है (उत्तर) (खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे एस णमे नामे खइय पारिणामिएनिप्फन्ने ९) क्षायिक सम्यक्त्व पारिणामिक जीव है इन दोनों के निष्पन्न हुए नाम को क्षायिक पारिणामिक भाव कहते हैं सो यह द्विसंयोगी नवमा भग सिद्ध भगवन्तों में होता है शेष भग केवल दर्शन मात्र हैं (कयरे से नामे खओवसमिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) कौनसा क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम है (उत्तर) खओवसमियाइ इदिया पारिणामिए जीव एस णसे नामे खओवसामिएपारिणामिएनिप्फन्ने १०) क्षयोपशमिक भाव में इन्द्रिय हैं पारिणामिक जीव है सो इनके निष्पन्न हुए नाम को क्षयो-पशमिक पारिणामिक भाव कहते है १० इन सब द्विसंयोगी भगों में केवल नवमा भग सिद्ध है शेष भग दर्शन मात्र हैं अब तीन सयोगी दश भगो का विवेचन किया जाता है ॥

भावार्थ सान्निपातिक भाव उसे कहते हैं जो औदयिक १ औपशमिक २ क्षायिक ३ क्षयोपशमिक ४ पारिणामिक ५ इनके सयोग से द्वि सयोगी, तीन सयोगी, चार सयोगी पाच सयोगी भग उत्पन्न होते हैं जिसमें दश भग सयोग वाले हैं दश भग तीन सयोग वाले हैं ५ पाच भग चार सयोगी हैं अपितु एक भग पाच सयोगी है यह षट् विंशति भग सान्निपातिक भाव में कहे जाते हैं अब प्रथम दो सयोगी दश भगो का नाम लिखा जाता है । १ औद-यिक औपशमिक २ औदयिक क्षायिक ३ औदयिक क्षयोपशमिक ४ औदयिक पारिणामिक ५ औपशमिक क्षायिक ६ औपशमिक क्षायोपशमिक ७ औपशमिक पारिणामिक ८ क्षायिक क्षयोपशमिक ९ क्षायिक पारिणामिक यह भग सिद्ध भग वन्तों में होता है १० क्षयोपशमिक पारिणामिक यह दश भग दो सयोगी जिसमें नवमा भग सिद्धों में है शेष भग दिग्दर्शन मात्र ही हैं और सर्व भंगों के उदाहरण पदार्थ में दिये गये हैं अब तीन सयोगी भंगों का विवरण किया जाता है क्योंकि दो भाव एकत्व करने से दो सयोगी भग बन जाते हैं तीन

भाव एकत्र करने से तीन सयोगीभग उत्पन्न होते हैं इसलिये तीन सयोगी भगों का विवरण किया जाता है।

॥ अथ तीन सयोगी भग विषय ॥

तत्थ ण जे ते दसतिगसजोगा ते ण इमे अत्थि नामे उदइयउवसमिएखइयनिप्फन्ने १ अत्थि नामे उदइयउवसमिए खओवसमेनिप्फन्ने २ अत्थि नामे उदइयउवसमिएपारिणामिय निप्फन्ने ३ अत्थि नामे उदइयखइयखओवसमनिप्फन्ने ४ अत्थि नामे उदइयखइयपारिणामिएनिप्फन्नेय ५ अत्थि नामे उदइयखओवसमियपारिणामियनिप्फन्ने ६ अत्थि नामे उवसमियखइयखओवसमनिप्फन्ने ७ अत्थि उवसामिएखइयपारिणामियनिप्फन्ने ८ अत्थि नामे उवसखओवसमियपारिणामियनिप्फन्ने ९ अत्थि . नामे खइय खओव समिए पारिणामिय निप्फन्ने १० कयरे से नामे उदइयउवमामियखइयनिप्फन्नेय उदइएत्ति मणुस्से उवसन्ता कसाया खइय सम्मत्त एस ण से नामे उदइएउवसमिएखइय निप्फन्नेय १ कयरे से नामे उदइय उवसमिएखओवसमिय निप्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खओवसमियाइ इन्दियाइ एस ण से नामे उदइय उवसमिएखओवसम निप्फन्ने २ कयरे से नामे उदइय ओवसमिए पारिणामिए निप्फन्ने उदइयत्ति मणुस्से उवसता कसाया पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइयखइयखओवसमनिप्फन्ने ३ एव उदइय खइयखओवसमिय ४ कयरे से नामे उदइय खइयपारिणामियनिप्फन्ने उदइयत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त

पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइयखइयपारिणामिय निष्फन्ने ५ कयरे से नामे उदइयखओवसमिएपारिणामिये निष्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से खओवसमियाइं इन्दियाइ पारिणामिय जीवे एस ण से नामे उदइयखओवसमिएपारिणामिएनिष्फन्ने ६, कयरे से नामे उवसामिएखइयखओव समिएनिष्फन्ने उपसन्ता कसाया खइयं सम्मत्त खओवसमियाइ इन्दियाइ एस णं से नामे उवसमियखइयखओव समनिष्फन्ने ७· कयरे से नामे उवसमियखइयपारिणामिए निष्फन्ने उवसता कसाया खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे,एस णं से नामे उवसमिएखइयपारिणामिएनिष्फन्ने ८ कयरे से नामे उवसमिएखओवसमिएपारिणामियनिष्फन्ने उवसता कसाया खओवसमियाइ इन्दियाइं पारिणामिए जीवे एस ण नामे उवसमियखओवसामिइयपारिणामिए निष्फन्ने ९ कयरे से नामे खइयखओवसमिएपारिणामिए निष्फन्ने खइय सम्मत्त खओवसमियाइ इन्दियाइं पारिणामिए जीवे एस ण से नामे खइयखओवसामिएपारिणामियनिष्फन्ने १० ॥

पदार्थ-(तत्यण जे ते दसतिग सयोगा तेण इमे) इन षट्विंशति भगों में जो दश तीन सयोगी भग हैं वह इसप्रकार से हैं (अत्थि नामे उदइयउवसमिए-खइय निष्फन्ने १) अस्ति औदयिक १ औपशमिक २ क्षायिक निष्पन्न नाम है) (अत्थि नामे उदइयउवसमिएखओवसमनिष्फन्ने २) औदयिक १ औपशमिक २ क्षयोपसमिकनिष्पन्न नाम है २ (अत्थि नामे उदइयउवसमिएपारिणामिए निष्फन्ने ३) औदयिक १ औपशमिक २ पारिणामिक ३ निष्पन्न एकनाम है ३ (अत्थि नामे उदइयखइयखओवसमनिष्फन्ने ४) औदयिक १ क्षायिक २ क्षयोपशमनिष्पन्न नाम है ४ (अत्थि नामे उदइयखइयपारिणामिएनिष्फन्ने

५ औदयिक १ क्षायिक २ और पारिणामिक निष्पन्न नाम है ५ यह भग केवली भगवान् में होता है क्योंकि औदयिक भाव में मनुष्य गति है क्षायिक भाव में केवल ज्ञान दर्शन चारित्र होता है पारिणामिक भाव में जीव होता है इसलिये पाचवा भग केवली भगवान में कहा जाता है और (अत्थि नामे उदइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ६) औदयिक १ क्षयोपशमिक २ पारिणामिक ३ निष्पन्न एक नाम होता है ६ यह भग चारों गतियों में होता है जैसे कि औदयिक भाव में कोई गति स्थापन करो १ क्षयोपशमिक भाव में इद्रिय होती है २ पारिणामिक भाव में जीव है ३ सो यह भग चारों गतियों में है जैसे कि मनुष्य गति १ तिर्यक् गति २ देव गति ३ नरक गति ४ शेष आठ भग दिग्दर्शन मात्रही हैं किन्तु किसी स्थान पर उनकी अस्तित्व नहीं होती केवल अस्तित्व उक्त दोनों भगो की है (अत्थि नामे उवसमिएखइय खओवसमनिप्फन्ने ७) औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न एक नाम होता है (अत्थि नामे उवसमिएखइयपारिणामिएनिप्फन्ने ८) औपशमिक क्षायिक और पारिणामिक भाव निष्पन्न एक नाम होता है ८ अत्थि नामे उवसमिए खओवसमिएनिप्फन्ने ६) औपशमिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न एक नाम होता है ६ (अत्थि नामे खइयखओवसमिएपारिणामियनिप्फन्ने१०) क्षायिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न एक नाम होता है १० यह तो तीन सयोगी केवल १० भग दिखलाये गये हैं अत इनके अर्थों का अब विवर्ण करते हैं। (कयरे से नामे उदइयउवसमिएखइयनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइय सम्मत्त एस ण से नामे उदइयउव समिएखइयनिप्फन्नेय १) औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशान्त कषाय है क्षायिक सम्यक्त्व है सो इसी का नाम औदयिक औपशमिक क्षायिक निष्पन्न नाम है १ (कयरे से नाम उदइयउवसमिएखओवसमनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदायिक औपशमिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम किस प्रकार से होता है (उत्तर) (उदइयत्ति मणुस्से उवसन्ता कसाया खओवसमियाइ इन्दियाइं) औदायिक भाव में मनुष्य गति है उपशम भाव में उपशान्त कषाय हैं क्षयोपशम भाव में इन्द्रिया है सो (एस ण से नामे उदइएउवसमिएखओवसमीनिप्फन्ने २) इसी को औदयिक औपशमिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कहते हैं २

(कयरे से नामे उदइय उवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइय खइयपारिणामिए निप्फन्ने ३) औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशम भाव में उपशान्त कषाय है पारिणामिक जीव है सो इन्हीं का नाम औदयिक क्षायिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम है ३ (कयरे से नामे उदइयखइयखओव समिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त खओवसमइन्दियाइ एस ण से नामे उदइयखइयखओवसमनिप्फन्ने ४) औदयिक भाव में मनुष्य गति है क्षायिक सम्यक्त्व और क्षयोपशम भाव में इन्द्रिया हैं सो इन्हीं को औदयिक क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम कहते हैं ४ (कयरे से नामे उदइयखइयपारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइयखइयपारिणामिएनिप्फन्ने ५) औदयिक भाव में मनुष्य गति है और क्षायिक भाव में क्षायिक सम्यक्त्व है और पारिणामिक भाव में जीव है सो इन्हीं को औदयिक क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न भाव कहते हैं ५) सो यह भाव केवली भगवानों में होता है क्योंकि औदयिक भाव में मनुष्य गति है क्षायिक भाव में क्षायिक सम्यक्त्व है और पारिणामिक भाव में जीव है सो यह भग श्री केवली भगवानों में है (कयरे से नामे उदइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव कौनसा है (उत्तर) (उदएत्ति मणुस्से खओवसमियाइ इदियाइ पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ६) औदयिक भाव में मनुष्य गति है क्षयोपशम भाव मे इन्द्रियां हैं और पारिणामिक भाव में जीव है सो इन्हीं करके उत्पन्न हुए नामको औदयिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक भाव कहते हैं ६ अतः यह भग चारों गतियों मे होता है जैसे कि औदयिक भाव में चारों गतियों म से कोई गति ले लो क्षयोपशमिक भाव में इन्द्रियां हैं और पारिणामिक भाव में जीव है इसी लिये चारों गतियों में यह भग होता है शेष तीन सयोगी आठ ८ भग दिग् दर्शन मात्र हैं (कयरे से नामे उवसमिए

खइएखओवसामिएनिप्फन्ने) औपशमिक क्षायिक और क्षयोपशमिक भाव किसे कहते हैं (उत्तर) (उवसता कसाया खइय सम्मत्त खओवसमिया इंदियाइ एस ण से नामे उवसामियखइएखओवसमनिप्फन्ने ७) उपशम भाव में कषाय है क्षायिक भाव में क्षायिक सम्यक्त्व है और क्षयोपशम में इन्द्रिया हैं सो इस नाम को औपशमिक क्षायिक और क्षयोपशमिक निष्पन्न भाव कहते हैं (कयरे से नामे उवसमिएखइयपारिणामिएनिप्फन्ने ७) (प्रश्न) औपशमिक क्षायिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव किसे कहते हैं (उत्तर) उवसता कसाया खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उवसमिएखइयपारिणामिएनिप्फन्ने ८) उपशांत कषाय है क्षायिक सम्यक्त्व है और पारिणामिक जीव है सो इस नाम को औपशमिक क्षायिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव कहते हैं ८ । (कयरे से नामे उवसमिएखओवसमियपारिणामिएनिप्फन्ने) औपशमिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) (उवसता कसाया खओवसमिया इंदियाइ पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उवसामिएखओवसामिएपारिणामिए निप्फन्ने ९) उपशांत भाव में कषाय है क्षयोपशम भाव में इन्द्रिया है और पारिणामिक भाव में जीव है सो इसी नाम को औपशमिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव कहते हैं ९ कयरे से नामे खइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने (प्रश्न) क्षायिक और क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) क्षायिक सम्यक्त्व है क्षयोपशमिक इन्द्रिया हैं और पारिणामिक जीव है सो इसी नाम को क्षायिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव कहते हैं १० सो यह तीन सयोगी दश भंगों का अर्थ वर्णन किया गया है जिसमें केवल दो भंगों का अस्तित्व है शेष भंग दिग्दर्शन मात्र हैं अब चार सयोगी ५ भंगा के स्वरूप कथन किया जाता है।

भावार्थ–यदि तीनों भावों को एकत्र किया जाए तब उनके तीन सयोगी दश भंग बन जाते हैं जैसे कि १ औदयिक औपशमिक २ क्षायिक २ औदयिक १ औपशमिक २ क्षयोपशमिक २ । ३ औदयिक १ औपशमिक २ पारिणामिक ३ । ४ औदयिक १ क्षायिक २ क्षयोपशमिक ३ । ५ औदयिक १ क्षायिक २ पारिणामिक ३ । यह भंग केवलियों में होता है । ६ औदयिक १ क्षयो

पशमिक २ पारिणामिक ३ । यह ४ गतियों में होता है । ७ औपशमिक १ क्षायिक क्षयोपशमिक ३ । ८ औपशमिक १ क्षायिक २ पारिणामिक ३ । ९ औपशमिक १ क्षयोपशमिक २ पारिणामिक ३ । १० क्षायिक १ क्षयोपशमिक २ पारिणामिक ३ । यह तीन संयोगी दश भग वनते हैं और इनके अर्थ पदार्थ में दिये गये हैं अपितु पाचवा छठा इन दोनों भगो के अस्तित्व है शेष भग दिग्दर्शन मात्र ही कथन किये गये है पाचवा भग केवली भगवान् में होता है छठा भग चारों गतियों में होता है शेष भग शून्य कहे जाते हैं अब चार संयोगी पाच भगों का वर्णन करते हैं क्योंकि चारों भावों के एकत्व करने से पाच भग बन जाते हैं सा निम्नलिखितानुसार है ।

अथ चतुः संयोगी पांचो भगो का विषय ।

मूल-तत्थ ण जे ते पच चउक्कसजोगा तेण इमे अत्थि नामे उदइएउवसमिएखइयखओवसमिएनिप्फन्ने १ अत्थि नामे उदइयउवसामिएखइएपारिणामिएनिप्फन्ने २ अत्थि नामे उदइयउवसमिएखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ३ अत्थि नामे उदइयखइयखओवसमिए पारिणामिए निप्फन्ने ४ अत्थि नामे उवसमिएखइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ५ कयरे से नामे उदइयउवसामियखइयखओवसमिएनिप्फन्ने ६ उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइय सम्मत्त खओवसमियाइ इन्दियाइ एस णं से नामे उदइयउवससमिय खइयखओवसमिएनिप्फन्ने १ कयरे से नामे उदइयउवसमिएखइयपारिणामिएनिप्फन्ने उदइत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइयं सम्मत्तपारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइएउवसमिएखइयपारिणामियनिप्फन्ने २ कयरे से नामे उदइयउवसमिए खओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से उवसन्ता कसाया खओवसमियाइ इंदियाइं पारिणामिए जीवे

एस णं से उदइएउवसामिएखइयपारिणामियनिप्फन्ने ३ कयरे से नामे उदइयखइयखओवसामिएपारिणामियनिप्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त खओव समियाइं इंदियाइ पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइयखइयखओवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने ४ कयरे से नामे उवसमिएखइयखओव समिएपारिणामिएनिप्फन्ने उवसता कसाया खइयं सम्मत्त खओवसामियाइ इंदियाइ पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उवसमिएखइयखओवसामिएपारिणामिएनिप्फन्ने ॥ ५ ॥

पदार्थ-(तत्थ ण जे ते पचचउक्कसजोगा तेण इमे) उन षड्विंशति भगों में जो पाच सयोगी चार भग हैं वह यह है जो आगे कहे जायेंगे-(अत्थि नामे उदइयउवसमिएखइयखओवसमीनिप्फन्ने १) औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न एक नाम है १ अत (अत्थि नामे उदइएउवसमि एखइए-पारिणामिएनिप्फन्ने २) औदयिक औपशमिक क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न एक नाम है २ (अत्थि नामे उदइएउवसमिए खओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ३) औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न एक नाम है ३ सो यह भग सब गतियों में सतत विद्यमान रहता है परन्तु सूत्र ने मनुष्य गति का ही उदाहरण दिया है सो वह इस प्रकार से है जैसे कि औदयिक भाव में मनुष्य गति है औपशमिक भाव में जो आत्मा उपशम श्रेणि में प्रतिपन्न है अथवा जो उपशम सम्यक्त्व करके युक्त है और क्षयोपशम भाव में इन्द्रिया हैं पारिणामिक भाव में जीव हैं इसलिये यह भग मनुष्य गति में कहा

तिर्यग और देवों में क्षायिक सम्यक्त्वपूर्व भाव की अपेक्षा जानना चाहिये और मनुष्य गति में पूर्व प्रतिपन्न भी हो नूतन भी उत्पन्न कर लेवे और क्षयोपशम भाव में इन्द्रिया हैं पारिणामिक भाव में जीव है इसलिये यह भग चारों गतिओं में होता है सो यह पाचों भगो से दो भग अस्तित्व रखते हैं शेष तीन भग कथन मात्र ही है (अत्थि नामे उवसमियखइयखओवसामियपारिणामिएनिप्फन्ने ५) औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न एक नाम होता है अत यह तो पाच भगों केवल नामोत्कीर्तन किया गया है अब इन के अर्थों का विवर्ण करते है (कयरे से नामे उदइयउवसामिएखइयखओवसामियनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न भाव किसे कहते हैं (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइय सम्मत खओवसमियाइ इन्दियाइ औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशात भाव में कषाय है क्षायिक भाव में सम्यक्त्व है क्षयोपशमिक भाव में इद्रिया हैं सो (एस ण से नामे उदइयउवसमिएखइयखओवसमिएनिप्फन्ने १) इसी का नाम औदयिक औपशमिक क्षायिक और क्षयोपशमिक निष्पन्न भाव है १ (कयरे से नामे उदइयउवसमियखइयपारिणामिएनिप्फन्ने २) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक क्षायिक और पारिणामिक नाम किस कहते हैं (उत्तर) (उदएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइय सम्मत्त पारिणामिए जीवे) औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशम भाव में कषाय है क्षायिक में क्षायिक सम्यक्त्व पारिणामिक भाव में जीव सो (एस ण से नामे उदइए उवसमिएखइयपारिणामिए निप्फन्ने २) सो इसी का नाम औदयिक औपशमिक क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न भाव है २ (कयरे से नामे उदइय उवसमिएखओवसमिए पारिणामिए निप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक और पारिणामिक निष्पन्न भाव किसे कहते हैं (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खओवसमियाइ इदियाइ पारिणामए जीवे) उदय भाव में मनुष्य गति है, उपशम भाव में कषाय हैं अपितु क्षयोपशम भाव में इद्रियां हैं इसलिये (एस ण से नामे उयइएउवसमिएखओवसमिएपारिणामिए निप्फन्ने) यह नाम औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न कहा जाता है और चारों गतियों में इस भाव का अस्तित्व है ३ (कयरे से नामे उदइएखइएखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक क्षा-

यिक और क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न भाव किसे कहते हैं (उत्तर) (उदइएत्ति मणुस्से खइय सम्मत्त खओवसमियाइ इंदियाइ पारिणामिएजीवे) औदयिक भाव में मनुष्य गति है क्षायिक में क्षायिक सम्यक्त्व और क्षयोपशमिक भावमें इन्द्रिया है अत पारिणामिक भावमें जीव है सो (एस ण से नामे उदइए खइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ८) इसी का नाम औदयिक क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न भाव है अत इस भग की भी चारों गतियों में अस्तित्व है किंतु सूत्र में मनुष्य गति का उदाहरण दिया गया है अपितु यह भग चारों गतियों में ही होता है (कयरे से नामे उवसमियखइएखओव समियपारिणामिएनिप्फन्ने) (प्रश्न) औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा होता है (उत्तर) (उवसता कसायाखइय सम्मत्त खओवसमियाइइंदियाइ पारिणामए जीवे (उत्तर) उपशान्त कपाय हैं क्षायिक सम्यक्त्व है क्षयोपशमिक इन्द्रिया है और पारिणामिक भाव में जीव है इसलिये (एस ण से नामे उवसामिएखइयखओवसमिएपारिणामिएनिप्फन्ने ५ यह नाम औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न कहा जाता है यह चार सयोगी पाच भग है जिन म तृतीय चतुर्थ भगों की चारों गतियों में अस्तित्व रहती है शेष तीन भग दिग्गदर्शन मात्र हैं किंतु अस्तित्व इन की नहीं है अब पाच सयोगी भग का विवेचन करते हैं।

भावार्थ–चारों भावों के एकत्व करने से चार सयोगी पाच भग उत्पन्न होते हैं जैसे कि–

१ औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक २ औदयिक औपशमिक क्षायिक, पारिणामिक। ३ औदायिक, औपशमिक, क्षयोपशमिक, पारिणामिक है। इस भग को अस्तित्व है। ४ औदायिक, क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक–इस भग की अस्तित्व है। ५ औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक, पारिणामिक ५ ॥

यह चतुस्सयोगी पाच भग हैं अपितु इन के अर्थों का विवर्ण पदार्थ में दिया गया है और इस पाच भगों में से तीसरे चौथे भग की अस्तित्व है शेष भग केवल दिग्दर्शन मात्र हैं अब पाच सयोगी एक भग का विवर्ण करते हैं॥

मूल—(तत्थण जे ते एगोपंच सजोगो सेण इमे–अत्थि नामे उदइयउवसमिएखइयखओवसमिएपारिणामिय निप्फन्ने कयरे से नामे उदइएउवसमिएखइयखओवसमियपारिणामिए निप्फन्ने उदइएत्ति मणुस्से उवसन्ता कसाया खइय सम्मत्त खओवसमियाइ इन्दियाइ पारिणामिए जीवे एस ण से नामे उदइएओवसमिएखइयखओवसमिए पारिणामिएनिप्फन्ने से त्त सन्निवाइए सेत्त छन्नामे ॥

पदार्थ– (तत्थ ण जे ते एगो पचसजोगो से ए इमे) उन पद् विशति भगों में जो एक भग पाच सयोगी है वह इस प्रकार से है (अत्थि नामे उदइयउव समिएखइयखओवसमियपारिणामिएनिप्फन्ने) जैसे कि–औदायिक, औपशमिक क्षायिक, क्षयोपशमिक, पारिणामिक निष्पन्न एक नाम होता है (कयरे से नामे उदइएउवसमिएखइएखओवसमिएपारिणामिए निप्फन्ने) (प्रश्न) औदयिक औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न भाव किसे कहते हैं (उत्तर)(उदइएत्ति मणुस्से उवसता कसाया खइय सम्मत्त खओवसमियाइ इदियाइ पारिणामिएजीवे) औदयिक भाव में मनुष्य गति है उपशम भाव में उपशात कषाय है और क्षायिक भाव म क्षायिक सम्यक्त्व है क्षयोपशम भाव में इद्रियें है पारिणामिक भाव में जीव है इसलिये (एस ण से नामे उदइयउवसमिए पारिणामिए निप्फन्ने सत्त सान्निवाइए सेत्त छन्नामे) इसको औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक, पारिणामिक निष्पन्न भाव कहते हैं सो इसी का नाम सान्निपातिक भाव है और यही षट् नाम का स्वरूप है अत. इसीको षट् नाम कहते है

भावार्थ–पाच भावों के एकत्र करने से पाच सयोगी एक भग बनता है जैसे कि औदयिक औपशमिक क्षायिक और क्षयोपशमिक पारिणामिक यह भग केवल उपशम श्रेणि मे होता है सो यह पाच सयोगी एक भंग का स्वरूप पूर्ण हो गया है अपितु सर्व षट् विंशति भग कथन किये गये है जैसे कि दो सयोगी दश भग है तीन सयोगी दश भग है और चार सयोगी पाच भग है किन्तु पाच सयोगी एक भग है सो यह सब २६ षट् विंशति भग होते है फिर दुगसजोगा सिद्धाख ..नेस ससारियाइ

हुंतीती सजोगो चउ रजोगो दुचउसगई उवसम मेठिउ पण सजोगाय २१ अर्थात् दो सयोगी नवमा भग सिद्ध भगवता में होता है और तीन सयोगी पांचवा केवली भगवान् में होता है और तीन सयोगी छट्ठा भग चारों गतियों में है अपितु चार सयोगी तीसरा और चतुर्थ भग मनुष्य देवता नारकी में होते हैं तथा सज्ञि पांचेंद्रिय तिर्यग् में भी हो जाता है किन्तु पाच स्थावर तीनों विकलेंद्रिय में नहीं होता और पांचवां भग उपशम श्रेणी गत जीवों में होता है इसलिये षट् त्रिशति भगों में से ६ भग अस्तित्व रूप में है शेष २० भग दिग्दर्शन मात्र कथन किये गये हैं तथा अन्य ग्रंथों में (तत्त्वार्था दि शास्त्रों में*) पाच भावों का मूल प्रकृतियाव मान कर उत्तर प्रकृतियें ५३ लिखी हैं जैसे कि मूल प्रकृति औदयिक १ औपशमिक २ क्षायिक ३ क्षयोपशमिक ४ और पारिणामिक ५ यह पांच मूल प्रकृति हैं अपितु उत्तर प्रकृतियें निम्न लिखितानुसार हैं औदयिक भाव की उत्तर प्रकृतियें २१ चार गति, षट् लेश्या ४ कषाय ३ वेद असिद्ध १ अज्ञानी १ अविरति १ मिथ्यात्व १ औपशमिक भाव की २ प्रकृतियें हैं उपशम सम्यक्त्व और उपशम चारित्र २ क्षायिक भाव की ९ प्रकृतिया हैं ५ अतराय क्षायिक भाव में है अर्थात् पांचों अतरायों का क्षय करना और केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ क्षायिक चारित्र ३ क्षायिक सम्यक्त्व ४ और क्षयोपशमिक भाव के १८ भेद हैं जैसे कि ४ चार ज्ञान ३ तीन अज्ञान ३ तीनों दर्शन ५ अतराय क्षयोपशम भाव में क्षयोपशम चारित्र १ क्षयोपशम देश व्रत क्षयोपशम सम्यक्त्व। और पारिणामिक भाव के ३ भेद हैं जैसे कि भव्य पारिणामिक १ अभव्य पारिणामिक २ जीव पारिणामिक ३ यह सर्व ५३ उत्तर प्रकृतिया

*नोट–१ औपशमिक क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व मौदयिक

२ पारिणामिकौ च २ द्वि नवाष्टा दशक विंशति त्रि भेदायथाक्रमम् ।

३ सम्यक्त्व चारित्रे ।

४ ज्ञान दर्शन दान लाभ भोगोपभोग वीर्याणि च ।

५ ज्ञाना ज्ञान दर्शन लब्धयश्चतुस्त्रि त्रिपच भेदा सम्यक्त्व चारित्र सयमा सयमाश्च ।

६ गति कषाय लिंग मिथ्या दर्शना ज्ञाना सयतासिद्ध लेश्या श्चतु श्चतु स्त्र्ये के के के षषड् भेदा ।

७ जीव भव्या भ व्यत्वानि च ।

यह सब सूत्र तत्त्वार्थ सूत्र के दूसरे अध्याय के हैं ।

है और इनके ऊपर ही एक ६२ अंकों का स्तोक बना हुआ है जिसकी मूल गाथा यह है-गई १ इंदिय २ काय ३ जोए ४ वेद ५ कसाय ६ नाणे ७ संजए ८ दसण ६ लेस्सा १० भव ११ समे १२ दिट्ठि १३ सन्नि १४ आहारए १५ ॥ १ ॥ इन ६२ अंकोपरि ५ मूल प्रकृतिया ५१ उत्तर प्रकृतिया की गणना की जाती है और सन्निपातिक भाव के षट् विंशति भग पूर्व लिखे गये हैं सो यह सर्व षट् भावोंके समास से षट् नामका विवर्ण पूर्ण होगया है यह सर्व जैन सिद्धान्त है सो जैन सिद्धात का स्वरूप तीनों स्वरों वा सात स्वरों में प्रतिपादन किया गया है इसलिये सात नाम के प्रकरण में सातों स्वरों का स्वरूप लिखा जाता है ॥

॥ अथ सप्त नाम के अतरगत सप्तस्वरों के विषय ॥

मूल–सेंकित सत नामे २ सतसरा पण्णत्ता तजहा सज्जे १ रिसमे २ गधारे ३ मज्झिमे ४ पचमेसरे ५ धेवएचेव ६ निसाए ७ सरासत वियाहिया १ एएसिंण सतण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा प० त० सज्ज च अग्गजीहाए उरेग रिसभ सर कठुग्गएण गधारं मज्झजीहा ए मज्झिम २ नासाए पचम वुया दतोट्ठेण धेवय भमुहक्खेवेण णेसाएं सरट्ठाणा वियाहियाइ ॥

पदार्थ—(सेकित सत नामे २ सतमरा पन्नत्ता तजहा) अथषट् नाम के पश्चात् सप्त नाम का विवेचन किया जाता है जैसे कि–शिष्य ने प्रश्न किया कि हे भगवन् सप्त नाम कितने प्रकार से वर्णन किया गया है इस प्रकार के शिष्य के प्रश्न को सुनकर गुरु कहने लगे कि –भो–शब्द प्राद् ! सप्त नाम को अतर्गत सप्तस्वरों का विवेचन किया गया है क्योंकि स्वृ शब्दोपताप पनयो धातु से स्वर शब्द की उत्पत्ति है सो जो ध्वनिरूप है वे स्वर होते है सो जिसके सप्तनाम निम्न लिखितानुसार हैं (सज्जे १) षड्जस्वर उसका नाम है जोषट स्थानों से शब्द रूप ध्वनि उत्पन्न हो जैसे कि नासिका १ कठ २ उर (छाती) ३ तालु ४ जिह्वा ५ दत ६ जो इन षट् स्थानो से शब्द उत्पन्न होकर उच्चारण

किया जाए उसको षड्ज् स्वर कहते हैं । और जो ऋषभवत् शब्द हो उसे ऋषभ् स्वर कहते हैं क्योंकि नाभि से वायु उत्पन्न होकर कण्ठ मस्तक में समावर्तन होकर जो शब्द ऋषभवत् उच्चारण किया जावे उसीका नाम (रिसभे २) ऋषभ स्वर है अत (गधारे ३) नाभि से वायु उत्पन्न होकर जो मस्तकादि में समावर्तन करके जो नाना प्रकार के गंध से युक्त है उस गाधार स्वर कहते है (मज्झिमे) मध्यम स्वर उसका नाम है जो काया के मध्य भाग नाभि से उत्पन्न होकर हृदय आदि में होकर जो शब्द उच्चारण कियाजावे उसे मध्यम स्वर कहते हैं ४ (पचमे ५) जो षड्जादि की पचम सख्याको पूर्ण करता है उसे पचम स्वर कहते हैं तथा जिसमें पाच स्थानों में वायु समावर्तन हो उसे पचम कहते है जैसे कि–नाभि १ उदर २ हृदय ३ कठ ४ मस्तक ५ सो जो इन मे समावर्तन होकर शब्द उच्चारण किया जावे उसको पचम स्वर कहते है ५ (धेवय वेय ६) धैवत स्वर उसका नाम है जो अन्य स्वरों को धारण करता हो तथा अन्य स्वरों का साधन करता हो अपितु पाठान्तर में इस स्वर को रेवत स्वर भी कहते हैं (निसाए ७) निषाद स्वर उसे कहते हैं जिससे अन्य स्वरों का परिभव हो जाए तथा जिसका महा स्थूल शब्द हो उसे निषाद स्वर कहते है इस प्रकार से (सगराता वियाहिया १) सप्त स्वर अर्हन्ता भगवतोंने प्रतिपादन किये हैं (शका) असख्यात जीव रसेन्द्रिय द्वारा शब्द उच्चारण करते हैं इस अपेक्षा से असख्यात स्वर होने चाहियें (समाधान) अपितु ऐसे नहीं है यावन्मात्र रसनेन्द्रिय के शब्द है वे सर्व सात स्वरों के ही अन्तर्गत रहते है इसलिये स्वर सात ही है और इनके अनेक स्थान उत्पत्ति के है किंतु मुख्य स्थान जिह्वा ही है इसलिये स्थूल स्थानों की अपेक्षा से सप्त स्वरों के स्थानों का निर्णय करते है (एएसिणं सत्तण्हं सराणं सत्तसरठाणा पण्णत्ता तजहा) इन सप्त स्वरों के सप्त स्वर स्थान प्रतिपादन किये गये है जैसे कि (सज्जच अग्गजिब्भाए) षड्ज् स्वर जिह्वा के अग्र भाग से उत्पन्न होता है यद्यपि षड्ज् स्वर के षट् स्थान वर्णन किए गए है किन्तु मुख्य स्थान जिह्वा ही है इसलिये षड्ज् स्वरका स्थान जिह्वा का अग्र भाग प्रतिपादन किया गया है और (उरेण) उर से (छाती से) रिसभ* ऋषभ (स्वर) स्वर उत्पन्न होता है और (कठुग्गाएण) कठ से

---

* १–रि चवलस्य । प्रा० अ० ८ पा० १ सू । १४० ॥
कचलस्य व्यञ्जन ना सहक्स्य भालोरिरादेशा भवति

उत्पन्न होता है (गंधार) गांधार स्वर अपितु (मज्जपजीहाए) जिह्वा के मध्य भाग से (मज्जिमसर) मध्यम स्वर उत्पन्न होता है २ और (नासाए) नासिका से (पंचम) पञ्चम स्वर (बूया) भाषण किया जाता है दंतोट्ठेणेय दान्त और ओष्ठों से उच्चारण किया जाता है धेवय धैवत स्वर अपितु भमुह खेवेण भृकुटी के आक्षेप पूर्वक णेसाए निषाद स्वर उच्चारण किया जाता है सो (सर) स्वर (ठाण) स्थान (वियाहिया ३) अर्हन्तो भगवंतोंने इस प्रकार से स्वर स्थान प्रतिपादन किए गये है क्योंकि इनके भिन्न २ स्थान होने पर भी मुख्य २ स्थान वर्णन किए गये हैं अब अग्रे जीव निःसृत स्वरों के विषय में कहते हैं ॥

भावार्थ-सात नाम के अंतर्गत सात स्वरों का विवेचन किया गया है जैसे कि षड्ज स्वर १ ऋषभ स्वर २ गांधार स्वर ३ मध्यम स्वर ४ पंचम स्वर ५ धैवत स्वर ६ और निषाद स्वर ७ और जो नाभि आदि षट स्थानों से उत्पन्न हो उसे षडज स्वर कहते हैं १ जो ऋषभवत् शब्द उच्चारित हो उसका नाम स्वर है २ जो नाना प्रकार की गंध से युक्त भाषण किया जाए उसे गांधार स्वर कहते हैं ३ काया के मध्य भाग से जिसकी उत्पत्ति हो उसे मध्यम स्वर कहते हैं ४ तथा नाभि आदि पांच स्थानों से जो उत्पन्न हो वह पंचम स्वर होता है ५ जो और स्वरों को धारण करे वह धैवत ६ जिस का स्थूल शब्द हो वही निषाद स्वर है अपितु मुख्य स्थान इन के निम्न प्रकार से हैं जैसे कि-षड्ज स्वर जिह्वा के अग्र भाग से उच्चारण किया जाता है उरसे ऋषभ गाया जाता है कंठ से गांधार स्वर जिह्वा के मध्य भाग से मध्यम नासिका से पंचम दांत और ओष्ठोंसे धैवत भृकुटिके आक्षेपसे निषाद स्वर उच्चारण होता है इस प्रकार से अर्हन देवों ने सप्त स्वरों के सप्त स्थान प्रतिपादन किए हैं किन्तु यावन्मात्र रसेंद्रिय युक्त जीव है उन सबोंके स्वर सात स्वरों के अंतरगत ही जानने चाहिए ऐसे नहीं है कि तावन्मात्र स्वर संख्या भी हो जैसे कि अनेक वर्ण (रंग) होने पर भी वे सर्ववर्ण पांच वर्णों के अन्तरगत होजाते हैं इसी प्रकार स्वर संख्या भी जाननी चाहिए अब सात स्वर जीवों की निश्राय से वर्णन करते हैं कि जिसके द्वारा जीवों को स्वर ज्ञान का शीघ्र बोध होजाए ॥

॥ अथ सप्त स्वर जीवनिश्राय विषय ॥

सत्त सरा जीव निस्सिया प तजहा ।

पदार्थ-(सत्त) सप्त (सरा) स्वर (जीव निस्सिया प० तजहा) जीव निस्सृत प्रतिपादन किए गये हैं जिन के द्वारा स्वर ज्ञान की शीघ्र प्राप्ति हो जाती है। सो वे निम्न लिखितानुसार हैं ॥

भावार्थ-सात स्वर जीव निस्सृत १ प्रतिपादन किए गए हैं जो निम्न लिखितानुसार हैं ॥

॥ अथ जीव निश्राय विषय ॥

सज्जं रवइ मऊरो कुक्कुडो रिसभ सर हंसो रवइ गधार मज्झिमतु गवेलगा ४ ॥

पदार्थ-(सज्ज रवइ मऊरो) षड्ज स्वरको मोर बोलता है (कुक्कुडोरिसभसर) कुक्कुड ऋषभ स्वर को, (हसोरवइगधार) हस गाधारको, (मज्झिमतुगवेलगा) गाय और बकरी मध्यम स्वर को बोलती हैं ॥

भावार्थ-मयूर षड्ज स्वर उच्चारण करता है, कुक्कुड का ऋषभ स्वर होता है, अपितु हस गाधार स्वर में बोलता है, और गौ एलक आदि पशु मध्यम स्वर में बोलते हैं ॥ ४ ॥

॥ अथ शेष स्वरों के विषय ॥

अह कुसुमसभवे काले कोइला पचम सर । छट्ठ च सारसा कुचा नेसायसत्तम गओ ॥ ५ ॥

पदार्थ (अह) अत्र (कुसुमसभवे) पुष्पों के उत्पन्न होने के (काले) कालमें (कोइला) कोइल (पंचम) पचम (सर) स्वर भाषण करती है अतः (छट्ठच) धैवत स्वर (सरसा कुचा) सारस और क्रौंच पक्षी बोलते हैं पुन (नेसाय) निषाध स्वर (सतम) जो सप्तम है वह (गतो ५) गज का होता है अर्थात

जो निषाद स्वर है वो हस्ती का होता है इसलिये (सतमगतो ५) यह सूत्र दिया गया है ५ यह सप्त स्वर जीव की निश्राय कथन किए गये हैं अब सात ही स्वर अजीव की निश्राय कहते हैं अर्थात जो वादिंत्र से उत्पन्न होते हैं ॥

भावार्थ-वसंत ऋतु में कोइल पंचम स्वरमें बोलती है सारस और क्रौंचपक्षि धैवत स्वर में शब्द उच्चारण करते हैं अपितु सप्तम स्वर में हस्ती का शब्द होता है यह सात ही स्वर जीवों की निश्राय वर्णन किए गए हैं अब इस के आगे सातों स्वर अजीव की निश्राय में जो हैं उनका विवर्ण करते हैं ॥

॥ अथ सप्त स्वर अजीवनिश्राय विषय ॥

सत्त सरा अजीवनिस्सिया प त ।

पदार्थ- (सत) सप्त (सरा) स्वर (अजीव) अजीव वादित्रादि की (निस्सिया) निश्राय (प. त.) प्रतिपादन किए गये हैं जैसे कि—

भावार्थ-सप्त स्वरा अजीव की निश्राय मे कहे गए हैं जो आगे कहे जाते हैं।

मूल-सज्ज रवइ मुयगो, गोमुही रिसभ सरं संक्खो रवइगंधारं मज्झिम पुणझल्लरी ६ चउचलणपइट्ठाणा गोहिया पचम सरं आडंबरो यरेवइयं महाभेरी य सत्तम ॥ ७ ॥

पदार्थ- (सज्जरवइमुयगो) मृदंग षड्ज स्वर में बजता है और (गोमुही) गोमुखी नामावादित्र (रिसभ) ऋषभ (सर) स्वर में बोलता है अत (सक्खो) शंख (रवइ) बोलता है (गंधारं) गांधार स्वर और (मज्झिम) मध्यमस्वर (पुण) पुन (झल्लरी) छैणों का होता है क्योंकि छैणोंका शब्द मध्यभाग से निकलता है इसलिये उनका मध्यम स्वर होता है ६ (चउचलण) चार जिसके चरण (पइठाणा) भूमि पर प्रतिष्ठित हैं और (गोमुही) गोधिका उस वादित्र का नाम है वह (पचम) पंचम नामक (स्वर) स्वर में बोलता है और (आडंबरोय) पटह (ढोल] नामक वादित्र (रेवइय) रेवत (धैवत) नामक स्वर में शब्द उच्चारण करता है और (महाभेरीय) महा भेरी नामक वादित्र (सतम७) सतम निषाद नामक स्वर में उच्चारण करता है ७ किंतु यह सर्व एक अंश को लेकर इन के उदाहरण दिए गए हैं ॥

भावार्थ-षड्ज स्वर मृदंग नामक वादित्र से निकलता है क्योंकि यह सर्व देश मात्र उदाहरण है अपितु षड्ज स्वर की षट् स्थानों से उत्पत्ति मानी गई है किन्तु यहा पर केवल अग्र भाग के प्रमाण का मानकर मृदंग मानकर मृदंग को षड्ज स्वर माना है इसी प्रकार गोमुखी नामक वादित्र ऋषभ स्वर में शब्द उच्चारण करता है और शंख का गान्धार स्वर होता है झलरी (छैणों का) का मध्यम स्वर है पटह (ढोल) का स्वर धैवत स्वर होता है और महा भेरी सप्तम स्वर में शब्द उच्चारण करती है अत जिस वादित्र के चार चरण हैं गोधिका उसका नाम है और भूमी पर रखकर उस बजाया जाता है उसके शब्द को पचम स्वर कहते है ७ यह सर्व सप्त स्वर जीव और अजीव की निश्राय वर्णन किये गये हैं किन्तु कतिपय ग्रन्थकारों ने जीव निश्राय स्वरों के विषय में निम्न प्रकार से भी उदाहरण दिये है जैसे कि-षड्जरौति मयूरस्तु गावो न दति चर्षभम । अजाविकौ चगान्धार क्रौञ्चोनदति मध्यमम् ॥ १ ॥ पुष्प साधा रणे काले कोकिलोरौति पचमम् अश्वस्तु धैवत रौति निषाद रौति कुंजर ॥२॥ अर्थात् मोर षड्ज शब्द को बोलता है बैल ऋषभ शब्द को बोलता है भेड बकरी गान्धार स्वर को बोलते है क्रौञ्च पक्षी मध्यम स्वर को बोलता है घोडा धैवत स्वर को बोलता है कोकिल बसत ऋतु में पचम सुर बोलता है हस्ति निषाद स्वर को बोलता है सो यह सप्त स्वरों के जीव निश्रित उदाहरण दिख लाये गये है अब जिस जीव को जिस स्वर की स्वाभाविक प्राप्ति होती है उस के लक्षणों के विषय में कहते है क्योंकि लक्षणों द्वारा उस स्वर का पूर्णप्रकार से निश्चय होता है।

अथ सप्त स्वरों के लक्षण विषय।

एएसि ण सत्तण्ह सराण सत्त सरलक्खणा प० त० सज्जे ण लहइवित्तिं कयं च न विणस्सइ गावो पुत्ता य मित्ता य नारीण होइ वल्लभो ७ ॥

पदार्थ-(एएसि ण) इन (सत्तण्ह) सातों (सराण) स्वरों के (सत सर) सात स्वर (लक्खणा) लक्षण प्रतिपादन किए गए हैं अर्थात सप्त स्वरों की लक्षणों द्वारा प्रतीती होती है जैसे कि (सज्जेण) षड्ज स्वर से

(लहइ) माप्ति होती है (वित) वृति का अर्थात पड्ज स्वर के प्रभाव से आ जीविका की वृद्धि होती है फिर (कय च) उसका किया हुआ कार्य (नविराणस्सइ) विनाश को प्राप्त नहीं होता अत. जो वह करदे वह सबको माननीय होता है और (गावो) गौएं (पुत्ताय) और पुत्र तथा (मित्ताय) मित्र भी उसक बहुत से होते हैं पुनः (नारीण) नारियो को (हाइ) होता है (वल्लभो) वल्लभ ॥ १ ॥

भावार्थ-सात स्वरों के सात लक्षण बतलाए गये हैं जिन के द्वारा स्वर द्वार बहुतशी शीघ्र उत्पन्न होजाए जैसे कि जिस व्यक्ति का पड्ज स्वर होता है उसकी आजीविका ठीक होती है और उसके द्वारा उस धन की प्राप्ति भी अनीव होती रहती है फिर उसका किया हुआ कार्य सबको माननीय होता है गौएं पुत्र वा मित्र उसके बहुत से होते हैं अत नारी जनों को भी वह वल्लभ होता है सो इन के द्वारा प्रथम स्वर की लक्ष्यता होती है ॥ १ ॥

। अथ ऋषभ स्वर लक्षण विषय ॥

रिसभेणउ एसज्ज सेणावच्च धणाणि य । वत्थगधमलकारं इत्थिओ सयणाणि य ॥ ६ ।

पदार्थ-(रिसभेणउए) ऋषभ स्वर से प्राप्त होता है (सज्ज) ऐश्वर्य भाव और (सेणावच्च) सेनापतिभाव और (धणाणिय) धन का सग्रह अतीव होना तथा (वत्थ) वस्त्र (गध) सुगन्धादि पदार्थ (अलकार) अलकारादि पदार्थ उसको मिलते है तथा (इत्थिओ) स्त्रियों की भी उसको प्राप्ति होती है (सयणाणिय ६) और पर्यकादि की भी उसको अत्यत प्राप्ति होती है ॥ ६ ॥

भावार्थ- ऋषभ स्वर के महातम्य से ऐश्वर्य भाव वा सेनापति और धन का अतीव सग्रह व स्वगंध अलकार स्त्रियें पर्यकादि शय्या सर्व प्रकार के पदार्थ उपलब्ध होते है और इन लक्षणों से निश्चय होता है कि-इस व्यक्ति का ऋषभ स्वर है ॥ ६ ॥

॥ अथ गांधार स्वर लक्षण विषय ॥

गधारे गीइजुत्तिन्ना वज्जवित्ति कलाहिया ॥ हवति कवि-णोपन्ना जो अन्ने सत्थपारगा ॥ १० ॥

पदार्थ- (गधारे) गाधार स्वर वाला पुरुष (गीई) गीतादि (जुइन्ना) ज्ञाता होता है और जिसकी (वज्ज) प्रधान (वित्ति) आजीविका होती है पुनः (कलाहिया) कला अधिक होती है अर्थात् कलाओं में प्रवीण होता है पुन इस स्वर वाले (हवति कविणोपन्ना) कवि होते हैं अपितु (प्रज्ञा) बुद्धिवान् कवि होते हैं (ज) जो (अन्ने) अन्य छन्दादि (सत्थ) शास्त्र के भी (पारगा १०) पारगामी होते हैं ॥ १० ॥

भावार्थ गाधार स्वर वाला गीता के ज्ञान का गीतज्ञ होता है और जिस की ससार में (वज्जवित्ति) प्रधान आजीविका होती है पुन' कलाओं में प्रवीण होता है फिर इस स्वर वाले कवि होते हैं अत बुद्धिमान कवि होते हैं जो अन्य छन्दादि शास्त्रों के भी पारगामी होते हैं सो इन लक्षणों द्वारा गाधार स्वर की पूर्ण लक्षणता होजाती है कि इस व्यक्ति का गाधार स्वर है ॥ १० ॥

॥ अथ मध्यम स्वर लक्षण विषय ॥

मज्झिमसर मत्ताउ हवति सुह जीविणो । खायइ पियइ देई मज्झिम सरमास्सिउ ॥ ११ ॥

पदार्थ- (मज्झिम) मध्यम (सर) स्वर (मत्ताउ) वालेजीव (हवति) होते हैं (सुह जीवणे) सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाले जैसे कि (खाइय) खाना (पीयइ) पीना (देइ) देना अर्थात् खानाहै पीनाहै देनाहै (मज्झि- मध्यम (सर) स्वर (मस्सिउ ११) आश्रित वाला जीव ॥ ११ ॥

भावार्थ-मध्यम स्वर वाले जीव सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाले है उनके खान पान करने में वा देने में किसी प्रकार से भी विघ्न उपस्थित नहीं होते किंतु पदार्थों के विशेष सग्रह करने में वे असमर्थ होते हैं इसी करके वे मध्यम स्वर आश्रित कहे जाते हैं ॥ ११ ॥

॥ अथ पंचम स्वर लक्षण विषय ॥

पंचम सरमंताउ हवंति पुहवीपती । सुरा संग्रह कत्तारो अणेग नरणायगा ॥ १२ ॥

पदार्थ- (पंचम) पंचम (सर) स्वर (मंताउ) वाले जीव (हवंति) होते हैं (पुहवी) पृथवी (पति) के पति पुनः (सूरा) शूरवीर होते हुए (संगह) पदार्थों के (कत्तारो) संग्रह करने वाले होते हैं, और (अणेक) अनेक (नर नायगा) नर नायक होते हैं अर्थात् नरों के अधिपति होते हैं यह सर्व पंचम स्वर के लक्षण हैं और इन्हीं लक्षणों द्वारा स्वर की प्रतीति होती है ॥ १२ ॥

भावार्थ-पंचम स्वर वाले जीव भूमी के अधिपती होते हैं और समर में शूर वीर भी होते हैं तथा अनेक प्रकार के पदार्थों के भी संग्रह करने वाले होते हैं फिर अनेक नरों के नाथ भी होते हैं यह पंचम स्वर के लक्षण हैं इसके पीछे अब छठे स्वर के लक्षण कहते हैं ॥ १२ ॥

धेवंय सरमंताउ हवंती दुहजीविणो कुचेला य कुवित्ति उ चोरा चडाल मुट्ठिया ॥ १३ ॥

नोट-१ रेवत सरमंताउ भवति कलहप्पिया साउणिया वग्गुरिया सोयरिया मच्छ बंधाय १

रेवत स्वर वाले जीवों को क्लेश प्रिय होता है वे पक्षियों के मारने वाले व मृगादि के पकड़ने वाले होते हैं तथा सूकरों के पकड़ने वाले वा मत्स्य के बंधन करने वाले होते हैं ॥ १० ॥

२ चंडाला मुट्ठिया सेया जे अन्ने पाव कम्मुणो गोघात गा ये चोराणे साय सरमस्सिया ॥१३॥

जो चंडालादि कर्म करने वाले और मुष्टिक आदि का प्रहार करने वाले तथा जो अन्य प्रकार के पाप कर्म करने वाले हैं जैसे कि गो घातक गौओं की घात करने वाले अथवा जो चोर हैं वे सब निषाद स्वर के आश्रित होते हैं अर्थात् गो आदि उपकारी पशुओं की हिंसा करने वाले होते हैं।

॥ श्रीस्थानांग सूत्र अध्याय ७ गाथा १२ १३ ॥

पदार्थ-(धेवय) धैवत (सर) स्वर (मताउ) वाले जीव (हवंति) होते हैं (दुहजीविणो) दुःख पूर्वक जीवन व्यतीत करने वाले फिर जिनके (कुचेला) कुवस्त्र पहिरे हुए होते हैं और जिनकी (कुवितिय कुवृत्ति होती है यह स्वर भाव (चोरा) चोरों का (चंडाल) चंडालों का (मुट्ठिया) मुष्टि मल्लादिका होता है और यह स्वर निषिद्ध होता है ॥ १३ ॥

भावार्थ—धैवत स्वर वाले जीव दुःख पूर्वक जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं पुनः जिनके कुवस्त्र और दुष्ट आजीविका होती है इस स्वर के धारने वाले जीव चौर्य कर्म करने वाले होते हैं वा चांडालादि के क्रिया करने वाले वा मुष्टिकादि से प्रहार करने वाले होते हैं इसीलिए यह स्वर निषिद्ध होता है तथा इस स्वर वाला जीव पाप कर्म विशेष करता है ॥ १३ ॥

अथ सप्तमस्वर लक्षण विषय ।

निसाद सरमताउ हवंतिहिंस गावरा । जघाचारा लेहवाहा हिंडगा भारवाहगा ॥ १४ ॥

पदार्थ-(निसाद) निषाद (सर) स्वर (मताउ) वाले जीव (हवंति) होते हैं (हिंसगा) हिंसक (नरा) नर अर्थात् व हिंसा करने वाले होते हैं पुन (जघाचाण) जघादिकों को समर्दन करने वाले (लेहवाह) लेख वाहक (लेख के लेजाने वाले (हिंडगा) प्रमाण से रहित भ्रमण करने वाले और (भार वाह गा १४) भार वाहक होते हैं क्योंकि निषाद स्वर वाले जीवों की भी क्रियायें अयोग्य होती हैं ॥ १४ ॥

भावार्थ-निषाद वाले जीव हिंसक और अतीव भ्रमण करने वाले होते हैं तथा जघाओं के मर्दन करने वाले लेख ग्राहक और भार वाहक भी होते हैं अर्थात् जो शूद्र क्रियायें हैं उनके करता निषाद स्वर वाले ही होते हैं अब इनके सप्त स्वरों के तीन ग्राम और सप्त मूर्च्छना के विषय में कहते हैं ॥ १४ ॥

अथ सप्त स्वरों के ग्राम वा मूर्च्छना विषय ।

एएसिं णं सतण्ह सराणं तओगामा प० त० सज्जगामे मज्झिम गामे गंधार नामे सज्जगामस्सणं सत्त मुच्छणाओ

प० त० मगी को रविया हरिया रयणी.य सारकंता य छट्ठी य सारसी नाम सुद्ध मज्जा य सत्तमा ॥ १५ ॥ मज्झिमगामस्स ण सत्त मुच्छणाओ प० त० उत्तर मदारयणी उत्तरा उत्तर समासम्मो कताय सो वीरा अभिरुवा होइ सतमा ॥१६॥ गंधार गामस्सण सत मुच्छणाओ प० त० नंदिया खुड्डिया पूरिमाय चउत्थी सुद्ध गधारा उतर गधारा पुणसाय च मिया हवइ मुच्छा ॥१७॥ सुठुतर मा यामीसाछट्ठी सव्व उयनायव्वा अह उत्तारायत्ता कोडिमा य सा सत्तमा हवंइमुच्छा ॥ १८ ॥

पदार्थ-(एएसिं ण सतण्ह सराण तउगामा प० त०) इन सात स्वरों को तीन ग्राम प्रतिपादन किए गए हैं ग्राम उसे कहते हैं जिन में मूर्छनाओं का समूह हो सो वह ग्राम समूह तीन प्रकार से कथन किया गया है जैसे कि (सज्ज गामे १) षड्ज ग्राम जिसमें षड्ज ग्राम सम न्धि मूर्छनाओं का समूह हो इसी प्रकार (गाधार नामे ३) गाधार ग्राम (मज्झिम गामे २) मध्यम ग्राम यह सर्व ग्राम मूर्छनाओं के समूह रूप होते हैं किन्तु (सज्ज गामस्सण सत मुच्छणा उ प० त०) षड्ज ग्राम की सात मूर्छनायें प्रतिपादन की गई हैं अपितु मूर्छना उसे कहते हैं जिस के द्वारा श्रोता वा वक्ता मूर्छित हो तथा मूर्छित के समान श्रोता गण वा वक्तागण होवें उसे मूर्छना कहते हैं अथवा राग भेद का नामभी मूर्छना कहते हैं तथा जहा पर रागों के भेदानुभेद होते हैं वे मूर्छनायें हैं वे षड्ज ग्राम की सात मूर्छना प्रतिपादन की हैं जैसे कि (मगी १) मागी १ (कोरवीया २) कोरव्री २ (हरिया ३) हरिता ३ (रयणीय ४) रत्ना ४ (सार कता ५) शारकांता ५ (छट्ठीय सारसी नाम) छठी मूर्छना सारसी नाम क है (सुद्ध सज्जाय सतमा १५) शुद्ध षड्ज नामक सप्तमी मूर्छना है १५ किन्तु इस स्थान में इनके नाम ही वर्णन किए गए हैं किन्तु इनका पूर्णस्वरूप दृष्टिवाद के अन्तर जो पूर्व हैं उन में सविस्तर वर्णन किया गया है तथा जो सागीत विद्या के पुस्तक हैं वहा से इनका स्वरूप जानना चाहिये और (मज्झिम गामस्सण सत मुच्छणाउ पएणता त० (मध्यम ग्राम की भी सात मूर्छनायें प्रतिपादन कीगई हैं जैसे कि-(उतरमदा १) उतरामदा १ (रयणी २)

रत्ता २ (उत्तरा ३) उत्तरा ३ (उत्तर समा ४) उत्तर समा ४ (समोकता य ५) समकाता ५ (सोविरा ६) सुवीरा ६ (अभिरूवा होई सतमा १६) अभिरूप होती है सातमी मूर्छना १६ फिर (गाधार गामास्सण सत मुच्छणाउ प० त० गान्धार ग्राम की सात मूर्छना प्रतिपादन की गई है जैसे कि (नंदिय, १) नंदिका १ (खुदिया २) क्षुद्रिका २ (पुरिमाय) और पुरिमाउ पुन (चउत्थीय सुद्ध गधारा) चतुर्थी शुद्ध गधार नामक मूर्छना है (उत्तर गधारा ५) उत्तर गधारा (पुणसा) पुन वह (पचमिया) पाचमिका (हवई) होती है (मूर्छा १७) मूर्छा १७ और (सुठुतरमायमा) सुठुतर मायाम) साछट्ठी सव्व उयनायव्वा वह छठी मूर्छना सर्वथा प्रकार से जाननी चाहिये (अह) अथ (उत्तरायता कोडीमाय) उत्तरायन को टिमा नामक (सा) वह सतमी हवई (मूर्छा १०) मूर्छा होती है सातवीं ॥ १८ ॥

भावार्थ-इन सात स्वरों के तीन ग्राम है और एक एक ग्राम में सात ७ मूर्छनायें है मूर्छना उसे कहते है जिस रागके कथन करने स वक्ता वा श्रोता मूर्छित के समान होजावें तथा यह मूर्छना रागों के भेद रूप है इन का पूर्ण विवर्ण दृष्टिवाद अतरगत पूर्वो मे सविस्तरता से किया गया है तथा किंचित् विवर्ण जो राग विद्या के (गायन विद्या के) पुस्तक है उन में भी कियागया है अपितु इस सूत्र में जो केवल सूचना मात्र ही विवर्ण है इसलिए इन का नामो लेख किया गया है तथा वृतिकार ने भी इनकी वृति विस्तार पूर्वक नहा लिखी है अपितु सूचना मात्रही वृति लिखी गई है अब सप्त स्वरों के विशप वर्णणन में सूत्रकार प्रश्नोत्तर के रूप में विवर्ण करते है ॥ १८ ॥

॥ अथ सप्त स्वरो के विशप प्रश्नोत्तर विषय ॥

सतसरा कओ हवइ गीयस्स का हवइ जोणी कइसमया ओसासा कइवा गीयस्स आगारा ॥ १६ ॥

पदार्थ-(सत्तसरा कओ हवइ) (प्रश्नि) सातों स्वर किस स्थान में उत्पन्न होते हैं १ और (गीयस्स का हवइ जोणी) गीत की कौनसी योनि (उत्पत्ति स्थान) होती है २ (कइ समिया ओसासा) और कितने समय

प्रमाण स्वर का उच्छ्वास है ? अपितु (कइ वागीयस्स आगारा १९) गीतों के कितने आकार (स्वरूप) हैं ॥ १९ ॥

भावार्थ इस गाथा में चार प्रश्न किए गए हैं जैसे कि सात स्वर कहा से उत्पन्न होते हैं गीत की योनि क्या है और स्वर का उच्छ्वास कितना होता है और गीत का आकार कैसा है इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर निम्न प्रकार से दिए जाते हैं ॥ १९ ॥

॥ प्रश्नों के उत्तर विषय ॥

सत सरा नाभीओ हवंति गीयं च रुन्नजोणी पाय समा ओसासा तिन्नि य गीयस्स आगारा ॥ २० ॥

पदार्थ (सतसरा) सातों स्वर (नाभीओ) (हवंति) उत्पन्न होते हैं और (गीय चरुन्न जोणी) गीतों की रुदित योनि है (पायसमा उसासा) गीतों के के पद पद में उच्छ्वास है अर्थात् जो पद सम है वह गीता के पद पद में उच्छ्वास हैं और (तिन्निय) तीन (गीयस्स) गीतके (आगारा २०) आकार होते हैं ॥ २० ॥

भावार्थ उक्त प्रश्नों के निम्न प्रकार से उत्तर दिए गए हैं जैसे कि (प्रश्न) सात स्वर कहा से उत्पन्न होते हैं (उत्तर) नाभिमें (प्रश्न) गीता की योनि क्या है (उत्तर) गाना (प्रश्न) स्वर का उच्छ्वास कितने समय प्रमाण होता है (उत्तर) पदकी पूर्ति के अंत प्रमाण उच्छ्वास होता है (प्रश्न) गीत के आकार कितने प्रकार से वर्णन किए गए हैं (उत्तर) गीता के तीन प्रकार से आकार वर्णन किये गये हैं (प्रश्न) वे कौन २ से हैं (उत्तर) निम्न लिखित गाथा देखिये ॥ २० ॥

आइमउआरभता समुव्वहता य मज्झयारंमि अवसाणे भवित्ता तन्निवि गीयस्स आगारा ॥ २१ ॥

पदार्थ (आइ) गीत की आदि में (आरभता) आरंभ करता हुआ (मउ) कोमल स्वर होना चाहिए फिर (समुव्व हताय) महा ध्वनि (मज्झ

यारमि) मध्य भाग म होवे (अत साणय) गीत के अन्त म (भणिता) म० स्वर में होवे (तिन्निा) अपि शब्द समुच्चयार्थ म है इस लिए यही तीन (गीयस्स आगारा) गीत के आकार हैं ॥ २१ ॥

भावार्थ–गीत के तीन आकार होते है जैसे कि जब गीत की ध्वनि उठाई जावे तब मृदु स्वर होना चाहिए जब मध्य भाग में ध्वनि जाए तब महा ध्वनि होनी चाहिए अपितु जब गीत का अवसान समय आवे तब यावत् मृदु ध्वनि और मद ध्वनि होनी चाहिए यही गीत के तीन आकार है अब गीत के दोष वा गुणा का विवर्ण करते हैं ॥ २१ ॥

॥ अथ स्वरो के भेदानुभेद गुण और दोष विषय ॥

छद्दोसे अट्ठगुणा तिन्नि य वित्ताई दोन्नि भणिइओ।
जो नाहि सो गाहिई सुसिखिओ रंग मज्झमि ॥ २२ ॥

पदार्थ–(छदो से) गीत के पद दोष हैं और (अट्ठगुणा) अष्ट गुण है फिर (तिन्निय) तीन (वित्ताइ) छन्दों के भेद हैं (दोन्निय भणिइओ २) स्वर मंडल मे दोनों भाषाएँ कथन की गई हैं (जो नाहि) जो उक्त सर्व भेदों को जानता है (सो गाहिइ) सो गीत शुद्ध गाता है अपितु (सुसिखिओ रंगमज्झमम्मि २२) जिसने गायन विद्या को भली प्रकार से सीखा है रंग भूमी में रंग भूमी उसे कहते हैं जो नाटक घर होता है अर्थात् गायन शाला अब सूत्रकार पद दोषों के विषय में कहते हैं ॥ २२ ॥

भावार्थ–गीत के पद दोष अष्ट गुण होते ह और तीन प्रकार के छन्दों के भेद होते हैं अपितु दो भाषाओं में स्वर मडल गायन किया जाता है सो जो इस को पूर्ण विधि से जानता है वही गीत गाता है किन्तु जिसने भली प्रकार से गीत विद्या को रंग भूमिका में सीखा है २२ अब दोषों का विवर्ण करते हैं ॥

॥ अथ पद दोष विषय ॥

भीयं १ दुय २ मप्पिच्छं ३ उत्ताल च कम्म सो मुणे यव्वं ४
काकस्सर ५ मणुणास ६ छद्दोसा होंति गीयस्स ॥ २३ ॥

पदार्थ-(भीयं १) भय के साथ गायन करना अथवा (दुय २) शीघ्र २ गाना २ (अपित्थ ३) श्लेष्मा सहित गला होने पर गान करना तथा अती व श्वास के होने पर गान करना ३ तथा (उत्तालच) ताल मे विपरीत गाना (कम्मसो मुणेयव्व ४) इसी प्रकार अनुक्रमता पूर्वक भेद जानने चाहिए (काग-स्सर ५) अथवा कागवत् यदिस्वर होवे तब भी गीत में दोष होता है ५ (अनु णास ६) और नासिका में स्वर उच्चारण करना यह भी दोष है सो (छद्दो सा) यह षट् दोष (होंति) होते हैं (गीयस्स) गीत के ॥ २३ ॥

भावार्थ-गीत के गाने मे षट् प्रकार के दोष होते हैं जैसे कि-भय के सा थ गाना १ शीघ्र २ गान २ श्वास होने पर गाना ३ ताल से विपरीत गाना ४ कागवत् स्वर के होने पर गाना और नासिका में गाना ६ अथ गुणों का विवर्ण करते हैं।

अथ गुणो विषय में सूत्रकार कहते हैं ॥

पुण्णं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहेव अविघुट्ठं महुरं समं सुललियं अट्ठ गुणा होंति गीयस्स ॥ २४ ॥

पदार्थ- (पुण्ण) स्वर कला पूर्ण होवे १ (रत्तच) पुन राग में रक्त होवे २ फिर (अलंकियच) राग अलंकार के सहित होवे ३ (वत्त तहेव विघुट्ठ) और प्रगट वचन होवे अर्थात् स्पष्ट वचन होवे ४ उसी प्रकार शुद्ध स्वर होवे ५ फिर (मुहुर ६) कोकिलावत् मधुर स्वर होवे (सम ७) तालादि वादित्र सम होवें और (सुललिय) राग वा स्वर सुललित होवे ८ (अट्ठ गुणा) यह अष्टगुण (होंति) होते हैं (गीयस्स) गीत के ॥ २४ ॥

भावार्थ-गीत के गाने के अष्ट प्रकार के गुण निम्न प्रकार से प्रतिपादन किए गए है जैसे कि स्वर कला मे प्रवीणता १ राग में रक्तता २ अलंकार सहित ३ प्रगट वचन ४ शुद्ध स्वर ५ कोकिलावत् स्वर मधुर ६ तालादि वादित्र सम हों ७ सुललित स्वर वा राग ८ यही गीत के गाने के आठ गुण हैं इन गुणों के साथ गीत गाने से गीत निर्दोष कहे जाते हैं अब इन के अतिरिक्त गुणों का विवेख करते हैं जो अवश्य ही जानने योग्य हैं ॥

अथ स्वरों के अन्य गुणों विषय में।

उरकंठ सिरपसत्थ च गिज्जते मउयरिभियपदवद्ध समताल पउक्खेव सत्तसरसी भरणेय ॥ २५ ॥ अक्खर सम पदसम समताल समलय समगेह समच निस्ससियओससिय समसचार समसरासत ॥ २६ ॥

पदार्थ (उरकठ) यदि स्वर विशाल होता है तब उर (वृक्ष स्थल) विशुद्ध कंठ विशुद्ध (सिर पसत्थच) और शिर मशस्त फिर (गिज्जते) गीत गाएं जाएं किन्तु (मउय) मृदु स्वर के साथ (रिभिय) स्वर को सचारण करता हुआ चातुर्यता के साथ उस रिभित कहते हैं और (पदबद्ध शुद्ध पद कद्ध वृत होवे और (समताल) समताल होवे तथा वादित्रादि भी सम्यक् मकार से ध्वनि निकालते हों (पुच्चुखेव) मत्युत्क्षेप उस का नाम है जो कासिकादि वादित्र हैं उन के शब्द वा नृत्य करने वाले के आक्षेप भी ठीक होवें इसी लिए (सत्तमरसी) सात स्वर (भरणेय २५) सयुक्त और अक्षरादि सम गीत कहाजाता है ५५ पुन (अक्खरसम) दीर्घ ह्रस्व प्लुत वा अनुनासिकादि अक्षर सम होवें और (पयसम) पिंगल शास्त्रानुसार पद सम होवे (ताल सम) हस्तादि ताल सम होवें (लयसम) लतादि नाद्रतादि के वादित्र बने हों वह भी सम हों फिर (गहसमच) जो वीणादि राग मे गृहीत हैं वह भी सम हो (निस्ससियउससियसम) नि श्वास और उच्छ्वास भी सम हों क्योंकि श्वासोच्छ्वास के ठीक होने परही गाना गाया जाता है (सचारसम) वती सतार आदि में अगुली आदि का सचार भी सम हो (संरासत २६) यह सात स्वरों के सात लक्षण प्रकारांतर से कहे गय हैं ॥ २६ ॥ अब इस के आगे छद के लक्षण वर्णन करते हैं ॥

भावार्थ—प्रकारान्तर से भी गीत शुद्धि का विवर्ण इस प्रकार से किया गया है जैसे कि उर १ कण्ठ २ शिर ३ विशुद्ध होवें मृदु गीत गाया जावे चातुर्यता के साथ अक्षरों का सचारण किया जाए पद बद्ध रचना होवे फिर हस्तादि का ताल सम होवे मत्युत्क्षेप नृत्य करने वाले का ठीक होवे इस प्रकार विशुद्धि के साथ जब गाना गाया जाता है तब उस गीत को सप्त स्वर विशुद्ध कहते

है ०५ फिर अक्षर सम हों १ पद सम हो, २ ताल सम हो, ३ लता सम हो,४ ग्रह सम हो ५. साम्वोद्वास समहो ६, और (तंत्री) सनाग आदि में सचार भी सम हो ७, यह भी सात गुण स्वरों के प्रकारान्तर से कहे गये हैं क्योंकि जो गीत विद्या के वेत्ता है यदि वे शुद्धि पूर्वक उसे ग्रहण करते हैं तब वे क्रिया उनकी फली भूत होती है जब कि सर्व प्रकार से शुद्धि हो जावे तब जो छंद हैं वह भी शुद्ध होने चाहिए इस लिए अब वृत्तादि विषय में कहते हैं ॥

॥ अथवृत्त शुद्धि विषय ॥

निद्दोसे सारवंत च हेउज्जुत मलं किर्यं उवणयं सो वयार च मिय महुरमेव य ॥२७॥ समअद्ध मम चेव, सव्वत्थ विममसजं तिन्निवित्तपयाराइ चउत्थ नो वलभ्भई ॥२८॥

पदार्थ-(निद्दोस) द्वात्रिंशत् दोषों से रहित और (सार वंतच) विशिष्ट अर्थ का सूचक पुन (हे उज्जुत) हेतु युक्त और (अलंकिय) उपमादि अलंकारों से अलंकृत पुन (उवणय) नैगमा दिनयों से युक्त अयुक्त अथवा (सोवयार च) कठिन रचनों से रहित लज्जा युक्त अविरुद्ध अर्थ का प्रकाशक (मिय) मितान्तर वा मर्यादा पूर्वक अक्षर फिर (महुर) मधुर अक्षर युक्त (एवय) इस प्रकार के शुद्ध गीत को वृत्त कहते हैं अब वृत्त के सम विषय में कहते हैं (सम) जिस छंद के चारों चरणों के समान अक्षर हों उन्हें समछंद कहते हैं और (अद्धसम चव) जिस छंद के प्रथम पाद और तृतीय पाद द्वितीय पाद और चतुर्थ पाद के परस्पर सामान वर्ण होवे उन्हें अर्द्धसमच्छद कहते हैं और (सव्वत्थ विमम चज्ज) जिस वृत्त की सर्वथा प्रकार से ही विषमता होवे उसे सर्व विषम छंद कहते हैं सो यह (तिन्नि) तीनों (वित्त) वृत्त के (पयागइ) प्रकार कहे गये हैं इस लिये (चउत्थनोवलभइ २८) वृत्त का चतुर्थ प्रकार कीसी प्रकार से भी उपलब्ध नहीं होता अर्थात् सम, अर्द्धसम, विषम यही तीनो प्रकार छंद के हैं ॥ २८ ॥

भावार्थ वृत्त के आठ गुण होते हैं जैसे कि छंद निर्दोष १ विशिष्ट अर्थ का सूच कर हेतु युक्त २ अलंकृत ४ नयों से युक्त ५ शुद्ध अलंकार पूर्वक निरु-

पदार्थ-(कणी) कौन सी स्त्री (गायइ) गाती है (महुर) मधुर गीत और (केसी) कौन सी स्त्री (गायइ) गाती है (खरच) खर श्रार (रुक्खच) रूक्ष कर्कश गीत और (केसी) कौनसी स्त्री (गायई) गाती है (चउर) चातुर्यता पूर्वक और (केसी य) कौन सी स्त्री (विलंबिय) विलम्ब से गाती है (दुय) शीघ्र (केसी) गाने वाली कौनसी स्त्री फिर (विस्सर पुण केसी ३०) विस्वर गीत कौनसी स्त्री गाती है अर्थात् राग का विभ्रम करनेहारी कौनसी स्त्री होती है ॥ ३० ॥

भावार्थ-उक्त गाथा में यह प्रश्न किए गये हैं कि कौनसी स्त्री मधुर गीत गाती है कौनसी स्त्री कर्कश और रूक्ष गीत गाती है कौनसी स्त्री दक्षता पूर्वक गाना गाती है कौनसी स्त्री विलम्ब से गाती हैं कौनसी स्त्री शीघ्रता से गाती है कौनसी स्त्री विस्वर गीत गाती है ॥ ३० ॥ इन प्रश्नो के उत्तर निम्न गाथा में दिए गए हैं ॥

अथ उत्तर विषय ।

गोरी गायइ महुर काली गायइ खर च रुक्ख च सामा गा-यइ चउर काणीयविलंवियं दुत अधा विस्सर पुणपिंगला ॥३१॥

पदार्थ- (गोरी गायइ) गौर वर्ण वाली स्त्री गान गाती है (महुर) मधुर और (कालीगायइ) कृष्णा गाती है (खर च रुक्ख च) कर्कश रूक्ष अपितु (सामा गायइ चउर) श्यामा गाती है दक्षता के साथ (काणीयविलंविय) एक चक्षुवाली विलम्ब से गाती है और (दुय अधा) शीघ्र अंधी स्त्री गाती है पुनः (विस्सरपुणपिंगला ३१) विस्वर पिंगला गाती है अर्थात् कपिला स्त्री विस्वर गीत गाती है ॥ ३१ ॥

भावार्थ-जो तीसवीं ३० गाथा मे प्रश्न किए गए थे उनका अनुक्रमता पूर्वक ३१ वीं गाथा में उत्तर दिए गए हैं जैसे कि (प्रश्न) कौनसी स्त्री मधुर गीत गाती है (उत्तर) गौर वर्ण वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री कर्कश और रूक्ष गाना गाती है (उत्तर) कृष्णा (काले वर्ण वाली) (प्रश्न) कौनसी स्त्री चातुर्यतापूर्वक गाती है (उत्तर) श्याम वर्ण वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री विलंब से गाती है (उत्तर) एक आंख वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री शीघ्र २ गाती है

द्वादि दोषों से रहित ६ मिताक्षरी ७ और मधुर ८ फिर तीनों प्रकार से वृत कहे गये हैं २७ जिनके चारों पादों में परस्पर समान वर्ण होते हैं उन्हें सम छन्द कहते हैं जिनके प्रथम पाद और तृतीय पाद द्वितीय पाद और चतुर्थ पाद परस्पर सम हों उन्हें अर्द्ध समच्छन्द कहते हैं किन्तु जिस वृत्त के चारों पाद विषम हों उन्हें सर्व विषय छंद कहते हैं यही तीन वृत्तों के प्रकार कहे गये हैं किन्तु चतुर्थ प्रकार कहीं भी उपलब्ध नहीं होता अब भाषा विषय में कहते हैं।

अथ भाषा विषय ।

सक्कया पागया चेव भणिइओ होंति दोण्णिवि सर मंडल मिगिज्जते पसत्था इसी भासिया ॥ २८ ॥

पदार्थ-(सक्कया) संस्कृत (पागया चेव) और प्राकृत (भणिइज हो ति दोण्णिवि) दोनों भाषाएँ कही गई हैं (सर मंडलमि) स्वर मंडल में (अर्थात् अर्हत् गणधरों न दोनों भाषाओं में स्वर मंडल प्रतिपादन किया है) (गिज्जते) और इन्हीं में (गिज्जते) स्वर मंडल गायन किया है क्यों कि यह स्वर मंडल और यही दोनों भाषाएँ (पसत्था) प्रशस्त (सुन्दर (इसी) ऋषि श्री भगवन् वर्द्धमान स्वामी से (भासिया) भाषित हैं २८ अर्थात् दोनों भाषाएँ प्रशस्त श्री भगवान् ने प्रतिपादन की हैं ॥ २८ ॥

भावार्थ-तीर्थंकरों ने संस्कृत और प्राकृत यह दोनों भाषाए प्रतिपादन की हैं और दोनों भाषाओं में स्वर मंडल गायन किया जाता है और यह दोनों भाषाएँ सुन्दर हैं और ऋषि भाषित है यहा पर ऋषि शब्द का सम्बन्ध भगवान से है २९ अब कुछ विशेष प्रश्न के विषय में कहते हैं ॥

अथ विशेष प्रश्न विषय ।

केसी गायइ महुर केसी गायइ खर च रुक्खं च केसी गायई चउरं केसी य विलवियं दुप केसी विस्सरं पुण केरसी ॥३०॥

पदार्थ-(केसी) कौन सी स्त्री (गायइ) गाती है (महुर) मधुर गीत और केसी) कौन सी स्त्री (गायइ) गाती है (खरच) खर और (रुक्खच) रूक्ष कर्कश गीत और (केसी) कौनसी स्त्री (गायई) गाती है (चउर) चातुर्यता पूर्वक और (केसी य) कौन सी स्त्री (विलंबिय) विलम्ब से गाती (दुय) शीघ्र (केसी) गाने वाली कौनसी स्त्री फिर (विस्सर पुण केरसी ३०) विस्वर गीत कौनसी स्त्री गाती है अर्थात् राग का विध्वंस करनेहारी कौनसी स्त्री होती है ॥ ३० ॥

भावार्थ-उक्त गाथा में यह प्रश्न किए गये हैं कि कौनसी स्त्री मधुर गीत गाती है कौनसी स्त्री कर्कश और रूक्ष गीत गाती है कौनसी स्त्री दक्षता पूर्वक गाना गाती है कौनसी स्त्री विलम्ब से गाती है कौनसी स्त्री शीघ्रता से गाती है कौनसी स्त्री विस्वर गीत गाती है ॥ ३० ॥ इन प्रश्नों के उत्तर निम्न गाथा में दिए गए हैं ॥

अथ उत्तर विषय ।

गोरी गायइ महुर काली गायइ खर च रुक्ख च सामा गायइ चउरं काणीयाविलाविय दुत अधा विस्सर पुणपिंगला ॥३१॥

पदार्थ- (गोरी गायइ) गौर वर्ण वाली स्त्री गाना गाती है (महुर) मधुर और (कालीगायइ) कृष्णा गाती है (खर च रुक्ख च) कर्कश रूक्ष अपितु (सामा गायइ चउर) श्यामा गाती है दक्षता के साथ (काणीयविलाविय) एक चक्षुवाली विलम्ब से गाती है और (दुय अधा) शीघ्र अधी स्त्री गाती है पुन (विस्सरपुणपिंगला ३१) विस्वर पिंगला गाती है अर्थात् कपिला स्त्री विस्वर गीत गाती है ॥ ३१ ॥

भावार्थ-जो तीसवीं ३० गाथा में प्रश्न किए गए थे उनका अनुक्रमता पूर्वक ३१ वीं गाथा में उत्तर दिए गए हैं जैसे कि (प्रश्न) कौनसी स्त्री मधुर गीत गाती है (उत्तर) गौर वर्ण वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री कर्कश और रूक्ष गाना गाती है (उत्तर) कृष्णा (काले वर्ण वाली) (प्रश्न) कौनसी स्त्री चातुर्यतापूर्वक गाती है (उत्तर) श्याम वर्ण वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री विलम्ब से गाती है (उत्तर) एक आंख वाली (प्रश्न) कौनसी स्त्री शीघ्र २ गाती है

(उत्तर) आधी नेत्रहीन (प्रश्न) कौनसी स्त्री त्रिस्वर गाना गाती है (उत्तर) पिंगला (कपिला) स्त्री विस्वर गाती है उक्त प्रश्नों के उत्तर अनुक्रमता पूर्वक ३१ वी गाथा में दिए गए है अब स्वर मंडल का उपसंहार करते हैं ॥

अथ उपसंहार विषय ।

सत्तसरा तओगामा मुच्छणाएगवीसइ ताणाएगुणपन्नास ससम्मत्त सरमंडल सेतसत्तनामे ॥ ३३ ॥

पदार्थ— (सतसरा) षड्जादि सप्त स्वर हैं और (तओगामा) इन के तीन ग्राम हैं फिर इन की (मुच्छणाएगवीसइ) २१ मूर्छनायें हैं क्योंकि एक २ ग्राम की सात सात मूर्छनायें हैं और (ताणाएगुणपन्नास) ४९ इन की तान है जैसे कि एक तंत्री की ७ तानें हैं उन में एक २ स्वर सात सात वार गाया जाता है इसलिये ४९ तान कथन की गई हैं सो इसी विधि पूर्वक (सम्मत) समाप्त हो गया है (सरमंडल) स्वर मंडल ३२ (सेतसत्तनाम) सो यही सप्त नाम है अर्थात् दश प्रकार के नामान्तर के विषय सप्तनाम इस प्रकार से वर्णन किया गया है अब इस के आगे आठ नाम का विवर्ण किया जायगा ॥

भावार्थ—इस स्वर मंडल में सप्त स्वर तीन ग्राम २१ मूर्छना और ४९ तान वर्णन की गई हैं किन्तु नाम उसे कहते हैं जैसे कि एक वीणा में ७ छिद्र हैं उन में एक एक स्वर सात सात वार गाया जाता है सो इस प्रकार से सातों सात ४९ हुए सो यह ४९ तान भी स्वर मंडल के बीच में हैं इस प्रकार से स्वर मंडल की समाप्ति की गई है अपितु इसे ही सप्त नाम कहते हैं अब इस के पश्चात् आठ प्रकार के नाम का विवेचन किया जाता है किन्तु आठ नाम में आठ प्रकार से विभक्तियें दिखलाई गई हैं इसलिए अब विभक्तियों का स्वरूप दिखलाते हैं ॥

अथ अष्टनामान्तर्गत अष्ट विभक्तिऐं विषय ।

सेकिंत अट्ठनामे२ अट्ठविहा वयणविभत्ती प० त० निद्देसे पढमाहोइ बिइयाउवएसण तइया कारणमि कया चउत्थी सप-

यावणे२ पचमीअवायाणे छट्टीस्सामिवायणे सत्तमि सिन्निहा णत्थेअट्टमी आमत्तणीभवे ॥ २॥

पदार्थ-सेकिंत अट्ठ नामे २ अट्ठविहा वयणाविभत्ति प० त०) सो सप्त नाम के अनन्तर आठ प्रकार के नाम का नाम किस प्रकार से विवर्ण किया गया है अर्थात् वह आठ प्रकार का नाम कौनसा है इस प्रकार शिष्य के पूछने पर गुरु कहने लगे कि भो शब्द मार्द् ! आठ प्रकार के नाम में आठ प्रकार की वचन विभक्ति कथन की गई है वचन विभक्ति उसे कहते हैं जो अर्थों क विभा ग को करे और वचनों के अनेक भेद करके दिखलाए किन्तु यह सुवत वचन हैं अपितु तिङन्त न समझने चाहिए सो यह विभक्तियें आठ प्रकार से प्रतिपादन कीगई हैं जैसे कि (निदेस पठमा होइ) केवल लिंग बोधनार्थ जो वचन भाषण किए जाते हैं उनमें प्रथमाविभक्ति होती है अर्थात् निर्देश में प्रथमा होती है और (विइया उव एसरा) द्वितीया उपदेश में होती है अर्थात् द्वितीया विभक्ति आदेश में होती है (तइया) तृतीय (करणमि) करण में (कया) विधान की गई है अपितु (चउत्थी) चतुर्थी (सपयावणे १) सप्रदान में कही गई है १ और पचमी पाचवीं (आवादाणे) अपादान में होती है (छट्टी सस्सा मि वायणे) किन्तु षष्ठी स्वस्वामि वचन में होती है अर्थात् सम्बन्ध में षष्ठी हो ती है और (सप्तमी) सातवीं (सणिहाणत्थे) सन्निधानार्थ में होती है अर्थात् आधार में सप्तमी विभक्ति होती है और (अठमी) आठमी विभक्ति (आमतणी भवे २) आमत्रण अर्थ में होती है अर्थात् अष्टमी विभक्ति सम्बोधन में कथन की गई है किन्तु आधुनिक व्याकरणों में सबोधन को पृथक करके सात विभक्तियें लिखी हैं और वृद्ध व्याकरणों के मत में विभक्तियें आठ ही होती हैं क्योंकि कर्ता के वचन भेद में ही आमत्रण होता है सो वचन भेद का नाम विभक्ति है यथा विभज्यन्ते विभागी क्रियन्ते सख्या कर्मादयोऽर्थो आभिरिति विभक्तय विभक्तिना अर्थाः विभक्तार्था इसलिए आमत्रण को भी विभक्तियों की सज्ञा में रखा गया है ॥ २ ॥

भावार्थ-आठ नाम के बीच में आठ प्रकार से विभक्तियें कथन की गई हैं क्योंकि वचन के भेद को ही विभक्ति कहते है सो यह नाम विभक्तियें है तिङत नहीं है और इसी को कारक प्रकरण जानना चाहिये अब जिन २ स्थानों में

जो जो कारक होता है वे निम्न लिखितानुसार है निर्देश में प्रथमा होती है उप देश में द्वितीया होती है इसी प्रकार करण म तृतीया सम्प्रदान में चतुर्थी अपादा न में पचमी सम्बन्ध में षष्ठी आधार में सप्तमी और आमन्त्रण में अष्टमी विभक्ति होती है इस प्रकार के कारकों के स्थान वर्ण करने के पश्चात् अब इन के उदाह रण दिखाए जाते हैं ॥

अथ अष्ट विभक्तियों के प्राकृत उदाहरण विषय ।

तत्थ पढमा विभत्ति निद्देसे सो इमो अहवाति विइया पुण उवएसे भणकुणसु इम वय वंति ३ ॥

पदार्थ-(तत्थ पढमा विभत्ति) इन आठ विभक्तियों में जो प्रथमा है वो (निद्देसे सोइमो अहवत्ति) निर्देश रूप इस प्रकार से है जैसे किस अय अह- इत्यादि किन्तु अय प्रयोग पुलिंग का इसलिये दिखलाया गया है यह भी प्र योग केवल निर्देश मात्र ही है और (विइया पुण) द्वितिया फिर (उवएसे) उपदेश में होती है जैसे कि-(भणकुण सुइम वय वत्ति) शास्त्र को पढ़ कार्य को कर इस प्रकार के वचनों में द्वितीया होती है किन्तु इन से अन्य स्थानों में भी द्वितीया होती है जैसे कि कट करोति, शर लुनाति, इत्यादि ३ ॥

भावार्थ-आठों विभक्तियों में से प्रथम प्रथमा के ही स्थान वर्णन किए गये हैं जैसे कि केवल निर्देश में प्रथमा होती है यथा स अय, अह, इत्यादि निर्दे- श वचन प्रथमा में रहते हैं और उपदेश में द्वितीया होती है जैसे कि शास्त्र पठ कार्य कुरु अर्थात् शास्त्र को पढ कार्य कर इत्यादि अर्थों में द्वितीया होती है अ थवा इन से अतिरिक्त अर्थों में भी द्वितीया होती है जैसे कि कट करोति, शर लुनाति अथात् कट को बनाता है शर को काटता है इस में उपदेश कुछ भी नहीं है अपितु वह स्वयमेव ही वह क्रियाए करता है यथा कुभ करोति इत्यादि प्रयोग जानने चाहिए अब तृतीया और चतुर्थी के उदाहरण करते हैं ॥

अथ तृतीया और चतुर्थी विषय ।

तइया करणमि कया भणिय च कय च तेणव मएवा ह- दिनमोसाहाए हवइ चउत्थी सपयाणमि ४ ॥

पदार्थ -(तइया) तृतीया (करणमि) करण में (कया) विधान की गई जैसे कि (भणियं च कय च) पठन किया और कृत किया (तेणे वमएवा) उसने अथवा मैंने अर्थात् पठित मया पठन किया मैंने तेन ताडिता उसने मारी इत्यादि अर्थों में तृतीया होती है और (हदि) इत्युपदर्शने यह अव्यय दिखलाने अर्थ में है यथा (नमो साहाए) नमो देवेभ्यो स्वाहा अग्नये अर्हते नम इत्यादि अर्थों में (हवइ) होती है (चउत्थि) चतुर्थी विभक्ति होती है (सपयाणमि) सो दान पात्र में सम्प्रदान कारक होता है यथा उपाध्याय गां ददाति इत्यादि प्रयोग जानने चाहिये ॥ ४ ॥

भावार्थ--तृतीया विभक्ति करण में होती है क्योंकि साधक तम करण इस प्रकार से माना गया है यथा शरेण हन्ति असिना छिनन्ति इत्यादि प्रयोग जानने चाहिये और चतुर्थी सम्प्रदान में है जैसे कि नमो देवेभ्य अर्हते नम स्वाहा अग्नये उपाध्याय गा ददाति इत्यादि अर्थों में सम्प्रदान होता है क्योंकि नम शब्द का सम्बन्ध सम्प्रदान के साथ ही प्राय होता है सम्प्रदान उसे कहते हैं जिसको कोई वस्तु दी जाए अर्थात् लेने वाला सम्प्रदान कहाता है इसके अन्तर पचम और छठे कारक के विषय में विवेचन करते हैं ॥

अथ पंचम और छठे कारक विषय ।

अवणय गिण्ह य एत्तो इउत्तिवा पचमी अवायाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्सवा गयस्स वा सामिसंबंधे ॥ ५ ॥

पदार्थ--(अवनय) दूर कर (गिण्हय) ग्रहण कर (एतो) उससे (इउ ति वा पचमी अवायाणे) अथवा इससे मुक्ति होती है यथा रत्न त्रयान्मोक्षः इत्यादि अर्थों में पाचमी विभक्ति अपादान नामक कारक में होती है क्योंकि अपायेऽवधी ॥ शाख्या. अ १ पा ३ सू १५६ । बुधि कृत जो विभाग है उसके विषय अपादान कारक होता है और (छट्ठी) छठी विभक्ति इन अर्थों में होती है जैसे कि-(तस्स) उसकी वस्तु है (इमस्स) इसकी है (गयस्स वा) अथवा गए हुए की है क्योंकि यह कारक (सामि सम्बन्धे ५) स्वामी सम्बन्ध में होता है यथा " राज्ञ पुरुषः " यह राजा का पुरुष है इत्यादि अर्थों में षष्ठी विभक्ति होती है ॥ ५ ॥

भावार्थ-पांचवीं विभक्ति अपादान में होती है जैसे कि इससे दूर करो इस से लो इत्यादि अर्थों में पांचवी है और षष्ठी सम्बन्ध में होती है जैसे कि यह उसकी वस्तु है वा इसकी है इत्यादि अर्थों में स्वामी सम्बन्ध होता है इसलिये इन अर्थों में षष्ठी दी गई है अब इस के आगे सप्तमी और आमंत्रण विषय में कहते हैं ॥

अथ सप्तमी विभक्ति और आमत्रण के विषयमें ।

हवइ पुण सत्तमी तंइममि आहारकालभावेय आमतणी भवे अट्ठमी जहाहे जुवाणेत्ति सेत अट्ठनामे ॥

पदार्थ-(हवइ) होती है (पुण) फिर (सत्तमी) सप्तमी विभक्ती (तइम मि) वो इस (आहार) आधार (काल भावेय) काल और भाव के विषय में जैसे कि आधार के विषय में तो सप्तमी होती है साथ ही काल और भाव का भी सम्बन्ध करलेना चाहिए जैसे कि " मधौ रमते " वसत मास में लोग क्रीडा करते हैं यहां पर काल म सप्तमी हो गई है और " चारित्रेऽवतिष्ट ते" चारित्र में मुनि ठहरते हैं यहां पर भाव में सप्तमी है क्योंकि आत्मा निज भाव में स्थिति करता है इत्यादि प्रयोगों में सप्तमी होती है और (आमतणी भवे अट्ठमी) आमत्रण में अष्टमी होती है यथा (हेजुवाणेति) हे युवान् इस प्रकार के सबोधन में अष्टमी होती है क्योंकि (" ह्रस्वोऽनित्पाद: ") इस सूत्र से सबोधन में हे शब्द का प्रयोग करना चाहिए ६ (सेत अट्ठ नाम) यही आठ नाम है सो इसी स्थान पर अष्ट प्रकार का नाम पूर्ण हो गया है अब इ सके आगे नव नाम विषय में कहते है ॥

भावार्थ-सप्तमी विभक्ति अधार में होती है तथा काल और भाव म भी हो जाती है यथा " मधौ रमते " चारित्रेऽवतिष्टते " यह काल और भाव के प्रयोग हैं और आमत्रण में अष्टवीं विभक्ति कथन की गई है जैसे कि हे युवन् भो पुरुष इत्यादि प्रयोग हैं किन्तु वर्त्तमान काल में जो व्याकरण में प्रचलित हैं उनम आमत्रण प्रथमान्त माना गया है और सूत्र मेंआमत्रण को आठवीं विभक्ति करके माना गया इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन व्याकरण आमत्रण को भी

। विभक्ति मानते थे और इन के सर्व प्रत्यय निम्न प्रकार से हैं जैसे कि– सु औ जस् । अम् औट् शस् । टाभ्याम् भिस् । ङे भ्याम् भ्यस् । ङसि भ्याम् भ्यस् । ङस् ओस् आम् ङि ओस् सुप् । पुनः आमन्त्रण में सु औ जस् । सो इस प्रकरण में कारक प्रकरण दिखलाया गया है अपितु इसका सविस्तर स्वरूप व्याकरणों में देखना चाहिये क्योंकि यहा पर तो सूचना मात्र ही वर्णन किया गया है सो इस प्रकरण को अवश्य ही ध्यान से पठन करना चाहिए अब इसके अनन्तर नव नाम के विषय में कहते हैं किन्तु नाम के अंतर्गत नव प्रकार के रस वर्णन किए गए हैं इस लिए नवरसों की व्याख्या की जाती है ।

अथ नवरस विषय ।

नव कव्वरसा पन्नता तंजहा वीरो १ सिंगारो २ अब्भुतोय ३ राद्दोय ४ होई वोधव्वो वेलणओ ५ वीभच्छो ६ हासो ७ कलुणो ८ पसतोय ६ ॥

पदार्थ–(नव कव्वरसा पन्नता तंजहा) नव प्रकार से काव्य रस प्रतिपादन किए गए हैं क्योंकि वेभीर काव्य कवि काजो अंतःकरण का भाव है व फिर वो वीरादि रस काव्य में बधे हुए हैं उन्हीं को काव्य रस कहते हैं यथ वा शार्या लत्नो वस्तु विकागे मान सो भवेत समाव कथ्यते सद्भिस्तस्योत् कर्पो रस स्मृत १ यह काव्य रस नव प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (वीरो १) दान तप युद्ध इत्यादि में वीरता करना उसे वीर कहते हैं १ और (सिंगारो २) काम जन्य सर्व रसों में प्रधान स्त्री सग से उत्पन्न होने वाले रस को शृङ्गाररस कहते है २ (अब्भुतोय ३) अद्भुत पदार्थों के देखने से जो रस उत्पन्न होता है उसको अद्भुत रस कहते हैं और (रोद्दोय ४) वैरी के दिखलाए हुए भयों को देखकर जो रस उत्पन्न होता है उसे रौद्र रस कहते हैं ४ (होई वोधव्वा) अर्थात् इस रस को रौद्र रस जानना चाहिए (वेलणओ ५) जो लज्जा का उत्पादक होवे और लोकों में स्तुति का पात्र भी हो उसको व्रीडन रस कहते हैं ५ (विभच्छो ६) जिन पदार्थों के सुनने से वा देखने से घृणा उत्पन्न हो उस रस को विभत्स रस कहते हैं ६ (हासो ७) जिसके द्वारा हास्य की प्राप्ति हो उसे हास्य रस कहते हैं जैसे कि वेष परिवर्तन करना

भाषा परिवर्तन भाड चेष्टा वा कुतुहल उत्पादक वचन उच्चारण करनेग्उसी को हास्य रस कहते है ७ (कलुणे ८) प्रिय वस्तुओं के वियोग से दुःख उत्पन्न होता है फिर मुखाकृति मलीन हो जाती है चित्त व्याकुल रहता है इत्यादि भावों को करुणा रस कहते हैं ८ फिर (पसतोय ९) जो क्रोध मान माया राग लोभ और द्वेशादिके वशों से विमुक्त हुआ है अत एव आत्मज्ञान में हिनि मग्न है सदैव काल प्रशान्तात्मा है इत्यादि गुण पूर्वक जीव को प्रशान्त रस प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

भावार्थ–नव प्रकार के नाम नव रस प्रतिपादन किए गये हैं और इनको नव काव्य रस भी कहते है क्योंकि कवि के भावों का नाम काव्य होता है अत उनमें जो निबन्धन किया हुआ है उसी को रस कहते हैं सो यह नव प्रकार के रस काव्य रस होते हैं जैसे कि वीर रस १, शृङ्गार रस २, अद्भुत रस ३, रौद्र रस ४, व्रीडन रस ५, वीभत्स रस ६, हास्य रस ७, करुणा रस ८, और प्रशान्त रस ९ यही नव प्रकार के रस हैं और अलंकार ग्रन्थों में प्रायः इन्हीं रसों का विशेष वर्णन होता है-वह भी नव रसों के विधायक होते है और रसों में नव रसों का परस्पर विशेष सम्बन्ध रहता है सो जो ससार भर में पदार्थ हैं वे नव रसों के ही अतरगत रहते हैं अब रसों के उदाहरण दिखाये जाते हैं।

अथ वीर रस का उदाहरण विषय।

तत्थ परिच्चागमि य दाणेतवचरणा सत्तुजण विणासे य अणणुसयधितीपरक्कमलिंगो वीरो रसो होई ॥ २ ॥ वीरोरसो जहा सो नाम महावीरो जो रज्ज पयहिऊण पव्वइओ कामको- हमहासत्तु पक्ख निग्घायण कुणई ॥ ३ ॥

पदार्थ–(तत्थ परिच्चागमि य दाणे) इन नव रसों में प्रथम वीर रस का विवर्ण किया गया है सो यह वीर रस त्याग में दान में तपश्चरण में च पुन. (तवचरणसत्तुजणविणासे य) शत्रु जन के विनाश में होता है जैसे कि (अणण सयधिती) दान करके गर्व न करना जैसे कि मत्तुल्योदानी नास्तीति अर्थात् मेरे समान कोई दानी नहीं है इस लिए दान देकर गर्व न.

करना तप करके शांति रखना और (परक्कम) वैरी के हनन में पराक्रम करता है किन्तु व्याकुलता नहीं करता सो (लिंगो वीरोरसो होई २) इन लक्षणों से वीर रस की पहचान होती है क्योंकि त्याग करना दान देकर पश्चाताप न करना, तप में घृति धारण करना यह सब वीरता के लक्षण हैं और संसार पक्ष में यह रस शत्रु के विनाश में भी होता है इसी का नाम वीर रस है अब इस रस का उदाहरण देते हैं किन्तु यह उदाहरण भाव शत्रु के हनन करने का ही है क्योंकि शास्त्र में मोक्षमार्ग का ही प्रारम्भ हुआ है सो उसी के अनुसार उदाहरण हैं (वीरोरसो) वीर रस (जहासोनाम महावीरो) जैसे वह सुप्रसिद्ध नाम से श्री महावीर स्वामी जिन्होंने (जोरज्ज) राज्य को (पयाइऊण) त्याग करके और वर्षादान देकर (पव्वइओ) दीक्षा ग्रहण की फिर (कामकोह) काम क्रोध रूपी जो (महासत्तु) महा शत्रुओं का (पक्ख) समूह वा गर्व था (निग्घायणकुण ३) उसका नाश किया अथवा श्री महावीर देव स्वामी भाव शत्रुओं को नाश करने लगे सो इसी का नाम वीर रस है ३ इस रस में भाव वीरता का ही उदाहरण दिया गया है किन्तु भावार्थ यह है कि जिस काव्य के सुनने से वीरता उत्पन्न होवे उसे ही वीर रस कहते हैं ॥

भावार्थ—इन नव रसों में प्रथम वीर रस का विवर्ण किया गया है जैसे कि यह रस त्याग में, दान में, तप में और शत्रु के विनाश में होता है दान देकर अहंकार न करना, तप में धृति धारण करना, शत्रु के विनाश में पराक्रम करना, इन लक्षणों द्वारा वीर रस की प्रतीती हो जाती है इस में उदाहरण श्री भगवान् महावीर स्वामी का ही है जिन्होंने राज त्याग कर दीक्षा लेकर काम क्रोध रूपी भाव शत्रुओं के नाश करने में उद्यत हुए यही वीरता का लक्षण है तथा जिस काव्य के सुनने से वीरता की प्राप्ति हो उसे ही वीर रस कहते हैं ॥

अथ शृंगार रस विषय ।

सिंगारो नाम रसो रइसं जोगाभिलास संजणणो मंडण विलास विव्वोय हासलीला रमण लिंगो ॥ ४ ॥ सिंगारो रसो जहा महुर विलास ललिय हिययउम्मादण कर जुवाणाणं सा मासद्दु दामं दायंति मेह लादामं ॥ ५ ॥

पदार्थ-(सिंगारो नाम रसो) शृङ्गार नामक रस (रई) रति कामन्ति स-जोगा भिलास) स्त्री आदि के सजोग की अभिलाषा के (सजणणो) उत्पन्न करने हारा है और (मडण) कङ्कणादि का मडण और नेत्रादि (विलास) विलास युक्त होने वा (विव्वोयण) अग विकार युक्त होजाने फिर (हास) हास्य करना अथवा (लीला) काम जन्य वार्ताओं का उच्चारण करना फिर रमण लिंगो ४) स्त्री पुरुष का परस्पर सजोग होना वा क्रीडा करना इस रस का चिन्ह है ४ अब इस रस का उदाहरण दिखलाते हैं (सिंगारो रसो जहा) शृङ्गार नामक रस इस प्रकार से है जैसे कि (महुर) मधुर वचन (विलासल लिय) विलास और ललित पुन (हियय उम्मादण कर जुवाणाण) हृदय के उन्माद कारी अर्थात् काम के उत्पादन करने हारे जो वचन हैं अत किनको ! युवा पुरुषों को (सामासद्दु) श्याम वर्णा स्त्री के घुंघुरुओं के शब्द (दाम दायति) कौंकणी आदि के शब्द (मेहलादाम ५) मेखला के शब्द इत्यादि शब्दों को सुनकर युवा पुरुषों की काम अग्नि सदीप्त होती है सो इसी को शृङ्गार रस कहते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ-शृङ्गार रस का लक्षण इस प्रकार से है काम की आशा शरीर काम उन काम चेष्टा युक्त अगों का हो जाना, हास्य करना, लीला युक्त वचन बोलने और क्रीडा में लगे रहना इन लक्षणों से शृङ्गार रस की प्रतीति होती हैं ४ जैसे कि युवा पुरुषों के हृदय में विकार उत्पन्न करने वाले मधुर और विला स लीलाकारी श्यामा नाम की स्त्री के आभूषणों के शब्द होते हैं अत ये शब्द युवा पुरुषों के काम उत्पादक होते हैं सो इसीको शृङ्गार रस कहते हैं ५ किन्तु इस रस का लक्षण हास्य क्रीडा रमणादि क्रियाये करना ही है और इसके अ-नन्तर अद्भुत रस का वर्णन करते हैं ॥ ५ ॥

३ अथ अद्भुत रस विषय ।

विम्हय करो अपुव्वो अणुभुयपुव्वो य जो रसो होइ सोहास विसाउपतिलक्खणो अब्भुओनाम ॥ ६ ॥ अब्भुओ रसो जहा अब्भुतरमिह मित्तो अन्न कि अत्थि जीवलोगमि जंजिणवयणे अत्था त्तिकालजुत्ता मुणिज्जति ॥ ७ ॥

पदार्थ (बिम्हय करो) विस्मय करने द्वारा जो (अपुव्वो) पूर्व अनुभव नहीं किया उसके (अणुभयपुव्वोय) अनुभव करने से अपूर्व (जो रसो होई) जो रस उत्पन्न होता है पुन जिसकी (सोहा सविसाउपति) हास्य और विपाद से उत्पति है (लक्खणो अब्भुए नाम ७) सो इन लक्षणों से अद्भुत रस जाना जाता है अर्थात् जो आश्चर्य कारी वस्तु को देख कर हर्ष वा विषाद उत्पन्न होता है इन लक्षणोंसे अद्भुत रस की प्रतीती होती है ॥ ६ ॥ अथ इसका उदाहरण दिखलाते हैं (अब्भुय रसो जहा) अद्भुत रस इस प्रकार से होता है जैसे कि (अब्भुतर इहमिता) अद्भुत वस्तु इस लोकमें श्री जिनेन्द्र देव के वचन ही हैं क्योंकि जो यथार्थ पदार्थों के उपदेष्टा हैं इसालिये (अन्न कि अत्थि) और कोई अद्भुत वस्तु है (जीव लोगमि) समस्त ससार में अपितु नहीं है क्योंकि (जजिए वयणे अत्था) जो जिन वचनों में जीवादि पदार्थों का अर्थ है वे (तिकाल जुत्ता) त्रिकाल युक्त मुणिज्जति जाना जाता है ७ अर्थात् वे पदार्थों का अर्थ त्रिकाल में सद्रूप है इत्यादि भावों में जो हर्ष उत्पन्न होता है उसे अद्भुत रस कहते हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ आत्मा को विस्मय करने वाला जिसका पूर्व अनुभव नहीं किया जिसके अनुभव करने से हर्ष औरविपाद उत्पन्न होता है वह अद्भुत रस है ६ इसका उदाहरण इस प्रकार से है जैसे कि–इस प्रकार से विचार करना कि इस ससार में जो अर्हन् देवों ने पदार्थों का स्वरूप प्रतिपादन किया है उसके समान कोई भी इतरजन पदार्थों का स्वरूपवर्णन नहीं कर सके जो अर्हन् देव के पदार्थ कथन किए हुए हैं वे त्रिकाल युक्त जाने जाते हैं अर्थात् जो लक्षण वर्णन किए गये हैं वे यथार्थ है और तीनों कालों में इस प्रकारसे रहते हैं इसलिये विस्मय करने वाले इस ससार भर में श्री जिनेन्द्र देव के वचन हैं अन्य कुछ नहीं इस प्रकार के भावों का अद्भुत रस कहते हैं ॥

४ अथ रौद्र रस विषय।

भयंजणणरूवसद्दधयारचितकहासमुप्पन्नो संमोह संभम विसायमरणलिगो रसो रुद्दो ॥ ८ ॥ रुद्दो रसो जहा भि-

ऊडीविडावियमुहो सद्दुट्टोट्ठइय रुहिरमाकिन्नो हणसि पसु असुरनिभो भमिरसिय अइरुद्दो रुद्दोऽसि ॥ ६ ॥

पदार्थ-(भय जणण) भय के उत्पन्न करने वाला (रूव) पिशाचादि का रूप और (सद्दयार) शब्द तथा अन्धकार तथा भय जन्य वार्ताओं की चिंता करनी वा (कहा) कथा करनी (समुप्पन्नो) इन कारणों से रौद्र रस उत्पन्न होता है और (समोह संभम) समोह उत्पन्न होना क्या किया जाए वा चित्त की व्याकुलता अथवा (विसाय) चित्त का विषाद जैसे कि-यहां पर मैं क्यों आ गया हूं इत्यादि विचार करने और (मरण लिंगो रसो रुद्दो ८) सोमल ब्राह्मण वत् मृत्यु चिन्ह है जिसका सोरौद्र रस है ८ अब इस रौद्र रस का उदाहरण लिखते हैं (रुद्दो रसो जहा) रौद्र रस जैसे कि-(भिऊडी विडंवियमुहो) ललाट में जिस के भौंहें चढ़ी हुई हैं और मुख जिस का विकृत होरहा है इसी के संबोधन में कहा गया कि-हे भ्रकुटि विडंबित मुख (सद्दुट्टोट्ठइयरुहिर माकिन्नो) और जो होठों को चबारहा है रुधिर से अंगोपांग आकीर्ण हैं फिर इसी के आमंत्रण में कहा गया कि हे सदष्टोष्ट वा हे रुधिरा किन्न (हणसियसु) तू मारता है पशू को किस प्रकार से मारता है जैसे कि (असुरनिभो) असुर के समान अतएव जैसे असुर (भीमरसिय) भीम शब्द करता है उस के संबोधन में कहा गया कि हे असुर इव भीम रसित (अइरुद्दोऽसि ६) तू अतीव रौद्र वा रौद्र परिणाम युक्त है ६ शंका भय जिसका कारण है कार्य उसका रौद्र किस प्रकार से हो सक्ता है (समाधान) शत्रु के देखने से रौद्र ध्यान की उत्पत्ति हो जाती है इसलिए इस में कोई दोष नहीं है ॥

भावार्थ-भय के उत्पन्न करने वाले रूप शब्द अंधकार चिंता कथा व्यामोह व्याकुलता विषाद मृत्यु इस रौद्र रस के चिन्ह हैं ८ और हे भ्रकुटि विडंबित मुख हे सन्दष्टोष्ट हे रुधिर क्लिन्न तू पशु को मारता है असुर इव भीम रसित तू रौद्र परिणामि है किन्तु शत्रु आदि के दर्शन से रौद्र ध्यान की उत्पत्ति हो जाती है इसलिए इस को रौद्र रस कहा गया अब व्रीडन रस का विवर्ण करते हैं ॥

५ अथ लज्जा रस विषय ।

विणओवयारगुज्झगुरुदारमेरावइक्कमुप्पन्नो वेलणओ नाम रसो लज्जामकाजणणलिंगो ॥१०॥ वेलणउरसो जहा-किं लोइयकरणीयाओ लज्जणतरग तिलिज्जिया। मेति वारिज्जामि गुरूजणो परिवदेइज वहुप्पोति ॥ ११ ॥

पदार्थ—(विणयओव यार गुज्झ गुरुदार) विनय उपचार के उल्लघन करने से अथवा गुप्त तथा अश्लील वार्ताओं के करने से शिष्ट पुरुषों को लज्जा रस उत्पन्न होता है तथा अयोग्य कृत्य करने से भी लज्जा रस उत्पन्न होजाता है जैसे कि उपाध्यायादि की स्त्री से मैथुन क्रीडादिका आसेवन करना तथा (गुरुदार) जो पितृव्य आदि हैं उनका स्त्रियों से काम क्रीड़ा करना फिर (मेरावइक्क मुप्फन्नो) सुंदर मर्यादा के व्यतिक्रम से उत्पन्न हो जाता है (वेलणओ नाम रसो) व्रीडन नामक रस (लज्जासका जणण लिंगो १०) शिर और नेत्र नीचे करने गात्रादि का सकोच हो जाना इसे ही लज्जा रस कहते हैं और सदैव काल मन में शका का रहना कि मुझे अमुक व्यक्ति क्या कहेगा तथा यदि मैं अमुक स्थान पर गया तो लोग मुझे क्या कहेंगे इत्यादि वार्ताओं में शका रखना सो लज्जा और शका के उत्पन्न करने वाला चिन्ह है जिसका १० अब इस में उदाहरण देते हैं । (वेलणओ रसो जहा) व्रीडा नामक रस में यह उदाहरण दिया गया है जैसे कि किसी देशवा किसी कुल में प्रथा है जब नव वधू स्वभर्ता से सग करती है तब अक्षतयोनि के कारण से उसके वस्त्रादि रुधिर से भर जाते हैं तब उस के श्वसुरादि उन वस्त्रों को बहुत से नर नारियों को दिखलाते हैं कि हमारी नव वधू पतिव्रता धर्म में दृढ़ि भूत है इसने कभी भी पर पुरुषों का संग नहीं किया इसमे रुधिर चर्चित वस्त्र ही प्रमाण भूत है अब यावन्मात्र वे नव वधू के शील की प्रशसा करते हैं तावन्मात्र ही वह नव वधू लज्जा को प्राप्त होती है क्योंकि मैथुन के नाम से ही लज्जा की प्राप्ति होती है जब उसके सेवन का ही उदाहरण दिया जाए तब तो क्यों न लज्जा प्राप्त होवे इसलिए वह नव वधू अपनी प्रिय सखी से कहती है कि (कि लोइय करणीयाओ लज्जणतरगतिलज्जामोति) हे मेरी प्यारी सखी ! इस लौकिक

क्रिया से और क्या लज्जा स्थान होगा अपितु कोई भी नहीं है इसीलिए इन क्रियाओं से मैं पुन २ लज्जित होती हू और फिर यह (वारिज्जमि) विवाह के समय में गुरुजणो) श्वसुरादिजन (परिवदेइ ३) नाधने है अथवा (परिवदइ) विवाहादि कार्यों में कहते है कि यह (जनइपोत्ति ११) रुधिर चर्चित हमारी अभिनव वधू का वस्त्र है सो इस कारण से वधू परम लज्जा को प्राप्त होती है यही लज्जा रस का उदाहरण है ॥ ११ ॥

भावार्थ—विनय उपचार अश्लील वार्ता उपाध्यायादि की स्त्रियों से मैथुन क्रीडा मर्यादाओं का अतिक्रम करना इत्यादि कारणों से लज्जा नामक रस उत्पन्न होजाता है और शंका वा लज्जा इस रस के चिन्ह हैं। १०। जैसे कि नव वधू अपनी प्यारी सखी से कहती है कि हे मेरी प्यारी सखी ! जो मेरे भर्तादि के संयोग से रुधिर चर्चित वस्त्र हुए हैं उन वस्त्रों को मेरे श्वसुरादि अनेक नर नारियों को दिखलाते है यद्यपि यह मेरे पतिव्रता धर्म ही की प्रशंसा करते है किन्तु इन कारणों से मैं तो परम लज्जित होती हू क्योंकि जब मैथुन क्रियाके नाम से ही लज्जा उत्पन्न होती है अपितु यह तो मेरे उदाहरण ही दे रहे है इसलिये इस संसार में इससे बढ़ कर लज्जा का स्थान क्या होगा अपितु कोई भी नहीं है अतः विवाहादि में भी मेरे वस्त्र दिखलाये जाते है इसलिए मैं परम लज्जित होती जाती हू। ११ । सो इसी का नाम लज्जा रस है अब बीभत्स रस का विवर्ण करते हैं ॥

८ अथ बीभत्स रस विषय ।

असुइकुणवदुदसणंसंजोगाब्भासगंधनिप्फन्नो निव्वेयविहिंसालक्खणो रसो होई बीभच्छो ॥ १२ ॥ बीभच्छोरसो जहा असुइमलभरिय निज्झरमभावदुगंधिसव्वं । कालपि धन्नाओ सरीरकलिं बहुमलकलूस विमुचंति ॥१३॥

पदार्थ (असुई) अपवित्रता मूत्र पुरीषादि की वा (कुणव) मृतक कलेवर (मांसपिंड) (दुदसण) दुर्दर्शन लालादि वा दान्तादि (संजोगब्भास) के वारम्वार देखने से और (गंधनिप्फन्नो) उसकी दुर्गंध से उत्पन्न हो गया है (निव्वेयविहिंसा) वैराग्य अहिंसा सो यही (लक्खणो) लक्षण है जिसके

(रसो होई वीभन्छो १२) सो नही वभित्स रस होता है अर्थात् वीभत्स लक्ष ण वैराग्य और अहिंस ही कथन किए गये हैं किन्तु यह वार्ता महा भागवशाली मोक्ष गमन करने वाले आत्माओं की अपेक्षा ही ज्ञात करनी चाहिये अन्यत्र नहीं अब इस का उदाहरण कहते हैं जैसे कि किसी शुद्ध पुरुष ने कहा कि वी भन्छो रसो जहा) वीभत्स रस यह है जैसे कि (असुईमलभरिय निज्झर) अशुची मूत्र विष्टादि और मल से भरे हुए हैं यह सर्व श्रोत्रादि विवर (स्थान) फिर यह (समावदुगंधि सव्वकालपि) स्वभाव से दुर्गंधि युक्त है अपितु सर्व काल में इसलिए (धन्नायो) व धन्य हे जो (सरीर काले) इस शरीर को जो अनिष्ट रूप है फिर (बहुमल कलुस) बहुत मल से कलुषित हैं अर्थात् मल का पिंड है इसको (विमुचाति १३) छोडते हैं अर्थात् जो इस दुर्गंध मय शरीर को छोडकर मोक्ष गमन होते हैं वे धन्य हैं ॥ १३ ॥

भावार्थ-वीभत्स रस उसे कहते है जो अशुची मास पिंड दुर्दर्शन इत्यादि के बारम्बार देखने से और दुर्गन्धि के निमित्त से वैराग और दया भाव उत्पन्न होता है वही वीभत्स रस है अपितु यह वार्ता मोक्षगमन आत्मा की अपेक्षा से कही गई है ॥ १२ ॥ और वे धन्य हैं जिन्होंने अशुचि और मल से भरे हुए श्रोत्रादि विवर जो स्वभाव से दुर्गंध यह शरीर है इसको छोड दिया है क्योंकि यह शरीर मल से कलुषित हो रहा है सदैव काल इसके सर्व द्वार मल को मस्रवण कर रहे हैं इस लिये वे धन्यवाद के योग्य हैं जो इस असार मय शरीर को छोड कर मोक्षगमन हो गए हैं। अब इसके अनतर हास्य रस का विवर्ण करते हैं ॥ १३ ॥

अथ हास्य रस विषय ।

रूववयवेसभासाविवरियनिलवण समुप्पन्नो हास मणप्प हासोप्पगासलिंगो रसो होई ॥ १४ ॥ हासो रसो जहा पासुत्तमसीमडियपडिबुद्ध देवरंपलोयाति हाज हणथणभर कंपणप्पणानियमज्झा हसई सामा ॥ १५ ॥

पदार्थ-(रूववयवेसभासा) रूप, वय, और भाषा (विवरिय) से विपरीति जैसे कि हास्य रस के उत्पादन करने के लिए पुरुष स्त्री के रूप को

धारण करता है तथा स्त्री पुरुष के रूप को धारण करती है और तरुण पुरुष हास्य रस के वश म होता हुआ वृद्ध के रूप को धारण करता है और राजा के वेष से वणिग् का वष धारण करता है अथवा भाडादि की नकलें इत्यादि (विवरिय विलवण समुप्पन्ने) विपरीत भावों से वा विडम्बनासे उत्पन्न होता है (हासो पणप्पहासो) हास्य रस जो मन का मकर्ष करने वाला है अर्थात् अतीव मनको मफुल्लित करने वाला है इसलिए (पगासलिंगोरसो होई १४) नेत्र मुखादिका विकाश रूप वा उदर कर मस्पण अद हास्य आदि इस रस के चिन्ह होते हैं १४ अब इसमें उदाहरण कहते हैं (हासो रसो जहा) हास्य रस जैसे (पासुत्तमसिमडिय) मसुप्त देवर को देखकर कर मषी के द्वारा मुख को मडित करती है फिर (पडिबुद्ध देवर पलोयति) जागृत हुए देवर को विशेष करके देखती है और कहती है कि (हा) हा इति खेदे क्या हुआ मेरे देवर के मुख को जो मषी से अलकृत हो रहा है अथवा (ही) शब्द कामका उत्पादक है इसलिए देवर के मुख को देखकर जो मषी (स्याही) से अलकृत हो रहा है इस निमित्त को लखकर काम जन्य वार्तायों को भाषण करती है फिर जिसके (जहयणभरक्पण) कलश के सामान स्तनों के भार से कापती है और (पणमियमज्भा) जिसका मध्य भाग स्तन भार से झुक रहा है इस मकार से कोई किसी व्यक्ति को आमत्रण देकर कहता है कि देखो (हसइसामा) अपने देवर के मुख को देख कर यह श्यामा किस मकार से हसती है सो इसी का नाम हास्य रस है अब इसके आगे करुणा रसके विषय में कहते हैं क्याकि करुणा रस भी दीन वचनों से युक्त है इसलिए हास्य रस का मतिपक्ष है सो मतिपक्ष का विवर्ण करते हैं ॥ १५ ॥

भावार्थ–रूप का परिवर्तन करना अथवा वृद्धादिका रूप धारण करना भाषा विपरीत भाषण करनी जिसके द्वारा हास्य की उत्पत्ति हो और मन मफुल्लित हो जाए सो यही उक्त चिन्ह हास्य रस के हैं अर्थात् इन लक्षणों ही से हास्य रस की मतीती होती है॥ १४ ॥ इस के उदाहरण में केवल इतना ही विवर्ण है कि जैसे कि श्यामा स्त्री निज देवर का उपहास करती है और उस के मुखादि को मषी से अलकृत करती है केवल उपहास्य के लिए उसी को हास्य रस कहते हैं ॥ १५ ॥

८ अथ करुणा रस विषय ।

पियविप्पओयवधवहवाहिविणिवायसंभमुप्पन्नो सोईयविल-वियपण्हयरुन्नलिंगो रसो करुणो ॥ १६ ॥ करुणो रसो जहा पभ्भायकिलामिअय वाहा गयपप्फ । अच्छिय बहुसो तस्स विओगे पुत्तया दुव्वलयते मुह जाय ॥ १७ ॥

पदार्थ-(पियवप्पओय) प्रिय का वियोग (वध वह) वध और वध (वा हिविणीवायसंभमुप्पन्नो) व्याधि पुत्रादि की मृत्यु अथवा स्वचक्र पर चक्रों के भय से उत्पन्न होता है करुणा रस अपितु (सोइय) शोक करना (विलविय) विलाप करना (पण्हय) खेद का होना (मूर्च्छागत) सो (रुन्नलिंगो, रसो करुणो १६) रोना लिंग होता है करुणा रस का अर्थात् नेत्रों से आंसु निर्मो चन करने इन्हीं लक्षणों से करुणा रस की प्रतीती होती है ॥ १६ ॥ अब इस का उदाहरण दिखलाते हैं (करुणो रसो जहा) करुणा रस इस प्रकार से होता है जैसे कि कोई वृद्धा स्त्री युवती स्त्री से कहती है कि हे पुत्रिके (पभ्भायकिला मि अय) परम प्रिय (पति के) के वियोग से तू परम दु खित (क्लामना) हो रही है फिर (वाहा गयपफअच्छिय बहुसो) पुनः २ तेरे नेत्रों में पानी के आने से नेत्र जल से भरे रहते है (तस्स विओगे) उस प्रिय क वियोग से (पुत्तया) हे पुत्रिके ! (दुव्वलय ते मुह जाय १७) तेरा मुख परम दुर्बल हो गया है इसी का नाम करुणा रस है ॥ १७ ॥ अब प्रशान्त रस के विषय में कहते हैं ॥

भावार्थ-करुणा रस उसे कहते है जो प्रिय के वियोग से अथवा वध और वध व्याधि से अथवा पुत्रादि की मृत्यु से चित्त को अशान्ति उत्पन्न होती है उसी के कारणों से चिंता करना, विलाप करना, मूर्छा वश होना इत्यादि लिंग यह सर्व करुणा रस के होते हैं इस में उदाहरण यह है कि जैसे किसी युवती कन्या के पति के वियोग होने पर वह कन्या परम दु खित अश्रु पूर्ण नेत्र जिसके मुख की आकृति मलीन है इत्यादि लक्षणों से निश्चय कराती है कि यह करुणा रस से व्याप्त हो रही है सो इसी को करुणा रस कहते हैं अब प्रशान्त रस के विषय में विवर्ण किया जाता है ॥ १७ ॥

अथ प्रशान्त रस विषय।

निद्दोसमणसमाहाणसभवो जो पसतभावेण अविकार लक्खणो सो रसो पसतोत्तिनायव्वो ॥ १८ ॥ पसतो रसो जहा सब्भावनिव्विकार उवसतपसतसोमदिट्ठीय ही जण मुणिणो सोहइ मुहकमल पीवरसिरीय ॥ १९ ॥ एए नवकव्वरसा बत्तीसादोसविहिसमुप्पन्नो गाहा हि मुणेयव्वा हवति सुद्धा मीसावा ॥ २० ॥ सेत नव नामे ॥

पदार्थ—(निद्दोसमण समाहाण) हिंसादि दोषा से रहित मनका समाधान (धारण) करना सो उसो स (सभवो जो पसतभावेण) उत्पति है जिसकी अर्थात् प्रशान्त भावा से ही प्रशान्त रस की उत्पति है और जिसका (अविकार) निर्विकार (लक्खणो) लक्षण है (सोरसो) वह रस (पसतोत्ति नायव्वा १८) इस प्रकार स प्रशान्त जानना चाहिये ॥१८॥ अब इसका उदाहरण कहते हैं (पसतोरसो जहा) कोई पुरुष किसी व्यक्ति को आमत्रण देकर कहता है कि प्रशान्त रस वह होता है जैसे कि- (सब्भावनिव्विकार) यह साधु स्व भाव से वा सद्भावे से निर्विकार है फिर (उवसत) इस का उपशान्त और (पसत) प्रशान्त चित्त है पुन' सोमदिट्ठीय) सौम्य दृष्टि है अपितु (ही) ही शब्द विशेष प्रशान्त रस का द्योतक है इसलिए (ही) शब्द ग्रहण किया गया है सो (जह) हे प्रिय तू देख जैसे (मुणिणो सोहइ मुह) मुनिका शोभता है मुख रूपी (कमल) कमल (पीवर सिरिय १९) जो उपशम रूपी रस से पुष्ट हो रहा है अर्थात् जिस के मुख पर उपशम रूपी लक्ष्मी (श्री) निवास कर रही है ॥१९॥ (एए नव*) यह नव (कव्व रस) काव्य रस (बत्तीस दो स-

---

* नोट १ इतिहास शुच क्रोधे स्याहो भयजुगुप्सके॥ विस्मय शाम इत्युक्त स्थायिभावा नवक्र मात १ सम्भो गमो परो वाच्छा विशेषो रति। विकार दर्शनादि अन्यो मनारथो हास । स्वस्येष्ट जय वियोगा दिना स्वास्मिन दु खोत्कष शोक। रिपु कृताय कारिणश्चेन सिम्बलन क्रोध परेषु लोकोत्कृष्टसु स्थिरतर प्रयत्न उत्साह। रौद्र विलोकनादिना अवचा शकन भयम् अर्थानां दोष विलोक नाद्रिमा गहा। जुगुप्सा अपूर्व वस्तु दर्शनादिना चित्तपरतारा विस्मय। विरागत्वा

विहि) सूत्र के द्वात्रिंशत् दोषों की शुद्धि के प्रयोग से (समुप्पन्ना) समुत्पन्न हैं जैसे कि सूत्र वह होता है जिसमें अलीक दोष न हो सो इसी के द्वारा अद्भुत रस की उत्पत्ति है इसी प्रकार आगे सभावना कर लेनी चाहिए अपितु ३२ दोषों का स्वरूप आगे लिखा जायगा पुन (गाहाहिं मुणेयव्वा) यह सर्व रस गाथाओं करके जानने चाहिए अर्थात गाथा वा छदादि के विषय यह सर्व रस होते हैं तथा (हवंति सुद्धा) किसी २ काव्य में एक २ ही रस होता है अथवा (मीसावा२०) किसी २ काव्य में एक वा २ ३ इत्यादि रसों का सम्बन्ध होता है अर्थात् एक काव्य में कई रसों के उदाहरण होते हैं (सेत नव नामे) अब इसी का नाम नव नाम है अर्थात् नव नाम के अन्तर्गत नव प्रकार के रसों का सक्षेप से विवर्ण किया गया है ॥ २० ॥

भावार्थ–मन के निर्दोष होने पर और भावों की विशेष शान्ति होने पर प्रशान्त रस की उत्पत्ति होती है और निर्विकार रूप का होना यही प्रशान्त रस का मुख्य लक्षण है ॥१८॥ इस रस में उदाहरण इस प्रकारसे दिया गया है कि जैसे कषायों के उपशम होने से और सौम्य दृष्टि होने से अतः परम शान्ति युक्त होने पर मुनि का मुख रूपी कमल उपशम रूप श्री से अलकृत होता है उसीका नाम प्रशान्त रस है ॥१९॥ यह नव काव्य रस सूत्र के ३२ दोषों की विधि की रचना से उत्पन्न होते हैं जैसे कि अलीक दोष से रहित अद्भुत रस की उत्पत्ति होती है ऐसे ही और सभावना कर लेनी चाहिये सो यह रस गाथा काव्य छदादि में जानने चाहिये किन्तु काव्यादि में शुद्ध रस भी होते हैं मिश्रित रस भी होते हैं जैसे कि एक काव्य में एक रस हो उसे शुद्ध रस कहते हैं यदि एक काव्य में २-३ तीन रसों का समावेश हो उसे मिश्रित रस कहते हैं किन्तु ३२ दोषों के प्रयोग से भी इन की उत्पत्ति है अन्य प्रकार से भी उत्पत्ति हो जाती है अलकार, चपू और छदादि ग्रथों में इनका सविस्तर स्वरूप जानना चाहिए सो इसी स्थानोपरि नव नाम का स्वरूप पूर्ण होगया है अब दश प्रकार के नाम का विवर्ण करते हैं ॥ २० ॥

दिना निर्विकार मशान्तरस । इति अलकार चिंतामणि सूत्रम् अलकार चिंतामणि नामक ग्रन्थ में उक्त रसों का महान् सविस्तर स्वरूप वर्णन किया गया है और इनके पृथक् २ उदाहरण और उद्दीपन दि के कारण भी बतलाए गये हैं किन्तु मूल सूत्र में तो केवल नव रसों का स्वरूप सूचना मात्र ही दिखलाया गया है।

अथ दश नाम विषय ।

सेकित दसनामे २ दसविहे पण्णते तंजहा गोणे १ नो-गुणे २ आयाणपदेण ३ पडिवक्खपएण ४ पाहाण पण्ण ५ अणाइयसिद्धंतेण ६ नामेण ७ अवयवेण ८ सजोगेण ९ पमाणेण १०ं सेकित गोणे २ खमुद्दो समुद्दो ३ अलालं पलाल ४ अकुलिया सकुलिया ५ नो पल असइ पलास अमाइवाहए माइवाहए अवीयभाव्वए वीयवावए नो इदगोवए इदगो-वए ९ सेत नो गोणे ॥

पदार्थ-(सेकित दसनामे २ दसविहे प० त) वह मतिपादित दश नाम कौनसा है (उत्तर) दशनाम दश प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (गोण १) जा गुण निष्पन्न हो उसे गुण नाम कहते है १ (नो गुणे २) जो गुण से रहित उत्पन्न हो उसे नो गुण निष्पन्न नाम कहते हैं सो प्रथम यथार्थ नाम है द्वितीय अयार्थ है २ (अयाण पदेण ३) जो आदि पद से उत्पन्न हो उसे आदान पद नाम कहते है ३ और (पडिवक्खपएण ४) जो प्रति पक्ष से उत्पन्न हो उसे प्रतिपक्ष नाम कहते हैं ४ (पाहाण पएण ५) प्रधान वस्तु के संयोग से जो उत्पन्न हो उसका नाम प्रधान पद है (अणाइयसिद्धं तेण ६) जो अनादिकाल से सिद्ध है उसी का नाम अनादि सिद्ध नाम है ६ (नामेण ७) नाम से जो निष्पन्न होता है उसे नाम पद कहते हैं ७ (अवय वेण ८) अवयवों के संयोग से जो नाम उत्पन्न होता है उसे अवयव नाम कहते हैं ८ और (सजोगेण ९) द्रव्य के संयोग से जो नाम उत्पन्न होता है उस संयोग नाम कहते है ९ (पमाणेण १०) जो प्रमाणों के कारण से नाम उत्पन्न हो उसे प्रमाणपद कहते है १० अब इन के पृथक् २ उदाहरण दिख लाए जाते है (सेकित गोणे २) (प्रश्न) गुण निष्पन्न नाम किसे कहते हैं (उत्तर) गुण निष्पन्न नाम निम्न प्रकार से है जैसे कि-(खम इति खमणो १) जो क्षमा करे उसे क्षमण कहते हैं यह नाम क्षमा के गुण से निष्पन्न है इस लिए यथार्थ नाम है इसी प्रकार (जल इति जलणो) जो जलती है वह ज्वलन है सो यह ज्वलन गुण से निष्पन्न नाम है २ (तव इति तवणो ३) जो तपता

है उसे तपन कहते हैं (पव इति पवणो ४) जो पवित्र करता है उसे पवन कहते हैं (सेत गोण) इत्यादि और नामों की भी सभावना करलेनी चाहिए सो यही गुण निष्पन्न नाम है अब नोगुण निष्पन्न नाम के उदाहरण देते हैं (सेकिंत नो गुणे ?) (प्रश्न) नो गुण निष्पन्न नाम कौनसा है (उत्तर) नो गुण निष्पन्न नाम इस प्रकार से है जैसे कि- (अकुंतो संकुंतो १) जिस के कुंत नाम शस्त्र विशेष नहीं है उसे अकुंत कहते हैं यह अयथार्थ नाम है क्योंकि कुंत नाम शस्त्र (बर्छी) का है और सकुंत नाम प्राकृत में पक्षी का है सो शस्त्रादि के न होने पर भी उसे शकुंत कहा जाता है सो इसी को नो गुण निष्पन्न नाम कहते हैं इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए १ (अमुग्गोसमुग्गो २) नहीं है मुद्ग जिस के उसी का नाम अमुद्ग अर्थात् मुद्ग के न रखने पर भी समुद्ग कहा जाता है) मुद्ग वस्तु आधार भाजन (करंड) विशेष होता है और (अमुद्दो समुद्दो ३) नहीं है मुद्रा जिसके उसी को समुद्र को कहते हैं अत मुद्रा न होने पर भी सागर का नाम समुद्र कहा जाता है ३ (अलाल पलाल ४) मुखादि के लालों के न होने पर भी तृण विशेष को पलाल कहते हैं ४) (अकुलिया सकुलिया ५) कुलिका से रहित होने पर सकुलिका कहते हैं यह सर्व प्राकृत की शैली से नामों का विवर्ण है परन्तु संस्कृत में तो शकुनिक पक्षी का ही नाम होता है ५ (नापल असइ पलास ६) जो पल (मांस) का आस्वादन नहीं करता उस को पलाश कहते हैं यह भी एक वनस्पति के पत्रों के नाम है ६ (अमाइवाहएमाइवाहए ७) जो मातृ वाहक नहीं होता उसे मातृ वाहक कहते हैं द्विइन्द्रिय जीव विशेष होता है ७ (अवीय वायए वीयवायए ८) जो बीज के बोने वाला नहीं उसे बीज वायक कहते हैं विकलेंद्रिय जीव विशेष का नाम है ८ (नोइंदगोवए इंदगोवए ९) जो इंद्र गोपक नहीं होता उसे इंद्र गोपक कहते हैं यह भी विकलेंद्रिय जीव विशेष है ९ (सेतं नो गुणे) अब यही नो गुण निष्पन्न नाम होता है अर्थात् यह नाम यथार्थ नहीं है किन्तु प्रसिद्धि में इसी प्रकार से उच्चारण किये जाते हैं इसी वास्ते इन को नोगुण निष्पन्न नाम कहते हैं ॥

भावार्थ—दश नाम दश प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि गुण निष्पन्न नाम १, अगुणनिष्पन्न नाम २, आदानपद नाम ३, प्रतिपक्षपद नाम ४, प्रधानपद नाम ५, अनादिसिद्ध नाम ६, नामपद ७, अवयव नाम ८ स-

योग नाम ६, प्रमाण नाम १०, अपितु गुण निष्पन्न उसे कहते हैं जैसे कि क्षमा के गुण से क्षमण १ ज्वलन होने से ज्वलन २ ताप होने से तपन ३ पवित्र करने से पवन ४ यह सर्व गुण निष्पन्न नाम हैं॥ किन्तु नो गुण निष्पन्न नाम निम्न प्रकार से हैं कुन्त के न होने पर शकुन्त १, समुद्गन होने पर भी समुद्ग २, मुद्रा के न होने पर समुद्र ३, लाल के न होने पर पलाल ४, कुलिका के न होने पर शकुलिका ५, मास के न खाने पर पलाश ६, अमातृ वाहक को मातृ वाहक ७, अबीज वापक को बीज वापक ८, इन्द्र के न गोपने पर इन्द्र गोप ६, इत्यादि यह सर्व प्रयोग गुण निष्पन्न नहीं हैं किन्तु गुण से विरुद्ध नाम प्रसिद्ध हैं॥ अब आदान पद और प्रतिपक्ष पद के विषय में लिखा जाता है॥

अथ आदान पद और प्रति पक्ष पद विषय।

(सेकित आयाणपएण २ आवन्ती १ चउरंगिज्जं २ असखय ३ जनइज्ज ४ पुरिसविज्ज ५ एलइज्ज ६ विरियं ७ धम्मो ८ मग्गो ९ समोसरण १० अहात्तहीय ११ गन्थो १२ जमइज्ज १३ अद्दइज्जम् १४ सेत्तआयाणपएणं॥ सेकिन्तं पडिवक्खपएण २ नवेसुगामागर १ नगर ३ खड ४ कवड ५ मडव ६ दोणमुह ७ पट्टण ८ आसम ६ सेवाह १० सन्निविसेसुय ११ णिविस्समाणेसु असिवा सिवा १ अग्गी सीयलो २ विसं महुर ३ कल्लालघेरसु अविल साउय ४ जे लत्तए से अलत्तए ५ जे लाउए से अलाउए ६ जे सुम्भए से कुसुम्भए ७ आलम्बते विवलीएभासए ८ से तं पडिवक्खपएणं॥

पदार्थ-(सेकित्त अयाणपएण २) (प्रश्न) जो आदान पद करके पद बनते हैं वे किस प्रकार से हैं (उत्तर) जिस अध्याय वा उद्देश के आदि पद के उच्चारण करने से उसी अध्याय वा उद्देश का बोध हो जाय उसे आदान पद से निष्पन्न नाम कहते हैं इनके उदाहरण निम्न प्रकार से हैं (आवन्ती) श्री आचाराङ्ग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कन्ध के पंचम अध्याय के आदि में आवन्ती

के यावंती इत्यादि पद हैं सो वह अध्याय आदि पद के नाम से प्रसिद्ध है जैसे कि आवन्ती अध्याय इसी प्रकार आगे भी जान लेना चाहिये (चउरंगिज्ज २) चतुरंगी अध्याय (श्री उत्तराध्ययन सूत्र के ३ तीसरे अध्याय का आदि पद है (चत्तारि पर मगाणि इत्यादि) (असखय ३ असख्यय अध्याय उत्तराध्ययन सूत्र का ४ अध्याय (जन्नइज्जम् ५) यज्ञ का अध्याय (उत्तराध्ययन सूत्रका २५ अध्याय) (पुरिस विज्ज) पुरुष विद्याध्याय (उत्तर-सूत्राध्याय ६ (एलइज्जम् ६) एलक अध्याय (उत्तर सूत्र अध्याय ७) (वीरिए ८) वीर्याध्याय (सूयगडाग सूत्र अ० ८) (धम्मो ८) मोक्षधर्म अध्याय (सू० सू० अ० ११) (मग्गो ६) मार्ग अध्याय (सू० सू० अ० ६) (समोसरणम् १०) समोसरण अध्याय (सू० सू० अ० १२) (आहात्तहीयम् ११) यथा तथ्याध्याय (सू० सू० अ० १३) (गन्थो १२) ग्रन्थ अध्याय (सू० सू० अ० १४) (जमइज्जम् १३) यमईय अध्याय (सू० सू० अ० १३) (अद्दइज्जम् १४) आर्द्रकुमाराध्याय (सू० सू० अ० २२) (सेत्त अयाणपएणम्) सो इसी का नाम आदान पद है अर्थात् जिन अध्यायों का आदि पद से निष्पन्न नाम है उन्हीं अध्यायों को आदान पद कहते हैं इसी प्रकार और अध्यायों का भी सम्बन्ध जानना चाहिये ॥ अब प्रतिपक्ष विषय में कहते हैं) सेकिंत पडिवक्खपएणम्) (प्रश्न) प्रतिपक्ष धर्म से जो पद उत्पन्न होते हैं वेह किस प्रकार से हैं (उत्तर) प्रतिपक्ष धर्म निष्पन्न पद निम्न प्रकार से होते हैं जैसे कि (नवे सुगामाम २) नूतन ग्रामों और आकरों में इसी प्रकार (नगर) जो शुल्क रहित होता है उसे नगर कहते हैं ३ (खेड ४) धुलिमय कोट वाला खेडा होता है ४ (कवड ५) कुनगर को कर्वट कहते हैं ५ (मडव ६) जिसके दूरवर्ती नगर हों उसे मडप कहते हैं (दोणमुह ७) जिस स्थान पर जल और स्थल दोनों मार्ग हों उसे द्रोण मुख कहते हैं (पट्टण ८) नाना प्रकार के पदार्थ नाना प्रकार के दोषों से विक्रीयमाण होते हों उसे पत्तन कहते हैं (आसम ९) तापसादि के स्थान को आश्रम कहते हैं (सवाह १०) जहा पर बहुत से लोगों का समूह हो उसे सवाह कहते हैं अथवा (सन्निवेसे सु अ०) घोसादिक मे (णिविस्समाणेसु) बसते हुओं में यदि (अशिवा सिवा) शृगालादि प्रवेश करते हैं वा शब्द करते हैं वेह शब्द अशिव (अशुभ) होने पर भी उन्हें शिवा (कल्याण रूप) कहा जाता है क्योंकि शृगाली का नाम कोस में शिवा भी लिखा है

तथा कोई व्यक्ति (अग्गी सीयलो २) अग्नि का शीतल कहता है और (विस महुर ३) विषको मधुर कहता है अथवा (कलालघरेसु अविलमाउय ४) कलाल के गृह में मदिरा स्वरस चलित होगया है अर्थात् अम्ल की स्वादु कहता है फिर (जे लत्तए से अलत्तए ५) जो लाक्षादि से रक्त है उसको प्राकृत में अलत्त कहते हैं और (जे लाउए से अलाउए ६) जो जलादि से वस्तु को ग्रहण करता है उसी को अलाबुतूंबा कहते हैं और जो (जे सुभए स कुसुभए ७) शुभ (प्रिय) है उसे देश भाषा में कुशुभा कहते हैं कु अव्यय कुत्सित अर्थ में है सो (आलवते विवलीयभासए ८) जो उक्त प्रकार से भाषा भाषण करते हैं वह विपरीत भाषा है क्योंकि पक्षधर्म से प्रतिपक्षधर्म है इसीलिए इस को विपरीत भाषा कहते हैं अथवा भाषा के न होने से इसे अभाषा भी कहते हैं सो यह समासान्त पद है (सेत पडिवक्खपएणं) सो यही प्रतिपक्ष पद है अर्थात् पक्षधर्म से प्रतिकूल होने से प्रतिपक्ष कहा जाता है शंका क्या यह प्रतिपक्ष पद नोगुण पद में अन्तर्भूत नहीं हो सकता है (समाधान) नहीं हो सकता है क्योंकि नो गुण पद कुन्तादि की प्रवृत्ति के निमित्तसे पैदा हुआ है और यह पद प्रतिपक्ष धर्म वाचक है इसलिये सापेक्षित्वादिविशेष ॥ ४ ॥

भावार्थ-आदान पद उसका नाम है जिस अध्याय का आदि सूत्र से नाम प्रसिद्ध होजाय और उसी नाम अध्याय से उच्चारण किया जाय सो इस पद में चतुर्दश उदाहरण दिखलाए गये हैं जैसे कि आवन्ती अध्याय १ चतुरंगि अध्याय २ असंखयाध्याय ३ यज्ञ नियमाध्याय ४ पुष्प विधाध्याय ५ एलका ध्याय ६ वीर्याध्याय ७ धर्माध्याय ८ मोक्ष मार्गाध्याय ९ समोशरणाध्याय १० याथा तथ्याध्याय ११ ग्रन्थाध्याय १२ यमइयाध्याय १३ आर्द्रकुमाराध्याय १४ यह सर्व अध्याय श्रीआचारांग सूत्र श्रीसूयगडांग सूत्र श्रीउत्तराध्ययन सूत्र के अन्तर्गत हैं सो इन्हीं का नाम आदान पद नाम कहते हैं और प्रतिपक्ष पद उस का नाम है जो धर्म से विरुद्ध पद है जैसे कि नूतन ग्राम नगरों में जब शृगालादि शब्द कहते हैं तब वे शब्द अशुभ होते हैं किन्तु उनको लोक शिवा कहते हैं क्योंकि (शिवा गौरी फेरवयोः) इत्यमरः शिव शब्द पार्वती गीदडी शमी का वृक्ष हरें तथा आंवला इन अर्थों में भी व्यवहृत किया जाता है इसलिये अशिवा शब्द को शिवा कथन करना प्रतिपक्षधर्म वाचक पद है इसलिये आगे भी जानना चाहिये जैसे कि अग्नि शीतल १, विष मधुर २, कलाल के घर में मदिरा

स्वादु ३, रक्त को अलक्त ४, लापु को अलातु ५, शुभ को कुशुभ ६ इस प्रकार प्रतिपक्ष वचन उच्चारण करने उसी को प्रतिपक्ष धर्म कहते हैं और यह नोगुण में उदाहरण नहीं गिने जाते क्योंकि यह कथन प्रतिपक्ष धर्म वाचक पद है अब प्रधान पद और अनादि सिद्ध नाम का विवेचन करते हैं ॥

अथ प्रधान पद और अनादि सिद्ध पद विषय ।

सेकिंत पहाणपएण २ असोगवणे १ सत्तिवणे २ चंपगवणे ३ चूयवणे ४ नागवणे ५ पुन्नागवणे ६ उच्छुवणे ७ दक्खवणे ८ सालवणे ९ सेत्त पहाणपएणम सेकिंत अनादियसिसिद्धंतेण २ धम्मत्थिकाय १ अधम्मत्थिकाय २ आगासत्थिकाए ३ जीवत्थिकाए ४ पुग्गलत्थिकाए ५ अद्धासमए ६ सेत्तं अनाइयसिद्धंतेण ॥ ६ ॥

पदार्थ-(सेकिंत पहाणपएण २) से शब्द अथ का वाची है और कि प्रश्न अर्थ में होता है त शब्द पूर्व सम्बन्ध के लिये होता है सो तात्पर्य यह हुआ कि प्रधान पद कौनसा हुआ गुरु कहने लगे कि भो शिष्य ! प्रधान पद उसे कहते हैं जिस वन में आम्रादि वृक्ष अनेक जाति के होते हुए उन में जो प्रधान और बहुत हो उन्ही के नाम से वन प्रसिद्ध होजाता है जैसे कि (असोगवणे १) अशोक वृक्ष अतीव होने से अशोक वन कहा जाता है उसी प्रकार (सत्तिवण्णवणे ३) सप्तपर्ण वन (चंपगवणे ४) चंपकवन (चूयवणे ५) आम्रवन (नागवणे ६) नागवन (उच्छूवणे ७) इक्षुवन (दक्खवणे ८) द्राक्षावन और (सालवण ६) शालवन यह सर्व प्रधानता की अपेक्षा से कथन किये गये हैं (सेत्तंपहाण पएण ५) सो यही प्रधान पद है ५ (सेकिंत अनाइय सिद्ध तेणं २) (प्रश्न) अनादि सिद्धांत नाम किसे कहते हैं (उत्तर) जो अनादि काल से सिद्ध और निर्णीत हो उसी का नाम अनादि सिद्धान्त नाम है क्योंकि जो अनादि सिद्धांत पद है वह कभी भी परिवर्तित नहीं होता

* प्रवामीत्यै ॥ प्र० व्या० अ०८ पा०१ सू० १५ अतवेरादे दित उत्वम् भवति पावासु भेरु-इत्यु-२५६ ॥

जैसे कि (धम्मत्थिकाय १) धर्मास्तिकाय १ (अधम्मत्थिकाय २) अधर्मी स्तिकाय २ (आगासत्थिकाय ३) आकाशास्तिकाय ३ (जीवत्थिकाय ४) जीवस्ति काय (पुग्गलत्थिकाय ५ पुद्गलास्तिकाय ५) (अद्धासमय ६) समय (से त अनाइय सिद्धतेण ६) ये ही अनादि सिद्धात नाम हैं क्योंकि यह पद् नाम द्रव्य के किसी समय म भी परिवर्तन शील नहीं है अत स्वत सिद्ध हैं इसीलिये इन्हें अनादि सिद्धात नाम कहते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—प्रधान पद उसका नाम है जो वृक्ष अनेक जाति के हों उनमें जो अतीव प्रधान वृक्ष हों उन्हीं क नाम से वन शब्द व्यवहृत किया जाता है जैसे कि अशोक वन १ सप्तपर्ण वन २ चम्पक वन ३ आम्र वन ४ नाग वन ५ पुन्नाग वन ६ इक्षु वन ७ द्राक्षा वन ८ शाल वन ६ सो इसी का नाम प्रधान पद है ५ किन्तु अनादि सिद्धान्त नाम उसे कहते हैं जो अनादि काल से सिद्ध रूप और निर्णीत हो रही अनादि सिद्धान्त नाम है जैसे कि धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ जीव ४ पुद्गल ५ समय ६ यह अनादि निष्पन्न नाम है इसीलिये इन्हें अनादि सिद्धान्त नाम कहते हैं क्योंकि नाम और नाम कर्म भिन्न है अतएव नाम कर्म स्थिति वाला होता है नाम अनादि निष्पन्न है इसीलिये इन्हें अनादि सिद्धात नाम कहते हैं ॥ ६ ॥ अब नाम पद और अवयव नाम पद विषय में विवर्ण किया जाता है ॥

अथ नाम पद और अवयव नाम पद विषय ।

(सेकिंत नामेण २) पिउपियामहस्स नामेण उन्ना मिज्जइ सेत नामेण ७ से किंत अवयवेण सिंगी १ सिखी २ विसाणी ३ दाडी ४ पक्खी ५ खुरी ६ णही ७ वाली ८ दुप्पय ६ चउप्पय १० वहुप्पया ११ णगुली १२ केसरी १३ कउही १४ परियरवधेण भउजाणेज्जा १५ मिहिलिय निवसणेणं १६ सित्थेणदोणयाग १७ कविं च एगाए गाहाए १८ सेत अवय-वेणी १६)

पदार्थ-(सेकिंत नामेण २) (प्रश्न) नाम से नामपद किस प्रकार बनता है (उत्तर) नाम से नामपद निम्न प्रकार से है जैसे कि , पिउपियो महस्सना मेण उन्नामिज्जइ) पिता अथवा पितामह पितृ पितामह इत्यादि के नामो परि नाम प्रसिद्ध किया जाय जैसे पिता के नाम पर तेतलीपुत्र अथवा माता के नाम से मृगापुत्र थावचा पुत्र पितृ पिता के नाम पर वरुण नाग नतआ इत्यादि यह नाम पूर्व पुरुषो के नाम पर प्रसिद्ध है सो इसी का नाम (सेत नामेण) नाम से उत्पन्न नाम है. इस नाम के द्वारा पूर्व पुरुषों के नाम भी प्रगट हो जाते हैं अब अवयव विषय में कहते हैं (सेकिंत अवयवेण) (प्रश्न) अवयव नाम कौनसा है गुरु कहते हैं भोशिष्य ! अवयवो के प्रधान होने से जिस का नाम अवयवो के अनुसार किया जाय उसी को अवयव नाम कहते हैं जैसे कि (सिंगी १) शृंग के होने से शृंगी कहा जाता है (पशुविशेष) इसी प्रकार (सिही २) शिखा होने से शिखी (मोर) (विसाणी) विषाणों के होने से विषाणी ३ (दाढी ४) दाढों के होने से दाढी (सूअर) (पक्खी) पाख होने से पक्षी ६ फिर अवयव प्रधान होने से पादादि प्रधान भी होते हैं इसलिये इस विषय में कहते हैं (खुरी ६) खुर होने से खुरी ६ (नही ७) नख होने से नखी ७ (वाली ८) (केश) बाल अधिक होने से वालो ८ (दुप्पए ९) द्विपद होने से मनुष्य कहा जाता है इसी प्रकार (चतुप्पय १०) चारपाद वाले गवादि १० (बहुप्पया ११) बहुपाद वाले कान खजूरा आदि (णंगुली १२) पूंछ होने से नगुली वानरादि (केसरी १३) केसर होने से केसरी १३ (कउही १४) ककुभ होने से ककुभी (स्कन्ध वाले वृषभादि) (परियरबंधेण भडजाणिज्जा १५) विशिष्ट वस्त्रादि की रचना देखकर शूर पुरुष जाना जाता है अर्थात् जिसके विशिष्ट वस्त्र राज चिन्हों से अंकित हैं वही शूर पुरुष होता है (महीलिय निवसणेण १६) इसी प्रकार वस्त्रादि की रचना देखकर और वेष को देखकर स्त्री जानी जाती है यथा यह पतिव्रता है अथवा पुंश्चली है (सित्थेण दोणपाग १७) द्रोण पाक रतन से एक कणका मात्र अन्न ग्रहण करने से परिपक्व अथवा अपरिपक्व जाना जाता है (कविंच एगाए गाहाए १८) और कवि एक गाथा के उच्चारण करने से जाना जाता है कि यह सुकवि है वा कुकवि है विद्वान् है वा मूर्ख है साक्षर है वा निरक्षर भट्टाचार्य है (सेतंभवयवेण) सो यही पूर्वोक्त अवयव प्रधान नाम पद होता है

क्योंकि जिसका जो अवयव प्रधान हो उसके अनुसार उसका नाम ग्रहण किया जाय उसी को अवयवी नाम कहते हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—नाम से नाम निष्पन्न उसे कहते है जो पिता और पितामह पितृ पितामह के नाम से नाम निष्पन्न होता है उसी से प्रसिद्धि को भी प्राप्त हो जाता है जैसे तेतली पुत्र उग्रण नागनतुआ अथवा मृगापुत्र थावच्चा (स्तापत्य) पुत्र इत्यादि यह सर्व नाम से निष्पन्न नाम पद है, और अवयवों की प्रधानता से जो नाम उत्पन्न हो उसे अवयवी नाम कहते है जैसे कि इस कथन में १८ उदाहरण दिये गये है जो निम्न लिखितानुसार है। शृगी १ शिखी २ विषाणी ३ दाढी ४ पक्षी ५ खुरी ६ नखी ७ वाली ८ द्विपद ९ चतुष्पद १० बहुपद ११ नागुली १२ कसरी १३ ककुभी १४ सैनिक वेष से शूरवीर जाना जाता है १५ वेष से ही सती वा असती स्त्री जानी जाती है १६ पके हुए अन्न के एक कण से द्रोणके वा घडाहे का पाक जाना जाता है १७ कवि एक गाथा से १८ यह सर्व अवयव प्रधान पद हैं क्योंकि जिस जीव का जो अवयव प्रधान होता है उसी के प्रयोग से उसका वही नाम उच्चारण किया जाता है इसी कारके इसे अवयव प्रधान नाम पद कहते है और गौण निष्पन्न नाम के यह अन्तर्भूत है अब संयोग नाम विषय में विवेचना करते हैं ॥

॥ अथ संयोग नाम विषय ॥

सेकित संजोएणं २ चउव्विहे पण्णत्ते तं० दव्वसंजोए १ खेत्तसंजोए २ कालसंजोए ३ भावसंजोए ४ सेकित्त दव्वसंजोए ५ तिविहे प० तं० सचित्ते १ अचित्ते २ मीसए ३ सेकित्त सचित्ते २ गोहिंगोमिए १ महिसिहिं महिसिए उट्टीहिं उट्टीए पसूहिं पसूइए ३ ऊरणीएहिं ऊरणीए ४ सेत सचित्ते सेकित्त अचित्ते २ छत्तेणं छत्ती १ दंडेणं दंडी २ पडेणं पडी घडेणं घडी ३ कडेणं कडी ४ सेत्त अचित्ते सेकित्त मिहस्सए २ नावए नाविए १ सगडेणं सागडिए २ रहेणं रहिए ३ हलेणं हालिए सेत्त मिस्सए-सेत दव्वसंजोए सेकित्त खेत्त संजोए २ भरहे एरवए

हेमवए एरणवए हरिवासए रम्मगवासए देवकुरुए उत्तर कुरुए पुव्वविदेहए अवरविदेहए अहवा मागह मालवए सोरट्ठए मरहट्ठए कुकणए कोसलए सेत्तं खेत्त सजोए सेकित कालसजोए २ सुसुमसुसुमाए सुसमाए सुसमदुसमाए दुसमसुसमाए अहवा पावसए १ वासारत्तए २ सरदए ३ हेमतए ४ वसतए ५ गिम्हए ६ सेतकाल सजोगे सेकित भाव संजोगे २ दुविहे पण्णत्ते तजहा पसत्थे अपसत्थेए सेकित पसत्थे २ नाणेण नाणी दसणेग दमणी चरित्तेणं चरित्तीं सेत्त पसत्थे सेकित अपसत्थे २ कोहेण कोही माणेण माणी मायाए मायी लोभेण लोभी (सेत्त असत्थे) सेत्त भाव संजोगे सेत्त सयोगे ॥ ८ ॥

पदार्थ–(सेकित सजोएणु २ चउविह पण्णत्ते तजहा) (प्रश्न) सयोग जन्य नाम कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) सयोग जन्य नाम चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (दव्व सजोग १ खेत्त सजोगे २ काल सजोगे ३ भाव सजोगे ४) द्रव्य सयोग जन्य नाम १ क्षेत्र सयोग जन्य नाम २ काल सयोग जन्य नाम ३ भाव सयोग जन्य नाम ४ (सेकित दव्व सजोगे २ तिविहे पण्णत्ते तजहा सचित्ते १ अचित्त २ मीसए ३) (प्रश्न) द्रव्य सयोग जन्य नाम कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) द्रव्य सयोग जन्य नाम तीन प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे-कि–सचित्त १ अचित्त २ मिश्र ३ (प्रश्न) (सचित्त सचित्ते) द्रव्य सयोगज सचित्त के उदाहरण किस प्रकार से है (उत्तर) (गोहिगोमए १ उट्टिहि उट्टीए २ पसूहि पसूए ३, ऊरणीहि ऊरणीए ४ सेत्त सचित्ते) जैसे जिसके पास गौएँ है उसे गोमान् कहते है १ इसी प्रकार जिसके पास ऊट है उसे औष्ट्रिक कहते हैं तथा जिसके पास पशु हैं उसे पशुओं वाला कहते हैं ३ जिसके पास अजादि हैं उसे अजादि वाला कहते है (सेत्त सचित्ते) यही सचित्त द्रव्य सयोगज नाम है इसी प्रकार अन्य भी उदाहरण जानने चाहिए १ (सेकित

अचित्ते) (प्रश्न) अचित्त द्रव्य सम्बन्ध कौनसा है और उसके उदाहरण जानने चाहिए ? (सेकिंत अचित्ते) (प्रश्न) अचित्त द्रव्य सम्बन्ध कौनसा है और उसके उदाहरण किस प्रकार से हैं। उत्तर) अचित्त द्रव्य सम्बन्ध वह होता है जिस अचित्त के प्रयोग से संयोजन किया जाय और उसके उदाहरण निम्न लिखित प्रकार से है (छत्तेण छत्ती १ दंडेण दंडी २ पडेण पडी ३ कडेण कडी ४) छत्र के सम्बन्ध होने से (छत्री) १ दंड के सम्बन्ध होने से दंडी पटके सम्बन्ध होने से पटी ३ कटके सम्बन्ध होने से कटी ४ (कट) चटाई (सेत्तं अचित्ते) सो यही अचित्त द्रव्य सम्बन्ध है अब मिश्र द्रव्य सम्बन्ध विषय म कहते हैं (सेकिंतं मिसए २) (प्रश्न) मिश्र द्रव्य सम्बन्ध किसे कहते हैं (उत्तर) मिश्र द्रव्य यह होता है जैसे कि (नावा णाविए १ सगडेणं सागडिए २ रहेण रहिए ३ हलेणं हालिए ४ सेत्तं मिसए) (सेत्तं दव्व संजोगे ?) नाव के संयोग होने पर नाविक होता है १ शकट के संयोग से शाकटिक २ रथ के संयोग से रथिक ३ हलके संयोग से हालिक ४ क्योंकि इन पदार्थों में सचित्त अचित्त दोनों प्रकार के पदार्थों का संयोग है जैसे कि वृषभ (बैल) सचित्त है हल अचित्त है सो दोनों के संयोग होने से हालिक कहा जाता है सो यही मिश्र संयोग है और इसे ही द्रव्य संयोगज कहते हैं। अब क्षेत्र संयोग विषय में विवेचन किया जाता है (सेकिंत खेत्तसंजोए ?) (प्रश्न) क्षेत्र संयोगज नाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) क्षेत्र संयोगज नाम इस प्रकार से वर्णन किया गया है (भारहए एरवए हेमवए एरणवए हरिवासए रम्मगवासए) जैसे जिसका जन्म भारत में हुआ है अथवा भरत क्षेत्र में निवास करता है उसे ही भारत कहते हैं इसी प्रकार ऐरवतिक हैमवत एरण्यवत हरिवर्षीय रम्यकवर्षीय (देवकुरुए उत्तरकुरुए पुव्वविदेहए अवरविदेहए) देवकुरुक उत्तर कुरुक पूर्वविदेहक अपरविदेहक यह सर्व क्षेत्र संयोगज नाम है (अहवा) अथवा अन्य प्रकार से भी क्षेत्र संयोगज नाम का वर्णन करते हैं जैसे कि (मागहे १ मालवए २ सोरट्ठए ३ मरहट्ठए ४ कोंकणए ५ कोसलए ६ सेत्तं खेत्तसंजोए) जिसका जन्म मगध देश में हुआ है अथवा मगध देश में बसता है उसे मागध कहते हैं इसी प्रकार मालवीय २ सौराष्ट्रिक महाराष्ट्रिक ४ कोंकण ५ कौशालिक ६ येही क्षेत्र संयोगज नाम होते हैं इसी प्रकार अन्य देशों के सम्बन्ध होने पर

भी सम्भावना करलेनी चाहिये जैसे अचनदीय (पजाबी) गुर्जरी (गुजराती) इत्यादि (सेत्त काल सजोगे २) (प्रश्न) काल सयोग जन्य नाम किसे कहते उत्तर जिसका जन्म सुषम सुषम काल में हुआ है उसको सुषम सुषमज कहते हैं इसी प्रकार (सुसमाए) सुषमज (सुसमदुसमाय ३) सुषमदुषमज दुसमसुस-माए) दुषम सुषमज (दुसमाए) दुषमज (दुसम दुसमाए) दुषम दुषमज यह सर्व सप्तम्यन्तपद पचम्यन्त जानने चाहिए सो जिस काल में जिसका सम्भव हुआ है वह कालिक सयोग से उसी प्रकार कहा जाता है अथवा काल का सयोग अन्य प्रकार से भी कहते हैं (अहवा पावसए १ वा सारत्तय २ सर दए ३ हेमतए ४ वसतए ५ गिम्हए ६ (सेत्तकाल सजोगे) यदि पावस ऋतु में जन्म हुआ है तब उसको पावसिक कहते हैं इसी प्रकार वर्षा ऋतु २, शरद ऋतु ३, हेमन्त ऋतु ४, वसत ऋतु ५, ग्रीष्म ऋतु ६, सो जिस ऋतु में जन्म हुआ हो उसी ऋतु के नाम से कहा जाता है यह भी काल सयोगज नाम है॥ अब भाव सयोगज नाम विषय में कहते हैं (सेकित्त भाव सजोगे २) (प्रश्न) भाव सयोगज नाम किसे कहते है (उत्तर) भाव सयोगज नाम (दुविहेपएणते तजहा) दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (पसत्थेय अपसत्थेय २) प्रशस्त भाव जन्य नाम और अप्रशस्त भाव जन्य नाम (सेकित पसत्थे२) (प्रश्न) प्रशस्त भाव जन्य नाम किसे कहते हैं अर्थात् जो सुन्दर भावों से निष्पन्न नाम कौनसा है (नाणेण नाणी १) (उत्तर) जैसे ज्ञान से युक्त होने पर ज्ञानी कहा जाता है १ (दसणेणदसणी २) इसी प्रकार दर्शन से दर्शनी २ (चरित्तेण चरित्ती चरित्र से चारित्री (सेत पसत्थे) सो यही प्रशस्त नाम होता है। (सेकित अपसत्थे) (प्रश्न) अप्रस्त निष्पन्न नाम कौनसा होता है (को हेण कोही १) (उत्तर) जैसे क्रोध से क्रोधी (माणेण माणी २) मान से मानी (मायाए मायी ३) माया से मायी (लोभेण लोभी ४) लोभ से लोभी ४ क्योंकि जो अप्रशस्त पदार्थ है उनके सयोग से अप्रशस्त नाम निष्पन्न होजाता है (सेत अपसत्थे सेत भाव सजोए सेत्त सजोएण) सो यही अप्रशस्त नाम है और यही भाव सयोग है और इसी स्थान पर सयोग निष्पन्न नाम का समाप्त पूर्ण होगया है॥

भावार्थ-सायोगिक नाम चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि द्रव्य सयोगज १, क्षेत्र सयोगज २, काल सयोगज ३, भाव सयोगज ४, अपितु-

द्रव्य सयोगज नाम तीन प्रकार से वर्णित है सचित्त १ अचित्त २ मिश्रित ३ सो सचित्त के उदाहरण इस प्रकार से ह जैसे गौओं के होने से गामन् १, उष्ट्रों क होने से औष्ट्रिक २, पशुओं के होने से पशुओं वाला ३, उरणीयों के होने स उरणीक ४, यही सचित्त जन्म नाम है और अचित्तज नाम ऐसे हैं जैसे कि छत्र के सयोग होने से छत्री कहा जाता ह १, और दड के सयोग होने से दडी २, पट के सयाग होने से पटी ३, कट के सयोग होने से कटी ४, सो येही अचित्त सयोगज नाम है और मिश्रज नाम निम्न प्रकार स हैं जैसे कि नाव के सयोग से नाविक १, शकट के सयोग से शाकटिक २, रथ के सयोग से राथिक ३, हल के सयोग से हालिक येही मिश्रज नाम हैं क्योंकि हल अचित्त वृषभ सचित्त दोनों के सयोग से मिश्रज नाम उत्पन्न होजाता है इसे द्रव्य सयोगज नाम कहते हैं १ और क्षेत्र के सयोग स जो नाम निष्पन्न हों उसे क्षेत्रज नाम कहते है जैसे कि भरत क्षेत्र के सयाग से भारत यावत् अपर विदेहादि अथवा मागध १ मालवी २ कोशली इत्यादि यह क्षेत्रज निष्पन्न नाम है २ और काल के सम्बन्ध से जो नाम निष्पन्न होते हैं उन्हें कालज नाम कहते हैं जैसे एक काल के चक्र के पद् २ भाग होते हैं उन के सयोग से अथवा षट् ऋतुओं के सयोग से जो नाम उत्पन्न हो उन्हें काल जन्य नाम कहते हैं ३ और भाव सयोग से जिस की उत्पत्ति है उसे भावज नाम कहते है अत' प्रशस्त भाव वा अप्रशस्त भाव यह दो प्रकार के भाव है इन दोनों से निष्पन्न नाम निम्न प्रकार से है जैसे कि प्रशस्त भाव सम्बन्धी ज्ञान से ज्ञानी १ दर्शन से दर्शनी २ चारित्र के सयोग से चारित्री ३ और अप्रशस्त भाव सम्बन्धी क्रोध के सयोग से क्रोधी १ मान के सयोग से मानी २ माया क सयोग से मायी ३ लोभ के सयोग से लोभी ४ सो यही भाव सयोगज नाम है और इन्हें ही सयोगज नाम कहते है क्योंकि यह सर्व नाम सयोग से ही उत्पन्न हुए हैं ॥ अब प्रमाण नाम के विषय म विवेचन करते हैं ॥

प्पमाणे जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण अजी-
वाण तदुभयस्स वा तदुभयाण वाप्पमाणेत्ति नाम कज्जइ
सेत्त नामप्पमाणे १ सेकित ठवणाप्पमाणे २ सत्तविहेय पराण
त्ते तजहा नक्खत्ते १ दवय २ कुले ३ पासड ४ गणेय ५
जीवियाहेउं ६ आभिप्पाइयनाम ७ ठवणानामतु सत्तविह ॥ १ ॥
सेकित नक्खत्तनामे २ किति याहिं जाए कित्तिए १ कित्ति-
यादत्ते २ कित्तियाधम्मे ३ कित्तियासम्मे ४ कित्तियादेवे ५
कित्तियादासे ६ कित्तियासेणे ७ कित्तियारक्खिए ८ रोहि-
णीहि जाए रोहिणिए रोहिणिदिन्ने रोहिणिधम्मे रोहिणि-
सम्मे रोहिणिदेवे रोहिणिदासे रोहिणिसेणे रोहिणिरक्खेय
एवसव्वनक्खत्तेसु नामा भाणियव्वा एत्थ सगाहणि गाहाओ
कित्तियरोहिणिमिगसिरअद्दा पुणव्वसू य पुस्से य तत्तो य
अस्सिलेसा महा उ दा फग्गुणीओय १ हत्थो चित्ता साती वि
साहा तह य होइ अणुराहा जेट्ठा मूला पुव्वासाढा तह उत्तरा
चेव ॥२॥ अभिई सवण धणिट्ठा सत्तभिसदा दा अ होंति भद्द
वया रेवई अस्सिणि भरणी एसा नक्खत्तपरिवाडी ॥३॥ सेत्त
नक्खत्तनामे । सेकित देवयानामे २ अग्गिदेवयाहि जाए
अग्गिए अग्गिदिन्ने अग्गिसम्मे अग्गिधम्मे अग्गिदेवे अग्गि-
दासे अग्गिसेणे अग्गिरक्खिए एव सव्वनक्खत्तदेवतानाम
भाणियव्वा एत्थपि अट्ठनामे जावजमो इत्थपिय सग्गाणिगा
हाओआग्ग १ पयावई २ सोमे ३ रुद्दो ४ आदिती ५ विहस्सई
६ सप्पे ७ पिति ८ भग ९ अज्जम १० साविया ११ तट्ठा १२
वाउय १३ इदग्गी १४ मित्तो १५ इन्दो १६ निरई १७
आऊ १८ विस्सो य १९ वभ २० विण्हुआ २१ वसु २२

वरुण २३ अय २४ विवाद्धि २५ पुस्सो य २६ अग्गि २७ जमे चेव २८ सेत्त देवयानामे २ सेकिंत कुलनामे २ उग्गा १ भोगा २ राइन्नो ३ खत्तिए ४ इक्खगा ५ णाया ६ कोरव्वा ७ सेत्त कुलनामे ३ सेकित्त पासडनामे ४ समणे १ पडुरंगे २ भिक्खू ३ कावालिए ४ ताव से ५ परिवायए ६ सेत्तपास डनामे ४ सेकित्त गणनामे २ मल्ले १ मल्लदिन्ने २ मल्ल धम्मे ३ मल्लसम्मे ४ मल्लदेवे ५ मल्लदासे ६ मल्लसेणे ७ मल्लरक्खिए ८ सेत्त गणनामे ५ सेकित्त जीवियानामे २ अवकरए १ ऊक्कुरुडिए २ सुप्पए ३ उज्झियए ४ कज्जवए ५ सेत्त जीवियानामे ६ सेकित्त आभिप्पाइयनामे २ अवए १ निंवए २ वबूलए ३ पलासए ४ सिणए ५ पीलूए ६ करीरए ७ सेत्त आभिप्पाइयनामे ७ सेत्त ठवणाप्पमाणे ॥

पदार्थ-(सेकितप्पमाणे २ चउव्विहे प० तं०) शिष्यने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! प्रमाण कितने प्रकार से प्रतिपादन किया गया है क्योंकि प्रमाण उसे कहते हैं जिस के द्वारा वस्तुओंका निश्चय किया जाय सो गुरुने उत्तर दिया कि वह प्रमाण चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (नाम प्पमाणे १ ठवणाप्पमाणे २ दव्वप्पमाणे ३ भावप्पमाणे ४) नाम प्रमाण १ स्थापना प्रमाण २ द्रव्य प्रमाण ३ भाव प्रमाण ४ (सेकित नामप्पमाणे २) (प्रश्न) नाम प्रमाण किसे कहते है (उत्तर) नाम प्रमाण के निम्न लिखिता नुसार उदाहरण हैं जैसे कि (जस्सणंजीवस्सवा) जिस जीव का अथवा (अजी-वस्सवा (अजीवका अथवा) जीवाणवा (बहुत से जीवों का अथवा) अजी वाणवा) बहुत से अजीवों का (तदुभयस्सवा) अथवा एक जीव और एक अजीव का अथवा (तदुभयाणवाप्पमाणेति नामकिज्जइसेत्त नामप्पमाणे १) बहुत से जीव बहुत से अजीवों का " प्रमाण " इस प्रकार से नाम रक्खा जाता है इसे ही नाम प्रमाण कहते हैं क्योंकि नाम प्रमाण से यह तात्पर्य है कि नाम प्रमाण के द्वारा पदार्थों का निर्णय किया जाता है सो यही नाम प्रमा

ण है १ (सकिंत ठवणाप्पमाणे २ सत्तविहे प० तं०) (प्रश्न) स्थापना प्रमाण कितने प्रकार से प्रतिपादित है (उत्तर) स्थापना प्रमाण सात प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि (नक्खत्त १) नक्षत्र के नाम पर जो नाम स्थापन किया जावे उसी को नक्षत्र स्थापना कहते हैं इसी प्रकार (देव-य २) देवों के नाम पर स्थापना (कुलेय ३) कुल के नाम पर स्थापना ३ (पासंड ४) पासंड के नाम पर स्थापना ४ (गणेय) ५ गण के नाम पर ५ (जीवियाहेतु ६) जिस नाम के द्वारा पुत्र जीवित रहे ऐसे नाम का स्थापना करना ६ (अभिप्पाइय नाम ७) और निज अभिप्रायिक नाम अर्थात् जैसे मन का अभिप्राय होता है उसके अनुसार नाम स्थापन किया जाता है इसलिये (ठवणा नामतु सत्तविह ८) स्थापन नाम सात प्रकार से कथन किया गया है (सेकिंत नक्खतनामे) (प्रश्न) नक्षत्र नाम के ऊपर स्थापना नाम किस प्रकार से प्रतिपादन किया गया है (उत्तर) नक्षत्र नाम निम्न प्रकार से हैं जैसे कि (कित्तियाहि जाए कत्तिए १) जिसका कृत्तिका नक्षत्र में जन्म हुआ हो उसे उस नक्षत्र की अपेक्षा से कार्तिक कहते हैं १ (कित्तिया दत्ते २) जो कृत्तिका ने दिया हो वही कृत्तिकादत्त २ इसी प्रकार (कित्तियाधम्मे ३) कृत्तिका धर्म्म (३ कित्तिया सम्मे ४) कृत्तिका शर्म्म ४ (कित्तियादेवे ५) कृत्तिकादेव ५ (कित्तियादासे ६) कृत्तिकादास ६ (कित्तियासेणे ७) कृत्तिकासेन ७ (कित्तियारक्खिए ८) कृत्तिका रक्षित और इसीप्रकार (रोहिणिहिं जाए रोहिणिए) जिसका रोहिणि नामक नक्षत्र में जन्म हुआ है उसे रोहिणेय कहते हैं (रोहि-णिदत्ते १) फिर रोहिणिदत्त २ (रोहिणिधम्मे) रोहिणि धर्म (रोहिणि सम्मे) रोहिणि शर्म्म (रोहिणिदेवे) रोहिणि देव (रोहिणिदासे) रोहिणिदास (रो-हिणिसेणे) रोहिणिसेन (रोहिणि रक्खिए) रोहिणि रक्षित (एवं सव्व न क्खत्तेसुनामाभाणियव्वा) सो इसी प्रकार सर्व नक्षत्रों के नाम कथन करने चा हिये परन्तु (इत्थ संगहणीगाहाओ) इस स्थान पर संग्रहणी गाथाएँ कही जाती हैं जिनके द्वारा सर्व नक्षत्रों का बोध होजाय जैसे कि (कित्तिए रोहिणि मिगसिर) कृत्तिका १ रोहिणि २ मृगशीर्ष ३ (अद्दाय पुणव्वसुय) आर्द्रा ४ पुनर्वसु ५ (पुस्सोयतत्तोय अभिलेसा) फिर पुष्य ६ तत्पश्चात् आश्लेषा ७ (म घाउ दोफग्गुणीउय) फिर मघा ८ और पूर्वा फाल्गुणी ९ उत्तरा फाल्गुणी १० (हत्थोचित्ता स्वाई) हस्त ११ चित्रा १२ स्वाति १३ (विसाहातहय अ-

गुपद्दा) विशाखा १४ तथा अनुराधा १५ (जट्ठा मूला पुव्वासाढा) जेष्ठा १६ मूल १७ पूर्वाषाढा १८ (तहउत्तरोचर) तथा उत्तराषाढा १६ (अभिईसवणे धणिट्ठा) अभिजित् २० श्रवण २१ धनिष्ठा २२ (सत्तभिसयादो अहेतिमद्दवया) शतभिषा २३ पूर्वा भाद्रपद २४ उत्तराभाद्रपद २५ (रेवई अस्सिणि भरणी) रेवती २६ अश्विनी २७ भरणी (एसा नक्खत परिवाडी) यही नक्षत्रों की परिपाटी वर्णन की गई है (सेत्त नक्खतनामे) यही नक्षत्र नाम है अर्थात् नक्षत्रों के नाम पर स्थापना नाम वर्णन किया गया है ॥ १ ॥ (सेकिं देवयानामे २) (प्रश्न) देवताओं के नाम पर नाम किस प्रकार से होता है (उत्तर) देवताओं के नाम पर नाम इस प्रकार से है जैसे कि (अग्गि देवयाहिं जाए अग्गिए) जिसका अग्निदेव के समय जन्म हुआ है वह आग्नेय १ इसी प्रकार (अग्गिदिन्ने) अग्निदत्त २ (अग्गिसम्म) अग्निशर्म्म ३ (अग्गिधम्मे) अग्निधर्म ४ (अग्गिदेव) अग्निदेव ५ (अग्गिदासे) अग्निदास ६ (अग्गिसेणे) अग्निसेन ७ (अग्गिरक्खिए) अग्नि रक्षित ८ (एव सव्वनक्खत नामाभाणियव्वा) इसी प्रकार सर्व नक्षत्र देवों के नाम पर नाम कहने चाहिएँ इसलिये (इत्थंपियसंगाहणिगाहाउ) इस स्थान पर भी सग्रहणी गाथाएँ कही जाती हैं क्योंकि अष्टाविंशति नक्षत्रों के अधिष्ठाता अष्टाविंशति देव हैं जिनके नाम निम्न गाथाओं में दिखलाए जाते हैं तथा उक्त आठ २ नाम देवों के नाम पर लोग नाम संस्कार करते हैं (अग्गि पयवइ सोमेरुद्दे) अग्नि १ प्रजापति २ सोम ३ रुद्र ४ (आदिति विहस्सई) अदिति ५ बृहस्पति ६ (सप्पेपिउभग अज्जम) सर्प ७ पितृ ८ भग ६ अर्य्यमा १० (सवियातट्ठावाउग) सविता ११ त्वष्टा १२ वायु १३ (इन्दग्गी मितोइन्दोनिरत्ती) इन्द्राग्नि १४ मित्र १५ इन्द्र १६ निर्ऋति १७ (आउविस्सोय बम्भविण्हय) अम्भ १८ विश्व १९ ब्रह्मा २० विष्णु २१ (वसुवरुणअयविवद्धि) वसु २२ वरुण २३ अज २४ विवर्द्धि २५ (पुस्सो आग्गि जये चेव) पूषा २६ अग्नि २७ यम २८ (सेत देवयानामे) सोयही देव नाम है अर्थात् अष्टाविशति नक्षत्रों के अधिष्ठाता अष्टाविंशति देव हैं यदि उन देवों के नामों पर नाम स्थापन किया जाये तब उनको देव नाम कहते हे ॥ २ ॥ अब कुल नाम का विवर्ण करते हैं (सेकिंत कुल नामे) (प्रश्न) कुल नाम किसे कहते हैं (उत्तर) उग्ग १ भोगा २ राइन्ना ३ खत्तिय ४ इक्खागा ५ णाया ६ कोरव्वा ७ सेत्त कुल नामे ३ जिसका उग्र कुल में जन्म हुआ है उसको उग्र कुल कहते है १ इसी प्रकार भोग कुल २ राज्य कुल ३

क्षत्रिय कुल ४ इक्ष्वाकु कुल ५ ज्ञात कुल ६ कौरव्य कुल ७ सो जिस कुल में जिसका जन्म होता है उसी कुल के नाम से फिर उसकी प्रसिद्धि होजाती है येही कुल नाम हैं ॥ ३ ॥ (सेकिंत पासंडनामे) (प्रश्न) पाषंड नाम किसे कहते हैं (उत्तर) (समणे पंडुरंगे भिक्खू) श्रमण परमतावलम्बी पाण्डु रंगादि वस्त्रों के धारण करने वाले बौद्ध भिक्षु (कावालिएतावसेय) कपिल मतानुयायी और तापस (परिवायए) परिव्राजक (सेत पासंड नामे) यह सर्व अन्य दर्शनीय पाषंड नामाश्रित हैं । (सेकिंत गण नामे ?) (प्रश्न) गण नाम किसे कहते हैं (उत्तर) मल्ले १ मल्ल दिन्ने २ मल्ल धम्मे ३ मल्ल सम्मे ४ मल्ल देवे ५ मल्ल दासे ६ मल्ल सेणे ७ मल्ल रक्खिए ८) मल्लादि गण नामों पर जो नाम स्थापन किया जाता है वही गण नाम हैं जैसे कि मल्ल १ मल्लदत्त २ मल्ल धर्म्म ३ मल्ल शर्म्म ४ मल्ल देव ५ मल्ल दास ६ मल्लसेन ७ मल्ल रक्षित ८ (सेत्त गणनामे) सो येही गण नाम है ॥ (सेकिंत जीवियानामे) (प्रश्न) जीवक नाम किसे कहते है अर्थात् जिसका पुत्र जीवित न रहता हो वह पुत्र के जीवित रहने के वास्ते इस प्रकार से नाम स्थापन करता है (उत्तर) अवकरए १ उकुरुडिए २ सुप्पए ३ उज्झिए ४ कुज्जरए ५ सेत्त जीवियानामे) जैसे के पुत्र के जीवित रहने की इच्छा से जन्म हुए के पश्चात् पुत्र को कचरादि में गेर कर फिर उसका नाम स्थापन करना जैस कि अवकरक १ उत्कुरुटक २ सूर्पक ३ उज्झित ४ कार्यापत ५ यह सर्व जीवित रहने की इच्छा से नाम स्थापन किये जाते हैं इसी को जीवित नाम कहते हैं ६ (सेकिंत अभिप्पाइय नामे २) (प्रश्न) अभिप्रायिक नाम किसे कहते है (उत्तर) जो अपनी इच्छानुसार नाम स्थापन किये जावे जैसे कि (अवए निंवए २ चबूल ३ पलासए ४ सिणए ५ पीलूए ६ करीर (सेत्तठवणप्पमाणे) वृक्षादि के नामों पर स्थापन करना यथा अवक १ निंवक २ बबूल ३ पलासक ४ सिनक ५ पीलु ६ करीर ७ यही सप्त प्रकार से स्थापना प्रमाण वर्णन किया गया है इसलिये स्थापना प्रमाण की समाप्ति हुई है ।

अथ द्रव्य प्रमाण विषय ।

सेकिंत दव्वप्पमाणे २ छव्विहे प० त० धम्मत्थिकाए जाव श्रद्धासमय ६ सेत्तं दव्वप्पमाणे २ ।

पदार्थ–(सेकिंत दव्वप्पमाणे २) (प्रश्न) द्रव्य प्रमाण किसे कहते हैं (उत्तर) द्रव्य प्रमाण षट् प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि धम्म त्थिकाय जाव अद्धासमय ६ सेत्तदव्वप्पमाणे) धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्ति-काय २ आकाशास्तिकाय ३ जीवास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ समय ६ यही द्रव्य प्रमाण हैं क्योंकि जो अनादि सिद्धांत में नाम वर्णन किए हैं वह केवल अनादि सिद्ध की अपेक्षा से वर्णन किये हैं और जहा पर द्रव्य अनंत धर्मात्मक होने से कथन किए गये हैं किन्तु पुनरुक्ति दोष न जानना चाहिए तथा धर्म शब्द अन्यत्र कहीं नहीं जा सक्ता केवल द्रव्याश्रित धर्म रहता है इस लिये पुनिरुक्ति न जाननी चाहिये सो यही द्रव्य प्रमाण है।

भावार्थ–प्रमाण नाम चार प्रकार से विवर्ण किया गया है जैसे कि नाम प्रमाण १ स्थापना प्रमाण २ द्रव्य प्रमाण ३ भाव प्रमाण ४ सो नाम प्रमाण उसे कहते हैं जो एक जीव और एक अजीव अथवा बहुत से जीव वा बहुत से अजीव वा बहुत से अजीव अथवा जीव अजीव दोनों का " प्रमाण नाम " इस प्रकार से जो स्थापन किया जाता है उसे ही नाम प्रमाण कहते हैं अपितु स्थापना प्रमाण सात प्रकार से कथन किया है जैसे कि नक्षत्र १ देव २ कुल ३ प पंड ४ गण ५ जीविका हेतु ६ और अभिप्रायिक नाम ७ सो इन्हीं के कारण से जो नाम स्थापन किया जाता है उसे ही स्थापना नाम कहते हैं जैसे कि जिसका कृत्तिका नक्षत्र में जन्म हुआ है उसका नाम कात्तिक १ कृत्तिका दत्त २ कृत्तिका धर्म ३ कृत्तिका शर्म ४ कृत्तिका देव ५ कृत्तिका दास ६ कृत्तिका सेन ७ कृत्तिका रक्षित ८ इसी प्रकार २८ नक्षत्रों की कल्प ना कर लेनी चाहिए ॥ १ ॥ और २८ नक्षत्रों के अधिष्ठाता २८ देव हैं यदि उनके नामों पर नाम स्थापन किया जाय उन्हीं को देव नाम कहते हैं जैसे कि कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठाता अग्नि नामक देव है उसी के नाम पर आग्नेयक १ अग्नि देव २ अग्नि दत्त ३ अग्नि शर्म ४ अग्नि धर्म ५ अग्नि सेन ६ अग्नि दास ७ अग्नि रक्षित ८ इसी प्रकार २८ देवों पर नाम स्थापन कर लेने चाहिये और उग्र १ भोग २ क्षत्रिय ३ राज्य ४ इक्ष्वाकु ५ ज्ञात ६ कौरव्य ७ इत्यादि कुलों के नामों पर नाम स्थापन किया जाय उसी को कुल नाम कहते हैं ३ जो श्रमण पांडुरंग भिक्षुका पालिक तापस परिव्राजक आदि के नामों पर नाम स्थापन हो उसे ही पापण्डनाम नाम कहते हैं ॥ ४ ॥ जो मल्ला

दि गुण के नामों पर नाम हो उसे गण नाम कहते है ५ तथा पुत्र के जी वित रहने की आशा पर पुत्र को गेर देना फिर उसके अनकर उत्कुरुट आदि नाम रखने वही जीवित नाम है ६ अथवा गुण निष्पन्न वा नो गुण निष्पन्न आदि को न विचारते हुए अपने अभिप्राय के अनुसार नाम रक्खे उसे अभि-प्रायिक नाम कहते हैं जैसे कि अवक १ निंवक २ बबूल ३ पलाशक ४ सि नक पीलुक ६ करीरक ७ यही अभिप्रायिक नाम है और इसे ही स्थापना प्रमाण कहते है इसका पूर्ण विवर्ण पदार्थ में लिखा गया है और द्रव्य प्रमाण में षट् द्रव्य वर्णन किए गए हैं क्योंकि द्रव्य सज्ञा इन्हीं की ही है इसीलिये यह द्रव्य सज्ञक हैं अब इसके आगे भाव प्रमाण का विवर्ण किया जाता है।

अथ भाव प्रमाण विषय।

सेकिंतंभावप्पमाणे २ चउविहे पन्नता तंजहा सामासिए तद्धितए धाउय निरुत्तिय सेकित सामासिए २ सत्तसमासा भवन्ति तंजहा दंदे अ १ बहुव्वीही २ कम्मधारए ३ दिगूए ४ तप्पुरिसे अव्वइभावे ६ एगसेसे य सत्तमे सेकित दंदे २ दन्ताश्च ओष्टौ च दन्तोष्ठम् १ स्तनौ च उदर च स्तनोदरम् २ वस्त्रच पात्रच वस्त्रपात्रम् ३ अश्वाश्च महिषाश्च अश्वमहिषं ४ अहिश्च नकुलच अहिनकुलम् ५ सेत्त दंदे ॥ १ ॥

पदार्थ-(सेकित भावपमाणे चऊविहे पन्नता तंजहा) (प्रश्न) शिष्य कहता है कि हे पूज्य भाव प्रमाण कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) गुरु ने उत्तर में कहा कि भाव प्रमाण चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि सामासिक १ तद्धितज २ धातुज ३ और नैरुक्तिक ४ भाव प्रमाण इन्हें इसलिये कहा गया है कि अर्थ के युक्त होने पर गुण उत्पन्न होता है सो गुण भाव में होता है प्रमाण शब्द का अर्थ यह है "प्रमीयतेच्छिद्यत निश्चयी क्रियते अनेनतत्प्रमाणम्" जिसके द्वारा पदार्थों का प्रमाण किया जाय अथवा निर्णय किया जाय वेही प्रमाण हैं सो इसीलिये शब्द योग होने के लिये उक्त चारों का भाव प्रमाण में रक्खा है अतएव यह युक्ति संगत कथन है कि-

पदार्थ-(सेकिंत्त दव्वप्पमाणे २) (प्रश्न) द्रव्य प्रमाण किसे कहते हैं (उत्तर) द्रव्य प्रमाण षट् प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि धम्म त्थिकाय जाव अद्धासमय ६ सेत्तदव्वप्पमाणे) धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्ति काय २ आकाशास्तिकाय ३ जीवास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ समय ६ यही द्रव्य प्रमाण है क्योंकि जो अनादि सिद्धांत में नाम वर्णन किए हैं वह केवल अनादि सिद्ध की अपेक्षा से वर्णन किये हैं और जहा पर द्रव्य अनंत धर्मात्मक होने से कथन किए गये हैं किन्तु पुनरुक्ति दोष न जानना चाहिए तथा धर्म शब्द अ यत्र कहीं नहीं जा सक्ता केवल द्रव्याश्रित धर्म रहता है इस लिये पुनिरुक्ति न जाननी चाहिये सो यही द्रव्य प्रमाण है।

भावार्थ-प्रमाण नाम चार प्रकार से विवर्ण किया गया है जैसे कि नाम प्रमाण १ स्थापना प्रमाण २ द्रव्य प्रमाण ३ भाव प्रमाण ४ सो नाम प्रमाण उसे कहते हैं जो एक जीव और एक अजीव अथवा बहुत से जीव वा बहुत से अजीव वा बहुत से अजीव अथवा जीव अजीव दोनों का " प्रमाण नाम " इस प्रकार से जो स्थापन किया जाता है उसे ही नाम प्रमाण कहते हैं अपितु स्थापना प्रमाण सात प्रकार से कथन किया है जैसे कि नक्षत्र १ देव २ कुल ३ पषंड ४ गण ५ जीविका हेतु ६ और अभिप्रायिक नाम ७ सो इन्हीं के कारण से जो नाम स्थापन किया जाता है उसे ही स्थापना नाम कहते हैं जैसे कि जिसका कृत्तिका नक्षत्र में जन्म हुआ है उसका नाम कात्तिक १ कृत्तिका दत्त २ कृत्तिका धर्म ३ कृत्तिका शर्म ४ कृत्तिका देव ५ कृत्तिका दास ६ कृत्तिका सेन ७ कृत्तिका रक्षित ८ इसी प्रकार २८ नक्षत्रों की कल्प ना कर लेनी चाहिए ॥ १ ॥ और २८ नक्षत्रों के अधिष्ठाता २८ देव हैं यदि उनके नामों पर नाम स्थापन किया जाय उन्हीं को देव नाम कहते हैं जैसे कि कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठाता अग्नि नामक देव है उसी के नाम पर आग्नेय १ अग्नि देव २ अग्नि दत्त ३ अग्नि शर्म ४ अग्नि धर्म ५ अग्नि सेन ६ अग्नि दास ७ अग्नि रक्षित ८ इसी प्रकार २८ देवों पर नाम स्थापन कर लेने चाहिये और उग्र १ भोग २ क्षत्रिय ३ राज्य ४ इक्ष्वाकु ५ ज्ञात ६ कौरव्य ७ इत्यादि कुलों के नामों पर नाम स्थापन किया जाय उसी को कुल नाम कहते हैं ३ जो श्रमण पाण्डुरंग भिक्षुक पालिक तापस परिव्राजक आदि के नामों पर नाम स्थापन हो उसे ही पाषंडनाम नाम कहते हैं ॥ ४ ॥ जो मल्ला-

दि गुण के नामों पर नाम हो उसे गण नाम कहते हैं ५ तथा पुत्र के जीवित रहने की आशा पर पुत्र को गेर देना फिर उसके अवकर उत्कुरुट आदि नाम रक्खे वही जीवित नाम है ६ अथवा गुण निष्पन्न वा नो गुण निष्पन्न आदि को न विचारते हुए अपने अभिप्राय के अनुसार नाम रक्खे उसे अभिप्रायिक नाम कहते हैं जैसे कि अवक १ निंबक २ बबूल ३ पलाशक ४ सिनक पीलुक ६ करीरक ७ यही अभिप्रायिक नाम हैं और इसे ही स्थापना प्रमाण कहते हैं इसका पूर्ण विवर्ण पदार्थ में लिखा गया है और द्रव्य प्रमाण में षट् द्रव्य वर्णन किए गए हैं क्योंकि द्रव्य सञ्ज्ञा इन्हीं की ही है इसीलिये यह द्रव्य सञ्ज्ञक है अब इसके आगे भाव प्रमाण का विवर्ण किया जाता है।

अथ भाव प्रमाण विषय।

सेकिंतंभावप्पमाणे २ चउविहे पन्नता तजहा सामासिए तद्धितए धाउय निरुत्तिय सेकिंत सामासिए २ सत्तसमासा भवन्ति तजहा ददे अ १ बहुव्वीही २ कम्मधारए ३ दिगूए ४ तप्पुरिसे अव्वइभावे ६ एगसेसे य सत्तसे सेकित ददे २ दताश्च ओष्ठौ च दतोष्ठम् १ स्तनौ च उदर च स्तनोदरम् २ वस्त्रच पात्रंच वस्त्रपात्रम् ३ अश्वाश्च महिषाश्च अश्वमहिषं ४ अहिश्च नकुलच अहिनकुलम् ५ सेत्त ददे ॥ १ ॥

पदार्थ-(सेकिंत भावप्पमाणे चउविहे पन्नता तजहा) (प्रश्न) शिष्य कहता है कि हे पूज्य भाव प्रमाण कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) गुरु ने उत्तर मे कहा कि भाव प्रमाण चार प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि सामासिक १ तद्धितज २ धातुज ३ और नैरुक्तिक ४ भाव प्रमाण इन्हें इसलिये कहा गया है कि अर्थ के युक्त होने पर गुण उत्पन्न होता है सो गुण भाव में होता है प्रमाण शब्द का अर्थ यह है " प्रमीयतेच्छिद्यते निश्चयी क्रियते अनेनतत्प्रमाणम् " जिसके द्वारा पदार्थों का प्रमाण किया जाय अथवा निर्णय किया जाय वेही प्रमाण हैं सो इसीलिये शब्द बोध होने के लिये उक्त चारों का भाव प्रमाण में रक्खा है अतएव यह युक्ति सगत कथन है कि

शब्द बोध होने से अर्थ बोध शीघ्र हो जाता है पुन अर्थ बोध से गुण की प्राप्ति है गुण है सो भाव है इसीलिये यह भाव प्रमाण है (सेकिंत समासिए ? सत्त समासा भवन्ति तजहा) (प्रश्न) सामासिक प्रमाण कितने प्रकार से वर्णन किया गया है (उत्तर) सामासिक प्रमाण में सात समास होते हैं जैसे कि (दंदे १ बहुव्वीही २ कर्म धारए ३ दिगूए ४ तप्पुरिसे ५ अव्वई भाव ६ एग सेसेय सत्तमे ७) द्वन्द १ बहुव्रीहि २ कर्म धारय ३ द्विगु ४ तत्पुरुष ५ अव्ययी भाव ६ एक शेष ७ येही सात प्रकार के समास हैं क्योंकि समास शब्द का यह अर्थ है कि बहुत से पदों का एक पद किया जाय उसे ही समासान्त पद कहते हैं जैसे कि " सममन संक्षेपण परस्परा पेक्षयो पूर्वोत्तर पदयो रेकत्वेनन्यसन समास " सो जो सम्मिलित हो कर पद उत्पन्न होता है वही सामासिक पद है अपितु वर्तमान समय के शब्दानुशासनों में समास पद् प्रकार से वर्णन किये गये हैं जैसे कि बहुव्रीहि १ अव्ययी भाव २ तत्पुरुष ३ कर्म धारय ४ द्विगु ५ द्वन्द ६ तथा " परस्परा पेक्षाणाम् पूर्वोत्तरपदाना सुवताना ऋथ निकैपद्यम् समासः " परस्पर की अपक्षा से पूर्वोत्तर सुवत पदों का एक पद किया जाय वही समासान्त पद है क्योंकि जहा पर अनेक सुवत पद हों उनको एक पद में वर्णन किया जाय वही समासान्त पद है सो अब अनुक्रमता पूर्वक इनके उदाहरण दिखलाए जाते हैं जैसे कि (सेकिंत दंदे ? २) (प्रश्न) द्वन्द समास किसे कहते हैं (दंतोश्च ओष्ठौ च दंतोष्ठम्) (उत्तर) द्वन्द समास दो प्रकार से होता है एक अवयव प्रधान द्वितीय समाहार प्रधान सो यहा पर समाहार प्रधान के उदाहरण दिखलाए गये हैं जैसे कि दान्त और ओष्ठों का समाहार करने से " दंतोष्ठम् " ऐसे प्रयोग बन जाता है क्योंकि " प्राणि तूर्याङ्गम् " शा० व्या० अ० २ पा० १ सू १०१ प्राण्यङ्गाना तूर्याङ्गानां द्वन्द्व एकार्थोनित्य भवति पाणिपादम् शङ्ख पटहम् इत्यादि इस सूत्र से दंतोष्ठ रूप होकर फिर " अतोऽम् " शा० व्या० अ० १ पा० २ सू० ४ अकारान्तस्म नपुंसकस्य सम्बन्धिनो स्वमोरमित्या देशो भवति फिर " मोणोऽम " " पदस्य " " षष्टया स्थानेऽन्तेल " इन सूत्रों से " दंतोष्ठम् " शब्द सिद्ध हो जाता है किन्तु यह दन्तोष्ठ शब्द नपुंसक लिङ्ग का एक वचनान्त है और द्वन्द समासान्त पद है और (स्तनौच उदरच स्तनोदर) जब स्तन और उदर का समाहार किया तब स्तनोदरम् प्रयोग सिद्धहुआ सो " प्राणि तूर्याङ्गम् " अताऽम् इत्यादि सूत्रों की प्राप्ति है यह द्वन्द समासान्त पद है. (वस्त्रच पात्रच अनयो समाहार वस्त्र पात्रम्) जब

वस्त्र और पात्र का समाहार किया गया तव द्वन्द्वो वा शा० व्या० अ० २ पा० १ सू० ९३ इस सूत्र से वस्त्र पात्र प्रयोग सिद्ध हुआ फिर " अतोऽम् " सूत्र से विभक्त्यन्त पद वस्त्र पात्रम् हो गया तथा (अश्वश्च महिषश्च अश्व महिषम्) अश्व और महिष का जव समाहार किया गया "नित्य वैरविरे" शा० २-१ १०२ और मोऽणोऽम् इन सूत्रों से अश्व महिषम् प्रयोग सिद्ध हुआ क्योंकि यह सर्वांद्धि पदान्त और द्वन्द्व समासान्त पद है फिर " अहिश्च नकुलश्च अहिनकुल " सर्प और नकुल का जब समाहार किया गया " नित्य वैरविरे " २-१-१०२ इस सूत्र के द्वारा अहि नकुल प्रयोग सिद्ध हो गया फिर " अहतोऽम् " सूत्र से अहि नकुलम् शब्द बना सो यह सर्व द्वन्द्व समासान्त पद हैं क्योंकि जिस समास में चकार बहुत बार आता हो उसे ही द्वन्द्व समास कहते हैं अपितु "प्रत्यय स्यच सुपः इलुक्" शा० अ० २ पा० २ सू० १ समासस्य प्रत्ययस्यश्च निमित्त स्य सुप इलूक् भवति इस सूत्र से समाहार करते समय सुप् प्रत्यय का लोप हो जाना है (सेत द्वन्द्वे १) सो यही द्वन्द्व समास हैं अर्थात्) चकार बहुलो द्वन्द्व जिसमें चकारों की संख्या अधिक हो वही द्वन्द्व समास होता है।

भावार्थ–द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में चकारों का प्रयोग अधिक हो और मुख्यतया उसके दो भेद होते हैं जैसे कि अवयव प्रधान और समाहार प्रधान जिसके निम्न लिखित उदाहरण हैं जैसे कि "दन्ताश्च ओष्ठौच दन्तोष्ठम्" " स्तनौच उदरच स्तनोदरम् " "वस्त्रच पात्रच वस्त्रपात्रम्" " अश्वश्च महिषश्च अश्वमहिषम् " अहिश्च नकुलच " अहिनकुलम् "इसे ही द्वन्द्वसमास कहते हैं अब बहुव्रीहि और कर्म धारय समासों के विषय में कहते हैं ।

मूल– सेकित बहुव्वीहीसमासे २ फुल्ला इममि गिरिमि कुडय कडयवा सो इमोगिरी फुल्लिय कुडिय कयवो सेत्त बहुव्वीही समासे २ सेकित कम्मधारय २ धवलोवसहो धवलवसहो १ किण्हो मिग्गो किण्हमिग्गो २ सेत्तो पडो सेतपडो२ रत्तोपडो रत्तपडो सेत कम्मधारय ॥ ३ ॥

पदार्थ– (सेकित बहुव्वीहीसमासे २) (प्रश्न) बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं (उत्तर) बहुव्रीहि समास तीन प्रकार से कहा गया है जैसे कि उत्तर

पदार्थ प्रधान, उभय पदार्थ प्रधान, अन्य पदार्थ प्रधान, किन्तु सूत्र में केवल सू-
चना मात्रही उदाहरण दिया गया है जैसे कि (फुल्ला इममि गिरिमि कुडय क-
इयवा सो इमो गिरी फुल्लिय कुडयवो सेत्त बहुव्वीही समासे) विकसित हुए हैं
जिस गिरिमें कुटज वृक्ष और कदव वृक्ष सो यही गिरि विकसित कुटज कदवज
है सो यही अन्य पदार्थ प्रधान का उदाहरण दिखलाया गया है और यह पद
सप्तम्यन्त है और यही बहुव्रीहि समास होता है तथा यस्य येषा बहुव्रीहि ॥२॥
(सेकिंत कम्म धारय २) (प्रश्न) कर्म धारय समास किसे कहते हैं (उत्तर)
कर्म धारय समास द्वि प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि उत्तर पदार्थ
प्रधान प्रधान १ और पूर्व पदार्थ प्रधान २ अब इस समास के उदाहरण दि-
खलाते हैं जैसे कि (धवलो वसहो धवलवसहो १ किएहामगो किएहमिगो २
सेतोपडो सेतपडो ३ रत्तोपडो रत्तपडो ४ सेत्त कम्म धारय समासे ३) धवल-
श्चासौ वृषभश्च धवल वृषभ, इत्यादि सभावना करलनी चाहिये अर्थात् धवल
है जो वृषभ उसे "धवलवृषभ" कहते है इसी प्रकार कृष्ण है जो मृग सो वही
कृष्णमृग है २ जोश्वेत पट है उसेही श्वेतपट कहते हैं ३ रक्त (लाल) है जो वस्त्र
वही रक्त वस्त्र होता है सो इसी का नाम कर्मधारय समास कहते हैं किन्तु इन
सर्व पदों में " विशेषण व्याभिचार्य्ये कार्थं कर्म धारयश्च " शा० व्या० अ०
२ पा १ सू ५८ व्यभिचार विशेषण समानापि करण सुवन्त विशेष्येण सुपा
समस्यते सच समास तत्पुरुषसञ्ज कर्म धारय सञ्ज्ञश्च और " जात महद् वृद्धा
दुक्ष्ण कर्म धारयात् " शा० व्या० अ० २ पा० १ सू १५८ इन सूत्रों की
प्राप्ति जाननी चाहिये सो इसे ही कर्म धारय समास कहते हैं ।

भावार्थ बहुव्रीहि समास तीन प्रकार से होता है जैसे कि उत्तर पदार्थ प्र-
धान १ उभय पदार्थ प्रधान २ अन्य पदार्थ प्रधान ३ उत्तर पदार्थ प्रधान तो
जैसे द्विदशानि वस्त्राणि यह शब्द है उभय पदाथ प्रधान जैसे " द्विश,
पुरुषा " शब्द हैं अन्य पदार्थ प्रधान जैसे कि " उपाशिंश। " शब्द है किन्तु
सूत्र में केवल विकसित है यह गिरि कुटज और कदवक वृक्षों से सो यह गिरि
विकसित कुटज कदम्बज है अर्थात् वृक्षों से यह गिरि विकसित हो रहा है
और गिरि के विषय वृक्ष विकसित हैं यह सप्तम्यन्त वचन है इसी को बहुव्री
हि समास कहते हैं १ और कर्म धारय समास भी दो प्रकारसे प्रतिपादन किया
गया है जैसे कि उत्तर पदार्थ प्रधान १ और पूर्व पदार्थ प्रधान २ उत्तर पदार्थ

प्रधान जैसे कि " नीलोत्पलम् शब्द है और पूर्व पदार्थ प्रधान जैसे कि " क्ष त्रियभीरु " इत्यादि शब्द जानने चाहिये किन्तु सूत्र में धवलजो ६ वृषभ सो कहिये धवल वृषभ १ इसी प्रकार कृष्ण मृग २ श्वेतपट ३ रक्तपट ४ इत्यादि कर्म धारय समास के उदाहरण जानने चाहिये अब द्विगु और तत्पुरुप समास के विषय में विवेचन किया जाता है।

अथ द्विगु और तत्पुरुप समास विषय।

सेकिंतं दिगुसमासे तिरिण कटुगानि तिकटुय १ तिण्णि महुराणिति महुर २ तिगुणाणि तिगुण ३ तिण्णि पुराणिति पुर ४ तिण्णि सराणि तिसर ५ तिण्णि पुक्खराणि तिपुक्खर ६ तिण्णि विंदुयाणि तिविंदुय ७ तिण्णि पहाणि तिपहं ८ पच नदीओ पचनदी ६ सत्त गया सत्तगय १० नवतुरगा नवतु रग ११ दस गामा दसगाम १२ दस पुराणि दसपुर १३ सेत दि गुममासे १४ सेकित तप्पुरिसे समासे २ तित्थे कागोत्थिकागो वणे हत्थीवण हत्थी २ वणे वराहो वणवराहो ३ वणे महिसो वणमहिसो ४ वणेमयूरो वणमयूरो ५ सेत तप्पुरिसे समासे ।

पदार्थ-(सेकित द्विगुसमासे २) (प्रश्न) द्विगुसमास किसे कहते हैं (उत्तर) जो सख्यावाची शब्दों से समाहार किया जाय वही द्विगु समास होता है जैसे कि (तिरिणकटुगानि तिकटुग १) सख्या पूर्वोद्विगु[1] त्रीणि कटुकानिसमाहृतानि त्रिकटुक अर्थात् जब तीन कटुक वस्तुओं का समाहार किया तब त्रिकटुक शब्द सिद्ध हुआ जैस कि सुठ, पीपल, मरिच ३ और इसी प्रकार (तिरिणमहु राणिति महुर) " त्रिणि मधुराणि समाहृतानि त्रिमधुरम् " जब तीन मधुर वस्तुओं का समाहार किया गया तब त्रिमधुर प्रयोग सिद्ध हुआ इसी प्रकार आगे भी सभावना कर लनी चाहिये जैसे कि ति रिण गुणाणि तिगुण ३ तीन गुणाके समाहार से त्रिगुण शब्द सिद्ध हुआ (तिरिण पुराण तिपुर) तीन पुरों के एकत्व करने

---

१ गुणाणा प्रीवरा प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० ३४॥

स तीन पुर (तिरिण सराणि तिसर) तीन सरों के एकत्व करने से त्रिसर (तिरिण पुक्खराणिति पुक्खर ६) तीन कमलों के एकत्व होने से त्रिपुष्कर (तिरिण त्रिंदूयाणिति बिंदुअ) तीनों बिंदुओं के एकत्व होने से त्रिबिंदुक (तिरिण पहाणिति पह) तीन पथों के एकत्व होने से त्रिपथ और (पचनदीओ पचनद) पच नदियों के एकत्व होने से पचनद (सत्तगया सत्तगय १०) सात हस्तियों के एकत्व होने से सप्त गज अथवा सप्त गदाओं से सप्त गदा (नवतुरगा नवतुरग) नव अश्वोंके एकत्व होनेसे नव अश्व (दसगामा दसगाम) दशग्रामों के मिलने से दशग्राम (दसपुराणि दसपुर १३) दशपुरों (नगरों) के एकत्व होने से दशपुर इत्यादि सर्व शब्द सिद्ध होते हैं क्योंकि "सख्या समाहारेच द्विगुश्चाना-म्न्ययम् ॥ शा० व्या० अ० २ पा० १ सू० ६१ सख्यावाचि सुबन्त मेकार्थे सुबन्तेन समस्यते सज्ञाया ताद्धित मत्यये उत्तर पदेपरे समाहारच गम्यमाने सच तत्पुरुषः कर्म धारयो द्विगुसज्ञश्चद्विगुर्ननाम्नि ॥ इस सूत्र की सर्वत्र प्राप्ति है और इस सूत्र से ही सर्वत्र प्रयोग सिद्ध होते हैं (सेत्त दिगु समासे ४) सो पूर्वं कथित ही द्विगु समास है ४ अब तत्पुरुष के विषय में कहते हैं (सेकित तप्पुरिसे समासे २) (प्रश्न) तत्पुरुष समास किसे कहते हैं (उत्तर) तत्पुरुष समास दो प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि पूर्व पदार्थ प्रधान १ और उत्तर पदार्थ प्रधान २ और इस सज्ञा को ही तत्पुरुष समास कहते हैं "अनथ्य" यह शब्द पूर्व पदार्थ प्रधान है और " दुर्जन " यह उत्तर पदार्थ प्रधान है और उत्तर भेद इसके आठ होते हैं जैसे कि सात विभक्तियों से आठवा तत्र् तत्पुरुष समास होता है किंतु सूत्र में सर्व उदाहरण सप्तम्यन्त तत्पुरुष के ही दिखलाये गये हैं जैसे कि (तित्थे कागोतित्थकागो) तीर्थ में जो काक रहता है वह तीर्थ काक होता है (वणेहत्थी) वन में जो हस्ती है उसे वन हस्ती कहते हैं २ (वणेवराहो वणवराहा ३) वन में जो सूअर है उसे वन वराह कहते है ३ (वणेमहिसो वण महिसो) वन में जो महिष है सो वन महिष कहा जाता है (वणेमयूरो वण मयूरो) वन में जो मयूर है उसे वन मयूर कहते हैं यह सर्व सप्तम्यन्त तत्पुरुष समासान्त पद है " सप्तमी शौंडादिभि " शा० व्या० अ० २ पा० १ सू० ५२ सप्तम्यन्तं शौंडादिभि सुबन्तैस्समस्यते" इस सूत्र की सर्व प्रयोगों में प्राप्ति है (सेत्त तप्पुरिसे समासे ५) सो यही पूर्वोक्त तत्पुरुष समास है किन्तु यहां पर केवल एक सप्तम्यन्त के ही प्रयोग दिखलाए गए है ।

भावार्थ-द्विगु समास में सख्या पूर्वक समाहार करने से पद होता है जैसे कि " सख्या पूर्वोद्विगु " त्रीणिकटुकानि समाहृतानि त्रिकटुक १ एवंत्रीणि मधुराणि समाहृतानि त्रमधुरम् २ त्रयाणां गुणाना समाहार' त्रिगुणम् ३ त्रीणिपुराणि समाहृतानि त्रिपुरम् ४ त्रीणिसरांसि समाहृतानि त्रिसरस ५ त्रीणि पुष्कराणि समाहृतानि त्रिपुष्करम् त्रयो विन्दव समाहृता त्रिबिन्दुकम् ७ त्रयाणा पथा समाहार' त्रिपथम् ८ इत्यादि सर्व प्रयोग द्विगु समास के जानने चाहियें ४ और तत्पुरुष के उत्तर भेद आठ हैं किन्तु यहां पर केवल सप्तम्यन्त वचन हैं जैसे कि तीर्थ म जो काक है वह तीर्थकाक कहा जाता है १ वन में जो हस्ती है वह वनहस्ती २ वन में जो वराह है वह वनवराह ३ वन में जो महिष है वह वन महिष ४ वन में जो मयूर है वह वन मयूर ५ ये सर्व तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं क्योंकि सूत्र में केवल सूचना मात्र ही कथित है किन्तु सात विभक्तियों के निम्न लिखित उदाहरण हैं प्रथमा पूर्वकायस्येति पूर्वकाय १ द्वितीया धर्मश्रितः धर्मश्रितः २ तृतीया मन्न विव्हल मद विव्हल. ३ चतुर्थी रथाय दारु रथदारु ४ पचमी सिहात् भय सिंह भयम् ५ षष्ठी राज्ञ पुरुषो राज पुरुष ६ सप्तमी अक्षेषु शौंडः अक्षशौंड ७ कर्मणि कुशल कर्मकुशल इत्यादि नञ् तत्पुरुष धर्मविरोद्धोऽधर्म पापाभाव अपापम् न अश्व' अनश्व इत्यादि प्रयोगों की सभावना कर लेनी चाहिये । अब इसके पश्चात् अव्ययीभाव और एक शेष समास का निर्णय किया जायगा क्योंकि जो पदार्थ हैं उनके बोध के लिये समासों का बोध आवश्यकीय है क्योंकि फिर पदार्थ बोध शीघ्र हो जाता है ।

अथ अव्ययी भाव और शेष समास का विषय ।

सेकित अव्वईभावे समासे २ अणुगामा अणुणइय १ अणुगाम २ अणुफरिह ३ अणुचरिय ४ सेत अव्वई भावे समासे ६ सेकित एगसेसे समासे ७ जहा एगो पुरिसो तहाबहवे पुरिस जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो २ एवं करिसावणो ३ जहा एगो साली तहा बहवे साली सेतं एगसेसे समासे ७ सेत्त सामासिए ॥

पदार्थ-(सेकित अव्वई भावे समासे) (प्रश्न) अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं (उत्तर) अव्ययी भाव समास के निम्न लिखित उदाहरण जानने चाहिए ग्राम के समीप जो ग्राम हो उसे अनुग्राम कहते हैं (अणुणईय) जो नदी के समीप वा मध्य म हो उसे अनुनदी कहते हैं क्योंकि अनु अव्यय पश्चात् तुल्य अनुभव आदि अर्थों में होता है इसी प्रकार (अणुगाम २) ग्राम के समीप वा ग्राम क मध्य में जो हो उसे अनुग्राम कहते हैं २ (अणुफरिह) खाई के पास वा मध्य में जो हो वह अनुफरिहा होती है ३ (अणुचरिप ४) जो मार्ग के समीप हो वह अनुमार्ग होता है क्योंकि (शब्द प्रथा सम्यत्समृद्धिव्यर्थाभावात्यया सम्प्रति सुप्पश्चाद्युग पत्रथा सदृक्साकल्यान्तेऽव्ययम्) शा० व्या० अ०३ पा०१ सू० १८ और (समीपे) शा० व्या० अ० २ १ १४ समीपे वर्तमानम् अन्तेतत्सुरन्त समीपवाचिना सुवतने सह समस्यत । सर्व उक्त प्रयोगों में उक्त सूत्रों की प्राप्ति है और इन सूत्रों से प्रयोग भली भांति सिद्ध हो जावे हैं (सेत अव्वई भावे समासे ६) यह अव्ययी भाव समास है अब एक शेष समास विषय में कहते हैं (सेकित एग सेसे २) (प्रश्न) एक शेष समास किसे कहते हैं (उत्तर) जो सामान्य जाति के वाचक शब्द हैं उनका लोप कर जब एक पद शेष रह जाए उसे एक शेष समास कहते हैं किन्तु वह एक शेष पद पूर्व पदों का भी वाचक रहेगा जैसे कि पुरुषश्च पुरुषश्चेति पुरुषौ पुरुष २ लिखकर द्विवचन पुरुषौ बना लिया इसी प्रकार बहुवचन की भी सभावना कर लेनी चाहिए तथा जाति वाचक शब्द होने से एक ही वचन होता है अथवा बहु वचन भी हो जाता है क्योंकि यह समास द्वन्द्व समास के ही अंतर्गत होता है इस लिये (समानामेकः) शा० अ० २ पा० १ सू०८१ समाना तुल्यार्थानां शब्दाना मेर्थ स्यसह वचने तेषामेक एव प्रयोक्तव्य ॥ वक्रश्च कुटिश्च वक्रौ कुटिलौवा बहुवचनम तत्रम् " सुप्पसरूपेय शा० अ २ पा १ सू ८२ इन सूत्रों से एक शेष समास होता है अब इस समास के उदाहरण कहते हैं (जहा एगो पुरिसे तहा बहवे पुरिसा १) जैसे एक पुरुष है वैसे अन्य बहुत पुरुष हैं यहा पर एक शेष जाति वाचक होने पर किया गया है इसी प्रकार (जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो २) जैसे बहुत पुरुष होते हैं वैसे ही एक पुरुष होता है यह भी एक शेष समास है (जहा एगो साली तहा बहवे साली) जैसे एकशाली है वैसे बहुत से शाली हैं (एवकरिसावणो) इसी प्रकार सुवर्ण की मुद्राओं की भी सभावना कर लेनी चाहिये (सत्त एगु सेसे समासे मेत समासिए) अथ

शब्द पूर्ववत् है त शब्द पूर्व सम्मन्यार्थ में है सो यही एक शेष समास है और इसी स्थान पर समास की व्याख्या पूर्ण हो गई है इसी लिये यह सामासिक पद कहाते हैं।

भावार्थ-अव्ययी भाव समास तीन प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि अन्य पदार्थ प्रधान १ पूर्व पदार्थ प्रधान २ उत्तर पदार्थ प्रधान ३ अन्य पदार्थ प्रधान दडा दडि मुष्ठा मुष्टि इत्यादि पूर्व पदार्थ प्रधान पारगङ्गे मध्ये समुद्र इत्यादि उत्तर पदार्थ प्रधान सूपमति दाधिमति इत्यादि और इनके उदाहरण अनुनदी १ अनुग्राम २ अनुफरिय ३ अनुचरिय यही दिये गए हैं सो यही अव्ययी भाव समास होता है ६ और एक शेष समास उसे कहते हैं जिसके अनेक पदों का लोप करके शेष एक पद रह जाए वहीं एक शेष समास होता है जैसे कि " समानामेक " इस सूत्र से वक्रौ वा कुटिलौ इत्यादि पद बन जाते हैं तथा जातिवाचक होने से इन का एक पद भी किया जाता है सो यही एक शेष समास है अपितु समासों का पूर्ण विवर्ण वैयाकरण जानते हैं तथा यह पूर्ण समास शकटायनादि व्याकरणों से जानने चाहिये सूत्र में तो केवल सूचना मात्र ही कथन है और हेमचन्द्र कृत प्राकृत व्याकरण " दीर्घ ह्रस्वौ मिथोवृत्तौ " अ० ८ पा० १ सू० ४ और " समासेवा " अ० ८ पा० २ सू० ६ केवल दो सूत्र ही उपलब्ध होते हैं क्योंकि प्राकृत व्यारण में समास प्रकरण संस्कृतवत् माना गया है इसलिये समास गौण व्याकरण से अवश्य ही करना चाहिये ॥ प्रसग वशात् एक अलुक् समास भी जानना चाहिये जैसे कि " ओजोऽञ्जस्सहोऽम्भस्तपसष्टः " शा. अ २ पा २ सू ४ इस सूत्र से ओज साकृतमिति ओज साकृतम् इसी प्रकार अज साकृत सहसाकृत अम्भ साकृतं तपसाकृत इत्यादि विवर्ण अलुक् समासान्तर्गत जानना चाहिये सो सो जैन व्याकरणों से समास प्रकरण अध्ययन करके फिर तद्धित प्रकरण पठन करना चाहिये इसीलिए अब सूत्रकार तद्धित के विषय में विवेचन करते हैं॥

अथ तद्धित विषय।

सेकित तद्धित २ अट्ठविहे पण्णत्ते मजाहा। कम्मे १ सिप्पे २ सिलोए ३ सयोग ४ समीवत्ताय ५ सजूहो। ६

इस्सरिया ७ वच्चेणय ८ ततद्धितनाम तु अट्ठविह १ सेकिं त कम्मनामे २ तणहारए कठहारए पत्तहारए दोसिए पत्ति य सोतिए कप्पासिए कोलालिए भडवे यालिए सेत्त कम्म नामे सेकित सिप्पनामे २ वच्छिए ततीए २ तुन्नाए ३ त-तुवाए ४ पट्टवाए ५ उपट्टे ६ वरुडे ७ मुजकारए ८ कठ का-रए ६ छत्तकारए १० वम्भकारए ११ पोत्थकारए १२ चित्त-कारए दन्तकारए १३ सेल्लकारए १४ लेपकारए १५ को-ट्टिमकारए १६ सेत्त सिप्पनामे सेकित सिलोगनामे २ समणे माहणे सव्वातिही सेत्त सिलोगनामे २ सेकित सयोगनामे २ रन्नो ससुरए १ रन्नो जामाउए २ रन्नो सालए रन्नोदुए ४ रन्नोभगणीपई ५ सेत्त सजोग नामे ॥

पदार्थ-(सेकिंत तद्धितए २ अट्ठविहे प० त०) (प्रश्न) तद्धितज किसे कहते हैं (उत्तर) जो तद्धित प्रत्ययों के लगने से नाम उत्पन्न होता है उसे तद्धितज कहते हैं किन्तु वह तद्धितज नाम आठ प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे कि जो कर्म से नाम उत्पन्न होता है उसे कर्म नाम कहते हैं इसी प्रकार शिल्प नाम २, श्लोक नाम ३, सयोग नाम ४, समीप नाम ५, सयूथ नाम ६, ऐश्वर्य नाम ७, अपत्य नाम ८ जिसका सूत्र यह है कि (कम्मे १ सिप्पे २ सिलोए ३ सजोग ४ समीवहाय ५ सजुहो ६ ईसरीया ७ वच्चेणय ८) सो (तद्धियनामतु अट्ठविहे १) तद्धित नाम पुन आठ प्रकार से कहे गये हैं अब प्रत्येक २ विषय में कहते हैं (प्रश्न) (सेकिंत कम्म नामे २) (प्रश्न) कर्म नाम किसे कहते हैं (उत्तर) कर्म नाम के उदाहरण निम्न प्रकार से हैं जैसे कि तणहारए कठहारए) तृणहारक काठहारक यद्यपि प्रत्यक्ष भाव में तद्धित प्रत्यय यहां नहीं दीखते हैं किन्तु उत्पत्ति कारण की अपेक्षा तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति है इसी प्रकार (पत्तहारक) पत्रों के लाने वाला (दोसिए) दौषिक यहा पर ठण प्रत्यय का प्राप्ति है अर्थात् वस्त्र बेचने वाला क्योंकि दूष्य नाम वस्त्र का है (सोत्तिए) सौत्रिक ठण् प्रत्ययान्त सूत्र के बेचने वाला (कप्पासिए)

कार्पासिक (ठण् प्रत्यय) कपास का विक्रय करने वाला (कोलालिए) (ठण् प्रत्ययान्त) कौलालिक भाजन विक्रय करने वाला (भंड वेयालिए) भांड वैचारिक (ठण् प्रत्यय) कास्यादिक के विक्रय करने वाला (सेत्त कम्म नामे) यही कर्म नाम है इन में प्रत्यक्ष तद्धित प्रत्यय उपलब्ध नहीं होते किन्तु ऋषि प्रणीत होने से यह कथन सर्वथा माननीय है (से.कित सिप्प नाम २) (प्रश्न) शिल्प नाम किसे कहते हैं (उत्तर) शिल्प नाम भी निम्न प्रकार से है (वत्थिए) वास्त्रिक वस्त्र के शिल्प का ज्ञाता इसी प्रकार (तंतीए) तन्त्रीवादन शीलमस्येति तान्त्रिक अर्थात् जिसका वीणा बजाने का शील है वह तांत्रिक कहाता है (तुन्नाए) इसी प्रकार तुनार (ततुवाए) ततुओंके समाहार करने वाला (पट्ट वाए) पट्टवायक (उवट्टे) उपट्ट (वरुडे) वरुट यह देश रुढि नाम जानने चाहिये (मुजकारए) मूज के कर्म कर्म करने वाले मुजकार इसी प्रकार (कट्ठ कारी) काष्टकार (छत्तकारी) छत्रकार (वम्भकार) वध्यकार (पोत्थकारए) पुस्तक लिखने वाला (चित्तकारी) चित्रकार (दन्तकारए) दान्तकार (सेलका रए) पाषाण का कृत्य करने वाला (लेपकारए) लेपकार (कोट्टिमकारए) भूमि आदि को सम्मार्जन करके चित्रित करने वाला इत्यादि सर्व कर्म शिल्प विज्ञान के अन्तर्भूत हैं (सेत्त सिप्प नामे) और यही शिल्प नाम है तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति होने पर ही इन्हें तद्धित प्रत्ययान्त मानागया है (सेकिंत सिलोगनामे २) (प्रश्न) श्लाघनीय तद्धित नाम किसे कहते हैं (उत्तर) श्लाघा पूर्वक तद्धित नाम निम्न प्रकार से है जैसे कि (समणे माहणे सव्वा तिही सेत्त सिलोगनामे) श्रमण ब्राह्मण सर्व अतिथि इत्यादि श्लाघनीय नाम साधु पद में देख जाते हैं किन्तु श्लाघनीय अर्थ की उत्पत्ति हेतुभूत अर्थ मात्र में तद्धित प्रत्यय होता है इसीलिये श्रमण भव श्रामणय इत्यादि शब्दो में तद्धित के "राय" आदि प्रत्यय संयोजन करने चाहिये सो यही श्लोक नाम है सो अब सयोग नाम के विषय में कहते हैं (सेकिंत सजोग नामे) (प्रश्न) सयोग नाम किसे कहते हैं (उत्तर) सयोग नाम उसे कहते है जिसे सयोग पूर्वक उच्चारण किया जाय जैसे कि (रन्नोसुसुरए १) राजा का सुसुर (रन्नोजामाउए) राजा का जामातृ (रन्नो साला) राजा का साला (रन्नोदुए) राजा का दूत (रन्नो भगणी पति) राजा की भगिनी का पति है (सेत्त सजो ग नामे २) सो यही सजोग नाम है क्योंकि सम्बन्ध में षष्ठी होती है इसीलिये

षष्ठी के प्रयोग हैं अथवा इन शब्दों में तद्धित प्रत्यय अप्रत्यक्ष हैं तथापि इनके हेतुभूत अर्थों में विद्यमान होने से सर्वथा माननीय हैं तथा पूर्वगत शब्द प्राकृत आर्यदिन अप्रत्यक्ष है इसीलिये स्वरूप के सम्यक् प्रकार से अवगमन होने पर भी यह कथन सर्वथा अशङ्कनीय है ॥

भावार्थ—तद्धित प्रकरण आठ प्रकार से प्रतिपादन किया गया है जैसे कि कर्म १ शिल्प २ श्लोक ३ संयोग ४ समीप ५ संयूथ ६ ऐश्वर्य ७ और अपत्य ८ इन अर्थों में तद्धित प्रत्यय होते हैं सो क्रम से उदाहरण तृणहारक काष्ठहारक पत्रहारक दौषिक पत्रिक सौत्रिक कार्पासिक कौलालिक भाड वैतारिक तथा शिल्प के उदाहरण वास्त्रिक तान्त्रिक ततुवाय पट्टवाय उपट्ट वरुड मुंजकारक काष्ठकारक छत्रकारक व यकारक पुस्तककारक चित्रकारक दंतकारक पाषाण कारक लेपकारक कोट्टिमकारक श्लोक के उदाहरण श्रमण ब्राह्मण अतिथि संयोग के उदाहरण राजा का श्वसुर राजा का जामातृ राजा का साला राजा का दूत राजा की भगिनी का पति यह सर्व संयोग नाम है उक्त अर्थों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तद्धित प्रत्यय सूत्र विहित है क्योंकि कतिपय शब्दों के हेतु भूत अर्थों में तद्धित प्रत्यय होता है ॥

अथ शेष तद्धित नाम विषय

(सेकिंत समीव नामे २ गिरिसमीवे नगर गिरि नगर १ विदिसाए समीवे नगर विदिसा नगर २ वेनाय समीवे नगर वेनाएनगर ३ नगर समीवे नगरम् नगरायउ सेत समीव नामे ५ सेकित सजूहनामे २ तरगवकारए १ मलवईकारए २ अत्ताणुसाट्ठिकारए ३ विन्दुकारए ४ सेत सजूहनामे ६ सेकित ईसारिय नामे २ ईसरे १ तलवर २ माडविए ३ कोडविए ४ इब्भसेट्ठी ५ सेणावई ६ सत्थवाह ७ सेत्त ईसरिय नामे ८ सेकित अवच्चनामे अरिहतमाया १ चक्कवट्टीमाया २ वल

देवमाया ३ वासुदेवमाया ४ रायमाया ५ मुणिमाया ६ वाय गमाया ७ सेत्तं अवच्चनामे सेत्त तद्धितए)

पदार्थ-(सेकिंत समीवनामे २) (प्रश्न) समीप नाम किसे कहते हैं (उत्तर) समीप नाम इस प्रकार से है जैसे कि (गिरिसमीवे नगर गिरिनगरम् १) जो गिरि के समीप नगर है वह गिरि नगर होता है और (विदिसासमीवे नगर विदिसानगरम्) जो विदिसा के समीप नगर है वह वैदिशा नगर है यहां पर अण् प्रत्यय है और (वेनाय समीवेनगर वेनाय नगर) जो वेनानदी के समीप नगर है वोह वेनाय नगर है (नगरसमीवेनगर नगरायनगरम्) जो नगर के समीप नगर होता है उसे नगराय नगर कहते हैं (सेत्तं समीवनामे) यही समीप नाम है ५ (सेकिंत सजूह नामे) (प्रश्न) सयूथ नाम किसे कहते हैं (उत्तर) सयूथ नाम के उदाहरण निम्न प्रकार से है जैसे कि (तरगवइकारए) तरगपतिकारक (मलयवइकारए २) मलयपतिकारक २ (अत्ताणुसट्ठिकारए) आत्मानुपाष्टिकारक ३ (विंदुकारए) विन्दुकारक (सेत्त सयूहनामे) यही सयूथ नाम है (सेकिंत ईसारियनामे) (प्रश्न) ऐश्वर्य्य नाम किसे कहते हैं (उत्तर) (ईसरे १ तलवर २ माडविए) युवराज्य तलवर माडविक (कोडंबिएइब्भेसेट्टि) कौटुम्बिक प्रधान सेठ (सेणावई सत्थवाह) सेनापति सार्थवाह (सेत ईसारियनामे ७) येही ऐश्वर्य नाम है इनकी उत्पत्ति में ताद्धित प्रत्यय है ७ (सेकिंत अवच्चनामे २) (प्रश्न) अपत्य नाम किसे कहते हैं (उत्तर) अपत्य नाम उसे कहते हैं जो पुत्र के नाम से माता का नाम प्रसिद्ध हो जैसे कि (अरिहंतमाया १) यह अरिहंत की माता है अर्थात तीर्थंकरो अपत्यं यस्या सा तीर्थंकर माता एवमन्यत्रापि सुप्रसिद्धे नामसिद्ध विशिष्यते अतस्तीर्थंकरादि मातरो विशापितास्ताद्धित नाम अत प्रसिद्ध नाम के द्वारा जो अप्रसिद्ध नाम भी प्रकाशित हो जाए उसी का नाम अपत्य नाम है जैसे कि तीर्थंकर देव के सुप्रसिद्ध होने से माता भी प्रसिद्ध हो जाती है इसी प्रकार (चक्कवट्टीमाया २) चंक्रवर्ती की माता (वलदेव माया) वलदेव की माता (वासुदेव माया) वासुदेव की माता (रायामाया) राजा की माता (मुणिमाया) मुनि की माता (वायगमाया) वाचक की माता (सेत अवच्चनामे सेत्त तद्धितए) येही अपत्य नाम है और येही ताद्धित नाम

नाम कहाते हैं किन्तु इन में आर्ष वाक्य होने से और सर्व मत्यय हेतुभूत अर्थों में विद्यमान होने से सर्वथा माननीय है अब इसके आगे धातु का विवर्ण किया जाता है ॥

भावार्थ-समीप नाम उसे कहते हैं जो किसी मधान वस्तु के समीप हो जैसे कि जो गिरि के समीप नगर बसता होवे उसे गिरि नगर कहते हैं १ जो विदिशा के समीप नगर हो वह विदिश नगर होता है २ अथवा जो नदी के समीप नगर बसता हो वह नदी नगर होता है ३ जो नगर के समीप नगर हो वह नगराय नगर है ४ इसे ही समीप नाम कहते हैं ५ अपितु सयूथनाम के निम्न उदाहरण हैं जैसे कि तरगवतिकारक १ मलयवतिकारक २ आत्मा की पुष्टि कारक ३ विन्दुकारक ४ यह सर्व सयूथ नाम है क्योंकि समूह में सयूथ नाम की माप्ति है ६ और एश्वर्य नाम राजादि में होते है ईश्वर तलवर माडविक इभ्य सेठ सेनापति सार्थवाह इत्यादि ऐश्वर्यवाची नाम हैं ७ और अपत्य नाम उसका नाम है जो पुत्र के नाम से माता की मसिद्धि हो जैसे कि यह अरिहंत की माता है इसी मकार चक्रवर्ती की माता १ वासुदेव की माता बलदेव की माता राजा की माता, मुनि की माता वाचकाचार्य की माता यह अपत्य नाम हैं इसे ही ताद्धित नाम कहते हैं किन्तु इस मकरण में उत्पत्ति रूप भाव में तद्धित प्रकरण माना गया है विशेष विवर्ण तो पूर्वो में था अत लेश मात्र ही यहा पर दिखलाया गया है इसलिये यह कथन अशक नीय है तथा वर्णों के अनंत पर्याय हैं इसलिये यह कथन आदरणीय है अब इसके आगे धातु मकरण का विवेचन करते है ।

अथ धातु विषय ।

सेकित धाउए २ भू सत्तायाम् परस्मैभाषा एंध वृद्धौ स्पर्द्धसंघर्षे गाधृ प्रतिष्टा लिप्साग्रंथेषु बाधृ राट (लोडने) सेत्त धातुए ॥

नोट—जैन कवि कल्पद्रुम में लिखा है कि एधिनु वृद्धौस्पर्द्धितु सवर्ष गाधृङ् भवम् प्रतिष्ठा लिप्सी मथंतु राटनेवाधृङ् और इन क अनुबंध के पृथक २ फल लिखे हैं

पदार्थ-(सेकितं णाउए ?) (प्रश्न) धातु कौन २ से है ? गुरु ने उत्तर दिया कि (भूसत्ताया) भू धातु विद्यमान अर्थ में होता है फिर उसके (परस्मैभाषाए) परस्मै भाषा में भवति भवतः भवन्ति भवसि भवथ भवथ भवामि भवाव भवामः तीनों पुरुषों के उक्त प्रयोग बन जाते हैं किन्तु इनकी साधना निम्न प्रकार से की जाती है भू धातु को रखकर "क्रियार्थोधातु" । शा० व्या० अ० १ पा० १ सू० २२" इस सूत्र से धातु संज्ञा बाध कर "सति २ शा० व्या० अ० ४ पा० ३ सू० २१७" इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् प्रत्यय होगया फिर "कृत्योऽस्तुलन्तास्" शा० अ० ४ पा० ३ सू० ८५ । लट् प्रत्यय को कर्ता में रख कर "लोऽन्य युष्मदस्मासु तिप्तस्झिसिप्थस्थमिव्वसमस्" शा० अ० १ पा० ४ सू० १ । इस सूत्र से अन्य पुरुष मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में अनुक्रमता पूर्वक तीन २ प्रत्यय कर लेने चाहिये किन्तु लट् लकार में अकार और टकार की इत्संज्ञा होती है शेष ल् के स्थान में अनुक्रमता पूर्वक तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिप् वस् मस् येह प्रत्यय कर लेने चाहिए फिर "कर्तरिशप् शा० अ० ४ पा० ३ सूत्र २० । इस सूत्र से कर्ता में शप् का विकरण हो जाता है और श् और प् की इत्संज्ञा करके केवल अकार मात्र ही शेष रह जाता है तब भू अ ति ऐसे रूप हुआ फिर "अक्ङिद्लघुगुणेतौ" शा० अ० ४ पा० २ सू० १७ । इस सूत्र से ए ट और श करके फिर "एचोऽच्ययवायाव्" इस सूत्र से ओ का अव् होता है फिर "ऋाऽन्त" १-४-८८ । इस सूत्र से ऋ मात्र को अत आदेश कर लेना चाहिए फिर "आत्व्यत" शा० ४ २।२८ इस सूत्र से मकार वकार के परवर्ती होने से अकार को आकार होजाता है तब इस प्रकार से उक्त रूप सिद्ध होते हैं और (एधवृद्धौ) (एधिवृद्धौ) एध धातु वृद्धि अर्थ में होता है और (स्पर्द्ध सघर्षे) स्पर्द्ध धातु सघर्ष अर्थ में होता है (गाधृ प्रतिष्ठालिप्साग्रन्थेषु) गाधृ धातु प्रतिष्ठा लिप्सा (इच्छा) और सचय इन अर्थों में होता है (वाधृ विलोडने) वाधृ धातु विलोडन अर्थ में होता है और फिर इनके दश लकारों में तथा वा प्रक्रियाओं में भिन्न २ प्रकार से रूप बनाये जाते हैं परस्मैपदी और आत्मनेपदी सेट् अनिट् सकर्मक अकर्मक भाव कर्म इत्यादि अनेक प्रकार से तिङन्त प्रकरण में धातुओं के भेद वर्णन किये गये हैं और उपसर्ग वशात् धातुओं के अर्थों में भी परिवर्तन होजाता है जैसे कि हृञ् हरणे धातु के उपसर्ग पूर्वक रूप आहार विहार उद्धार प्रहार परिहार इत्यादि प्रयोग

बन जाते हैं किन्तु इनका पूर्ण स्वरूप व्याकरण से देखना चाहिये सूत्र में तो केवल सूचना मात्र ही कथित है (सेत धातुए) इस ही धातु कहते हैं ।

भावार्थ–धातु से जो नाम उत्पन्न हुआ हो उसे धातुज नाम कहते हैं जैसे कि भूमत्ताया धातु के परस्मै भाषा में रूप बनाए जाते हैं इसी प्रकार एधि वृद्धोत्यार्द्धि सपर्य गाधृ प्रतिष्ठा लिप्सा ग्रन्थेषु गाधृ लोडने इत्यादि धातु हैं इन का पूर्ण बोध व्याकरण के तिङन्त प्रकरण से हो सक्ता है दश लकार गण प्रक्रिया सकर्मक धातु अकर्मक धातु आत्मनेपदी उभयपदी इत्यादि विषयों का स्वरूप व्याकरणों से देखने चाहिये यहा पर तो केवल सूचना मात्र ही कथन है और प्राकृत भाषा में ए भुवेर्हो हुव हवा ॥ प्रा व्या अ ८ सू ६० भुवो धातोर्हो हुव हव आदे शावा भवन्ति इस सूत्र से हो हुम हव येह तीनों विकल्प से आदेश हो जाते हैं जैसे कि होइ हाति हुवइ हुवन्ति हवई हवन्ति पद में भवइ इत्यादि कथन भी उक्त व्याकरण से देखें अब निरुक्त विषय में व्याख्या करते हैं

अथ निरुक्त विषय ।

(सेकित निरुत्तिए मह्या शेतेमहिप भ्रमति चरोतीति भ्रमर, मुहुर्मुहुर्ल सतीतिमुसल कपिरिव लम्बते कपित्थ चिच्च करोति खलच भवति चिक्खल उर्द्धकर्ण, उलूक, मेघस्य माला मेघला सेत्त निरुत्तिए सेत्तभावप्यमाणे सेत्त पमाणे सेत्त दस नामे सेत्तनामे नामेति पद सम्मत्त ॥ २ ॥

पदार्थ (सेकित्त निरुत्तिए २) (प्रश्न) निरुक्ति किसे कहते हैं (उत्तर) जो वर्णो के अनुसार अर्थ किया जावे उसे निरुक्ति कहते हैं सो जो निरुक्ति में पद हो उसे नैरुक्तिक पद कहते हैं जैसे कि (मह्याशेतेमहिप) जो पृथिवी में शयन करे वही महिप है और (भ्रमति रौतिइतिभ्रमर) जो भ्रमण करता हुवा शब्द करे वह भ्रमर है (मुहुर्मुहुर्ल सतीति मुसल) जो पुन २ ऊचे नीचे होवे (पडे) उसे मुसल कहते हैं किन्तु मुश खड ने धातु से (" वृपादिभ्य श्चित्") उणादि प्रकरण पा १ सू १८८ इस सूत्र से कल प्रत्यय होगया तब मुसल शब्द सिद्ध होगया किन्तु ॥ शपो स ॥ इस प्राकृत के सूत्र से तालव्य शकार के स्थान पर दन्त्यसकार होगया तब मुसल शब्द सिद्ध हुआ और कपिरिव लम्बतेकरोति पतति च कपित्थ जो कपि की न्याइ वृक्ष शाखा में ल-

कायमान होवे और चेष्टा करे वायु के प्रयोग से कपायमान होकर गिरपड़ उसे कपित्थ कहते हैं और (चिच्च करोति खल्लं च भवति चिक्खल्लं , पादों को श्लेष करने वाला और पदों का स्पर्श होकर कठिन करने वाला वही चिक्खल होता है (ऊर्द्धकर्ण' उलूक.) जिस के ऊंचे कर्ण हो वही उल्लू होता है (मेषस्य माला मखला) मेष (सुख) की जो माला हो वोही मेखला है (सेत्तंनिरुत्तिए सेत्त भावप्पमाणे) यही निरुक्ति है इस ही भाव प्रमाण कहते हैं (सेत्तंदसनाम सेत्त नामे यही दश नाम का स्वरूप है और यही नाम पद है। और इसी स्थान पर (नामेतिपयसम्मत्त) उपक्रमान्तर्गत द्वितीय नाम द्वार का स्वरूप सम्पूर्ण हुआ है अब इस के अंतर्गत तृतीय प्रमाण द्वारके विषय में व्याख्या की जाती है॥

भावार्थ-निरुक्ति*उसे कहते है जो वर्णो के अनुसार अर्थ किया जाय जैसे कि महाशेते महिषम् जो पृथ्वी में शयन करे वही महिष है जो भ्रमण करता हुआ शब्द करे सो भ्रमर पुन. २ ऊंचे नीचे गिरे सो मुसल कपि की न्याई चेष्टा करे सो कपित्थ पादों का स्पर्श करे उसे चिक्खल कहते हैं ऊर्ध्वकर्ण होने से उलूक और-मेषस्य माला मेखला येह सब नैरुक्तिक पद हैं क्योंकि सुउपसर्ग शोभन अर्थ में आता है और न शब्द का प्रथमैकवचनात " ना " होता है तब सुना प्रयोग सिद्ध होगया फिर सीर (लागलहल) का नाम है इस लिये जिस के हाथ में सुष्टुलागल है उसे+सुनासीर कहते हैं तथा सुनासीर मासयह भी शब्द नैरुक्तिक है तथा अस्मद शब्द के द्वितीया के एक वचन में "मा" शब्द रूप बनता है और अन्य पुरुष क एक वचन में स रूप होता है दोनों के एकत्व होने से (मांस) प्रयोग सिद्ध होगया इस का तात्पर्य यह हुआ कि जिसको मैं खाता हूं वह मुझे खायगा सो इसी का नाम निरुक्ति है और येही भाव प्रमाण है और इसी स्थान पर दशनाम का स्वरूप सम्पूर्णहो गया है अत उपक्रमान्तर्गत द्वितीय नाम द्वार की समाप्ति है इस के आगे प्रमाणद्वार के विषय में कहते हैं.

* वर्णागमोवर्ण विपर्ययश्च । द्वौचापरौ वर्णविकार नाशौ । धातोस्तदर्थातिशयेन । योगस्तदुच्यते पंच विध निरुक्त ॥

वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिंहे । वर्णविपर्यय । षोडशादौ विकारास्स्याद्वर्णनानाश पृषादरे २ वर्ण नाश विकाराभ्यां धातोरतिशयनय योगस्तदुच्यते मार्जमयूर भ्रमरादिषु ॥ ३ ॥

अविहित लोपागमादेश विकारा शिष्टैरुच्यमाना अथ रूपेणाभिरमातिष्ठतीति अश्वय इति लिंगा भव्यामुक्तम् ।

हिंसु हिंसायामिति धातोरपचत्यान्हिनस्तीति सिंह इति हकार विपर्यय विकार परिणाम यथा षोडशो पञ्च दकारस्य डकार ।

महा रौतीति मयूर । अत्र महाशब्देकारस्य नाश हकारस्य विकारोयकार रुधातो कर इत्योदश । भ्रमन् भ्रमर । नलोपोरु शब्दस्याकारश्च ॥

। शोभनंना सीरमप्रधानमस्य सुनासीर शु प्ररायाम् अशुरवत् । दन्त्यादिरपि॥इन्द्रस्यनाम इतिहैम ।

टीका निरन्तर व्याख्या इति हैम टीक्यति गमयत्यर्थान् टीका सुपमाणा विप्रमाणा च निरतर व्याख्या यस्या सातथा ॥

॥ अथाऽस्मदीया गुर्वावलिः ॥

श्री वर्धमानस्यमहेशितुर्वै ह्याचार्य्य मुख्यस्य परात्मनश्च ॥
शिष्य प्रशिष्यादि परम्पराया तस्स्येव चेय गुरुनाममाला ॥१॥
सुधर्मगच्छस्य प्रधानरूपा आचार्य्यवर्य्या यति धर्मनिष्ठाः ॥
श्रीपूज्यपादामरसिंहवाच्या वन्द्या, सदैवापि ममात्र सन्त ॥ २ ॥
तच्छिष्यभूतास्तु तदीयगच्छे आचार्य्यपदवीमनुलब्धवन्त ॥
श्रीपूज्यपादाभिधमोतिरामा वन्द्या सदैवापि मया महान्त, ॥३॥
तच्छिष्या यतिवर्य्याः स्थविर पदविभूषिता महात्मान . ॥
श्रीयुत गणपतिराया सुगणावच्छेदकावन्द्या ॥ ४ ॥
तच्छिष्या मुनिवर्य्या, सुगणावच्छेदकास्तुजयरामा ॥
सन्तितुममगुरू गुरव सदैव वन्द्यामहात्मान ॥ ५ ॥
तच्छिष्या यतिवर्य्या प्रवर्तकपदेनभूषितालोके ॥
ज्योतिषि कुशलाः श्रीमच्छालिग्रामाभिधागुरवः ॥ ६ ॥
तच्छिष्योऽस्मितुस्त्वल्प पूर्वपादसरोजमधुपोऽहम् ॥
आत्मारामोनाम्नोपाध्याय पदगत सोऽहम् ॥ ७ ॥
स्वप्रियशिष्यस्यैव ज्ञानेन्द्रो प्रार्थना स्वहृदि धृत्वा ॥
व्याख्याकृता मययत्वनुयोगद्वारसूत्रस्य ॥ ८ ॥
ज्ञान प्रबोधिनी नाम्ना टीकेयनृगिराकृता ॥
ज्ञानचन्द्रस्यनामापि प्रकाशयतुसर्वदा ॥ ९ ॥
टीकेय ज्ञानचन्द्रस्य स्मृतये रचितामया ॥
कल्याणकारिणी भूयाद्भव्यानां पठितानृणाम् ॥ १० ॥
करमुनिग्रहचन्द्र समेऽब्द के कुजदिनेराखु फाल्गुणशुक्लके ॥
प्रथितजाङ्गलदेश इयाभवे त्ववसिति नगरे वरुणालये ॥ ११ ॥

शुद्धाशुद्धि पत्रम् ।

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	अहन्	अर्हन्
२–३		(जहां) अणुएण (हैं)	(वहां) अणुएणा (चाहिये)
५	८	अज्झयणाइ	अज्झयणाइ
२३	१८	भाए	मारो
२५	२३	जीव	जाव
२६	५	चुयच । विय	चुयचाविय
३०	१४	सेत्तनो अ गमओ	सेत्त लोइय नो आगमओ
३२	६	पएणवत्ते	पएणवण
३२	२२	अणुत्तरोववाइय	अणुत्तरोववाइय
४०	२२	आर्थाधिरार	अर्थाधिकार
४१	४	अणुभागदाराणि	अणुओगदाराणि
४५	५	मच्छहीण	मन्छहीण
४५	१४	असाई सेत्त	असाइ सेत्त
५०	१३	इमिदानुसार	इागिनानुसार
५१	२	ओवकमे	उवक्कम
५१	३	नाम २ पमाण ३ वत्तवया	नाम २ पमाण ३ वत्तव्वया
५१	५	दव्वाणुपुव्वी	दव्वाणुपुव्वी
५१	१२	सगाहस्सय	सग्गहस्सय
५२	२६	समो यारे	समोयारे
५२	२६	सत्रकार	सूत्रकार
५३	४	सस्थानुपूर्वी	सस्थानानुपूर्वी
५३	२१	दुपए सियाई	दुपएसियाइ
५३	२२	पयाएणगम	पयाणए गगम
५४	२८	समुत्कीर्तन	समुत्कीर्तन
५५	७	द्रव्या	द्रव्य
५५	२०	अवत्त याइय	अवत्तव्वयाइय

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	११	आणुपुव्वी उप	आणुपुव्वी ओय
५६	२०	षद् विंशति	षद् विंशति
५६	२१	भग	भग
५७	५	आनानुपूर्वा	अनानुपूर्वी
५७	६	अव्वत्तए	अवत्तव्वए
५८	८	भगा	भगा
५८		समुकीर्तना	समुत्कीर्तना
५९	२२	अवत्त एअ	अवत्तव्वएय
६१	२५	द्रव्य	द्रव्य
६३	६	आणुपुव्वी दव्वे	आणुपुव्वी दव्वाइं
६३	२०	अवत्तव्वय	अवत्तव्वय
६३	२४	अत्तव्वय	अव्वत्तव्वय
६४	५	सेकित	से किं त
६४	१७	दव्वयमाण	दव्वपमाण
६५	२० २१	सज्जइ भाग	संखेज्जइ भागे
६६	३	लोक	लोय क
६६	७	भावे	भागे
६६	१८	आनानुपूर्वी	अनानुपूर्वी
६९	१३	पडुच्च सव्वद्धा	पडुच्च नियमा सव्वद्धा
७०	५ १०	केवचिर	केवचिर
७१	२७	भाग	भाग
७३	१	भाग द्वार	भाव द्वार
७३	३	उदइए होज्जा	उदइए भावे होज्जा
७४	४	अवतव्व	अवत्तव्व
७५	८	णगय	णगम
७६	८	अणव णिहिया	अणोवणिहिया
७६	२२	अवत्तवग	अवत्तव्वए
७६	२४	समुक्कित्तणया	भगसमुक्कित्तणया
७७	५	अवत्तव्य	अवत्तव्य
७८	५–६	अनानुनुपूर्वी	अनानुपूर्वी
८०	४	नो अवत्त-	नो

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	१७	दव्वय माण	दव्वपमाण
८२	१७	असखेजेसु	असखेज्जेसु
८२	१८	सख्यत	सख्यात
८२	२२	अवक्तव्य	अवक्तव्य द्रव्य
८३	६	भोगसु	भागसु
८३	१८	सग्ग इस्स	सग्गहस्स
८४	१	णाणुपुव्वी	आणुपुव्वी
८४	१७	भाग गें	भाग में
८४	२८	सग्रनय	सग्रहनय
८५	१८-१९	एगइयाए	एगाइयाए
८६	१	अस्तिकाय	अस्तिकाय
८६	७	अन्नमगत्रभासा	अन्नमन्नभासो
८६	१६	गर्णन	गणन
८६	२२	४+५+६	४×५×६
८७	६	पुव्वाणुपुव्वी	पुव्वाणुपुव्वी
८९	१	सगाहस्स	सग्गहस्स
८९	२५	परुवखगा	परूवणया
९१	८-१४	अणाणुपुव्वी	अत्थि अणाणुपुव्वी
९२	६	सखेस्सइ	सखेज्जइ
९४	२६	जघन्य	जघन्य
९६	२	अनानुपूर्वा	अनानुपूर्वी
९६	१६	अवत्तव्वगदव्वग दव्वाइ	अवत्तव्वगदव्वाइ
९६	२०-२१	सग्गाहस्स	सग्गहस्स
९५	२३	णेगमववहाण	णगमववहाराण
९८	२०	उपणिहिया	उवणिहिया
९८	२२	पुव्वाणुपुव्वी	पुव्वाणुपुव्वी
१००	१	पुच्छाणुपुव्वी	पच्छाणुपुव्वी
१००	८	तमप्पभा तमप्पभा	तमप्पभा
१०१	८	सुरा	सुर
१०१	९	२० चद २० चद	२० चद
१०२	७	पावन्मात्र	यावन्मात्र

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	११	आणुपुव्वी उप	आणुपुव्वी आय
५६	२०	पद् विंशति	पद् विंशति
५६	२१	भग	भग
५७	५	आनानुपूर्वी	अनानुपूर्वी
५७	६	अव्वत्तए	अवत्तव्वए
५८	८	भगा	भगा
५८		समुकीर्तना	समुत्कीर्तना
५९	२२	अवत्त पुश्र	अवत्तव्वएय
६१	२५	द्रव्य	द्रव्य
६३	६	आणुपुव्वी दव्वे	आणुपुव्वी दव्वाइं
६३	२०	अवत्तव्वग	अवत्तव्वय
६३	२४	अवत्तव्वय	अव्वत्तव्वय
६४	५	सेचित्त	से त्तिं त
६४	१७	दव्वयमाण	दव्वपमाण
६५	२० २१	सज्जइ भाग	सेखज्जइ भागे
६६	३	लोक	लोक के
६६	७	भावे	भागे
६६	१८	आनानुपूर्वी	अनानुपूर्वी
६९	१३	पडुच्च सव्वद्धा	पडुच्च नियमा सव्वद्धा
७०	५ १०	केवचिर	केवचिर
७१	२७	भाग	भाग
७३	१	भाग द्वार	भाव द्वार
७३	३	उदइए होज्जा	उदइए भावे होज्जा
७४	४	अवतव्व	अवत्तव्व
७५	८	णागय	णागम
७६	८	अणव णिहिया	अणोवणिहिया
७६	२२	अवव्वत्तग	अवत्तव्वए
७६	२४	समुक्कित्तणया	भगसमुक्कित्तणया
७७	५	अवत्तव्य	अवत्तव्य
७८	५–६	अनानुनुपूर्वी	अनानुपूर्वी
८०	४	नो अवत्त–	नो

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	२७	दव्वय माण	दव्वपमाण
८२	१७	असत्त्जेसु	असखेज्जेसु
८२	१८	सख्यत	सख्यात
८२	२९	अवन्नव्य	अवक्तव्य द्रव्य
८३	६	भोगसु	भागेसु
८३	१८	सग्ग हस्स	सग्गहस्स
८४	१	णाणुपुव्वी	आणुपुव्वी
८४	१७	भाग मे	भाग में
८४	२८	सग्रनय	सग्रहनय
८५	१८-१९	एगइयाए	एगाइयाए
८६	१	अस्सिकाय	अस्तिकाय
८६	७	अन्नगव्वम्मासो	अन्नमन्नम्मासो
८६	१६	गर्णन	गणन
८६	२२	४+५+६	४×५×६
८७	६	पुव्वाणुपुवूवी	पुव्वाणुपुव्वी
८९	१	सगाहस्स	सग्गहस्स
८९	२५	परुवखगा	परुवणया
९१	८-१४	अणाणुपुव्वी	अत्थि अणाणुपुव्वी
९२	६	सखेस्नइ	सखेज्जइ
९४	२६	जयन्य	जघन्य
९६	२	अनानुपूर्वी	अनानुपूर्वी
९६	१६	अवत्तव्वगदव्वग दव्वाइ	अवत्तव्वगदव्वाइ
९६	२०-२१	सग्गाहस्स	सग्गहस्स
९६	२३	णेगमववहाराण	णगमववहाराण
९८	२०	उपणिहिया	उवणिहिया
९८	२२	पुव्वाणपुव्वी	पुव्वाणुपुव्वी
१००	१	पुव्वाणुपुव्वी	पच्छाणुपुव्वी
१००	८	तमप्पभा तमप्पभा	तमप्पभा
१०१	८	कुरा	कुर
१०१	९	२० चद २० चद	२० चद
१०२	७	पावन्मात्र	पावन्मात्र

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०२	११	द्वों	द्रव्यों
१०३	६	पडस्सारं	सहस्सार
१०३	६	आणयण	आणय
१०३	१०	अचुय	अच्चुय
१०३	११	इसात्पभारा	ईसिप्पब्भारा
१०४	१६	पुव्वाणु	पुव्वाणुपुव्वी
१०४	१८	पच्छाणु	पच्छाणुपुव्वी
१०५	६	पच्छापुव्वी	पच्छाणुपुव्वी
१०६		जहां (द्वि) है	यहां (द्वि) चाहिये
१०७	२२	द्विसम	द्विसमय
१०६	४	स्वस्थानों में	स्व स्व स्थानों में
१०६	२०	अवत्तद्रव्य	अवक्तव्य द्रव्य
११२	१०	नयम	नैयम
११२	२१	(मघ)	(मश)
११३	१	समय	समय
११३	३	अ थ	अथ
११४	११	द्रव्यों	द्रव्योंकी
११४	२६	परस्पर	पर
११६	२	आणा	आण
११६	५	तुडिय	तुडिए
११६	५-६	अडडांग	अडडंग
११६	११	सागरावमम	सागरोवमे
११७	१२ १३	एक साश्वाद्वास	एक श्वासोच्छ्वास
११७	१३	सोम	सात
११८	१४	पडपगे	पड अगे
११६	२६	अण्णक्भामो	अन्नपद भासो
१२१	४	अजिय	अजिय
१२१	५	सीपल	सीतले
१२२	२४	पुव्वी	पुव्वाणुपुव्वी
१२३	२६	हरस्पर	परस्पर
१२४	५	सापपडरमे	ममनउरासे

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२५	१७	समयारी	सामायारी
१२६	१५	भावों को	भावोंकी
१३१	१७	निणय	निर्णय
१३२	१६	अजीनाम	अजीवनाम
१३२	१८	अणगविह	अणेगविह
१३५	२०	अवसेसिएग	अविसेसिएय
१३५	३	तिरख	तिरिक्ख
१३५	७	नरइङ	नरइउ
१३५	१०	एगिंधिए	एगिंदिए
१३५	१६	नराणस्सइ	वणस्सइ
१३७	पाठ में	पचद्रिय	पंचिंदिय
१३८	२३	समुच्छिग	समुच्छिम
१३६	५	थलय	थलयर
१४४	१	गजभ	गर्भज
१४४	१०	अणगि	अग्गि
१४४	१४	मूय	भूय
१४५		मज्झिम	मज्झिम
१४५		विद्युत्कुमार ८ वायुकुमार ६	विद्युत्कुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ उदधिकुमार ७ दिग्कुमार ८ वायुकुमार ९
१४७	२७	लोक देव	देवलोक
१४६	८	लेहियवन्न	लोहियवन्न
१४६	१०	सुभिगन्ध	सुरभिगंध
१४६	१४	फासनागे	फासनामे
१४६	२०	दुगणकालए	दुगुणकालए
१५२	१३	एगगुग	एकगुण
१५४	२०	विराहू	विएट्ठ
१५५	३	तिराह	तिएइ
१५५	१७	विराह	विएट्ठ
१५६	१८	उकारांत	ऊकारांत
१५७	१५	विभन्यत	विभक्त्यत

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६१	२१	स्वरस्योद्भूत	स्वरस्याद्भूते
१६२	४	कृपादौ	कृपादौ
१६२	१८	उकार	इकार
१६४	७	विभक्तियात	विभक्त्यत
१६४	६	गोइ या	घाइ या
१६६	२	मिस्त्रम	मिश्रज
१६६	८	युयम्	यूयम्
१६६	१३	मिस्त्र	मिश्र
१६६	२२	दशविहपि	दसविहपि
१६८	८	लिंगाक्रिक	लिंगाद्रिक
१६८	२०	मत्वों	मत्ययों
१६८	२३	श्रा,	श्री,
१६८	२४	कुतोऽपण्या'	कुतोऽपण्या'
१६६	६	व्या.पृत	व्यावृत
१७३	४-५	फप्पए	कप्पए
१७४	१	उवमें आगमे	उवमे अगमे
१७४	१३	साद्दश्य	सादृश्य
१७५	६	पलम्भानुमानच द्वितय	पलम्भानुमानच द्वितीय
१७५	२१	अन्वरय	अन्वय
१७७	१२	कुटम्ब	कुटुम्ब
१७८	२४	स्व अव्यम्	स्व अव्ययम्
१८०		अनुवर्तते, अकर्तीर	अनुवर्तते, अकर्तरि
१८६	११	देवदन्तेन	देवदत्तेन
१८६	१०	इगच	इ गच
२०२	१५	सेंकित उव्वसम	सेकिंत उवसमे
२०४	७	खाणवयण	खीणवयणे
२०४	१६	लाभ अतराय	लाभांतराय
२०५	२	अठ्ठएह	अठ्ठण्ह
२०५	२१	नाणावरीणज्जे	नाणावरणिज्ज
२०७	१२	शरीर गोव गव	सरीरगोवग वधण
२०८	६	परिवी उड	परिनिवुडे

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०८	६	मागवत	भागवत्
२०८	२३	सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
२०६	६	खओवसीमए	खओवसमिए
२०६	१३	खओवसीमया	खओवसमिया
२०६	२३	ओव भोग	उवभोग
२१०	२.	घणिंद्रिय	घाणिंदिय
२१०	३	जिंभिंदिय	जिब्भिंदिय
२१०	५	पाएणत्ति रे	पण्णत्तिधरे
२१०	६	ओवासगदसा अतग ओ दसा ३६ अणुतरो	उवासगदसा अतगड दसा ३६ अणुत्तरो
२१०	७	पाराहा वागरे	पएहावागरे
२१०	८	नवपुवधरे	नवपुव्वधरे
२१०	६	ओ	जाव
२११	१७	नाणावरिणज्जस	नाणावरणिज्जस्स
२१२	१६	लद्धोई	लद्धी ६
२१२	१	समायिक चरित्र	सामायिक चारित्र
२१२	५	सम्पराग चरित्र	सम्पराय चारित्र
२१२	२६	रसनेंद्रिय	रसनेंद्रिय
२१२	२६	फा सिंदिय	फासिंदिय
२१३	२	समवाग	समवायाग
२१३	४	नामा	नाया
२१३	६	अणुत्तरावा वाइ	अणुत्तरोव वा
२१३	७	पराह वागरे	पण्हवागरे
२१३	१५	पावमात्र	यावन्मात्र
२१४	१३	पारिणामिण्य	पारिणामिय
२१४	१४	जुवासुरा	जुन्नसुरा
२१४	१८	इद्र धणु	इद्रधणु
२१४	१६	पापालो	पायालो
२१४	२२	आरणपपाणप आरणाप अच्चुरा	आरणाय पाणय आरणाय अच्चुए
२१४	२२	इसाप्पभाए	इसीप्पभारा

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१५	१२	अनादि अयादि	अनादि
२१५	१२	नयापेक्षा	नयापेक्षा
२१५	२३	पर्याप	पर्याय
२१६	२२	नायापेक्षा	नयापेक्षा
२१६	२३	चून है मतादि	चूलहिमवतादि
२२०	५	बउसान्त	उवसंता
२२२	८	समम्यक्त्व	सम्यक्त्व
२२२	२७	उशपम	उपशम
२२३	१९	सयोग	दो सयोग
२२३	२०	अपितु	अपितु
२२३		भंगवन्तो	भगवन्तों
२२४	११	उवस–	उवसमिय
२२५	६	उपसन्ता	उवसंता
२२९	१८	इाद्दियाइ	इादियाइ
२२९	१८	उवससमिय	उवसमिय
२२८	२४	पीरणीमउ	पारिणामिए
२३१	४	अतित्व	अस्तित्व
२३४	१	सेठिइ	सेदिइ
२३४	८	प्रकृतियाच	प्रकृति पाँच
२३५	१०	अतरगत	अंतर्गत
२३५	१२	रिसमे	रिसभे
२३७	१–२	मज्ञपमीहाए	मज्झमीहाए
२३७	२	(मज्झिपमर)	मज्झिम २
२४१	२–३	नविराणसइ	नविराणसइ
४४२	१८	मत्ताउ	मताउ
२४४	१६	जयाचाए	जयाचरा
२४४	२६	गधार नामे	गधार गामे
२४५	३	मुच्छरणाआ	मुच्छणाओ
२४५	४	सतमा	सत्तमा
२४५	६	उतर गधारा पुण साय च मिया	उत्तर गधारा पण सा पचमिया

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४५	७	मायाणी	मायाया
२४५	८	उत्तारायत्ता	उत्तरायत्ता
२४६	१०–११	इवई मूर्छा	हवइ मुच्छा
२४७	१०	(नाभीओ)	(नाभीओ) नाभीसे
२४७	१२	उन्छ्वास है	उच्छ्वास होता है
२४७	१२	गीतों क पद पद में उच्छ्वास	गीतों के उच्छ्वास
२४७	२२	समुद्र	समुद्द
२४७	२२	अवल्याण	अवसाणे
२४७	२३	तन्निनि	तिन्निवि
२४८	२४	मुण पत्र	मुणयव्व
२५०	२	सिरपसत्थ ममतार समलय ममगेह समच	सिरपसत्थ तालसम लयसम गेहसम च
२५०	१०	कद्ध	बद्ध
२५०	१४	५५	२५
२५१	८	निद्दोसे सारवत	निद्दोस सारमत
२५२	२३	दुप	दुय
२५२	२३	केरसी	केरिसी
२५४	६	ससम्मत्त	सम्मत्त
२५५	१	छट्ठीस्मामित्रायेण सत्तमि सिन्निहा–	छट्ठी सस्सामित्रायणे सत्तमी सान्नहा–
२५६	७	अर वत्ति	अहवत्ति
२५७	१८	सवध	सवधे
२५८	७	आमतणी	आमतणी
२५८	१७	द्धम्वाऽनित्पाट	हस्त्रोऽनित्पाट
२५६	१४	भाव है	भाव है यही काव्य है
२५६	१८	वीर	वीर रस
२६०	४	मापा	माया
२६०	५	निनि	हो नि-
२६०	१८	दाणनवचरणा	दाणनवचरण
२६०	१६	अणस्णु	अणरा
२६१	७	शास्त	शास्त्र

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१५	१२	अनादि अयादि	अनादि
२१५	१२	नयापेक्षया	नयापेक्षया
२१५	२३	पर्याव	पर्याय
२१६	२२	नायापेक्षा	नयापेक्षा
२१६	२३	सून ई मतादि	सूत्रइमवतादि
२२०	५	ववसान्त	उवसन्ता
२२२	८	समम्यक्त्व	सम्यक्त्व
२२२	२७	उशयम	उपशम
२२३	१९	सयोग	दा सयोग
२२३	२०	अमितु	अवितु
२२३		भगवन्तो	भगवन्तो
२२४	११	उवस-	उवसमिय
२२५	६	उपस ता	उवसता
२२९	१६	इन्दियाइ	इदियाइ
२२९	१६	उवममिय	उवसमिय
२२६	२४	पीरणीपउ	पारिणामिए
२३१	४	अत्तिन्र	अस्तिन्र
२३४	१	सठिउ	सेठिउ
२३४	६	मकृतियाउ	मकृति पांच
२३५	१०	अतरगत	अतर्गत
२३५	१२	रिसमे	रिसभे
२३७	१-२	मज्झमझीहाए	मज्झमझीहाए
२३७	२	(मज्झिमपमर)	मज्झिम २
२४१	२-३	ननिराणस्सइ	नविएणस्सइ
४४२	१८	मत्ताउ	मताउ
२४४	१६	जधाचाण	जघाचरा
२४४	२६	गधार नामे	गधार गामे
२४५	३	मुच्छरणाश्रा	मुच्छणाओ
२४५	४	सतमा	सत्तमा
२४५	६	उतर गधारा पुण साय च मिया	उत्तर गधारा पुण सा पचमिया

पृष्ठाङ्क	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४५	७	मायामी	मायामा
२४५	८	उत्तारायत्ता	उत्तरायत्ता
२४६	१०-११	इवइ मूर्छा	हवइ मून्छा
२४७	१०	(नाभीओ)	(नाभीओ) नाभीसे
२४७	१२	उन्छ्वास है	उन्छ्वास होता है
२४७	१२	गीतों के पद पद में उन्छ्वास	गीता के उछ्वास
२४७	२२	समुव्व	समुव्व
२४७	२२	अवल्याण	अवसाणे
२४७	२३	तन्निनि	तिन्निवि
२४८	२४	मुणि पव्व	मुणेयव्वं
२५०	२	सिरपसत्थ समतार समलय समगेह समच	सिरपसत्थ तालसम लयसम गेहसम च
२५०	१०	कद्ध	नद्ध
२५०	१४	५५	२५
२५१	८	निद्दोसे सारवत	निद्दोस सारमत
२५२	२३	दुप	दुग
२५२	२३	केरसी	केरिसी
२५४	६	ससम्मत्त	सम्मत्त
२५५	१	छट्टीसमामित्रायेण सत्तमि सिन्निहा-	छट्टी सस्सामित्रायणे सत्तमी सान्नहा-
२५६	७	अइ वत्ति	अहवत्ति
२५७	१८	सवथ	सवधे
२५८	७	आमतणी	आमतणी
२५८	१७	ह्रस्वाऽनित्पाट	ह्रस्वोऽनित्पाट
२५९	१४	भाव है	भाव है वही काव्य है
२५९	१८	वीर	वीर रस
२६०	४	मापा	माया
२६०	५	हिनि	ही नि-
२६०	१८	दाणतवचरणा	दाणतवचरण
२६०	१९	अरास्णु	अणगु
२६१	७	शास्त	शास्त्र

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१५	१२	अनादि अयादि	अनादि
२१५	१७	नयापेक्षया	नयापेक्षया
२१५	२३	पर्याय	पर्याय
२१६	२२	नायापेक्षा	नयापेक्षा
२१६	२३	चून है मतादि	चूर्नहैमवतादि
२२०	५	वउरान्त	उरमता
२२२	८	समम्यक्त्व	सम्यक्त्व
२२२	२७	उशपम	उपशम
२२३	१९	सयोग	दो सयोग
२२३	२०	आवितु	अवितु
२२३		भगवन्तो	भगवन्तों
२२४	११	उवस-	उवसमिय
२२५	६	उपस ता	उवसता
२२९	१६	इंदियाइ	इंदियाइ
२२९	१६	उवससमिय	उवसमिय
२२६	२४	पीरणीमउ	पारिणामिए
२३१	४	अलितर	अरितर
२३४	१	सठिउ	सेढिइ
२३४	६	मकृतियाच	मकृति पांच
२३५	१०	अतरगत	अतर्गत
२३५	१२	रिसपे	रिसभे
२३७	१-२	मज्झवजीहाण	मज्झजीहाण
२३७	२	(मज्झिपमर)	मज्झिम २
२४१	२-३	नविराणस्सइ	नविणस्सइ
४४२	१८	मत्ताउ	मताउ
२४४	१६	जघाचाए	जघावरा
२४४	२६	गधार नामे	गधार गामे
२४५	३	मुच्छरणाओ	मुच्छणाओ
२४५	४	सतमा	सत्तमा
२४५	६	उतर गधारा पुण साय च मिया	उत्तर गधारा पुण सा पचमिगा

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४५	७	मायामी	गायामा
२४५	८	उत्तारायत्ता	उत्तरायत्ता
२४६	१०–११	इवई मूर्छा	इवइ मुन्छा
२४७	१०	(नामीओ)	(नाभीओ) नाभीसे
२४७	१२	उन्छ्वास है	उन्छ्वास होता है
२४७	१२	गीतों के पद पद में उन्छ्वास	गीतों के उच्छ्वास
२४७	२२	ससुव्व	समुव्व
२४७	२२	अवन्याण	अवसाणे
२४७	२३	तन्निवि	तिन्निवि
२४८	२४	मुणे पव्व	मुणपव्व
२५०	२	सिरपसत्य समतार समलय समगह समच	सिरपसत्थ तालसम लयसम गेहसम च
२५०	१०	कद्ध	नद्ध
२५०	१४	५५	२५
२५१	८	निदोसे सारवत	निद्दोस सारमत
२५२	२३	दुप	दुय
२५२	२३	केरसी	करिसी
२५४	६	ससम्मत्त	सम्मत्त
२५५	१	छट्टीसमामिवायेण सत्तमि सिन्निहा–	छट्ठा सम्सामिवायणे सत्तमी सान्नहा–
२५६	७	अह वत्ति	अहवत्ति
२५७	१८	सवध	सबधे
२५८	७	आपतणी	आमतणी
२५८	१७	हस्वाऽनित्वाट	हस्वोऽनित्वाट
२५९	१४	भाव है	भाव है यही क
२५९	१८	वीर	वीर रस
२६०	४	भापा	माया
२६०	५	हिनि	ही नि-
२६०	१८	दाणतवचरणा	दाणतवचरण
२६०	१९	अणस्णु	अणगु
२६१	७	शास्त	शास्त्र

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१५	१२	अनादि अयादि	अनादि
२१५	१२	नयापेक्षया	नयापेक्षया
२१५	२३	पर्याप	पर्याय
२१६	२२	नायापेक्षा	नयापेक्षा
२१६	२३	चून है मतादि	चूर्ण हैमवतादि
२२०	५	उवसान्त	उवसना
२२२	८	समम्यक्त्व	सम्यक्त्व
२२२	२७	उशपम	उपशम
२२३	१९	सयोग	दो सयोग
२२३	२०	अमितु	अपितु
२२३		भगवन्तो	भगवन्तो
२२४	११	उवस-	उवसमिय
२२५	६	उपसन्ता	उवसंता
२२९	१८	इन्द्रियाइ	इदियाइ
२२९	१८	उवससमिय	उवसमिय
२२८	२४	पीरणामिउ	पारिणामिए
२३१	४	अस्तित्व	अस्ति त्व
२३४	१	सेढिउ	सेढिउ
२३४	८	प्रकृतियाच	प्रकृति पाच
२३५	१०	अतरगत	अतर्गत
२३५	१२	रिसपे	रिसभे
२३७	१-२	मज्जपजीहाए	मज्झजीहाए
२३७	२	(मज्झिपमर)	मज्झिम २
२४१	२-३	नविराणस्सइ	नविएणस्सइ
२४२	१८	मत्ताउ	मताउ
२४४	१६	जधाचाए	जधाचरा
२४४	२६	गधार नामे	गधार गामे
२४५	३	मुच्छरणाओ	मुच्छणाओ
२४५	४	सतमा	सत्तमा
२४५	६	उतर गधारा पुण साय च मिया	उत्तर गधारा पुण सा पचमिया

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४५	७	मायामी	गोयामा
२४५	८	उत्तारायत्ता	उत्तरायत्ता
२४६	१०–११	इवइ मुर्छा	हवइ मुच्छा
२४७	१०	(नामीओ)	(नाभीओ) नाभीसे
२४७	१२	उच्छ्वास है	उच्छ्वास होता है
२४७	१२	गीतों के पद पद में उच्छ्वास	गीतों के उच्छ्वास
२४७	२२	सभुव्व	समुव्व
२४७	२२	अवल्याण	अवसाणे
२४७	२३	तन्निनि	तिन्निवि
२४८	२४	मुणि पवत्र	मुणिपवत्र
२५०	२	सिरपसत्य समतार समलय समगह समच	सिरपसत्थ तालसम लयमम गेहसम च
२५०	१०	कद्ध	वद्ध
२५०	१४	५५	२५
२५१	८	निदोसे मारवत	निद्दोस सारमत
२५२	२३	दुय	दुय
२५२	२३	केरमी	केरिसी
२५४	६	ससम्मत्त	सम्मत्त
२५५	१	छट्ठीसमासिवायेण सत्तमि सिन्निहा–	छट्ठी सस्मासिवायणे सत्तमी सान्निहा–
२५६	७	अर वत्ति	अहवति
२५७	१८	सवध	सवे
२५८	७	आमतणी	आमतणी
२५८	१७	छस्वाऽनिन्पाद	हस्वोऽनिन्पाद
२५९	१४	भाव है	भाव है वही काव्य है
२५९	१८	वीर	वीर रस
२६०	४	भाषा	माया
२६०	३	हिनि	ही नि-
२६०	१८	दाणतवचरणा	दाणतवचरण्
२६०	१९	अणास्णु	अणागु
२६१	७	शास्त	शास्त्र

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६३	२५	नित	चिता
२६६	२०	सजोगा	सजोग
२६६	२३	पन्नाओ	पन्नाउ
२६७	२२	निलवण	विलवण
२६७	२५	ख्णनि	ख्णमि
२६६	२	व य	अथ
२६६	३	पएहय	पम्हाण
२७०	२	सभवो	सभवो
२७०	४	जण्	जइ
२७२	५	सेत्ति गारो २	सेत्ति गाए २ ग्वमईनि ग्व-मणा सवइति तरणा जलइति जलणो पवइति पवणा स त गाएणं। सेत्ति नोगुणए श्र कुता सङ्गो असुग्गो समुगे।
२७३	१३	अयथार्थः	अयथार्थ
२७४	१५	खड	खड
२७४	१६	मदव	मदव
२७४	१६	सवाद	सवाह
२७४	१८	विसि	विस
२७४	१६	सुम्मए	सुम्भए
२७७	६	सत्तिवण	सत्तवएण वण
२७७	६	सिसिद्ध	सिद्ध
२७८	२३	भव	भद
२७८	२३	मिहिलिय	महिलिय
२७८	२५	अवयवेणी	अवयवेण
२८०	१६	अनतर्भूत	अन्तर्भूत
२८०	२४	मिहस्सए	मीसए
२८१	४	सुसुमसुसमाए	सुसमसुसमाए
२८१	५	दुसमसुसमाए	दुसमसुसमाए दुसमाए दुसमदुसमाए
२८१	१०	असत्थ	अपसत्थ

पृष्ठाङ्क	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८१	१५	काहा	काख
२८३	२१	अमस्त	अप्रशस्त
२८४	१	सयोगन	सयोगज
२८४	४	जन्म	जन्म
२८५	४	दवय	देवय
२८५	१५	दा श्र	दा श्र
२९४	६	प्रधान प्रधान १	प्रधान १
२९५	८	तिगुणाणि	तिन्नि गुणाणि
२९७	२	त्रगधुरम्	त्रिमधुरम्
२९७	२५	पुरिस	पुरिसा
२९९	१७	व्पारण	व्याकरण
२९९	२२	सजाहा	तजहा
३००	१	ततद्धितनाम	तद्धितनाम
३००	६	वम्भकारए	वज्झकारए
३०२	२०	तरगवकारए	तरगवइकारए

पृष्ठाङ्क	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८१	१५	काहा	काल
२८३	२१	अप्रस्त	अप्रशस्त
२८४	१	सयोगन	सयोगज
२८४	४	जन्म	जन्य
२८५	२	दवय	देवय
२८५	१५	दा श्र	दा श्र
२९४	६	प्रधान प्रधान १	प्रधान १
२९५	८	तिगुणाणि	तिन्नि गुणाणि
२९७	३	त्रमधुरम्	त्रिमधुरम्
२९७	२५	पुरिस	पुरिसा
२९९	१७	व्याकरण	व्याकरण
२९९	२२	सजाहा	तजहा
३००	१	ततद्धितनाम	तद्धितनाम
३००	६	वम्भकारण	वञ्भकारण
३०२	२०	तरगवकारण	तरगवइकारण

उपकार।

निम्न लिखित महानुभावों ने इस सूत्र के प्रकाशन कार्य में निम्न लि आर्थिक सहायता प्रदान की है जिससे हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

२५०) श्रीमान् सेठ महावीरसिंहजी साहेब रईस पार्टीदार-हासी
१००) ,, सेठ रामसुन्दजी साहब सतारा
५०) ,, सेठ मेघजी गिरधरलालजी साहेब-छोटीसादड़ी
५०) ,, सेठ राजमलजी साहब ढढ्ढा बैंकर-मद्रास
५०) ,, लिखमीचंदजी साहेब डागा-बीकानेर
५०) ,, जकीमल्ल एन्ड सन्स-जालन्धर
५०) ,, हीरालालजी साहब वहोरा-बगेरा
५०) ,, उदयचंदजी साहब डागा-बीकानेर
५०) मा० साहब भुरीबाई-मंदसोर

श्री अनुयोगद्वार सूत्रका यह हिन्दी अनुवाद श्रीमदुपाध्यायजी मुनि जात्मारामजी महाराज ने मेरी व स्वर्गस्त प० मुनिश्री ज्ञानचंद्रजी की प्रे पर उन प्राणियों के हितार्थ जैन सूत्रों के पठन पाठन की सुविधा के लिये किया है कि जो धार्मिक साहित्य का पढना चाहते है इसकी प्रस्तावना पढने योग्य है और इस सूत्र के पठन पाठन के लिये यह एक कुंजी है जिससे सूत्रका भाव भलीभांति प्रकट होजाता है मैं विद्वान् लेखक का उनके प्रेम के लिये बड़ा ही आभार मानता हु और मेरी प्रार्थना का स्वीकार करके श्री अनुयोगद्वार के हिन्दी अनुवाद को पूर्ण किया इसलिये मैं उनका ऋणी हु।

स्वगस्त प० ज्ञानचन्द्रजी कि जिन्होंने इस अनुवाद के प्रारम्भ में बहुत परिश्रम किया था और जो तमाम जैन सूत्रों का सरल, शुद्ध और मृदु हिन्दी म अनुवाद किया चाहते थे उनके स्वर्गवास से इस काममें बहुत कुछ बाधा हुई हैं।

उपाध्यायजी महाराज ने पदार्थ भावार्थ समेत तय्यार की हुई कापियोंसे तरफ बहुत सूक्ष्म होने से कम्पोजीटरो की सुविधा के लिये इसकी फेरकापी यानि अक्षरश नक्ल करने की आवश्यका थी सो लुधियाना निवासी लाला गैंडामल रामरतनदास रईस व चौधरी और लाला मोडीमलजी बाबूलालजी रईस ने इसकी नकल करने का उच्चकी सहायता प्रदान की इसलिये पंजाब का जैन संघ आपका धन्यवाद देता है।

Parmanand B A Pleader
Chief Court (Punjab)